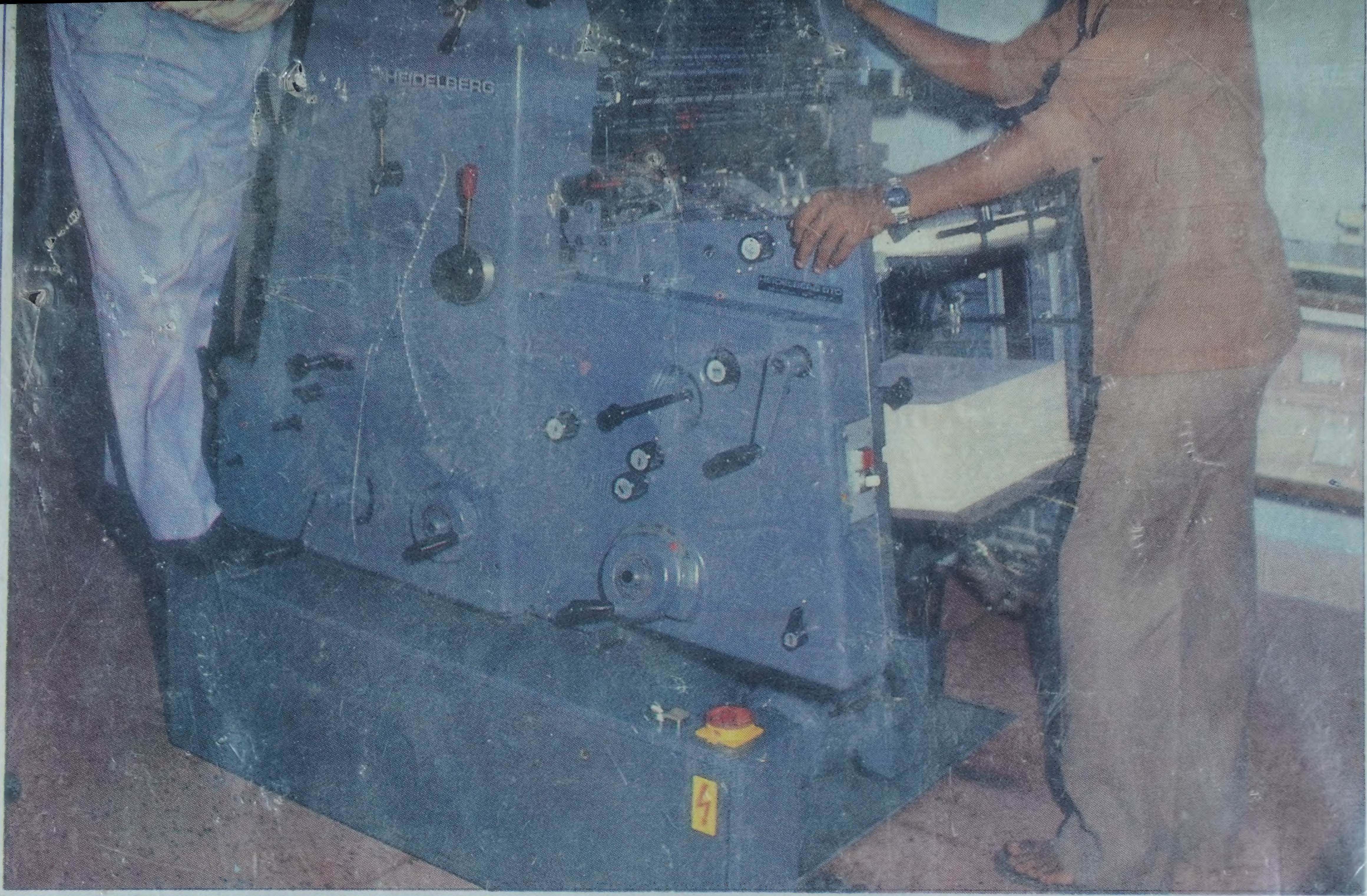

HEIDELBERG

साधना

पास बुक्स

सीनियर हायर सैकण्डरी परीक्षा

अनिवार्य हिन्दी

(10 + 2 शिक्षा प्रणाली के अनुसार लिखित)

आज तक प्रकाशित अन्य सैकण्डरी व हायर सैकण्डरी पास बुक्सों में साधना पास बुक्स के अद्‌भुत संस्करण जिनको पढ़कर आप निश्चित रूप से अपनी परीक्षा में प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के अंकों से पास हो सकेंगे।

पुस्तक के लेखन का कार्य सिर्फ अनुभवी एवं प्रश्न पत्र चयनकर्त्ताओं द्वारा करवाया गया हैं।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के नवीन पाठ्यक्रम एवं शिक्षा पद्धति पर आधारित

1989-90

प्रकाशक

साधना पब्लिकेशन्स

सिंघीजी का रास्ता, माहेश्वरी स्कूल के सामने

चौड़ा रास्ता जयपुर-3

मूल्य : 30.00

प्रश्न-सूची

प्रथम प्रश्न-पत्र

भाग (अ)

द्वितीय प्रश्न पत्र

भाग (ब)

सीनियर हायर सैकण्डरी, 1989
अनिवार्य—हिन्दी
(COMPULSORY—HINDI)

समय : 3 घण्टे | पूर्णांक : 100

भाग 'अ'

समय—30 मिनट | पूर्णांक—30

1. शास्त्रों में दूब को किसकी पुत्री कहा गया है ?
(क) विष्णु की (ख) धरती की (ग) पार्वती की
(घ) सौभाग्य की (च) समुद्र की ( )

2. 'युद्ध-विराम' नामक कविता में 'अज्ञेय' जी ने क्या कामना की है ?
(क) मानवमात्र परिश्रमी हो ।
(ख) मानवमात्र को आत्मनिर्णय का अधिकार हो ।
(ग) मानवमात्र स्वतन्त्र हो ।
(घ) मानवमात्र में स्नेह और विश्वास हो ।
(च) मानवमात्र की भूख मिटे । ( )

3. 'वन में राम' शीर्षक कविता में राम कौन-सा संदेश देते हैं ?
(क) धर्म-कर्म का संदेश ।
(ख) भवसागर पार करने का संदेश ।
(ग) भूतल को स्वर्ग बनाने का संदेश ।
(घ) मानवता के गुणों के प्रसार का संदेश ।
(च) मानव को ईश्वर बनाने का संदेश । ( )

3. 'ममता' कहानी की रचना का उद्देश्य क्या है ?
(क) इतिहास की एक घटना का वर्णन करना ।
(ख) विधवा जीवन की दुर्दशा का वर्णन करना ।
(ग) जीवन के उच्च आदर्शों का वर्णन करना ।
(ध) जातीय स्वाभिमान का चित्रण करना ।
(घ) नारी की महत्ता प्रकट करना । ( )

5. 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी में चाणक्य तपोवन में क्यों जाना चाहता है ?
(क) राजनीतिक जीवन से मोहभंग होने के कारण ।
(ख) कौमुदी महोत्सव के विरोध के कारण ।
(ग) वृद्धावस्था हो जाने के कारण ।
(घ) चन्द्रगुप्त द्वारा अपमानित किये जाने के कारण ।
(च) वसुगुप्त के प्रतिरोध के कारण । ( )

6. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है ?
(क) कोहिनूर एक बहुमूल्य हीरा है ।
(ख) मेरे पास केवल मात्र एक रुपया है ।
(ग) उमेश पत्र लिखने को बैठा था ।
(घ) सुषमा जी विद्वान् महिला हैं ।
(च) वृक्षों पर कौआ बोल रहा था । ( )

7. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द शुद्ध है ?

(क) उज्ज्वल (ख) जाग्रति (ग) पैत्रिक

(घ) तदन्तर (च) प्रतक्ष ( )

8. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द उपसर्गयुक्त है ?

(क) इष्ट (ख) आहार (ग) कुशल

(घ) सदैव (च) निष्कपट ( )

9. निम्नलिखित में से किस शब्द से निर्मित विशेषण सही है ?

(क) सुन्दर–सुन्दरता (ख) प्रकृति–प्राकृतिक (ग) घर-घरेलू

(घ) श्रम–श्रमिक (च) विहार–बिहारी ( )

10. निम्नलिखित वाक्यों में से किसमें शुद्ध विराम-चिन्ह लगे हैं ?

(क) नहीं नहीं, मैं नहीं पढ़ूंगा ।

(ख) विज्ञान के प्रयोग, सत्य की खोज है ।

(ग) चलो; कहीं मारपीट न हो जाये ;

(घ) अरे मोहन ! क्या कर रहे हो ?

(च) सदा–सर्वदा सच ही बोलो ! ( )

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 20-30 शब्दों में लिखिये—

11. कविता का दुरुपयोग कैसे होता है ?

12. "भाषा भी गढ़ी जाती है ; परन्तु वह एक कुम्भकार का घर-निर्माण नहीं, मिट्टी का अंकुर-निर्माण है ।"

महादेवी वर्मा के इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिये ।

13. राजस्थानी साहित्य के स्वतन्त्रता के किसी गायक और उसकी रचना का उल्लेख करके उसकी किसी एक काव्य-प्रवृत्ति का निरूपण कीजिये ।

14. "हरी भरी खेती पर ओले गिरे, पड़ गया पाला ।
मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला ।।"

'शिवमंगल सिंह 'सुमन' के उपर्युक्त काव्यांश का आशय स्पष्ट कीजिये ।

15. 'निराला' की 'जागो फिर एक बार' कविता से आप को क्या प्रेरणा मिलती है ?

16. 'नये मेहमान' एकांकी के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिये ।

17. 'दो कलाकार' एकांकी के चूड़ामणि ने कौन-सा पुराण लिखा और क्यों लिखा ?

18. 'वापसी' एकांकी की रचना का उद्देश्य क्या है ?

19. रानी माँ के चबूतरे की कौन-सी विशेषता कहानीकार ने बतायी है ?

20. 'एक गौ' कहानी का रचना का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

भाग 'ब'

समय—$2\frac{1}{2}$ घण्टे | पूर्णांक—70

1. "भाषा संस्कृति का लेखा-जोखा रखती है।"
महादेवी के इस कथन का अभिप्राय 40-50 शब्दों में लिखिये।

2. 'जागो फिर एक बार' कविता के प्रकृति-सौन्दर्य पर 40-50 शब्दों में प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित गद्यावतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—
"आर्थिक विकास में जहां पूंजी आदि साधनों का पर्याप्त महत्त्व है, वहीं मानवीय साधनों की उपेक्षा करने पर विकास की दीर्घकालीन प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न हो सकता है। मानवीय साधनों का इष्टतम उपयोग तथा कार्यदक्षता में वृद्धि आज अल्पविकसित देशों की सबसे बड़ी आवश्यक शर्त है।" (उत्तर-सीमा 80-100 शब्द)

4. निम्नलिखित पद्यावतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—
"श्रेय होगा सुष्ठु विकसित मनुज का वह काल,
जब नहीं होगी धरा नर के रुधिर से लाल।
श्रेय होगा धर्म का आलोक वह निर्बन्ध,
मनुज जोड़ेगा मनुज से जब उचित सम्बन्ध॥"
(उत्तर-सीमा : 80-100 शब्द)

5. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—
"अखबार की दुनिया में रोज खबरें आती हैं। हड़तालों के नारे, लड़ाइयों का शोरगुल, सेनाओं की परेडें, जंगी जहाजों का घर्राटा, लेकिन मुझे सब इतने बेमानी, इतने खोखले लगते हैं, जितने इस बचकाने खिलौने के स्वर। लेकिन कभी-कभी लगता है इन्हीं ध्वंस और विनाश की आवाजों में कहीं नये इंसान की आवाज का भी निर्माण हो रहा है।"
(उत्तर-सीमा : 80-100 शब्द)

6. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—
"सो क्या मेरे कहने की बात है? फिर शब्द मैं विशेष नहीं जानती। दुःख है, वही मेरे पास है। उससे जो शब्द बन सकते हैं, उन्हीं तक मेरी पहुंच है। आगे शब्दों में मेरी गति नहीं है। जो भाव मद में है, उसके लिए संज्ञा मेरे जुटाए नहीं जुटती, पशु जो हूँ।
(उत्तर–सीमा : 40–50 शब्द)

7. संस्कृत भाषा की लिंग-सम्बन्धी कठिनाइयां क्या हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिए। (उत्तर–सीमा : 100 शब्द)

8. 'चलते हुए घर' नामक रेखाचित्र में गाड़िया लुहार कौन हैं? उनके किस अंधविश्वास की ओर लेखक ने संकेत किया है? (उत्तर–सीमा 100 शब्द)

9. 'मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला' नामक कविता के स्थान पर यदि आपको आतंकवाद रोकने के उपायों पर लिखना पड़ता, तो आप क्या उपाय सुझाते ? (उत्तर-सीमा 60 शब्द)

10. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के नामकरण की सार्थकता क्या है ? (उत्तर-सीमा 60 शब्द)

11. 'गौरू गाड़ी के यात्री' कहानी के रामजी के चरित्र की सर्वप्रमुख विशेषता का सोदाहरण उद्घाटन कीजिए। (उत्तर-सीमा 40–50 शब्द)

12. प्रताप छात्रावास से रजनीकांत के रूप में अपने पिताजी को एक पत्र लिखिये जिसमें विद्यालय में मनाये गये नेहरू-जन्म-शताब्दी समारोह का विवरण हो। (उत्तर-सीमा : 100 शब्द)

13. "मौनरूपी व्याख्यान की महिमा इतनी प्रभावशाली होती है कि उसके सामने क्या मातृभाषा और क्या अन्य देश की भाषा, सब की सब तुच्छ प्रतीत होती हैं। अन्य कोई भाषा दिव्य नहीं, केवल आचार की मौन भाषा ईश्वरीय है। विचार करके देखो, मौन व्याख्यान किस तरह आपके हृदय की नाड़ी में सुन्दरता पिरो देता है। वह व्याख्यान ही क्या, जिसने हृदय की धुन को, मन के लक्ष्य को न बदल दिया। चन्द्रमा की मंद-मंद हँसी का, तारागण के कटाक्षपूर्ण मौन व्याख्यान का प्रभाव किसी कवि के दिल में घुसकर देखो। कमल और नरगिस में नयन देखने वाले नेत्रों से पूछो कि मौन व्याख्यान की प्रभुता कितनी दिव्य है ?"

(क) उपर्युक्त अवतरण का सार लिखिये।

(ख) रेखांकित वाक्यांश की व्याख्या कीजिये।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिये।

14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए— (उत्तर-सीमा : 300 शब्द)

(क) मेरे सपनों का भारत।

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी की समस्याएं।

(ग) राजस्थान के दर्शनीय स्थल।

(घ) टी वी. सीरियल 'रामायण' का जनमानस पर प्रभाव।

(च) जब मैंने परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

अनिवार्य हिन्दी

नमूने का प्रश्न-पत्र

(i) प्रश्न पत्र की योजना

समय : 3 घन्टे पूर्णांक : 100

विषय-वस्तु का अंक भार

क्र. सं.	विषय-वस्तु	अंक भार	प्रतिशत
1.	साहित्य-संचय	40	40%
2.	सरस एकाँकी	15	15%
3.	कथा-सौरभ	15	15%
4.	संक्षिप्तीकरण	5	5%
5.	व्याकरण	5	5%
6.	पत्र-लेखन	5	5%
7.	निबन्ध	15	15%
	योग	100	100%

प्रश्नों के प्रकारवार अंक भार :

क्र. सं.	प्रश्न का प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक	प्रतिशत
1.	बहुचयनात्मक	10	10	10%
2.	अति अघूत्तरात्मक	10	20	20%
3.	लघूत्तरात्मक	10	38	38%
4.	निबन्धात्मक	04	32	32%
	योग	34	100	100%

4. प्रश्न-पत्र के भाग :

भाग	समय	प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	के अंक	अंक प्रतिशत
(अ)	½ घण्टा	वस्तुनिष्ठ	10	10	10%
		अतिलघूत्तर	10	20	20%
(ब)	2 घण्टा	लघूत्तरात्मक	10	38	38%
		निबन्धात्मक	04	32	32%

(iii) नमूने का प्रश्न पत्र

समय : 3 घण्टे　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पूर्णांक : 100

भाग (अ)

समय $\frac{1}{2}$ घण्टा　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पूर्णांक : 30

1. वैदिक काल में वरमाला दूर्वा और मधूक को एक में गूंथकर बनाते थे, ऐसा क्यों करते थे—
   (क) सर्वत्र सहज उपलब्धि के कारण　(ख) सदाबाहर होने के कारण
   (ग) प्रकृति-प्रेम के कारण　(घ) मंगल-सूचक होने के कारण
   (च) विधाता की रचना होने के कारण　(　) 1

2. बन्दूक के कुन्दे से हल के हत्थे की छुअन
   हमें अब भी अधिक चिकनी लगती है।
   अज्ञेय का यह कथन किस विचारधारा को व्यंजित करता है—
   (क) प्रगतिवाद　(ख) मानववादी　(ग) पुरातनवादी
   (घ) रूढ़िवादी　(च) अहिंसावादी　(　) 1

3. मैं पाप-पुञ्ज पर टूट पड़ूं बिजली-सी
   सीता के इस कथन में उसका कौन-सा मनोभाव व्यक्त हुआ है—
   (क) दंभ　(ख) दृढ़ता
   (ग) आक्रोश　(घ) कठोरता
   (च) साहस　(　) 1

4. 'तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ।'
   ममता ने मुगल को किस भावना से प्रेरित होकर आश्रय दिया—
   (क) दया　(ख) कीर्ति-कामना
   (ग) परोपकार　(घ) भय
   (च) कर्त्तव्य　(　) 1

5. 'चन्द्रगुप्त क्षमा का न तो पात्र है और न अभिलाषी।'
   चण्द्रगुप्त का यह कथन उसके किस मनोभाव को व्यंजित करता है—
   (क) दंभ　(ख) आक्रोश
   (ग) स्वाभिमान　(घ) आत्मविश्वास
   (च) निर्भीकता　(　) 1

6. निम्नांकित वाक्यों में कौन-सा वाक्य शुद्ध है—
(क) भौतिक विज्ञान और गणित में सबसे कठिन विषय कौन-सा है ?
(ख) मानव तुम सबसे सुन्दरतम हो।
(ग) वह शायद कल प्रातः आयेगा।
(घ) इस पुस्तक का मूल्य केवल मात्र दस रुपये है।
(च) निर्धनों की दुरावस्था देखकर दुःख होता है। ( ) 1

7. निम्नलिखित शब्दों में कौन सा शब्द शुद्ध है ?
(क) उज्जवल (ख) अनुगृहीत (ग) भर्त्सना (घ) श्रीयुत्
(च) अन्तर्चेतना ( ) 1

8. निम्नलिखित शब्दों में कौनसा शब्द उपसर्गयुक्त है—
(क) अपनापन (ख) निकटता
(ग) शंकालु (घ) अधीन
(च) कुलीन ( ) 1

9. निम्नलिखित किस शब्द से निर्मित विशेषण सही है—
(क) उद्योग—औद्योगिक
(ख) इच्छा—ऐच्छिक
(ग) व्यवहार—व्यावहारिक
(घ) जगत्—जगतिक
(च) जिन—जैनी ( ) 1

10. किस वाक्य में अशुद्ध विराम चिह्न लगा है—
(क) अरे ! चोर भाग रहा है, पकड़ो उसे !
(ख) महावीर स्वामी ने कहा—"प्राणी मात्र पर दया करो, सत्य बोलो और किसी को हानि मत पहुँचाओ।"
(ग) मैं बोल रहा हूं, सुनते हो ना।
(घ) सदन में मंत्री-मंडल की बैठक होने वाली है।
(च) भगवान् उनकी रक्षा करें—दंगाग्रस्त क्षेत्र में वे शान्ति-स्थापना के लिए गये हैं।

अग्रलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 20-30 शब्दों में दीजिए—

11. हमें ज्योति दो देशवासियों।
अज्ञेय ने 'युद्ध विराम' शीर्षक कविता में देशवासियों से ज्योति क्यों मांगी है। 2

12. 'हमारे देश ने आलोक और अन्धकार के अनेक युग पार किए हैं।
महादेवी वर्मा के उपर्युक्त कथन का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए। 2

13. कविता की किस विशेषता के कारण व्यक्ति कार्य में प्रवृत्त होता है ?

14. 'राजस्थानी साहित्य में वीरता मूलक मानववाद' शीर्षक निबन्ध में लेखक ने 'सच्चे मानववाद' का क्या लक्षण बताया है ? 2
15. 'मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला' इस कथन से कवि शिव मंगल सिंह 'सुमन' क्या प्रकट करना चाहते हैं ? 2
16. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में दो पीढ़ियों में कौनसी वैचारिक भिन्नता उभरी है ? 2
17. 'दो कलाकार' एकांकी में प्रस्तुत व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए ।
18. 'वापसी' एकांकी के पात्र असगर के मन के द्वन्द्व के किन्हीं दो प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए । 2
19. 'रानी माँ का चबूतरा' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए । 2
20. 'फेर दीजिए पिताजी, मैं काँप रही हूं । इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है ।' इस कथन में ममता की किस जीवन दृष्टि का परिचय मिलता है ? 2

भाग (ब)

समय : $2\frac{1}{2}$ घण्टा पूर्णांक : 70

1. "जीवन कितना हठी है और मृत्यु कितनी पराजित लाचार और दीन- यह कोई हिन्दुस्तानी हरीतिमा से सीखे ।" 'हरी-हरी दूब और लाचार क्रोध' शीर्षक ललित निबन्ध के लेखक के उपर्युक्त कथन का अभिप्राय लगभग 40-50 शब्दों में स्पष्ट कीजिए । $3\frac{1}{2}$
2. 'जागो फिर एक बार' कविता में निराला ने किन प्राकृतिक व्यापारों के माध्यम से भारतीय को उद्बुद्ध किया है ? किन्हीं तीन प्राकृतिक व्यापारों का उल्लेख सहित उत्तर दीजिए । $3\frac{1}{2}$

(उत्तर सीमा 40-50 शब्द)

3. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

'स्व' का लोक के लिए लोप कर देने में—छोटे 'स्व' को किसी वृहत्तर सत्ता के लाभ के लिए लोप कर देने में वह निरन्तर संलग्न रहती है और इसी महासमर्पण की सिद्धि के रूप में इसकी जड़ें इस प्रकार धरती गर्भ के अमृत कुण्ड के भीतर तक पहुंच गई ।

(उत्तर सीमा 80-100 शब्द) 4

4. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए— 4

एक नर में अन्य का निःशंक, दृढ़ विश्वास
धर्मदीप्त मनुष्य का उज्जवल नया इतिहास—
समर, शोषण, ह्रास की विरुदावली से हीन,
पृष्ठ जिसका एक भी होगा न दग्ध, मलीन ।

(उत्तर सीमा 80-100 शब्द)

5. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—
संदेह तो धूमकेतु की रेखा है जो आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक फैलती हैं और धूमकेतु जानते हो किस बात का प्रतीक है? भय का, आशंका का, अमंगल का !

(उत्तर सीमा 80-100 शब्द)

6. निम्नलिखित अवतरण को सप्रसंग व्याख्या कीजिए— 3
सम्पत्ति की अट्टालिका तक पहुंचने में दूसरों की जिन्दगी ही जीनों का काम देती है। आप उन्हें कुचलकर ही लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं। वहां सौजन्य और सहानुभूति का स्थान ही नहीं।

(उत्तर सीमा 40-50 शब्द)

7. 'नौकरी पेशा' कहानी के पात्र राधेलाल की कोई तीन चारित्रिक विशेषताएं लिखिए। 3

(उत्तर सीमा 40-50 शब्द)

8. नगर में रामजी के बलिदान की चर्चा जोर-शोर पर थी, किन्तु उस गरीब की दाह-क्रिया में न कोई राव आया, न जुलूस निकला, न रण-भेरी बजी और न नगाड़ा। चन्द लोगों के कंधे पर चढ़ कर रामजी की अरथी चली।" यह वर्णन संवेदनशील व्यक्ति के हृदय में क्या-क्या भाव जगायेगा? अपनी कल्पना के आधार पर लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए। 4

9. सम्पादक दिवाकर की चारित्रिक विशेषताओं को प्रकट करने वाली किन्हीं दो घटनाओं का उल्लेख कीजिए। 4

(उत्तर सीमा 60 शब्द)

10. भक्तिकालीन काव्य परम्परा की चारों शाखाओं में ज्ञानाश्रयी शाखा का महत्व सबसे अधिक किन कारणों से है? 6

(उत्तर सीमा 100 शब्द)

11. आर्थिक विकास में मानवीय साधन' निबन्ध के लेखक द्वारा बताई कार्यक्षमता को प्रभावित करने वाली किन्हीं तीन बातों को स्पष्ट कीजिये। 6

(उत्तर सीमा 100 शब्द)

12. आपके छोटे भाई अनिल कुमार को मिलने वाली राष्ट्रीय छात्रवृत्ति की प्राप्ति में हो रहे विलम्ब को दूर करने के लिए अपने को ब्यावर नगर निवासी मोहनलाल मानकर राज्य के शिक्षा निदेशक को एक अर्द्ध शासकीय पत्र लिखिए। (उत्तर सीमा 100 शब्द) 5

13. स्वतन्त्रता का मर्म समता है। विषमता में स्वतन्त्रता भंग हो जाती है। बाह्यरूपों की समता चाहे सम्भव न हो, किन्तु आन्तरिक भाव की

समता स्वतन्त्रता का आधार है। **सभ्यता और संस्कृति के वृक्ष और लतायें भी समता के मार्ग में ही शोभित होती है।** समता का मूल तत्व यही है कि बाह्य विषमता के होते हुए मनुष्य की दृष्टि से सब समान है। मनुष्यता के भावों का सम्बन्ध बाह्य विषमताओं से संकुचित नहीं होता। मनुष्यता की दृष्टि से कोई भी मनुष्य दूसरे मनुष्य से श्रेष्ठ नहीं है। मानवीय और नैतिक गुणों का उत्कर्ष भी इस मानवीय समता को खंडित नहीं करता। नवीनता, सक्रियता, स्वतन्त्रता आदि के अतिरिक्त समता मानवीय उल्लास का मूल स्रोत है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक लिखिए— 1
(ख) रेखांकित वाक्य की व्याख्या कीजिए— 2
(ग) उपर्युक्त अवतरण का सारांश लिखिए— 2 } 5

(लगभग 300 शब्दों में)

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए—

(क) पर्यावरण (ख) इक्कीसवीं शताब्दी का भारत 15

(ग) व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से हीन, यह शिक्षा

(घ) लोक अदालतों का भविष्य

(च) आपकी कल्पना का नया ग्राम-समाज

———

साधना पास बुक्स
सीनियर हायर सैकण्डरी अनिवार्य हिन्दी
भाग [अ]
वस्तुनिष्ठ बहुचयनात्मक प्रश्न
साहित्य संचय

---

1. कविता क्या है ?

1. कविता हमें किस प्रकार कार्य में प्रवृत्त करती है ?
(क) हमें आह्लाद, क्रोध, करुणा आदि भावों से विह्वल बनाकर। (ख) हमें उपदेश देकर। (ग) वह कार्य या उसके परिणाम को इस प्रकार सामने प्रस्तुत करती है कि हममें आह्लाद क्रोध या करुणा आदि भाव उत्पन्न हो उठे। (घ) राजनीतिज्ञ की भाँति वर्णन प्रस्तुत करके। ( )

2. नीति और धर्म सम्बन्धी उपदेश चित्त पर वैसा असर नहीं करते जैसा कि किसी काव्य या उपन्यास से निकली हुई शिक्षा असर करती है। क्योंकि
(क) वह मन को एकाग्र कर मर्मस्पर्श कर मनोरंजन भी साथ में करती है।
(ख) वह हम में भय का भाव भरकर प्रभाव डालती है।
(ग) वह सदाचार के अलौकिक सौन्दर्य और माधुर्य को सामने लाकर उनकी ओर आकृष्ट करती है। (घ) वह हमें लुभाती है। ( )

3. कविता प्रयोजनीय वस्तु है, क्योंकि—
(क) वह हमारा मनोरंजन कराती है। (ख) वह समस्याओं का समाधान करती है। (ग) वह मानुषी प्रवृति जगाने, मनुष्यता सिखाने वाली ईश्वरीय औषधि है। (घ) वह साँसारिक व्यक्ति को क्रोध, परोपकार आदि भावों की ओर से उदासीन बनाती है। ( )

4. कविता में सौन्दर्य का वर्णन रहता हैं—
(क) पार्थिव सौन्दर्य और अपार्थिव यानि मानसिक सौन्दर्य का।
(ख) व्यक्ति के शारीरिक गठन संबन्धी सौन्दर्य का।
(ग) व्यक्ति के प्रेम, दया, करुणा आदि मन के वेगों के सौन्दर्य का।
(घ) व्यक्ति के कार्यों के सौन्दर्य का। ( )

2. हमारा देश और राष्ट्रभाषा

5. एक जीवित भाषा का स्वाभाविक लक्षण क्या है ?
(क) भाषा के शब्द भण्डार का बढ़ते जाना। (ख) जीवन के साथ साथ उसका विकसित और परिमार्जित होते चलना। (ग) उसकी सुन्दर अभिव्यक्ति (घ) उसका समृद्ध साहित्य। ( )

6. आज यदि राष्ट्रभाषा की स्थिति के सम्बन्ध में विवाद नहीं है तो किस बारे में विवाद है—
(क) भाषा की कठिनाइयों के बारे में। (ख) राष्ट्रभाषा को प्रतिष्ठित करने के साधनों के बारे में। (ग) राष्ट्र भाषा की सुन्दरता व असुन्दरता के बारे में (घ) राष्ट्रभाषा को अपनाये जाने के बारे में। ( )

7. राष्ट्र की अनिवार्य विशेषताओं में से हमारे पास भौगोलिक अखण्डता और सांस्कृतिक एकता तो है पर तीसरी कौनसी नहीं है—
(क) वाणी जिसमें एक स्वतन्त्र राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के निकट अपना परिचय देती हैं। (ख) देशवासियों की समृद्ध सभ्यता। (ग) देशवासियों का मनोबल। (घ) राष्ट्र की आर्थिक सम्पन्नता। ( )

8. मैथिलीशरण हो, निराला हो, या सुमित्रानन्दन पन्त, इन्होंने बुन्देली हिन्दी, बिहारी हिन्दी आदि में साहित्य-सृजन कर हिन्दी में ही साहित्य सृजन किस कारण से किया ?
(क) हिन्दी के उस संक्षिप्त रूप और मूलगत गठन के कारण जिसके बिना कोई भाषा महत्व नहीं पाती। (ख) राष्ट्रभक्ति की भावना से युक्त होने के कारण (ग) अंग्रेजी भाषा के प्रति घृणा का भाव रखने के कारण। (घ) हिन्दी का बचपन से अध्ययन करते रहने के कारण। ( )

3. हरी-हरी दूब और लाचार क्रोध

9. देशों में मांगलिक कार्यों में हल्दी के साथ-साथ किसका प्रयोग किया जाता है ?
(क) गेलो का (ख) चावल का (ग) दूब का
(घ) केले के पत्तों का ( )

10. प्राचीन वुद्धि जीवी अपने अन्तः सत्य को स्पष्ट रूप से कह पाता था, उसके स्पष्टवादिता, अखंडता के पोछे कौन सी शक्ति थी ?
(क) उसकी चतुराई की। (ख) उसकी आस्तिक आस्था का
(ग) उसके ज्ञान की। (घ) उसकी निर्लज्जता की। ( )

11. हमें जो शिक्षा दी गई है वह कौन सी शिक्षा है ?
(क) नैतिकता निरपेक्ष शिक्षा (ख) नौकरी पाने की।
(ग) इस संसार के भौतिक रूप को समझने की।
(घ) व्यवहार कुशल बनाने की। ( )

12. जब हमें अपने देश में लोकतन्त्र को आहत होते देखते हैं तो हमारी क्या स्थिति होती है ?

(क) हम केवल दुखी होते हैं । (ख) हम आश्चर्यचकित होते हैं ।
(ग) हमारा मर्म पीड़ित होता हैं, हम क्रुद्ध होते हैं पर क्रोध की लाचारी को पी जाते हैं । (घ) हम इस बारे में उदासीन रहते हैं । ( )

13. भारतीय बुद्धिजीवी आहत क्रोध की लाचारी को न भोगता ऐसा कैसे संभव था ?

(क) जब कि बुद्धि जीवी का अध्ययन गहन होता । (ख) उसमें नैतिक बल होता । (ग) जब लोकतंत्र इतना क्षमतावान् होता कि वह अपने में आस्था को जन्म दे सकता । (घ) उसमें क्रोध व्यक्त करने का साहस होता ( )

4 राजस्थानी साहित्य में वीरता मूल मानववाद

14. सच्चा मानववाद क्या है ?

(क) जहाँ मानव सामान्य मानव से ऊँचा पद प्राप्त कर लेता है । (ख) जहाँ मानव अधिक योग्यता प्राप्त कर लेता है । (ग) जहाँ मानव स्वकेन्द्रित न होकर समाज-केन्द्रित अथवा विश्वकेन्द्रित बन जाता है । (घ) जहाँ मानव को यश मिलता है । ( )

15. सच्चे मानववाद में कौनसी वीरता का समावेश होता है ?

(क) सच्चे मानववाद में उस वीरता का समावेश होता है जिसका लक्ष्य अत्याचार का दमन करना तथा न्याय की स्थापना करना है । (ख) जिस वीरता का लक्ष्य अपने शत्रु से लोहा लेना होता है । (ग) जिस वीरता का लक्ष्य वाहवाही प्राप्त करना होता है । (घ) जिस वीरता द्वारा व्यक्ति अपना स्वार्थ पूरा करना चाहता है । ( )

16. कल्ला नामक वीर के वीरता मूलक मानववाद के मूल में कौनसी भावना काम कर रही थी ?

(क) देश भक्ति और धरती-प्रेम की । (ख) स्वातन्त्र्य की भावना । (ग) मरण-त्योहार और अमरता की आकांक्षा । (घ) शत्रु को हराने की । ( )

17. रत्नसिंह सोढ़ा द्वारा दिखाई गई वीरता के पीछे कौनसी भावना काम कर रही थी ?

(क) अमरकोट को अंग्रेज से वापस लेने की, स्वातंत्र्य भावना । (ख) अपने आप को अमर बना लेने की । (ग) शत्रु को समाप्त कर बदला लेने की । (घ) देश भक्ति की । ( )

5 हिन्दी की व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइयाँ

18. अंग्रेजी प्रेमी भारतवासी राष्ट्रभाषा के किस रूप को स्वीकार करने की बात करते हैं ?

(क) जो अंग्रेजों द्वारा बोला जाता है। (ख) जो कलकत्ता-बम्बई जैसे नगरों में अहिन्दी-भाषियों द्वारा व्यवहार मे लाया जाता है। (ग) जो दक्षिण के लोगों को मान्य है। (घ) जो व्याकरण के नियमों से युक्त है। ( )

19. यूनानी के समान और दूसरी कौनसी भाषा शताब्दियों तक यूरोप की धार्मिक एवं सांस्कृतिक भाषा रही ?

(क) अंग्रेजी भाषा (ख) लैटिन भाषा (ग) अंग्रेजी का आम बोल चाल वाला रूप (घ) इनमें से कोई नहीं। ( )

20. संस्कृत भाषा की भाँति यूरोप की कौनसी भाषा में तीनों लिंग विद्यमान् हैं ?
(क) जर्मन भाषा में। (ख) फ्रांसीसी भाषा में। (ग) लैटिन भाषा में। (घ) यूनानी भाषा में। ( )

6. व्योम पुत्र की अन्तरिक्ष सैर

21. सोवियत संघ की अन्तरिक्ष यात्राओं का संचालन किस स्थान से होता है ?
(क) कालीनिनग्राद से। (ख) मास्को से। (ग) बैकोनूर से। (घ) इनमें से किसी स्थान से नहीं। ( )

22. हमारा उपग्रह भूकेन्द्र किस स्थान पर स्थित है ?
(क) दिल्ली में। (ख) सिकन्दराबाद में। (ग) बम्बई में। (घ) बंगलोर में ( )

23. हमारा संचार उपग्रह इन्सेट-1 बी कहाँ स्थित है ?
(क) दिल्ली के ऊपर। (ख) सिकन्दराबाद के ऊपर। (ग) हिन्दमहासागर के ऊपर। (घ) बंगाल की खाड़ी के ऊपर। ( )

24. राकेश शर्मा जिस राकेट यान से अन्तरिक्ष में गये वह किस स्थान से अन्तरिक्ष में गया था ?

(क) बैकोनूर के अन्तरिक्ष अड्डे से। (ख) कालीनिनग्राद से। (ग) मास्को से। (घ) दिल्ली से। ( )

25. A संसार के सबसे पहले अन्तरिक्ष यात्री कौन थे ?

(क) राकेश शर्मा (ख) यूरी गागरिन (ग) रवीश मल्होत्रा (घ) यूरी मालीशेष। ( )

25. B व्योम पुत्र की अन्तरिक्ष सैर में व्योम पुत्र का नाम है ?

(क) यूरीगागरिन (ख) नील आर्मस्ट्रांग (ग) आर्यभट्ट (घ) राकेश शर्मा ( )

7. हिन्दी साहित्य की परम्परा में जीवन-सत्य

26. साहित्य में किस की अभिव्यक्ति होती है ?

(क) जीवन-सत्य की (ख) मनोरंजन की बातों की (ग) रीतिरिवाजों की (घ) लोगों के रहन-सहन की। ( )

27. ज्ञानाश्रयीशाखा के सबसे प्रमुख कवि कौन है ?
(क) जायसी। (ख) कबीर दास। (ग) रैदास। (घ) नानक। ( )

8. राजस्थानी उपाख्यानों में उदारता की महिमा

28. शंकर बारहठ के काव्य पर सवा करोड़ द्रव्य का दान देने वाले राजा का नाम था—
(क) मानसिंह (ख) बीकानेर के महाराजा रायसिंह (ग) शार्दूलसिंह
(घ) सूरजमल । ( )

29. वह कौनसी विशेषता थी जिसके लिए महाराणा भीमसिंह की उसके शत्रु मानसिंह ने भी प्रशंसा की थी ?
(क) वीरता की (ख) सत्यवादिता की
(ग) दानवीरता की (घ) देशभक्ति की । ( )

9. बाढ़ के जल पर नियंत्रण

30. लगभग कितने समय पूर्व मिस्र के राजा ने नीलनदी पर बाँध बनवाया था ?
(क) अब से करीब 4500 वर्ष पूर्व (ख) लगभग 6000 वर्ष पूर्व
(ग) तीन हजार वर्ष पूर्व (घ) कुछ समय पूर्व ही । ( )

31. मिस्र के बांधों संसार के कैसे बांधों में गिनती की जाती है ?
(क) संसार के छोटे बांधों में (ख) मध्यम ऊँचाई के बाँधों में
(ग) संसार के सबसे बड़े बांधों में (घ) संसार के प्राचीनतम बांधों में ( )

32. भारत में घाटी योजनाओं में सबसे बड़ी कौनसी है ?
(क) हीराकुण्ड योजना (ख) दामोदर घाटी योजना
(ग) चम्बल घाटी योजना (घ) भाखरा-नांगल योजना । ( )

33. निम्नांकित में से किसने भाखरा-नांगल बाँध का उद्घाटन किया था ?
(क) गोविन्दबल्लभ पंत (ख) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
(ग) पं. जवाहरलाल नेहरू (घ) लाल बहादुर शास्त्री । ( )

34. अमेरिका का बोल्डर बाँध अपनी किस विशेषता के लिए संसार में प्रथम है ?
(क) यह सबसे विशाल है (ख) यह संसार में सबसे ऊँचा बाँध है
(ग) यह सबसे प्राचीन बांध है (घ) यह संसार में सबसे नया बांध है ( )

10. चलते हुए घर

35. गाड़िया लोहार मूलतः कहां के निवासी है ?
(क) मध्य प्रदेश के (ख) गुजरात के
(ग) राजस्थान के (घ) उत्तर प्रदेश के । ( )

36. A गाड़िया लोहार करीब कितने समय से घुमक्कड़ जीवन यापन कर रहे हैं ?
(क) आदिकाल से (ख) एक शताब्दी से
(ग) लगभग चार सौ साल से (घ) ईसा पूर्व से । ( )

36. B गाड़िया लोहारों की गाड़ियां मुख्यतया कहां बनाई जाती हैं ?
(क) राजस्थान में (ख) हिसारके गंगवा गांव में
(ग) पंजाब में (घ) केरल में ( )

37. गाड़िया लोहारों का राजस्थान के किस राजा से गहरा संबन्ध रहा है ?
(क) मानसिंह से (ख) जयसिंह से
(ग) भीम सिंह से (घ) चित्तौड़ के राणा प्रताप से। ( )

38. गाड़िया लोहारों से उनकी प्रतिज्ञाएं किसने तुड़वाई थी ?
(क) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने (ख) लाल बहादुर शास्त्री ने
(ग) पं. जवाहर लाल नेहरू ने (घ) इंदिरा गांधी ने। ( )

11. श्रार्थिक विकास में मानवीय साधन

39. श्रल्पविकसित देशों में सबसे बड़ी श्रावश्यकता क्या है ?
(क) श्रार्थिक विकास करने की (ख) गरीबों का जीवन स्तर उठाने की
(ग) जन-संख्या कम करने की (घ) मनुष्यों को शिक्षा देने की। ( )

पद्य खण्ड

1. वन में राम

40. "तुम इसी भाव से भरे यहां श्राये हो ?
यह मन घाम-तनु घरे हरे, छाये हो।"
में 'इसी भाव' से कौन से भाव का संकेत दिया गया है—
(क) वीरता का (ख) क्रोध का
(ग) देने के भाव का (घ) राज्य भोगने के भाव का ( )

41. "संदेश यहां मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने श्राया।"
इसमें 'मैं' किसके लिए प्रयुक्त हुश्रा है :—
(क) लक्ष्मण के लिए (ख) कवि के लिए
(ग) राम के लिए (घ) भरत के लिए ( )

42. "वे भी भवसागर बिना प्रयास तरेंगे।
यहां किसके भवसागर तरने की बात कही गई है—
(क) श्रयोध्यावासियों की (ख) वन वासियों की
(ग) राम के नाम मात्र का उच्चारण करने वालों की
(घ) साधुजनों की (ङ) राक्षसों की। ( )

43. "जगद् पवन के झंखाड़ छांटने श्राया।"
यहां 'झंखाड़' किसका द्योतक है—
(क) उपवन में खड़े वृक्ष का (ख) झाड़ी का
(ग) शक्तिशाली व्यक्तियों का (घ) श्रत्याचारी दुष्ट व्यक्तियों का ( )

2. जागो फिर एक बार

44. "अरुण पंख तरुण किरण
खड़ी खोलती है द्वार"
यहां किसकी किरणों के बारे में वर्णन किया गया है—
(क) चन्द्रमा की किरणों का (ख) प्रातः कालीन सूर्य की किरणों का
(ग) दीपक के प्रकाश की किरणों का
(घ) पंखों से निकलती हुई किरणों का। ( )

45. प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें
अरुण पंख तरुण किरण
खड़ी खोलती है द्वार
जागो फिर एक बार।"
यहां कवि का कौन सा आशय व्यक्त हो रहा है—
(क) सोये हुए लोगों को जगाने का (ख) जन जागृति लाने का
(ग) लोगों में कर्म करने की आदत डालने का (घ) अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाने का। ( )

46. क्षण-क्षण में परिवर्तित
होते रहे प्रवृति पर,
गये दिन, आयी रात
गयी रात खुला दिन"
इन पंक्तियों से संसार की किस विशेषता का पता चलता है—
(क) नश्वरता का (ख) सौंदर्य का (ग) परिवर्तनशीलता का
(घ) कुरूपता का। ( )

3. मनुज का श्रेय

47. "श्रेय मानव के न आविष्कार ये अपवित्र।"
मनुष्य के आविष्कारों को श्रेय इसलिए नहीं माना गया क्योंकि वे—
(क) खर्चीले या महँगें हैं (ख) बहुत समय लेने वाले हैं
(ग) अपूर्ण हैं (घ) विनाशकारी हैं। ((

48. "सावधान मनुष्य ! यदि विज्ञान है तलवार"
ऐसा कहकर कवि ने क्या बताना चाहा है—
(क) विज्ञान बहुत उपयोगी है (ख) विज्ञान के आविष्कार महँगें हैं
(ग) विज्ञान खतरनाक अतः त्याज्य है (घ) विज्ञान के और आविष्कार करने की आवश्यकता है। ( )

49. "हो चुका है सिद्ध तू शिशु अभी नादान"
विज्ञान के सन्दर्भ में मनुष्य को शिशु बताकर कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है—

(क) मनुष्य में विज्ञान का सदुपयोग करने की अभी विशेषता नहीं आई है।
(ख) विज्ञान को मनुष्य मनोरंजन का साधन बनाये है।
(ग) विज्ञान को मनुष्य खतरनाक मान रहा है। (घ) वह विज्ञान को उन्नत बनाने का प्रयत्न नहीं कर रहा। (ङ) विज्ञान के आविष्कारों में होने वाले खर्चे के प्रति सावधान नहीं है। ( )

50. "श्रेय उसका आँसुओं की धार"
इसके द्वारा कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है--
(क) मनुष्य को दुखी व्यक्तियों की ओर ध्यान देना चाहिए।
(ख) मनुष्य को बैठकर आँसू बहाते रहना चाहिए।
(ग) आँसू बहाते हुए लोगों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए।
(घ) संसार में असंख्य दुखी व्यक्ति भी हैं। ( )

51. "श्रेय वह नर-बुद्धि का शिवरूप आविष्कार,
ढो सके जिससे प्रकृति सबके सुखों का भार।"
यहां कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है--
(क) वे आविष्कार अच्छे हैं जो प्रकृति का भार ढो सकें। (ख) ऐसे आविष्कार किये जाएँ जिनके द्वारा प्रकृति की वस्तुओं से सबको सुख दिया जा सके। (ग) वे आविष्कार अच्छे हैं जिनके कारण प्रकृति लोगों के सुखों को भार समझे। (घ) वे आविष्कार किये जाएँ जिनसे केवल अपने लिए सुख प्राप्त किये जा सकें। (ङ) अपने ही सुख के लिए वैज्ञानिक आविष्कार करने में बुद्धिमानी है। ( )

52. "श्रेय होगा धर्म का आलोक वह निर्बन्ध,
मनुज जोड़ेगा मनुज से जब उचित सम्बन्ध।"
इस कथन के अनुसार कवि कौन सी स्थिति को अच्छी मानता है--
(क) जब मनुष्य परम्परागत धर्म को अपनायेगा। (ख) जब मनुष्य अनावश्यक बन्धनों से मुक्त होगा और दूसरे मनुष्यों के साथ मानवीय व्यवहार करना अपना धर्म मानेगा। (ग) जब मनुष्य धर्म को त्याग कर बन्धन मुक्त रहने लगेगा। (घ) जब मनुष्य साथ-साथ रहते हुए धर्म को त्याग देगा। ( )

53. "साम्य की वह रश्मि स्निग्ध, उदार,
कब खिलेगी, कब खिलेगी विश्व में भगवान ?"
इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि समाज में किस स्थिति को पसन्द करता है--
(क) पूँजी वादी व्यवस्था को (ख) समाज में ऊँच-नीच, गरीब-अमीर आदि के भेदभाव से और शोषण रहित समानता की स्थिति को (ग) तानाशाही व्यवस्था को (घ) आर्थिक विषमता वाली स्थिति को ( )

4. युद्ध विराम

54. "ये रौंदे हुए खेत
हमारी अवरुद्ध जिजी विषा के सहमे हुए साक्षी हैं।"
यहाँ 'जिजीविषा' का अर्थ है—
(क) चलना-फिरना (ख) जीवित रहने की इच्छा (ग) जीवन यापन (घ) जी-जीकर मरना। ( )

55. "कितनी देर
चाय और वाहवाही की
चिकनी सहलाहट में
रूकेगा कारवाँ हमारा ?"
इस कथन से कवि का कौन सा भाव व्यक्त हो रहा हैं।
(क) भविष्य में कभी युद्ध न होने की निश्चिन्तता का अभाव। (ख) आगे युद्ध करने की अकुलाहट। (ग) युद्ध को खेल मानने का भाव। (घ) हमेशा के लिए युद्धों से मुक्ति मिल जाने का विश्वास। ( )

56. "इस अनोखी रंग शाला में
नाटक का अन्तराल मानो
समय है सिनेमा का"
यहां नाटक का 'अन्तराल' से क्या आशय है—
(क) युद्धों के बीच उनके बन्द रहने का कुछ समय। (ख) नाटक के बीच का कुछ समय का विश्राम काल। (ग) नाटक रोक देने का भाव। (घ) नाटक समाप्त कर देने का समय। ( )

57. "नहीं, अभी कुछ नहीं बदला है
हिम-चोटियों पर छाये हुए बादल तो केवल परदा हैं—"
यहां परदा जैसे शब्दों के प्रयोग से कवि ने क्या व्यक्त करना चाहा है—
(क) बादलों से चोटियों को छिपाने का प्रयत्न किया जा रहा है। (ख) छिपे-छिपे युद्धों की तैयारियां जारी हैं। (ग) हिम से युक्त पर्वत चोटियों पर परदे लटके हैं। (घ) अभी चोटियों को ढ़कने की परम्परा जारी है। (

58. "बन्दूक के कुन्दे से
हल के हत्थे की छुअन
हमें अब भी अधिक चिकनी लगती है।"
ऐसा कहने के पीछे कवि का क्या भाव छिपा है—
(क) कवि युद्धों से, हिंसा से, लूट से परिश्रम करके जीवन यापन करने को अधिक महत्त्व देता है। (ख) बन्दूक के कुन्दे की तुलना में उसे हल के हत्थे का छूना अच्छा लगता है। (ग) वह सैनिकों की तुलना में किसानों

को अधिक महत्त्वपूर्ण मानता है। (घ) उसे बन्दूक चलाना न आकर हल चलाना ही आता है। ( )

59. क्योंकि उधर का निजाम
अभी उधर के किसान को
नहीं देता आजादी ॥

इस कथन द्वारा कौन सा भाव व्यक्त होता है—
(क) यही कि कुछ प्रभावशाली व्यक्ति सामान्य जनों को अपने इशारे पर नचाते हैं। (ख) निजाम ने किसानों को गुलाम बना रखा है।
(ग) अभी अमीर-गरीब और मालिक-मजदूर का भेद विद्यमान है।
(घ) किसानों में निजाम का विरोध करने का साहस नहीं है। ( )

60. "अभी कुछ नहीं बदला है" से क्या तात्पर्य है ?
(क) अभी तक समय नहीं बदला है। (ख) अभी युद्ध हमेशा के लिए बन्द नहीं हुए हैं। (ग) अभी भी मानव-मानव के बीच भेद-भाव बना हुआ है। (घ) अभी तक मनुष्य ने गुलामी से छुटकारा नहीं पाया है। ( )

61. "कि हमीं इस पुण्य भू के
क्षिति सीमान्त के छोर, दृढ़व्रती दिकपाल हैं।" यहां इस पुण्य भू किसके लिए प्रयुक्त है—
(क) इस धरती के लिए (ख) भारतवर्ष के लिए
(ग) एशिया महाद्वीप के लिए
(घ) उस स्थान के लिए जहां कवि जन्मा है। ( )

62. "हमें बल दो देशवासियों !
क्योंकि तुम बल हो।" ऐसा कहकर कवि किस देश के निवासियों से विश्व शान्ति की आशा रखता है—
(क) अमेरिका के निवासियों से (ख) रूसवासियों से
(ग) भारतवासियों से (घ) अपने पड़ौसी लंकावासियों से। ( )

5. आह्वान

63. 'आह्वान' कविता किसे सम्बोन्धित करके लिखी गयी है ?
(क) बूढ़ों को (ख) बच्चों को (ग) जवानों को
(घ) प्रौढ़ व्यक्तियों को। ( )

64. "ओ जो तुम अपने सीने में लेके चलते हो अंगार" इस पंक्ति में 'अंगार' किस अर्थ को व्यक्त करता है ?
(क) आग को (ख) जलन को
(ग) जोश को (घ) क्रोध को। ( )

65. "ओ जो तुम मौत के साथ करते हो खिलवार"—इस में "मौत के साथ खिलवार" करने का अर्थ है–
(क) मौत से खेलना (ख) मौत से दूर भागना
(ग) मौत से भयभीत न होना (घ) मौत पर काबू पा लेना। ( )

6. मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला

66. "दूर बैठकर ताप रहा है, आग लगाने वाला" इसमें 'आग लगाने वाला' से क्या तात्पर्य है––
(क) घर में आग लगाने वाला (ख) घर वालों में झगड़ा कराने वाला।
(ग) घर की तोड़-फोड़ करने वाला
(घ) घर के झगड़े को बढ़ाने वाला। ( )

67. "कुल-कलंक-संतान
सौर में गला घोट में देती" इस कथन में मां का कौन-सा भाव व्यक्त हो रहा है–
(क) क्रोध से उत्पन्न निर्ममता का (ख) संतान की उपेक्षा करने का
(ग) मां के पागलपन का (घ) मां के ईर्ष्या भाव का। ( )

68. "मैं न बन्धनों में सड़ती
छाती में शूल न गड़ता"–यहां शूल से क्या तात्पर्य है?
(क) कांटा (ख) ईर्ष्या (ग) संतान के दुर्व्यवहार से उत्पन्न पीड़ा या वेदना (घ) शारीरिक पीड़ा। ( )

69. "हरी-भरी खेती पर ओले गिर, पड़ गया पाला" यहां 'हरी भरी खेती' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(क) फसल से युक्त खेत के लिए (ख) मेहनत के लिए
(ग) स्वतन्त्रता सेनानियों द्वारा आजाद कराये गये भारत देश के लिए
(घ) मनुष्यों से आबाद धरती के लिए। ( )

70. "मुंह दिखलाने योग्य कहीं भी
रहे न भारतवासी"। ऐसा कवि ने क्यों कहा है?
(क) क्योंकि भारतवासियों ने अपने आपको आजाद कराने के लिए लड़ाई लड़ी। (ख) क्योंकि भारतवासी गुलामी से मुक्त नहीं हो पाये।
(ग) क्योंकि स्वतन्त्रता सेनानियों द्वारा आजाद कराये जाने पर भारतवासी अपने अपने स्वार्थ हेतु आपस में ही लड़ते हुए देश को दुर्दशा की ओर ले जा रहे हैं। (घ) क्योंकि भारतवासियों के चेहरे सुन्दर नहीं हैं।

कथा सौरभ

1. ममता

1. "हिन्दू विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है।" लेखक के इस कथन से कौनसा भाव व्यक्त होता है––

(क) घृणा का (ख) सहानुभूति का (ग) ग्लानि का
(घ) हीनता का (च) क्रोध का ( )

2. "मन में वेदना, मस्तक में आंधी, आंखों में पानी की बरसात लिए, वह सुख में कंटक-शयन में विकल थी" ममता सुख की सुविधाओं के बावजूद क्यों विकल थी---
(क) वह पिता के घर अकेली थी। (ख) उसकी मां नहीं थी।
(ग) वह विधवा थी (घ) वह पिता के व्यवहार से असंतुष्ट थी।
(च) वह अपनी ससुराल की याद करती थी। ( )

3. इतना स्वर्ण ! यह कहां से आया ? चुप रहो ममता, यह तुम्हारे लिए है।" चूड़ामणि ने ममता को चुप रहने के लिए क्यों कहा ?
(क) चूड़ामणि पुत्री के हस्तक्षेप को बरदाश्त नहीं करते थे।
(ख) उन्हें प्रश्नों के पूछे जाने पर झुंझलाहट आया करती थी।
(ग) उनके पास ममता के प्रश्नों को सुनने का समय नहीं था।
(घ) उन्हें डर था कि रिश्वत के रूप में लाये हुए स्वर्ण के बारे में कहीं कोई सुन न ले। (घ) वे ममता से पहले से ही नाराज थे। ( )

4. "इतना स्वर्ण ! यह कहाँ से आया ?" इस कथन से ममता के मन का कौन सा भाव व्यक्त हो रहा है ?
(क) आश्चर्य का (ख) खुशी का (ग) क्रोध का
(घ) दुःख का (च) घृणा का। ( )

5. "फेर दीजिए पिताजी, मैं कांप रही हूँ। इसकी चमक आँखों को अंधा बना रही है।" ममता के इस कथन के पीछे क्या भाव छिपा था ?
(क) औपचारिकता का (ख) दिखावे का (ग) संकोच का
(घ) हराम का धन न लेने का (च) पागलपन का। ( )

6. "उसने जाकर रोहितोश्व दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा।" चूड़ामणि के इस आचरण का क्या कारण था ?
(क) वे शत्रु की हरकतों पर निगरानी रखना चाहते थे।
(ख) उन्हें शत्रु के आचरण से शक हुआ था।
(ग) ममता के कथन से उनमें कर्त्तव्य पालन की भावना बलवती हो गई थी। (घ) कौतूहलवश ही उन्होंने ऐसा किया था। (च) शत्रुओं की डोलियों का इस प्रकार अन्दर जाना उन्हें अच्छा न लगा था। ( )

7. चूड़ामणि को शेरशाह की ओर से इसलिए उत्कोच दी गई थी कि---
(क) वह दुर्ग का द्वार खोल दे। (ख) वह डोलियों में बैठकर दुर्ग में प्रवेश करने वाले शत्रु सैनिकों की जांच कर बाधा न डाले। (ग) वह शत्रु को दुर्ग के रहस्य बता दे। (घ) वह दुर्ग से अनुपस्थित रहे। (च) वह शत्रुओं की प्रशंसा करे। ( )

8. शेरशाह से उत्कोच रूप में प्राप्त स्वर्ण को ममता द्वारा स्वीकार न किये जाने का चूड़ामणि पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(क) चूड़ामणि को ममता पर क्रोध आया। (ख) उन्हें ममता मूर्ख प्रतीत हुई। (ग) उन्हें लगा कि शत्रु ने मुझे मूर्ख बनाया है। (घ) उन्हें विरक्ति हो गई। (च) उन्हें अपने कर्त्तव्य का ध्यान आया और उहोंने डोलियों में छिपे वेश में दुर्ग में प्रविष्ट होते हुए शत्रु सैनिकों को रोका। ( )

9. यदि मंत्री चूड़ामणि ने शत्रु शेरशाह का उत्कोच स्वीकार करके समय न खोया होता तो क्या होता--

(क) शत्रु का आक्रमण करने का मनोबल न बढ़ा होता। (ख) डोलियों में छिपकर काफी शत्रु दुर्ग में न जा पाते और तब शायद दुर्ग शत्रु के अधीन न होता। (ग) शत्रु आक्रमण किये बिना लौट जाता। (घ) शत्रु को दुर्ग के रहस्य न ज्ञात होते। ( )

10. चूड़ामणि ने शत्रु से उत्कोच स्वीकार किया था, फिर उसका शत्रु के हाथों मारे जाने का क्या कारण था ?

(क) शत्रु उसे अँधेरे में पहचान न सके थे। (ख) वह और अधिक उत्कोच की मांग करता था। (ग) उसने दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा था और वह मार दिया गया था। (घ) शत्रुओं को उत्कोच स्वीकार करने वाले उस पर ज्यादा क्रोध आया था। ( )

11. ममता एक विहार के खण्डहर में क्यों जाकर रहने लगी थी ?

(क) उसे निर्जन स्थान में रहना अच्छा लगता था। (ख) वह विक्षिप्त हो गई थी। (ग) उसे पिता के मारे जाने पर शत्रु के हाथों पड़ने जाने का भय था। (घ) उसे दुर्ग के अधिकारियों ने ऐसा करने के लिए विवश किया था। (च) उसके मन में विरक्ति का भाव उत्पन्न हो गया था। ( )

12. 'पाठ रुक गया। एक भीषण और हताश आकृति दीप के मन्द प्रकाश में सामने खड़ी थी'। स्त्री उठी। उसने कपाट बन्द करना चाहा।" ममता ने अनजान व्यक्ति को देखकर कपाट क्यों बन्द करना चाहा था ?

(क) वह निर्विघ्न रूप से भजन करना चाहती थी। (ख) वह आगंतुक को चोर समझती थी। (ग) उसे मानव मात्र की शक्ल से भी घृणा हो गई थी (घ) उसे आगन्तुक पर शत्रु का आदमी होने का शक था। (च) उसमें अतिथि के प्रति श्रद्धाभाव न था। ( )

13. ममता के मन में दरवाजे पर आये हुए व्यक्ति से परिचय पाकर विचारों की उथल-पुथल उत्पन्न हो गई थी पर बाद में किसकी जीत हुई ?

(क) दया भाव की (ख) कर्त्तव्य की (ग) उदासीनता की (घ) घृणा की। ( )

14. विहार के खण्डहर में, जहां ममता अकेली जीवन व्यतीत कर रही थी, कौन शरण लेने आया था ?

(क) तैमूर (ख) अकबर (ग) तैमूर का सनिक

(घ) शेरशाह का सैनिक (च) हुमायूँ। ( )

15A. "प्रभात में खण्डहर की सन्धि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं।" सैकड़ों अश्वारोही वहां क्यों घूम रहे थे ?

(क) ममता को बन्दी बनाने (ख) हुमायूँ को मारने
(ग) आगन्तुक का भेद लेने (घ) हुमायूँ बादशाह को खोजकर उसे सुरक्षित ले जाने के लिए (च) दुर्ग बनाने के लिए उचित स्थान की तलाश करने। ( )

15B. चौसा का युद्ध हुआ था—

(क) अकबर और शेरशाह के मध्य (ख) शेरशाह और हुमायूं के मध्य
(ग) पठानों व हिन्दुओं के मध्य (घ) मुगलों और हिन्दुओं के मध्य ( )

16. "वह स्त्री कहाँ है ? उसे खोज निकालो।" हुमायूँ ने अपने सैनिकों से ऐसा किस लिए कहा था ? ( )

(क) वह आश्रय देने वाली ममता को दण्ड देना चाहता था।
(ख) ममता का व्यवहार उसे अच्छा न लगा था। (ग) वह ममता को अपने साथ ले जाना चाहता था। (घ) वह ममता से विदा लेना चाहता था। (च) वह आश्रय देने के उपलक्ष्य में ममता को पुरस्कार देना चाहता था। ( )

17. हुमायूँ को जहाँ आश्रय मिला उस स्थान पर उसके पुत्र अकबर ने एक मन्दिर बनवाया था पर उस पर ममता का कहीं नाम न था। आप इस सम्बन्ध में क्या सोचते हैं ?

(क) हमारी दृष्टि में उस पर ममता का नाम होना चाहिए था।
(ख) अकबर ने अपने नाम की चर्चा कर स्वार्थ का परिचय दिया।
(ग) अकबर ने ममता का नाम न देकर अपने पिता को ज्यादा महत्त्व दिया। (घ) ममता का नामोल्लेख किये बिना इमारत बनवाने का उद्देश्य ही पूरा नहीं हुआ। (च) अकबर का आचरण साम्प्रदायिकता की भावना से युक्त रहा। ( )

18A. 'ममता' कहानी किस बात की प्रेरणा देती है ?

(क) अपना स्वार्थ पूरा करने की (ख) शत्रु की सहायता करके भी अपनी रक्षा करने की (ग) दुनियाँ दारी से उदासीन रहने की (घ) आपत्ति में भी अपना कर्त्तव्य पालन करने की (च) रिश्वत न लेने की। ( )

18B. ममता आजीवन भयभीत क्यों रही—

(क) झोंपड़ी खुदवाने के डर से (ख) सतीत्व भंग के डर से
(ग) हुमायूँ के डर से (घ) शेरशाह के डर से। ( )

2. प्रेरणा

19. "खुदाई फौजदारों की एक फौज बनाली थी और उनके आतंक से शाला पर शासन करता था।" इस कथन से सूर्य प्रकाश की कौन सी विशेषता व्यक्त होती है ?

(क) सूर्य प्रकाश महत्त्वाकांक्षी था (ख) वह शाला का खुद प्रिंसिपल बनना चाहता था। (ग) वह प्रिंसिपल की सहायता करना चाहता था। (घ) फौज के काम करने में उसकी रुचि थी। (च) वह छात्र का गुट बनाने में समर्थ था और मनमानी करने में उसे आनन्द आता था। ( )

20. "ग्यारह बजे सब छात्र इस तरह निकल पड़े जैसे कोई पिंजरा खोल दिया गया हो।" ऐसा किस प्रसंग में कहा गया है ?

(क) छात्रों को पिंजरे में बन्द कर दिया गया था। (ख) छात्रों ने पहले इन्सपेक्टर के मुआइने का विरोध किया था। (ग) छात्र एकत्र होकर ही शाला में प्रवेश करना चाहते थे। (घ) उन्हें ऊधमी सूर्य प्रकाश ने रोक रखा था और निश्चित समय के बाद ही शाला में प्रवेश करने दिया था। ( )

21. इन्सपेक्टर साहब ने कैफियत में डिसिप्लिन खराब होने की बात क्यों लिखी थी ?

(क) इन्सपेक्टर साहब प्रिंसिपल पर पहले से नाराज थे। (ख) वे अपने रौब का प्रदर्शन करना चाहते थे। (ग) वे मुआइने के समय शाला में एक भी छात्र उपस्थित न देखकर ऐसा लिखने के लिए विवश थे। (घ) इन्सपेक्टर साहब हरेक शाला में ऐसा ही लिख देने में सन्तोष का अनुभव करते थे। ( )

22. बड़ी से बड़ी शरारत करने के बावजूद सूर्य प्रकाश को अध्यापक दण्ड देने से क्यों हिचकते थे ?

(क) नियम के अनुसार छात्र को दण्ड देना अनुचित था। (ख) अध्यापक बड़े दयालु थे। (ग) दण्ड देने का ध्यान ही अध्यापकों को न रहा था। (घ) सूर्य प्रकाश को दण्ड देने से मामला और उलझने का अध्यापकों को डर था। (च) अध्यापकों ने शरारती से शरारती छात्र को प्रेम पूर्ण व्यवहार से ही सन्मार्ग पर लाने की परम्परा बना रखी थी। ( )

23. "सारा घण्टा उपदेश से बीत गया और वह पट्ठा सिर झुकाये हुए नीचे मुस्करा रहा था।" इस सूर्य प्रकाश के बारे में क्या धारणा बनती है ?

(क) सूर्य प्रकाश बेशर्म था (ख) वह इतना नासमझ था कि अध्यापकों की शिक्षा, नसीहत को वह समझ न पाता था। (ग) अध्यापकों की बात सुनने से उसे चिढ़ थी। (घ) वह केवल किताबी शिक्षा को ही सुनना पसन्द करता था। (च) वह अध्यापकों के कहने से मनमानी करने से बाज न आता था और उसे अपने शरारतों से सन्तोष मिलता था। ( )

24 कक्षा-अध्यापक ने वार्षिक परीक्षा में सूर्य प्रकाश को कक्षा के अन्य छात्रों से अधिक अंक क्यों दिये थे ?

(क) अध्यापक को सूर्य प्रकाश से डर लगता था। (ख) प्रिंसिपल ने अध्यापक से ऐसा करने के लिए कहा था। (ग) सूर्य प्रकाश ने अध्यापक पर

ज्यादा अंक देने के लिए दबाव डाला था। (घ) सूर्य प्रकाश को ज्यादा अंक देकर ही वे सुधारना उचित समझते थे। (च) सूर्य प्रकाश ने वास्तव में ही अन्य छात्रों से अच्छे उत्तर लिखे थे। ( )

25. "सहसा मेरी निगाह सूर्य प्रकाश पर पड़ी, जो सबसे पीछे लज्जित खड़ा था। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उसकी आंखें भी भीगी थीं।" कक्षाध्यापक का तबादला होने पर उनके विदा होते समय उद्यमी होते हुए भी सूर्य प्रकाश की आँखें क्यों भीगी हुई थीं?

(क) सूर्य प्रकाश दूसरों की आंखों में आंसू देखकर दिखावा कर रहा था। (ख) जब भी कोई परिचित व्यक्ति विदा होता था तो उसकी आंखों में आंसू आ जाया करते थे। (ग) उसे तब अपने पिछले आचरण के लिए संकोच और खेद था और इसी कारण उसकी आंखों में आंसू थे। (घ) उसे कोई बीमारी थी जिसके फलस्वरूप उसकी आंखों में कभी-कभी यों ही आंसू आ जाया करते थे। ( )

26. "मगर इन्हीं खोये हुए अवसरों का नाम तो जीवन है।" कक्षाध्यापक ने कौन से अवसर के बारे कहा है?

(क) कक्षाध्यापक ने ऐसा स्कूल छोड़ने के अवसर के बारे में कहा है। (ख) उसने ऐसा अपने साथियों से विदाई के समय घुलमिल कर बातें न करने के बारे में कहा है। (ग) ऐसा उस समय के बारे में कहा है जब उसने सूर्यप्रकाश को मुआइने के अवसर पर डाटने-समझाने का प्रयत्न जो नहीं किया था। (घ) ऐसा उस अवसर के बारे में कहा है जब स्टेशन पर सूर्य प्रकाश को लज्जित और आंसू बहाते हुए देखकर भी समझाने का प्रयत्न नहीं किया था। ( )

27. स्टेशन से विदा होने के बाद अकेले सूर्य प्रकाश को खड़ा रह गया देखकर कक्षाध्यापक को अपने ऊपर घृणा क्यों हो रही थी?

(क) अध्यापक को यह सोचकर स्वयं के प्रति घृणा का अनुभव हो रहा था कि सूर्य प्रकाश को अपने किये हुए पर पछतावा करने और दुखी होते देखकर भी उसने सूर्य प्रकाश से स्नेह पूर्वक बातें क्यों न की। (ख) उसे घृणा यह सोचकर हो रही थी कि मैंने प्लेटफ़ार्म की ओर ऊधमी सूर्य प्रकाश को देखा ही क्यों। (ग) उसे घृणा हो रही थी कि मैंने कक्षा में सूर्य प्रकाश को समय-समय पर उसकी शरारतों के लिए खूब डांटा-फटकारा क्यों नहीं। (घ) उसे घृणा इस बात की थी कि स्कूल से विदा होने पर मैंने अपने द्वारा उससे की जाती रही डांट फटकार के लिए मांफी क्यों नहीं मांगी। (च) मैंने अपना तबादला रुकवाने का प्रयत्न क्यों न किया ताकि सूर्य प्रकाश को दुखी होने का मौका ही न मिलता। ( )

28. "मगर इन्हीं खोये हुए अवसरों का नाम तो जीवन है।" कौन से खोये हुए अवसरों की चर्चा की गई है?

(क) ग्रध्यापक को ग्रपने ही विद्यालय में प्रिंसिपल बनने का ग्रवसर मिला था जो उन्होंने गँवा दिया

(ख) ग्रपनी विदाई के समय सूर्य प्रकाश को ग्रपने प्रति ग्लानि हुई थी ग्रौर तब ग्रध्यापक की बातों का उस पर प्रभाव हो सकता था पर ग्रध्यापक ने उसे समझाने का प्रयत्न न कर ग्रवसर खो दिया था।

(ग) ग्रध्यापक की विदाई के समय सूर्य प्रकाश को ग्रध्यापक से माफी मांग कर घृणा ग्रौर ग्लानि से मुक्ति पा लेने का ग्रवसर मिला था जिसे उसने खो दिया था।

(घ) विदाई के ग्रवसर पर स्टेशन पर उपस्थित ग्रध्यापक सूर्यप्रकाश को समझा देते तो वह सुधर जाता ग्रौर स्कूल वालों के लिए सिर दर्द न रह जाता। ( )

29. "घोड़े पर सवार वह थे, लगाम मेरे हाथ में थी।" यह कथन किस प्रसंग में कहा गया है ?

(क) प्रिंसिपल के हाथ में संस्था की सत्ता थी ग्रौर वास्तविक रूप में सूर्य प्रकाश के कक्षाध्यापक ही विद्यालय का कामकाज संभालते थे।

(ख) कक्षाध्यापक कक्षा की देखरेख करते थे पर वास्तव में सूर्यप्रकाश का ही कक्षा के छात्रों पर शासन चलता था।

(ग) यों शिक्षामंत्री महोदय ही शिक्षा नीति निर्धारण का ग्रधिकार रखते थे पर नीति निर्धारण का कार्य वास्तव में सूर्यप्रकाश के कक्षाध्यापक ही कालेज के प्रिंसिपल बनने पर शिक्षा नीति तय करते थे।

(घ) शिक्षामंत्री को घोड़े पर बिठाकर लाया गया था जिसकी लगाम प्रिंसिपल साहब ग्रपने हाथों में पकड़े हुए चले थे। ( )

30. यूरोप में ग्रनिवार्य शिक्षा नीति की ग्रपेक्षाकृत ज्यादा जरूरत क्यों है ?

(क) भारत में सभी शिक्षित है।

(ख) भारत में माता-पिता ग्रपने बच्चों को शिक्षित करना ग्रपना धर्म समझते हैं जबकि यूरोप में ऐसा नहीं करते।

(ग) यूरोप में शिक्षा का नितान्त ग्रभाव हैं।

(घ) यूरोप में भौतिकतावादी दृष्टिकोण है इस कारण माता-पिता ग्रार्थिक लाभ को महत्त्व देते हुए ग्रपने बच्चों को कुछ कमाने की ग्रोर ज्यादा ध्यान देते हैं ग्रौर उनकी पढ़ाई की उपेक्षा कर देते हैं।

(च) यूरोप में शिक्षा इतनी ग्रधिक हैं कि ग्रब बच्चों को पढ़ाने की ग्रोर ध्यान ही नहीं जाता। ( )

31. भारत में कानून बनाकर मां-बाप को विवश करना कि वे ग्रपने बच्चों को ग्रनिवार्य रूप से पढ़ायें, उचित क्यों नहीं है ?

(क) माँ-बाप गरीब हैं इसलिए उन्हें इस बात के लिए विवश करना कि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजें ही, उचित नहीं ।

(ख) भारत में माँ-बाप विवशता न होने तक यथा संभव स्वतः ही बच्चों को शिक्षित कराने का प्रयत्न करते हैं ताकि बच्चे पढ़-लिखकर मानव बन सकें ।

(ग) यहां गरीब मां-बाप को इस बात के लिए विवश करना कि वे अपने बच्चों को अनिवार्य रूप से शिक्षा दिलायें, उन्हें कष्ट देना है ।

(घ) भारत गरीब देश है इस कारण अभिभावकों को इस बात के लिए विवश करना उन पर कानूनी दबाव डालना कि वे अपने बच्चों को पढ़ायें ही उचित नहीं । ( )

32. लेखक के अनुसार अध्यापकों से कब तक यह आशा नहीं की जा सकती कि वे छात्रों के लिए ऊँचा आदर्श रख सकेंगे ?

(क) जब तक कि अध्यापकों में छात्रों को आदर्श बनाने की प्रेरणा नहीं उभरती ।

(ख) जब तक वे अर्द्धशिक्षित और अल्पवेतन भोगी रहेंगे ।

(ग) जब तक वे समय देकर बच्चों को आदर्श की बातें सिखाने का प्रयत्न नहीं करेंगे ।

(घ) जब तक छात्रों में उनकी बात, उनकी शिक्षा को अपनाने की लगन उनके माँ-बाप द्वारा पैदा नहीं की जायेगी ।

(च) जब तक विद्यालयों में आदर्श जीवन सम्बन्धी पाठ्यक्रम लागू नहीं किया जायेगा ( )

33. लेखक छोटी उम्र में बच्चों को स्कूल भेजने के पक्ष में क्यों नहीं है ?

(क) उसे छोटी उम्र के बच्चों को स्कूल जाने का कष्ट अनुभव कर दुःख होता है ।

(ख) उसने स्वयं बड़ी उम्र में स्कूल की पढ़ाई शुरू की थी ।

(ग) उसकी मान्यता है कि कम उम्र में ही बच्चे यदि स्कूल भेजे जायेंगे तो उनमें बुराइयां आजायेंगी ।

(घ) युवावस्था में तेजी से सीखते हैं इसलिए कम उम्र में उन्हें स्कूल भेजना व्यर्थ ही उन्हें बन्धन में डालकर उनका नुकसान करना है ।

(च) कम उम्र से बच्चों को स्कूल भेजना उनको व्यावहारिक ज्ञान से वंचित रखना है । ( )

34. "मैं गरीब की बीबी था, मुझे ही सबकी भाभी बनना पड़ा ।" इस कथन से क्या आशय है ?

(क) लेखक गरीब था इसलिए सहपाठियों ने उसे भाभी कहकर चिढ़ाया ।

(ख) अध्यापक लेखक को भाभी कहकर अपना मनोरंजन करते थे ।
(ग) भाभी संबोधन से लेखक बहुत चिढ़ता था इसलिए सब उसे चिढ़ाने के उद्देश्य से भाभी कहते थे ।
(घ) लेखक प्रिंसिपल था और शिक्षामंत्री की तुलना में छोटा या कमजोर था इसलिए अनिवार्य शिक्षा नीति के प्रस्ताव के लिए उसे मंत्री का परामर्श दाता मानकर सबने चिढ़ाया । ( )

35. "सारी कौंसिल पंजे झाड़कर मेरे पीछे पड़ गयी ।" कॉलेज के प्रिंसिपल के साथ ऐसा क्यों हुआ ?
(क) प्रिंसिपल ने अपने कॉलेज के एक चपरासी को नौकरी से अलग कर दिया था ।
(ख) उसके साथी अध्यापकों को प्रिंसिपल से इस बात की ईर्ष्या थी कि वह प्रिंसिपल बन गये थे ।
(ग) प्रिंसिपल का व्यवहार असह्य लगा करता था ।
(घ) प्रिंसिपल को लोग शिक्षामंत्री के बेहद निकट समझकर उससे ईर्ष्या करते थे और चपरासी को नौकरी से अलग कर देने पर उन्हें एक आधार मिल गया था ।
(च) प्रिंसिपल ने एक बार कौंसिल के लोगों से झगड़ा किया था ।
( )

36. "जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का । यह लगन गायब हो गई ।" प्रिंसिपल या लेखक की लगन क्यों गायब हो गई थी ?
(क) क्योंकि लेखक के लिए उसकी पत्नी ही आगे बढते रहने का सबसे बड़ा सहारा थी और वह समाप्त हो गई थी ?
(ख) क्योंकि कॉलेज से चपरासी को नौकरी से अलग कर देने के कारण पूरी कौंसिल उसके विरुद्ध हो गई थी ।
(ग) क्योंकि प्रिंसिपल को शिक्षामंत्री ने पदच्युत कर दिया था ।
(घ) क्योंकि चपरासी को निकाले जाने पर किसी ने प्रिंसिपल का साथ नहीं दिया था । ( )

37. "श्रद्धा तो ज्ञानियों और साधुओं के अधिकार की वस्तु है ।" लेखक ने ऐसा किस प्रसंग में कहा है ?
(क) लेखक कॉलेज में त्याग पत्र देने के बाद सोच विचार में रहता था और तभी उसने ऐसा सोचा था ।
(ख) लोग लेखक से विचार-विमर्श करने आये थे तब उसने अपना ऐसा विचार व्यक्त किया था ।
(ग) लेखक कॉलेज की नौकरी छोड़कर यों ही कुछ बच्चों को पढ़ाया करता

करता था और एक बार यह बात उसने बच्चों को समझाई थी ।

(घ) कॉलेज छोड़कर बच्चों को पढ़ाने में समय काटने वाले लेखक के प्रति जब एक बार डिप्टी कमिश्नर सूर्य प्रकाश ने उसके पैरों पर झुककर श्रद्धा व्यक्त की तब उसने स्वयं को ऐसा श्रद्धा का पात्र न समझकर ऐसा सोचा था । ( )

38. लेखक जैसे कॉलेज से हटकर कुछ बच्चों को पढ़ाया करता था, तब उससे आकर भेंट करने वाले डिप्टी कमिश्नर सूर्यप्रकाश के चेहरे पर एक बार ग्लानि का रंग उभरने का क्या कारण था—

(क) सूर्य प्रकाश को ध्यान हो आया था कि वह इतना उद्दण्ड था कि उसके कक्षाध्यापक या लेखक उसके उज्ज्वल भविष्य की ओर से निराश थे ।

(ख) वह लेखक उसके सामने जो समृद्धि की निन्दा कर रहा था, उसे सुनकर ।

(ग) उसे लेखक अपने सामने बहुत छोटे स्तर का प्रतीत हो रहा था और उससे मिलने आने से उसे ग्लानि हुई थी ।

(घ) उसका कक्षाध्यापक लेखक अब भी जब कि सूर्यप्रकाश डिप्टी कमिश्नर था, उसे सम्मान नहीं दे रहा था । ( )

39. 'प्रेरणा' कहानी का शीर्षक किसलिए रखा गया है—

(क) इस कहानी से यह प्रेरणा मिलती है कि ऊधमी से ऊधमी छात्र भी सुधर सकता है ।

(ख) इसमें अपने ममेरे भाई की प्रेरणा से सूर्य प्रकाश में आये सुधार का विस्तार से वर्णन हुआ है ।

(ग) सूर्यप्रकाश के ममेरे भाई की भूमिका बड़ी प्रेरणादायक रही है ।

(घ) सूर्यप्रकाश के कक्षाध्यापक का रोल प्रेरणादायक रहा है ।

(च) विद्यालय के प्रिंसिपल की प्रेरणा का वर्णन है जिसके कारण सूर्यप्रकाश में सुधार हुआ ।

40. 'प्रेरणा' कहानी का नायक कौन है —

(क) लेखक या कक्षाध्यापक (ख) विद्यालय का प्रिंसिपल

(न) सूर्यप्रकाश (घ) सूर्य प्रकाश का ममेरा भाई

(च) शिक्षामंत्री । ( )

3. एक गौ

41. हीरासिंह अपनी गरीबी से भी अपनी गाय के लिए ज्यादा दुःखी था, क्यों ?

(क) वह अपने घरवालों के प्रति अधिक लगाव नहीं रखता था ।

(ख) उसे मनुष्यों की तुलना में पशुओं के प्रति ज्यादा हमदर्दी थी।
(ग) वह अपने घरवालों का निर्वाह करने में तो समर्थ था पर गाय का निर्वाह नहीं कर पा रहा था। (घ) वह गरीबी के कारण गाय सहित घरवालों का निर्वाह नहीं कर पा रहा था और उस सुन्दरिया गाय को उसने तब से ही पाला था जब वह बछिया थी।
(च) वह सुन्दरिया गाय उसे अकारण ही घरवालों से भी ज्यादा प्रिय थी। ( )

42. हीरासिंह की गरीबी की मजबूरी में भी सुन्दरिया गाय को अपने ही गांव वालो को बेचने में क्या संकोच था ?
(क) उसे गाय को देखकर रोजाना दुख होता
(ख) गाँव का कोई भी खरीददार गाय को दुखी रखता
(ग) गाँव में ही गाय को न बेचने के नियम का उल्लंघन होता
(घ) उसे बाप-दादों के घर में बैठकर गांव के किसी व्यक्ति के घर पर अपनी गाय देखकर दुःख होता (च) गांव वालों से हीरासिंह को उलाहने सुनने के मिलने का डर था। ( )

43. सुन्दरिया की पांच रुपये ज्यादा कीमत प्राप्त होने की बात सुनकर हीरासिंह को दुःख क्यों हुआ ?
(क) इसलिए कि अब वह गाय अपने पास नहीं रख पायेगा।
(ख) ज्यादा कीमत देने में समर्थ सेठ के बड़े आदमी होने की बात सोच कर हुई ईर्ष्या के कारण (ग) यह सोचकर कि उसने सेठ से कीमत के दो सौ रुपये ही क्यों मांगे, ज्यादा क्यों न मांगे।
(घ) मांगी गई कीमत से पांच रुपये ज्यादा देने वाले सेठ से अपना अपमान हुआ महसूस कर। ( )

44. गौ की नौकरी पर न किये जाने का तो हीरासिंह को दुःख हुआ ही था, उसे इस बात से और दुख क्यों हुआ कि सेठ का विश्वास उस पर है ?
(क) उसे लगा कि विश्वास पात्र मानने के कारण सेठ अब चौकीदारी के काम से अलग गाय का काम नहीं देगा।
(ख) हीरासिंह विश्वासपात्र होना अच्छा नहीं मानता था।
(ग) उसकी दृष्टि में चौकीदारी का काम अन्य कामों से घटिया था।
(घ) चौकीदारी का काम बड़ी कड़ी मेहनत का था। ( )

45. हीरासिंह सेठ के यहां से नौकरी क्यों छोड़ गया था ?
(क) उसे अब नौकरी करके रुपये कमाने की जरूरत नहीं रह गई थी।
(ख) उसे अपने घर से दूर रहना कष्टप्रद लगता था।
(ग) सेठ के यहां गाय बंधी देखना उसके लिए असह्य हो गया था।

(घ) सेठ को बेची गई अपनी गाय की अपने प्रति ममता और उसका कष्ट देखकर। ( )

46. 'एक गो' कहानी द्वारा लेखक मुख्यतया क्या बताना चाहता है ?

(क) अपनी गाय किसी दूसरे को नहीं बेचनी चाहिए।

(ख) गाय दूसरे के यहां जाकर दूध नहीं दे पाती।

(ग) मालिक और मजदूर में अधिक दिन तक अच्छे सम्बन्ध नहीं रह पाते।

(घ) मजदूरों में मालिक के उलाहने आदि सहने की आदत नहीं होती।

(च) गाय आदि पशुओं में अपने मालिक के प्रति अपार स्नेह होता है। ( )

47. 'एक गो' कहानी का नायक कौन है ?

(क) सुन्दरिया (ख) सेठ (ग) हीरासिंह (घ) जवाहरसिंह ( )

48. यह कहानी किस प्रकार की है–

(क) सामाजिक (ख) यथार्थवादी (ग) आदर्शवादी

(घ) आदर्शवादी मनोवैज्ञानिक (च) राजनैतिक ( )

4. प्रवासी

49. "ऐसे ही वह भी एक दिन समाप्त हो जाएगा।" यह कथन गोपालन के किस भाव का सूचक है ?

(क) दुःख (ख) आवेग (ग) हर्ष (घ) विरक्ति

(च) निरर्थकता। ( )

50. 'वेद ब्रह्मा के मुख में लौट जाते, कर्म और धर्म पराजित होकर उसके उठते हुए यौवन के सामने हाहाकार करने लगते।" गोपालन के संदर्भ में इससे लेखक क्या व्यक्त करना चाहता है ?

(क) वह वेदों से मुंह मोड़ लेता था।

(ख) वह धार्मिक [illegible] न होने की चिन्ता से ग्रस्त था।

(ग) वह जवानी के जोश के आगे मजबूर था।

(घ) नारी के प्रति आकर्षण का भाव उत्पन्न होने पर वह धार्मिक भाव भुला बैठता था।

(च) वह कभी धार्मिक था ही नहीं। ( )

51. "यह पुजारी केवल पत्थर के देवता का उपासक नहीं है" इस कथन से कोमल की कौनसी अनुभूति व्यक्त होती है ?

(क) गोपालन लम्पट है

(ख) गोपालन धार्मिक ही नहीं व्यव- सायी भी है।

(ग) 'गोपालन के मन में नारी के प्रति अनुराग, आकर्षण का भी भाव है

(घ) गोपालन अधार्मिक है। ( )

52. "अपने अधिकार की मादकता को सतृष्ण उन्माद से अपने हाथ से किसी तरह भी नहीं जाने देना चाहती थी।" इस कथन से राजन के बारे में क्या व्यक्त हो रहा है ?

(क) पत्नी के नाते राजम अपने अधिकार का पूरा उपयोग करना चाहती थी
(ख) वह अधिकार प्राप्त करने के लिए बड़ी इच्छुक थी ।
(ग) उसे अधिकार प्राप्ति का घमण्ड था
(घ) वह अधिकार पाकर उन्मत्त हो उठती थी । ( )

53. "वर्ना हमारे समय में क्या यह सब होता था ?" कोमल के पिता ने वेंकटरामन का परिचय देते समय गोपालन के सामने ऐसा कहकर क्या भाव व्यक्त किया ?
(क) हमें प्रेम विवाह या लड़की द्वारा वर का स्वयं चुना जाना पसन्द नहीं
(ख) कोमल का इस उम्र में विवाह हो यह ठीक नहीं ।
(ग) कोमल और वेंकटराजन जैसे लड़के का विवाह पसंद नहीं ।
(घ) लड़की लड़के को पसंद करे और लड़का प्रस्ताव स्वीकार कर ले, यह नहीं होता था। ( )

54. कोमल के पिता से वेंकटरामन का परिचय पाने के बाद गोपालन का सिर क्यों चक्कर खाने लगा था ?
(क) वह लड़का रास्ता चलकर थक गया था ।
(ख) उसे पोस्ट मास्टर का बात करने का ढंग कष्ट दायक लगा था ।
(ग) वेंकटराजन को कोमल के पति के रूप में चुने जाने की बात से उसे आघात लगा था ।
(घ) प्रेम विवाह वाली बात गोपालन को नापसंद थी । ( )

55. "तूने आकाश की ओर हाथ बढ़ाया लेकिन यह नहीं देखा कि तेरे पैरों के नीचे जमीन तक नहीं है ।" ताताचारी ने ऐसा कह कर क्या स्पष्ट करना चाहा था ?
(क) तूने बिना सोच विचार के काम किया
(ख) तूने असंभव को प्राप्त करना चाहा
(ग) तूने गरीब होकर भी धनवान की पुत्री से विवाह की इच्छा कर गलत किया
(घ) गोपालन ने नीचे गड्ढे की परवाह न कर उछाल भरी
(च) तूने लम्पट व्यक्ति का सा आचरण किया। ( )

56. "गोपालन के रोम-रोम पर किसी ने अंगारे फेर दिए ।" कोमल द्वारा अपने विवाह में खूब दक्षिणा दिये जाने की बात सुनकर भी गोपालन को ऐसा क्यों लगा ?
(क) गोपालन कोमल से विवाह की आशा लगाये बैठा था जिस पर अब पानी फिर गया था । दक्षिणा की बात उसे व्यंग्य सी लगी ।

(ख) दक्षिणा से उसे घृणा थी।

(ग) कोमल से दक्षिणा पाना वे अपनी बेइज्जती समझता था।

(घ) गोपालन अस्वस्थ होने के कारण दक्षिणा लेने जाने में असमर्थ जो था।
( )

57. "कोमल ने स्नेह से उसकी ओर देखा जैसे उसकी शंका दूर हो चुकी थी।"
क्या वास्तव में गोपालन शंका न करने योग्य हो गया था ?

(क) नहीं, उसे कोमल के विवाह से खुशी नहीं थी।

(ख) कोमल के कथन से गोपालन को सान्त्वना मिल गई थी।

(ग) गोपालन बहुत सहनशील था।

(घ) गोपालन के बारे में शंका होनी ही नहीं चाहिए थी। ( )

58. "देख जाऊँ, इसका ठिकाना लगते भी" नयना चारी ने राजम से ऐसा कह क्या स्पष्ट करना चाहा ?

(क) यही कि मेरे जीवनकाल में ही गोपालन का विवाह हो जाय।

(ख) गोपालन मेरे सामने ही कहीं व्यवसाय जमा ले।

(ग) गोपालन मेरे जीवनकाल में ही समाप्त हो।

(घ) गोपालन का कारोबार समाप्त हो जाय। ( )

59. गोपालन का परमात्मा की सत्ता से विश्वास क्यों हट गया—

(क) क्योंकि वह मजबूत होने के बावजूद अस्वस्थ सा रहने लगा था।

(ख) उसे चक्कर आ गया था।

(ग) उसे राजम से फटकार सुनने को मिलती थी।

(घ) वह पिता की भावना का अन्दाज लगा पाने में असमर्थ जो रहता था।

(च) उसे कोमल से विवाह की तीव्र इच्छा थी पर वह पूर्ण नहीं हुई थी।
( )

60. 'गोपालन यह नहीं सुनना चाहता था कि कोमल वेंकट रामन से विवाह करके सुखी थी।' क्यों ?

(क) पहले गोपालन ने कोमल से विवाह की इच्छा की थी पर कोमल ने वेंकटरामन से शादी कर ली थी, इस कारण से।

(ख) गोपालन जन्म से ही ईर्ष्यालु प्रवृत्ति का था।

(ग) कोमल से उसकी दुश्मनी थी।

(घ) वह चाहता था कि कोमल वेंकटरामन से अलग होकर उससे विवाह करले। ( )

61. "जैसे भविष्य का भूत उसे रह-रहकर डरा देता था।" कोमल को कौन सा भूत डरा देता था ?

(क) पति के मर जाने की आशंका का।

(ख) पति के इलाज में और अधिक खर्च होने की आशंका का।
(ग) पति के मरने के बाद गोपालन द्वारा परेशान किये जाने की आशंका का।
(घ) पति के इलाज में आगे गरीब हो जाने का। ( )

62. मुझ जैसे ब्राह्मण खरीद लेना क्या तुम्हारे लिए कठिन है ?" इसमें कौन सा भाव है –
(क) घृणा (ख) व्यंग्य
(ग) क्रोध (घ) सहानुभूति
(च) ईर्ष्या। ( )

63. कोमल के पिता ने अपने दामाद की मृत्यु पर हर्ष मनाया - इसका क्या कारण था ?
(क) दामाद की शराब पीने की बुराई
(ख) पिता को दामाद कभी पसंद नहीं था
(ग) पिता से दामाद अधिक धनवान था इसलिए ईर्ष्या जो थी
(घ) पिता हरेक मरने वाले के लिए हर्ष मनाया करता था। ( )

64. "फिर एक जमींदार का क्रिया-कर्म भी तो उसकी प्रतिष्ठा के अनुकूल और अनुरूप ही होना चाहिए न ?" इसमें कोमल का कौन सा भाव व्यक्त होता है ?
(क) घमण्ड (ख) अन्धविश्वास
(ग) सामाजिक प्रतिष्ठा रखने का (घ) दिखावे का
(च) मूर्खता का। ( )

65. गोपालन ने कोमल के पति का क्रिया-कर्म कराना स्वीकार किया। इससे उसकी क्या विशेषता व्यक्त होती है ?
(क) सहनशीलता (ख) क्षमा करने का भाव
(ग) कर्त्तव्य बोध (घ) क्रोध का अभाव
(च) बदले का भाव न रखना। ( )

66. "गोपालन जड़ हो गया। चेहरे पर काला रंग पुत गया।" यहां रंग पुतने का क्या अर्थ है ?
(क) काला रंग लगना (ख) चेहरा काला पड़ जाना
(ग) शर्मिन्दा होना (घ) चेहरा कान्तिहीन होना ( )

67. 'प्रवासी' कहानी का सबसे प्रमुख पात्र कौन सा है ?
(क) गोपालन (ख) राजम
(ग) नयनाचारी (घ) कोमल
(च) वेंकटरामन। ( )

68. गोपालन ने कोमल द्वारा दी गई नोटों की गड्डी नहीं ली थी। इससे गोपालन का कौनसा भाव व्यक्त होता है ?
(क) त्याग (ख) लोभ का अभाव (ग) क्रोध
(घ) स्वाभिमान (च) नादानी। ( )

5. नौकरी पेशा

69. राधेलाल अपने घर पर सूचना देने आये हुए चपरासी की साईकिल का हैंडिल पकड़े-पकड़े सड़क तक गये थे, क्यों ?
(क) चपरासी को रास्ता दिखाने
(ख) उसे विदा करने की औपचारिकता निभाने
(ग) एक बार नाराजी दिखाने के कारण उसे खुश करने
(घ) आदत वश (च) उससे पूरी बात समझ लेने के उद्देश्य से। ( )

70. इतवार के दिन ऑफिस का चपरासी राधेलाल के घर आया था, क्यों ?
(क) राधेलाल से मिलने (ख) राधेलाल से कुछ पूछने
(ग) साहब द्वारा बुलाये जाने की सूचना देने
(घ) राधेलाल की कुशलता जानने। ( )

71. चपरासी को इतवार को घर आना राधेलाल की पत्नी को कैसा लगा ?
(क) अच्छा (ख) बुरा (ग) अपमानजनक
(घ) मूर्खता पूर्ण। ( )

72. चपरासी के लौट जाने के बाद राधेलाल ने पत्नी से जो कुछ कहा उस राधेलाल की ने कौनसी विशेषता व्यक्त होती है ?
(क) डरपोक (ख) चापलूस (ग) अपने आप अपनी प्रशसा करना
(घ) क्रोधी (च) विचारशील। ( )

73. राधेलाल कभी किसी महकमे की बुराई क्यों नहीं करते थे ?
(क) सभी महकमे अच्छे थे (ख) सभी महकमों में उन्हे आदर मिलता था
(ग) महकमों में कभी काम पाने की आशा से (घ) सभी महकमों में उनके जाने पहचाने लोग थे (च) बुराई करना पाप समझते थे।

74. राधेलाल अपने आपको क्या बताने में गर्व का अनुभव करते थे ?
(क) कस्बाती (ख) नौकरीपेशा (ग) शिक्षित (घ) क्लर्क
(च) निठल्ला। ( )

75. राधेलाल ने आफिस से लौट कर रामभरोसे से बातें करने के बाद पत्नी को मिलते ही जेब से नीबू क्यों निकाल कर दिये थे ?
(क) पत्नी बीमार थी (ख) पत्नी ने नीबू मँगवाये थे
(ग) वे पत्नी पर प्रभाव डालना चाहते थे
(घ) पत्नी कहीं नाराज न हो इसलिए। ( )

76. राधेलाल दफ्तर से प्रायः कुछ न कुछ सामान उठा लाया करते थे। ऐसा करने के पीछे उनका क्या उद्देश्य था ?
(क) वे घर में सामान बढ़ाने के लिए
(ख) चोरी करने की आदत डालने के लिए
(ग) पत्नी पर यह प्रभाव डालने कि दफ्तर में उनको बड़े अधिकार प्राप्त हैं
(घ) पत्नी को खुश करने
(च) अपने घर की दयनीय हालत सुधारने। ( )

77. दफ्तरों के सन्दर्भ में राधेलाल अपनी पत्नी के आगे जिस प्रकार की बातें अक्सर किया करते थे उनसे राधेलाल की कौन सी आदत का परिचय मिलता है ?
(क) बातूनी होने का (ख) स्वयं अपनी प्रशंसा करने का (ग) पागलपन का
(घ) सनकी पन का (च) काम कम बातें ज्यादा करने का। ( )

78. राधेलाल को रामभरोसे के मरने का समाचार पाकर तो दुःख न हुआ था पर मुख्तार साहब के पास रामभरोसे का प्रसंग आने पर वे क्यों दुखी हुए ?
(क) रामभरोसे द्वारा अपनी निन्दा की गई जानकर
(ख) मुख्तार साहब से रामभरोसे द्वारा उनके लिए नौकरी के लिए मनाकर दिये जाने की बात सुन कर
(ग) रामभरोसे की मृत्यु की बात गहराई से याद आने पर
(घ) जिनके बारे में राधेलाल को आशंका थी उन्हीं रामभरोसे द्वारा अपनी सिफारिश की गई जानकर लज्जा का अनुभव) करने से। ( )

79. इस कहानी का 'नौकरी पेशा' नाम मुख्यतया किस आधार पर रखा गया है—
(क) नौकरी करने वालों के स्वभाव (ख) नौकरी पेशा वालों की समस्याएँ
(ग) नौकरी पेशा वालों के रहन-सहन (घ) नौकरी पेशा वालों के व्यवहार। ( )

80. 'नौकरी पेशा' कहानी का नायक कौन है ?
(क) रामभरोसे (ख) राधेलाल की पत्नी (ग) दफ्तर का बाबू
(घ) मुख्तार साहब (च) राधेलाल। ( )

रानी माँ का चबूतरा

81. रानी माँ की कथा को महिलाएँ बार-बार क्यों सुनती थीं ?
(क) पुण्य बढ़ने के विश्वास से (ख) वह सुनने में अच्छी लगती थी
(ग) महिलाएं उसे सुनने के बहाने अपना फालतू समय काटती थी
(घ) कथा सुनने से उनका मनोरंजन होता था
(च) काकी का ऐसा आदेश था और महिलाएं काकी से डरती थी। ( )

82. रानी माँ कौन थी ?

(क) वह एक राजा की पत्नी थी

(ख) नगर-सेठ की पत्नी थी जिसने साधु के कहने से बच्चे के प्राण बचाने सात दिन अन्न न खाने के कारण मृत्यु के मुख में चली गई थी।

(ग) वह गाँव की साधारण महिला थी।

(घ) वह देवो की अवतार थी। ( )

83. काकी जब रानी माँ की कथा कह रही थीं तब बीच में धन्नी ने रानी माँ के बारे में किस उद्देश्य से कथा संबंधी शेष बातें याद दिलाई थीं ?

(क) वही कथा सुनाना चाहती थी।

(ख) वह यह दिखाना चाहती थी कि वह भी रानी माँ की पूरी कथा जानती है

(ग) वह कथा न जानते हुए भी अपने आप को कथा की जानकार बताना चाहती थी।

(घ) उसे बीच में बोलने की आदत थी। ( )

84. रानी माँ के चबूतरे पर गाँव की महिलाएं किस दिन या तिथि को दिया जलाने और मनाने मानौती जाती थी ?

(क) हर दिन (ख) सप्ताह में एक दिन (ग) हर पूर्णमासी को

(घ) हर अमावस्या को (च) रविवार को। ( )

85, रानी ने धन्नी को किस लिए बुलवाया था ?

(क) धन्नी को रानी माँ की कथा सुनाने।

(ख) उससे रानी माँ की कथा सुनने।

(ग) उसे रानी माँ के चबूतरे को दिखाने।

(घ) उसके ब्याह के चार साल बीतने पर भी पुत्र न होने के कारण उससे रानी माँ के चबूतरे पर दिया जलवाकर मनौती मनवाने। ( )

86 काकी का रानी माँ के बारे में विश्वास था कि ?

(क) रानी माँ का आशीर्वाद कभी व्यर्थ नहीं जाता।

(ख) रानी माँ कभी नाराज नहीं होती।

(ग) रानी माँ मुश्किल से प्रसन्न होती है।

(घ) रानी माँ की श्रद्धपूर्वक मनौती मनाने पर भी किसी-किसी को फल मिलता है। ( )

87. धन्नी गांव आने को क्यों अच्छा मान रही थी ?

(क) उसे ऐसी रानी मां के चबूतरे पर दिया जलाने का अवसर मिलेगा जिसका आशीर्वाद कामनाएं पूरी कर देता है।

(ख) उसे काकी से रानी मां की कथा जो सुनने का मौका मिला था।

(ग) उसे गांव की महिलाओं से मिलने का अवसर मिला था।

(घ) गाँव को महिलाओं ने गांव आने के कारण उसकी प्रशंसा की थी। ( )

88. काकी ने गुलाबी के बारे में ऐसा क्यों कहा था कि वह तो "सारी बस्ती पर किसी दिन पाप ला देगी।"
(क) काकी की गुलाबी से दुश्मनी थी।
(ख) गुलाबी जाति की कसाई थी।
(ग) वह अपनी हेकड़ी के कारण रानी मां के चबूतरे के पास जो नहीं जाती थी।
(घ) लोगों ने काकी से गुलाबी की बुराई करवाई थी।
(च) गुलाबी चरित्रहीन थी। ( )

89. काकी को गुलाबी के प्रति सहानुभूति नहीं थी, क्यों—
(क) गुलाबी छोटी जाति की थी।
(ख) उसने अपने पति को अपने घर से निकाल दिया था।
(ग) वह चरित्रहीन थी।
(घ) वह पागल थी।
(च) वह काकी की निन्दा करती थी। ( )

90. काकी को गुलाबी द्वारा अपने पति का घर से निकाला जाना अच्छा लगा था क्योंकि—
(क) पति सदा बीमार रहता था।
(ख) वह दारू पीता था और कुछ भी न कमाता था।
(ग) वह खूब कमाता था पर दारू पीता था।
(घ) वह पागल था।
(च) वह बड़ा निर्दयी था। ( )

91. धन्नी गुलाबी का एक बच्चा लेने के लिए क्यों इच्छुक थी ?
(क) गुलाबी अपने अधिक बच्चों के कारण परेशान थी।
(ख) गुलाबी अपना एक बच्चा किसी को देना चाहती थी।
(ग) धन्नी के कोई सन्तान न थी और गुलाबी के बच्चे भार लगते थे।
(घ) गांव वालों ने धन्नी से गुलाबी का एक बच्चा लेने के लिए कहा था। ( )

92. "बड़ी धर्मात्मा बन बैठी है" कह कर गुलाबी ने काकी पर व्यंग्य क्यों किया था ?
(क) काकी से उसकी दुश्मनी थी।
(ख) काकी उसे ढोंग करने वाली प्रतीत होती थी।
(ग) काकी का यह कथन उसे बुरा लगता था कि वह बच्चों को कोठरी में बन्द करके मारेगी।
(घ) गुलाबी ने अकारण ही ऐसा कहा था। ( )

93. गुलाबी की उपस्थिति से स्त्री और पुरुष क्यों चौंक पड़े थे ?
(क) गुलाबी बिना बुलाये उपस्थित हो गई थी।
(ख) गुलाबी की उपस्थिति से झगड़े-झंझट की आशंका थी।
(ग) उसे कोई अपने बीच उस समय उपस्थित नहीं देखना चाहता था।
(घ) गुलाबी आई ही इस ढंग से थी। ( )

94. गांव के लोगों को क्या परेशानी थी, यदि गुलाबी अपने बच्चों को मार देती तो ?
(क) गांव वालों को बच्चों की हत्या का पाप लगने का डर था।
(ख) गुलाबी अपने बच्चों को मारकर गांव वालों का नाम लगा सकती थी।
(ग) गांव वालों को डर था कि गुलाबी बच्चों को मार दे तो पता नहीं हम पर क्या इल्जाम लगाये।
(घ) बच्चों के मारे जाने की बात से उन्हें स्वाभाविक रूप से दुःख होता। ( )

95. "बड़े अपने बनते है" ऐसा कहकर गुलाबी ने गांव वालों में अपनत्व की भावना का अभाव किस आधार पर व्यक्त किया था ?
(क) वह यों ही गाँव वालों पर आरोप लगा रही थी।
(ख) वह गाँव वालों को निर्दयी माने बैठी थी।
(ग) वह स्वयं अपनत्व की भावना से रहित थी इसीलिए गाँव वालों पर आरोप लगा रही थी।
(घ) उसने उदाहरण दिया था कि बस्ती वालों ने नाली में गिर जाने पर मेरे बच्चे को निकाला नहीं था। ( )

96 सवेरे सात बजे की सीटी बजते ही गुलाबी को घर से जल्दी जाने की क्या विवशता थी ?
(क) वह सात बजे के बाद घर पर रहने में डरा करती थी।
(ख) उसे सात बजे गाड़ी पकड़नी थी।
(ग) उसे डर था कि वह अब जल्दी न गई तो ठेकेदार उसके स्थान पर किसी और को मजदूरी दे देगा।
(घ) वह काम पर सही समय पर पहुँचना अपना सिद्धान्त मानती थी।
(च) वह ड्यूटी पर देर से पहुँचकर अपने अधिकारी से शिकायत सुनना बर्दास्त न करती थी। ( )

97. "कोस रही हूं उस दारूखोर को जो मेरी जान को ये कीड़े-मकोड़े छोड़ गया" गुलाबी के इस कथन में कौनसा भाव है।

(क) उलाहना (ख) क्रोध
(ग) दुःख और उलाहना मिश्रित क्रोध (घ) ईर्ष्या
(च) विरक्ति। ( )

98. काका ने गुलाबी को फिर क्यों नहीं टोका ?
(क) काका को गुलाबी से डर लगता था।
(ख) काका शांत ही रहने के आदि थे।
(ग) काका ने गुलाबी के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहा था।
(घ) पहले गुलाबी ने उन्हें दो-चार बातें सुना देने की चेतावनी दे दी थी। ( )

99. मेवा पर हरी चूड़ियां कहां से आई ?
(क) वह चुराकर लाई थी (ख) वह उन्हें खरीद कर लाई थी
(ग) वे उसे रास्ते में पड़ी मिली थी। (घ) वे उसे रामेसुर ने दी थी
(च) वे उसे कहीं से दान में मिली थी। ( )

100. "चार जने रहते हैं तो कहना सुनना तो चलता ही रहता है बहन।" ये शब्द किसने कहे ?
(क) धन्नी ने (ख) काकी ने (ग) गुलाबी ने
(घ) रामी ने (च) काका ने। ( )

101. सरकारी 'शिशु सुरक्षा केन्द्र' को देखकर धन्नी ने क्या सपना संजोया ?
(क) शिशु सुरक्षा केन्द्र में नौकरी करने का
(ख) गाँव में आकर रहने का
(ग) उसी केन्द्र में अपने बच्चे को रखने का
(घ) उस केन्द्र में कुछ दान देने का। ( )

102 "तेरी कबर खोद रही हूं।" ये शब्द किसने किससे कहे ?
(क) काकी ने काका से (ख) धन्नी ने गोपाल से
(ग) रानी ने गुलाबी के लड़के से (घ) गुलाबी ने गोपाल से। ( )

103 गुलाबी के पास वाली कोठरी में कौन रहती थी ?
(क) धन्नी (ख) काकी (ग) रामी
(घ) कोई अन्य महिला। ( )

104. धन्नी द्वारा रानी माँ के चबूतरे पर दीया जलाने का क्या परिणाम निकला ?
(क) उसका समय बर्बाद हुआ
(ख) दीये पर खर्च करते रहने से उसका घर बर्बाद हो गया
(ग) उसको निराशा हुई
(घ) उसका बांझपन दूर हो गया। ( )

105. मरने से पहले भी गुलाबी ने अपने बच्चे को गाँव वालों की देखभाल के लिए क्यों नहीं सौंपा था ? इससे उसकी क्या विशेषता व्यक्त होती है ?
(क) जिद्दी (ख) क्रोध करने वाली (ग) स्वाभिमानी
(घ) संकोची ( )

7. गौरूगाड़ी के यात्री

106. "इस तरह मन मारकर बैठने से क्या होगा ?" रामजी मन मार कर क्यों बैठा था ?
(क) वह बीमार था (ख) नाराज था (ग) चिंतित था
(घ) बीकानेर पर जोधपुर की सेना के द्वारा आक्रमण किये जाने के कारण ( )

107. रामजी को किस बात का गर्व था ?
(क) उन मेवाड़ियों का वंशज होने का जिन्होंने माँ के दूध को नहीं लजाया था ।
(ख) गाड़िया लोहार होने का
(ग) वीर होने का
(घ) बीकानेर का नमक खाने का । ( )

108. रामजी को जोधपुर सेना का सामना करने की ज्यादा प्रेरणा किस बात से मिलती थी ?
(क) मेवाड़ी होने की बात से (ख) गाड़िया लोहार होने से
(ग) अपने पूर्वजों के त्याग, बलिदान और वीरता की भावना से
(घ) अपनी शारीरिक शक्ति के ध्यान से । ( )

109. अकेले रामजी के युद्ध में जाने पर राजपूत नारियों पर क्या प्रतिक्रिया हुई ?
(क) उन्होंने दुःख व्यक्त किया
(ख) वे राजपूत जाति को अपमानित महसूस करने लगी ।
(ग) उन्होंने अपने पतियों के आगे चूड़ियाँ और लहंगे ला कर रख दिये ।
(घ) वे शर्म से छिपकर बैठ रहीं
(च) वे स्वयं युद्ध करने निकल पड़ी । ( )

110. राम जी के अकेले ही युद्ध में जाने का समाचार सुनकर किसने युद्ध की बागडोर संभाल ली थी ?
(क) ठाकुर तेजसिंह और कर्मसेन ने
(ख) ठाकुर पृथ्वीराज और हिन्दसिंह ने
(ग) उदयसिंह ने (घ) बिहारीदास ने । ( )

111. रामजी लोहार के मर जाने के बाद जेठा ने क्या किया ?
(क) वह सती हो गई (ख) वह बेहोश हो गई
(ग) वह गौरन गाड़ी में बच्चों को बिठाकर प्रस्थान कर गई
(घ) वह जहां रह रही थी वहीं जीवन यापन करती रही । ( )

112. "गौरन गाड़ी के यात्री" कहानी का नायक कौन है ?
(क) ठा. पृथ्वीराज (ख) हिन्दसिंह (ग) अजीतसिंह
(घ) जोरावरसिंह (च) रामजी लोहार । ( )

सरस एकांकी

1. कौमुदी महोत्सव

1. "कुसुमपुर का उत्साह एक ढाल की तरह है जिस पर विद्रोह की तलवार भी कुण्ठित हो जायेगी ।" वसुगुप्त ने इसमें किसके विद्रोह का संकेत किया है ?
(क) नन्द का (ख) कुसुमपुर की जनता का
(ग) ग्रीक सेना का (घ) चाणक्य का
(च) बाहरी शत्रु का । ( )

2. अन्तपाल यशोवर्मन को क्या संदेह था ?
(क) चन्द्रगुप्त के विरुद्ध कुसुमपुर की जनता के विद्रोह का
(ख) ग्रीक सेना के आक्रमण का
(ग) नन्दराजा के आक्रमण का
(घ) वसुगुप्त के षडयंत्र का
(च) नन्द के प्रति राजभक्ति रखने वाले किसी के षड़यंत्र का ( )

3. चन्द्रगुप्त के सैन्य संचालन पर किसका प्रभाव था ?
(क) ग्रीक सैन्य संचालन के तरीके का (ख) नन्दराजा का
(ग) शकों का (घ) किसी का नहीं ।

4. "युद्ध की भैरवी ने काषाय वस्त्र धारण कर लिये हैं और वह संन्यासिनी हो गई है ।" ऐसा कहकर चन्द्रगुप्त कुसुमपुर के बारे में क्या स्पष्ट करना चाहता है ?
(क) कुसुमपुर के लोगों ने संन्यास ले लिया है
(ख) नन्द राजा संन्यासी हो गये थे ।
(ग) राक्षस ने गेरुआ वस्त्र धारण कर लिये हैं ।
(घ) कुसुमपुर के लोगों में युद्ध का उत्साह नहीं रह गया है । ( )

5. "ऐसे चक्रव्यूह की रचना की है जिसमें अराजकता का पथ मृत्यु-दीवार पर जाकर समाप्त होता है ।" इस कथन से क्या तात्पर्य है ।
(क) अराजकता समाप्त हो गई है ।

(ख) अराजकता रोकने के लिए एक दीवार बनाई गई है।

(ग) अराजकता फैलाने वाले को मृत्यु-दण्ड भोगना पड़ता है।

(घ) मृत्यु को रोकने का प्रयास किया गया है। ( )

6. नन्दवंश चिर निद्रा में किसकी नीति के परिणाम स्वरूप सो सका ?

(क) राक्षस नीति से (ख) चन्द्रगुप्त की नीति से

(ग) चाणक्य की नीति से (घ) ग्रीक सेना के संचालन की नीति से। ( )

7. "राजनीति कृपाण की धार का मार्ग है।" चन्द्रगुप्त के इस कथन का क्या आशय है ?

(क) राजनीति कृपाण से चलती है।

(ख) राजनीति कृपाण की धार की तरह कमजोर होती है।

(ग) वह कृपाण की धार की तरह सूक्ष्म होती है।

(घ) राजनीति के लिए कृपाण की धार पर चलने वाले की तरह बहुत ही सजग रहना पड़ता है। ( )

8. "मैं आचार्य चाणक्य के चक्रव्यूह की मृत्यु-दीवार को जीवन का प्रकाश-स्तम्भ बनाना चाहता हूँ।" ऐसा कहकर चन्द्रगुप्त क्या बताना चाहता है।

(क) वह मृत्यु-दण्ड देने के बजाय लोगों में नया जीवन लाना चाहता है।

(ख) वह दीवार को तोड़ना चाहता है।

(ग) वह दीवार के नीचे मरे हुओं को जीवन देना चाहता है।

(घ) वह अपनी नीति में मृत्यु-दण्ड का विधान करना चाहता है। ( )

9. "मैं आचार्य चाणक्य के चक्रव्यूह की मृत्यु-दीवार को जीवन का प्रकाशस्तम्भ बनाना चाहता हूं।" चन्द्रगुप्त का यह कथन किसकी प्रतिक्रिया के रूप में है ?

(क) वसुगुप्त की प्रार्थना की

(ख) नन्दराजा की नीति की

(ग) अराजकता फैलाने वालों को मृत्यु दण्ड देने की चाणक्य की नीति की।

(घ) ग्रीक बादशाह की नीति की प्रतिक्रिया के रूप में। ( )

10. "कौमुदी महोत्सव" के आयोजन की घोषणा किसने की ?

(क) चाणक्य ने (ख) वसुगुप्त

(ग) यशोवर्मन ने (घ) राक्षस ने

(च) चन्द्रगुप्त ने ( )

11. "आपके प्रवेश ने सिंह-द्वार का नाम सार्थक किया।" वसुगुप्त के इस कथन से उसका कौनसा भाव व्यक्त होता है ?

(क) चापलूसी का (ख) ईर्ष्या का
(ग) स्वामित्व का (घ) उदासीनता का
(च) वैमनस्य का ( )

12. चन्द्रगुप्त ने वसुगुप्त को समाहर्त्ता का नया पद उसकी किस विशेषता के आधार पर दिया था ?
(क) तेजस्विता (ख) वीरता
(ग) ईमानदारी (घ) कर्त्तव्यनिष्ठा
(च) प्रसन्न कर देने वाली बात कहने की ( )

13. समाहर्त्ता का क्या काम होता था ?
(क) दण्ड देना (ख) कर एकत्र करना
(ग) न्याय करना (घ) संधि करना
(च) पुरस्कार दना । ( )

14. "कौमुदी महोत्सव' के लिए सारा व्यय कहाँ से देने की घोषणा की गई थी ?
(क) राजकोष से (ख) चन्द्र कोष से
(ग) सेना के खर्च से (ग) जनता के चन्दा से ( )

15. राजा महापद्म कौन था ?
(क) क्षत्रिय (ख) वैश्य
(ग) ब्राह्मण (घ) शूद्र । ( )

16. "कौमुदी महोत्सव" के अवसर पर राजनर्तकी के नृत्य का सुझाव किसने दिया था ?
(क) चन्द्रगुप्त (ख) चाणक्य
(ग) यशोवर्मन (घ) वसुगुप्त
(च) प्रजाजनों ने । ( )

17. वसुगुप्त ने राजनर्तकी के नृत्य का क्या आधार बताया था ?
(क) प्रजा का मनोरंजन कराना (ख) चन्द्रगुप्त को विश्राम दिलाना
(ग) चाणक्य का मनोरंजन कराना
(घ) राज्य कर्मचारियों का मनोरंजन कराना
(च) राज्य परम्परा का पालन करना ( )

18. चन्द्रगुप्त को वसुगुप्त पर कभी-कभी सन्देह होता था, क्योंकि—
(क) वह नन्द के राज्य का था (ख) वह षड़यन्त्रकारी था
(ग) उसने हानि पहुँचाने की चेतावनी दे रखी थी
(घ) वह पहले भी नुकसान कर चुका था
(च) वह अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा करता था । ( )

19. वसुगुप्त को यशोवर्मन से अपना अपमान कैसे महसूस हुआ ?
(क) यशोवर्मन ने उसे अपशब्द कहे थे
(ख) उसने चन्द्रगुप्त से उसकी शिकायत की थी
(ग) वसुगुप्त को आक्रमण जैसा संदेह हुआ था
(घ) यशोवर्मन ने सम्राट से वसुगुप्त की नियुक्ति के बारे में चाणक्य से पूछने की बात कही थी । ( )

20. "यशोवर्मन ! यह राजकक्ष है, समरांगण नहीं ।" ऐसा चन्द्रगुप्त ने क्यों कहा था ?
(क) वसुगुप्त के यह कहने पर कि तुम मुझे द्वन्द्व युद्ध के लिए प्रेरित करते हो, यशोवर्मन ने द्वन्द्व युद्ध के लिए चन्द्रगुप्त से आज्ञा चाही थी ।
(ख) यशोवर्मन वसुगुप्त से द्वन्द्व युद्ध कर उठा था ।
(ग) यशोवर्मन वसुगुप्त को द्वन्द्व युद्ध के लिए चुनौती दे रहा था ।
(घ) यशोवर्मन राजकक्ष में युद्ध की चर्चा कर रहा था । ( )

21. राजनर्तकी के नृत्य की चन्द्रगुप्त से स्वीकृति प्राप्त करने से पहले ही वसुगुप्त ने नर्तकी को सुसज्जित क्यों करा रखा था ?
(क) ताकि सम्राट की स्वीकृति मिलते ही नर्तकी तुरन्त उपस्थित करा जा सके ।
(ख) सम्राट पर अच्छा असर डालने
(ग) सम्राट से स्वीकृति मिलने की उसे पूरी आशा थी ।
(घ) उसे स्वीकृति की आशा थी और वह शीघ्र ही सम्राट को समाप्त करने की योजना पूरी करना चाहता था ।

22. चन्द्रगुप्त ने कहां शिक्षा पाई थी ?
(क) पटना (ख) नालन्दा (ग) तिब्बत (घ) तक्षशिला । ( )

23. तक्षशिला में कितने विषयों की शिक्षा दी जाती थी ?
(क) सात (ख) पाँच (ग) ग्यारह
(घ) अठारह (च) बारह ( )

24. कात्यायन कौन थे ?
(क) वसुगुप्त के साथी (ख) पाणिनि के साथी
(ग) तक्षशिक्षा में चन्द्रगुप्त के मित्र (घ) चाणक्य के सहपाठी ( )

25. वह कौन व्यक्ति था जिसके समान बुद्धि और अंतर्दृष्टि में चन्द्रगुप्त समग्र आर्यावर्त में किसी को न मानता था—

(क) यशोवर्मन (ख) कात्यायन
(ग) राक्षस (घ) चाणक्य
(च) पाणिनि । ( )

26. आचार्य चाणक्य को तक्षशिला में कौन अपने पास रखने का इच्छुक था ?
(क) तक्षशिला के आचार्य (ख) तक्षशिला का शासक आम्भीक
(ग) तक्षशिला की जनता (घ) वहाँ के प्रतिष्ठित नागरिक
( )

27. तक्षशिला में चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को क्या आश्वासन दिया था ?
(क) तक्षशिला से भाग चलने का (ख) आम्भीक की आज्ञा न मानने का
(ग) एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना करने का
(घ) नन्द का राज्य छीनने का। ( )

28 चाणक्य की मानवीय हृदय को पहचानने की अन्तर्दृष्टि की प्रशंसा किसने की है—
(क) यशोवर्मन (ख) चन्द्रगुप्त
(ग) वसुगुप्त (घ) पुष्पदन्त
(च) कात्यायन । ( )

29. चन्द्रगुप्त का चाणक्य से कौमुदी महोत्सव के सम्बन्ध में परामर्श नहीं हो पाया क्यों ?
(क) उसने ऐसा चाहा न था (ख) चाणक्य ने परामर्श नहीं दिया था
(ग) वसुगुप्त के सिखाने से चन्द्रगुप्त ने परामर्श लिया न था
(घ) संग्राम की उलझनों के कारण अवकाश न मिलने से
(च) चन्द्रगुप्त ऐसा करना भूल गया था। ( )

30. वसुगुप्त राजनर्तकी का नृत्य शीघ्र कराना चाहता था, इसलिए कि—
(क) कहीं चन्द्रगुप्त का विचार न बदल जाय
(ख) कहीं चन्द्रगुप्त चाणक्य से इस बारे में परामर्श न कर ले
(ग) कहीं चाणक्य वसुगुप्त को भगा न दें
(घ) कहीं राजनर्तकी ही बाद में नृत्य करने से मना न कर दे। ( )

31. यशोवर्मन ने राजनर्तकी अलका के बारे में कहा था कि—
(क) वह दुष्टा है (ख) वह नृत्य कला में पारंगत नहीं है
(ग) वह निर्दोष नहीं है (घ) वह षड़यन्त्र करने वाली है। ( )

32. चन्द्रगुप्त ने अलका के बारे में अच्छी धारणा न रखते हुए भी नृत्य की अनुमति क्यों दी ?
(क) महोत्सव की शोभा बढ़ाने और जनता को सन्तोष देने
(ख) वसुगुप्त की बात रखने

(ग) अलका को इस बहाने देखने
(घ) कला को महत्त्व देने
(च) जनता का आग्रह पूरा करने । ( )

33. राजनीति में राजनर्तकी का चन्द्रगुप्त क्या महत्त्व मानता है ?
(क) उससे राजनीति की कठोरता का प्रजा की दृष्टि से ओझल रखने का
(ख) प्रजा का मनोरंजन करने का
(ग) कला को महत्त्व प्रदान करने का
(घ) राजा का मनोरंजन करने का । ( )

34. चन्द्रगुप्त की दृष्टि में राजनीति कृपाण है तो राजनर्तकी क्या है ?
(क) कृपाण की धार (ख) उसकी म्यान (ग) कृपाण की चमक
(घ) कृपाण का वार (च) कृपाण की परुषता । ( )

35. नृत्य समारोह में चाणक्य के सम्मिलित होने का सुझाव किसने दिया था ?
(क) चन्द्रगुप्त (ख) वसुगुप्त
(ग) अलका (घ) यशोवर्मन
(च) पुष्पदन्त । ( )

36. नृत्य समारोह में चाणक्य को सम्मिलित किये जाने के सुझाव के बारे में चन्द्रगुप्त ने क्या कहा था—
(क) मुझे कोई आपत्ति नहीं (ख) चाणक्य को आने की जरूरत नहीं
(ग) यह उनके देखने योग्य नहीं (घ) चाणक्य को फुर्सत नहीं
(च) चाणक्य नृत्य पसंद नहीं करते । ( )

37. चन्द्रगुप्त की नारी के बारे में क्या धारणा थी ?
(क) नारी विलासिता की सामग्री है
(ख) नारी बलपूर्वक विलासिता की सामग्री नहीं बनायी जा सकती
(ग) नारी ही पुरुष को विलास के लिए लुभाती है
(घ) नारी का विलास से कोई मतलब नहीं होता । ( )

38. चन्द्रगुप्त ने राजनर्तकी अलका को क्या पुरस्कार देना चाहा था ?
(क) राज्य (ख) प्रशस्तिपत्र
(ग) अपने गले की मोतियों की माला (घ) अपने कोष से धन
(च) कोई और ऊँचा पद ( )

39. "सम्राट ! आग बुझ जाने पर भी आग की राख गरम रहती है ।" ऐसा कहने का चाणक्य का क्या आशय था ?
(क) नंद की पराजय के बाद अभी अलका खतरा हो सकती है

(ख) अलका का शरीर राख की तरह गर्म है
(ग) वातावरण में अभी बहुत गर्मी है।
(घ) सब ओर अभी युद्ध का वातावरण विद्यमान है। ( )

40. "कैसे मान बैठे कि कुसुमपुर की आग इतनी शीतल हो गई है कि उसमें कुसुमों की क्यारियाँ सजायी जायें ?"—यहां कुसुमों की क्यारियां शब्द किसकी ओर संकेत कर रहे हैं ?
(क) फूलों की क्यारियों की ओर (ख) महोत्सव की ओर
(ग) राजनर्तकी के नृत्य की ओर (घ) राजनीति की चर्चा की ओर। ( )

41. चन्द्रगुप्त ने राजनर्तकी अलका के नृत्य का आयोजन कराया। चाणक्य को चन्द्रगुप्त कैसा प्रतीत हुआ ?
(क) विवेक सहित (ख) समझदार
(ग) गैर जिम्मेदार (घ) विलासी
(च) दूसरों की बातों में आने वाला। ( )

42. वसुगुप्त और अलका को बन्दी किसने बनवाया ?
(क) चन्द्रगुप्त (ख) यशोवर्मन (ग) पुष्पदन्त (घ) चाणक्य। ( )

43. चाणक्य की दृष्टि में कौमुदी महोत्सव को शुरू करने की आज्ञा कैसी थी ?
(क) किस मनचले बालक की हठ की तरह
(ख) किसी ना समझ व्यक्ति की आज्ञा की तरह
(ग) गैर जिम्मेदार शासक की आज्ञा की तरह
(घ) विलासी व्यक्ति की आज्ञा की तरह ( )

44. चाणक्य के गर्व की चिनगारी किससे बढ़ सकती थी ?
(क) स्वर्ग के राज्य से (ख) बड़े साम्राज्य की प्राप्ति से
(ग) अपमान से (घ) ईर्ष्या से। ( )

45. A चाणक्य चन्द्रगुप्त के शासन की सुदृढ़ता का आधार किसे मानता था ?
(क) अपनी राजनीति को (ख) चन्द्रगुप्त की सूझबूझ को
(ग) वसुगुप्त की सहायता को (घ) यशोवर्मन की राजनीति को। ( )

45. B कौमुदी महोत्सव की घोषणा रोक देने के अपराध के लिए चाणक्य को चन्द्रगुप्त ने क्या सजा दी ?
(क) उसे देश निकाला दिया (ख) उसे जेल में डलवा दिया

(ग) उसे महामंत्री पद से हटा दिया (घ) उस पर जुर्माना किया
(च) उससे अपशब्द कहे । ( )

46. चाणक्य को क्या पसन्द नहीं था ?
(क) चुगली (ख) चापलूसी (ग) झूठा आरोप
(घ) अपमान (च) किसी का घमंड । ( )

47. "आज अपने सृष्टि-सागर का विष मैं ही पी रहा हूं ।" यहां सृष्टि-सागर का विष का क्या अर्थ है ?
(क) जिसे राजा बनाया उसी से अपमान
(ख) संसार रूपी समुद्र का विष
(ग) रचे गये समुद्र का जहर
(घ) रचना करने की गलती का कष्ट । ( )

48. "आज से मैं समस्त राजनीति अपने बाहुबल में केन्द्रित कर कुसुमपुर का शासन करूंगा।" ये शब्द किसने किससे कहे ?
(क) चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से (ख) चन्द्रगुप्त ने वसुगुप्त से
(ग) चन्द्रगुप्त ने राक्षस से (घ) वसुगुप्त ने यशोवर्मन से
(च) चन्द्रगुप्त ने चाणक्य से । ( )

49. "महामंत्री मत कहो, मौर्य ! मैं अब तुम्हारा महामंत्री नहीं हूं ।" ये शब्द चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से क्यों कहे ?
(क) चाणक्य महामंत्री का पद त्याग चुका था
(ख) चाणक्य को चन्द्रगुप्त पर क्रोध आ रहा था
(ग) चाणक्य महामंत्री पद को बोझ मानता था
(घ) चाणक्य अब शासक बन गया था । ( )

50. किन्तु जाने के पूर्व अपने नवीन समाहर्ता वसुगुप्त तथा राजनर्तकी अलका पर लगाये हुए लांछन का निराकरण करना होगा ।" इस कथन से चन्द्रगुप्त का कौन सा भाव व्यक्त होता है ?
(क) सुझाव देने का (ख) आदेश (ग) प्रार्थना ।
(घ) क्रोध (च) सनक । ( )

51. चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के सामने किस को कुसुमपुर में षड़यंत्रों का जाल बुनने वाला बताया था ?
(क) राजनर्तकी को (ख) वसुगुप्त को ।
(ग) राक्षस को (घ) पुष्पदन्त को । ( )

52. बन्दी वसुगुप्त और अलका ने चन्द्रगुप्त से शिकायत की थी कि ?
(क) हमारा अपमान हुआ है ।
(ख) हमें शारीरिक कष्ट हुआ है ।

(ग) हमे पीटा गया है।
(घ) चाणक्य ने अकारण का शक किया है।
(च) हमारे साथ पक्षपात का रुख अपनाया गया है! ( )

53. राजनर्तकी अलका से तुम्हारा परिचय कब हुआ, वसुगुप्त से यह किसने पूछा था ?
(क) चन्द्रगुप्त ने (ख) यशोवर्मन ने
(ग) चाणक्य ने। (घ) सैनिक ने। ( )

54. वसुगुप्त ने चाणक्य के सामने महाराज नन्द के कौन से उत्सव में सम्मिलित होना स्वीकार किया था ?
(क) होली (ख) दीपावली (ग) बसन्तोत्सव (घ) पुरस्कार वितरण
(च) विजयादशमी। ( )

55. राजनर्तकी ने आसव का पान करने के लिए चाणक्य के सामने मना क्यों किया था ?
(क) वह जानती थी कि वही. आसव वसुगुप्त को पिलाया जायेगा।
(ख) वह आसव पान करवा बुरा मनती थी।
(ग) वह आसव कभी पीती ही नहीं थी।
(घ) वह चाणक्य के आदेश से आसव का पान करना स्वाभिमान के खिलाफ समझती थी।
(च) वह डरती थी कि चाणक्य ने आसव में जहर न मिलवा दिया हो।

56. अलका राजनर्तकी के होठों से लगा आसव पान करते ही वसुगुप्त की हालत इतनी क्यों खराब हुई कि उसके प्राण ही छूट गये ?
(क) वसुगुप्त को आसव पीने की पहले आदत नहीं थी।
(ख) अलका विषकन्या के होठों से लगे आसव में विस का प्रभाव आ गया था।
(ग) वसुगुप्त को बलपूर्वक आसव पिलाये जाने से गहरा आघात पहुँचा था।
(घ) वह ज्यादा आसव पी गया था।
(च) वह पहले ही मरणासन्न था। ( )

57. वसुगुप्त के मरने पर अलका चन्द्रगुप्त के चरणों पर क्यों गिरना चाहती थी ?
(क) वह चन्द्रगुप्त से क्षमा माँगने के लिए अधिक विनमता दिखाना चाहती थी
(ख) वह चाणक्य द्वारा प्रश्न पूछे जाने से थक गई थी।
(ग) विषकन्या वह उसके चरणों पर गिर कर चरणों में अपनेदाँत चुभाकर उसे मार देना चाहती थी।
(घ) जल्दी में उसे ऐसा करने का ही उपाय सूझा था।

58. वसुगुप्त ने कौमुदी महोत्सव का चन्द्रगुप्त के सामने प्रस्ताव किस की प्रेरणा से किया था ?
(क) अलका की प्रेरणा से (ख) अपने मन से

(ग) कुसुमपुर की जनता के कहने से (घ) राजमन्त्री राक्षस के कहने से ( )

59. राजमन्त्री राक्षस ने चन्द्रगुप्त को मरवाने की क्या चाल चली थी ?
(क) चन्द्रगुप्त की चाणक्य से दुश्मनी कराकर मरवाने की।
(ख) वसुगुप्त को विश्वासपात्र बनवाकर उसी के द्वारा मरवाने की।
(ग) कौमुदी महोत्सव में भुलाकर आक्रमण द्वारा समाप्त करने की।
(घ) वसुगुप्त द्वारा कौमुदी महोत्सव का प्रस्ताव कराकर विष कन्या अलका द्वारा मरवाने की। ( )

60. चन्द्रगुप्त का नवीन समाहर्ता वसुगुप्त वास्तव में कौन था ?
(क) नन्द के राज्य में महत्वपूर्ण पद पर रहा नागरिक।
(ख) राक्षस का गुप्तचर (ग) चन्द्रगुप्त के बाहरी शत्रु का व्यक्ति
(घ) अलका राजनर्तकी द्वारा कहीं से लाया गया व्यक्ति। ( )

61. चन्द्रगुप्त ने बाद में चाणक्य के सामने यह क्यों कहा था कि कौमुदी महोत्सव नहीं होगा ?
(क) राज्य छोड़कर जाते हुए चाणक्य को खुश करके रोकने के लिए।
(ख) कौमुदी महोत्सव का प्रस्ताव करने वाले वसुगुप्त के समाप्त हो जाने के कारण।
(ग) कुछ बाधाएँ आने के कारण।
(घ) जनता को कौमुदी महोत्सव की आवश्यकता न रह जाने के कारण। ( )

62. समाहर्ता वसुगुप्त राक्षस का गुप्तचर था और राजनर्तकी अलका विषकन्या इस सत्य का उद्घाटन किसने किया ?
(क) चन्द्रगुप्त ने (ख) यशोवर्मन ने (ग) राक्षस ने।
(घ) चाणक्य ने (च) पुष्पदन्त ने।

63. यदि प्रस्तावित ढंग से कौमुदी महोत्सव सम्पन्न हो जाता तो क्या दुष्परिणाम होता ?
(क) चाणक्य नाराज हो जाता
(ख) चाणक्य और चन्द्रगुप्त में दुश्मनी हो जाती
(ग) चन्द्रगुप्त मार दिया गया होता
(घ) कुसुमपुर की जनता असंतुष्ट हो जाती।

64. चाणक्य राज्य छोड़कर तपोवन क्यों गये ?
(क) चन्द्रगुप्त द्वारा कौमुदी महोत्सव की घोषणा रोक देने वाले चाणक्य ने चन्द्रगुप्त द्वारा स्वयं को अपमानित किया गया महसूस किया था।
(ख) चाणक्य को राजनीति से विरक्ति हो गई थी।
(ग) चाणक्य का चन्द्रगुप्त को शासक बनाने का लक्ष्य पूरा हो गया था।
(घ) चाणक्य वृद्ध हो जाने के कारण तपोवन में तपस्या करना चाहते थे। ( )

65. वसुगुप्त एवं अलका के बारे में सत्य का उद्घाटन करने पर जब चाणक्य तपोवन जाने लगे थे तब चन्द्रगुप्त ने उनसे कहा था कि—
(क) तुम्हारे बिना चन्द्रगुप्त और राज्य नष्ट हो जायेंगे।
(ख) तुम्हारे बिना मुझे कोई परेशानी नहीं होगी।
(ग) तुम्हारे चले जाने से मोरा रास्ता ही साफ होगा।
(घ) अब मुझे किसी के हस्तक्षेप का डर नहीं रहेगा। ( )

2. नये मेहमान

66. रेवती एक-एक चारपाई पर दो-दो, तीन-तीन बच्चे क्यों सुलाती थी?
(क) उसके कई बच्चे जो थे (ख) उसके पास चारपाइयों की कमी थी
(ग) उसके घर की छत छोटी थी और उस पर ज्यादा चारपाइयाँ नहीं आती थीं। ( )
(घ) अकेले-अकेले बच्चे को डर लगता था।

67. रेवती पडौसिन की छत पर अपने बच्चों को गर्मी की रात में भी सुलाने के लिए तैयार क्यों नहीं थी?
(क) उसे डर था कि कहीं पड़ौसिन उसके बच्चों का अनिष्ट न कर दे।
(ख) वह बच्चों का दूसरों की छत पर सुलाना अपने स्वाभिमान के खिलाफ समझती थी।
(ग) उसके बच्चे पड़ौसिन की छत पर जाने में दुःखी हो जाते थे।
(घ) वह पड़ौसिन को परेशानी नहीं देना चाहती थी। ( )

68. "ईश्वर करे इन दिनों कोई मेहमान न आए।" रेवती ऐसा क्यों कहती थी?
(क) रेवती की उन दिनों मानसिक स्थिति ठीक न थी।
(ख) वह उन दिनों गंभीर रूप से बीमार थी।
(ग) उन गर्मियों में मेहमानों को खुली छत पर सुलाने की जगह ही न थी।
(घ) उन दिनों उसके घर मेहमानों की खातिरदारी करने की व्यवस्था न थी। ( )

69. रेवती अपने पति से बार-बार आग्रह करती थी कि वे जाकर छत पर सो रहें, क्यों?
(क) रेवती आँगन को सभी के लिए छोटा मानती थी।
(ख) रेवती छत के बजाय आँगन में सोना पसंद करती थी।
(ग) वह पहचानती थी कि पति विश्वनाथ को छत पर सोना अच्छा लगता है।
(घ) पति के हित के लिए। ( )

70. विश्वनाथ और रेवती के घर पर कोई नौकर ज्यादा दिन क्यों नहीं टिक पाता था?

(क) वे नौकर को परेशान करते थे ।
(ख) वह उन दोनों को आपस में बहुत लड़ते-झगड़ते देखता था ।
(ग) उसका शहर में मन नहीं लगता था ।
(घ) वे नौकर को कम वेतन देते थे ।
(च) नौकर को तीन मंजिल ऊपर पानी चढ़ाना पड़ता था । ( )

71. रेवती द्वारा मेहमानों के लिए खाना बनाने के बारे में पूछा तो विश्वनाथ ने क्या जवाब दिया था ?
(क) विश्वनाथ ने कहा था कि खाना तो बनाना ही होगा ।
(ख) नये अपरिचित मेहमानों को कैसा खाना ।
(ग) मेहमानों को भूख ही नहीं ।
(घ) ये मेजबान के घर का खाना नहीं खाते
(च) ये होटल पर खाना खाकर ही आये हैं । ( )

72. रेवती ने मेहमानों के लिए खाना न बना पाने की अपनी कौनसी मजबूरी व्यक्त की थी ?
(क) उसने कहा था मुझे अब नींद आ रही है
(ख) मुझे रात में दिखाई नहीं देता
(ग) मैं अपरिचितों को खाना बनाकर खिलाने में कष्ट का अनुभव करती हूं
(घ) उसने अस्वस्थता की मजबूरी बताई थी । ( )

73. पड़ोसी की स्त्री ने क्यों शोर मचाया था ?
(क) विश्वनाथ के घर मेहमान आये जानकर
(ख) मेहमानों के शोर शराबे से परेशान होकर
(ग) मेहमानों ने उसकी छत पर हाथ धो लिए थे
(घ) मेहमानों के सामने विश्वनाथ को पड़ोसिन ने अपनी बुराई करते सुना था
(च) पड़ोसिन से विश्वनाथ के बच्चे ने कुछ अपशब्द कह दिये थे । ( )

74. पड़ोसी ने मेहमानों के आने के समय विश्वनाथ से क्या शिकायत की थी ?
(क) उसने कहा था कि मैं यह बर्दास्त नहीं कर सकता कि मेरी छत पर गन्दा पानी फैलाया जाय
(ख) मैं यह नहीं सह सकता कि आपके मेहमान पड़ौस में शोर मचाते रहें
(ग) मैं यह नहीं सह सकता कि आपके पड़ोसी हमारी छत पर घूमें, फिरें
(घ) आपके पड़ोसी हमसे अपशब्द कहें, यह मुझे सहन नहीं । ( )

75. "वाकई गलती हो गई ।" ऐसा किसने कहा था ?
(क) रेवती ने (ख) पड़ोसी ने

(ग) पड़ौसिन ने (घ) विश्वनाथ ने
(च) नये मेहमान ने । ( )

76. पड़ौसी ने विश्वनाथ से मकान के बारे में क्या कहा था ?
(क) आपके यहां इतने मेहमान आते हैं तो बड़ा-सा मकान लो
(ख) इतने मेहमान आते हैं तो कहीं दूसरी जगह जाकर मकान लो
(ग) इतने मेहमान आते हैं तो उन्हें अपने घर में नियंत्रण में रखो
(घ) मेहमानों को आते ही समझा दिया करो कि पड़ौसियों के मकान से वास्ता न रखा करें । ( )

77. अन्त में नये मेहमान किसके यहाँ ठहरे ?
(क) विश्वनाथ के (ख) पड़ौसी के
(ग) कविराज के (घ) कविराज रामलाल वैद्य के ( )

78. विश्वनाथ ने नये मेहमानों को अपने घर से रामलाल वैद्य के यहां पहुंचवा दिया था, क्योंकि—
(क) वे झगड़ालू थे
(ख) वे संख्या में बहुत अधिक थे
(ग) वे अपरिचित थे
(घ) वे विश्वनाथ के घर नहीं रहना चाहते थे
(च) उन्होंने रामलाल वैद्य के यहां जाने के लिए आग्रह किया था। ( )

76. नये अपरिचित मेहमानों के बाद उसी रात को रेवती के घर कौन मेहमान आया था ?
(क) रेवती के पिताजी (ख) विश्वनाथ के मित्र
(ग) और एक अपरिचित मेहमान (घ) रेवती का भाई
(च) रेवती की सहेली । ( )

80. रेवती के भाई के रात में आने पर उसके घर वालों की क्या प्रतिक्रिया हुई ?
(क) सभी खुश हुए
(ख) सभी परेशानी महसूस करने लगे थे
(ग) रेवती को प्रसन्नता हुई पर विश्वनाथ को दुःख हुआ
(घ) विश्वनाथ को ही प्रसन्नता हुई
(च) बच्चों को ही प्रसन्नता हुई । ( )

81. रात में अपने भाई के आने पर उसने भाई के लिए भोजन की क्या व्यवस्था की ?
(क) हलवाई से खाना मँगवाया
(ख) उसने पूरीयाँ तलीं और मिठाई मँगवाई

(ग) खाने के लिए पूछा ही नहीं
(घ) पहले से बचा हुआ खाना ही खिला दिया। ( )

82. "नये मेहमान" एकांकी का नायक है—
(क) रेवती का भाई (ख) रेवती का लड़का प्रमोद
(ग) विश्वनाथ (घ) नये मेहमान
(च) पड़ोसी। ( )

3. दो कलाकार

83. "दो कलाकार एकांकी में दो कलाकार कौन से हैं—
(क) मार्तण्ड और परमानन्द (ख) परमानन्द और रामनाथ
(ग) रामनाथ और बुलाकीदास (घ) चूड़माणि और परमानन्द
(च) चूड़ामणि और मार्तण्ड। ( )

84. "बदमाश ने कल ही एक मोटर खरीदी है" यह बात किसने कही थी ?
(क) मार्तण्ड ने (ख) चूड़ामणि ने
(ग) परमानन्द ने (घ) बुलाकीदास ने
(च) रामनाथ ने। ( )

85. चूड़ामणि किससे रुपये लेने गया था ?
(क) परमानन्द से (ख) बुलाकीदास से
(ग) मार्तण्ड से (घ) रामनाथ से
(च) अपने रिश्तेदार से। ( )

86. "क्या कहा ! तुम भी रुपये नहीं लाये ?" चूड़ामणि के इस कथन से कौन सा भाव व्यक्त होता है ?
(क) आश्चर्य मिश्रित दुःख (ख) दुःख
(ग) क्रोध (घ) उदासीनता
(च) करुणा। ( )

87 मार्तण्ड रामनाथ से रुपये क्यों नहीं लाया था ?
(क) रामनाथ ने मार्तण्ड को उधार रुपये दिये ही न थे
(ख) रामनाथ मार्तण्ड को तसवीर के मूल्य के रूप में बहुत कम रुपये दे रहा था
(ग) रामनाथ के पास रुपये नहीं थे
(घ) रामनाथ मार्तण्ड को मिला ही न था। ( )

88. मार्तण्ड रामनाथ के यहां से क्या ले आया था ?
(क) उसके रुपये (ख) उससे अपनी तस्वीर
(ग) उसकी खुद की तस्वीर
(घ) विलायत से बनकर आई उसके बाप की तस्वीर। ( )

89. चूड़ामणि परमानन्द के यहां से रुपयों के बदले क्या ले आया था ?
(क) परमानन्द की सोने की घड़ी
(ख) परमानन्द की कीमती तस्वीर
(ग) परमानन्द की सोने की जंजीर
(घ) अपनी पाण्डुलिपि । ( )

90. बुलाकीदास ने दोनों कलाकारों से जब कहा कि दरवाजा न खोला तो मैं तोड़ दूँगा, तब चूड़ामणि ने क्या कहा ?
(क) दरवाजा मत तोड़िये
(ख) अगर आप ऐसा करेंगे तो हम पुलिस में रिपोर्ट करेंगे
(ग) खुशी से तोड़ डालिए, आपका दरवाजा है
(घ) हमें इससे कोई मतलब नहीं । ( )

91. जब बुलाकीदास ने कहा कि आपने दरवाजा न खोला तो मैं बाहर से ताला बन्द कर दूँगा, तब चूड़ामणि ने क्या कहा ?
(क) यह कि वैसी हालत में दरवाजा हमें तोड़ना पड़ेगा
(ख) हम आपको वैसा नहीं करने देंगे
(ग) आप कुछ भी कीजिए, दरवाजा आपका है
(घ) हमारे रहते आप वैसा कर ही कैसे सकते हैं । ( )

92. बुलाकीदास का कलाकारों पर कितने महीने का किराया बाकी था ?
(क) बिल्कुल नहीं (ख) छह महीने का
(ग) दो महीने का (घ) चार महीने का
(च) एक महीने का । ( )

93. मार्तण्ड को कौन सी कला आती थी ?
(क) कविता रचने की (ख) चित्र बनाने की
(ग) गीत गाने की (घ) नृत्य करने की । ( )

94. क्या कलाकारों ने किसी महीने का किराया बुलाकीदास को चुकाया ?
(क) नहीं (ख) छह महीने का
(ग) दो माह का (घ) चार महीने का
(च) एक महीने का । ( )

95. परमानन्द ने चूड़ामणि को किस कारण रुपये चुकाये थे ?
(क) चूड़ामणि ने उसे धमकाया था
(ख) चूड़ामणि ने उससे रुपये चुकाने के लिए प्रार्थना की थी
(ग) परमानन्द खुद ही रुपये चुकाने आ गया था
(घ) चूड़ामणि ने उसकी बुराई करने वाला पुराण लिखना शुरू किया था । ( )

96. ज्यों ही परमानन्द चूड़ामणि से अपनी घड़ी लेकर चलने को हुआ तो चूड़ामणि ने क्या किया ?
(क) चूड़ामणि ने उससे फिर रुपये माँगे
(ख) चूड़ामणि ने उसे पकड़ लिया
(ग) चूड़ामणि ने फिर उसके बारे में वही पुराण लिखना शुरू कर दिया
( )

97. परमानन्द चूड़ामणि को किस कारण से रुपये देने आया था ?
(क) अपने सोने की घड़ी लेने के लिए
(ख) चूड़ामणि की पाण्डुलिपि के बदले में देने
(ग) चूड़ामणि को भेंट में देने
(घ) चूड़ामणि को दान में देने। ( )

98. मार्तण्ड ने रामनाथ के पिता की तस्वीर की नाक क्यों काट दी थी ?
(क) मार्तण्ड की तस्वीर का मूल्य पचास रुपये की जगह सात रुपये लगाने के कारण (ख) रामनाथ के कहने से
(ग) रामनाथ द्वारा मार्तण्ड की तस्वीर खराब कर दिये जाने के कारण
(घ) मार्तण्ड की तारीफ न करने के कारण। ( )

99. बुलाकीदास द्वारा मकान खाली कर दिये जाने के लिए कहे जाने पर चूड़ामणि ने उससे क्या कहा ?
(क) हम मकान खाली नहीं करेंगे
(ख) हम थोड़े दिन में मकान खाली करेंगे
(ग) हम परमानन्द पुराण को बुलाकी पुराण बना देंगे
(घ) हम रुपये लेकर मकान खाली करेंगे। ( )

100. रामनाथ मार्तण्ड के पास किस लिए आया था ?
(क) विलायत से बनकर आई पिता की तस्वीर लेने
(ख) मार्तण्ड की तस्वीर के रुपये देने
(ग) मार्तण्ड की तस्वीर खरीदने (घ) मार्तण्ड से नई तस्वीर बनवाने
(च) मार्तण्ड से माफी मांगने। ( )

101. परमानन्द चूड़ामणि के पास क्यों आया था ?
(क) चूड़ामणि ने उसे बुलवाया था
(ख) चूड़ामणि को निमंत्रण देने (ग) अपनी सोने की घड़ी लेने
(घ) चूड़ामणि के रुपये चुकाने। ( )

4. लक्ष्मी का स्वागत

102. रोशन ने डॉक्टर को क्यों बुलवाया था ?
(क) अपनी पत्नी के इलाज के लिए

(ख) अपने आपका इलाज कराने (ग) अपने बीमार पुत्र का इलाज कराने
(घ) अपने मित्र का इलाज कराने । ( )

103. "यह मामूली बुखार नहीं। गले की यह तकलीफ साधारण नहीं।" रोशन ने किस की तकलीफ की बात कही है ?
(क) अपने मित्र की (ख) अपने पुत्र की
(ग) अपने पिता की (घ) अपनी माँ की । ( )

104. "मेरा तो जैसे हौसला टूट रहा है।" ऐसा किसने कहा है ?
(क) सुरेन्द्र ने (ख) डॉक्टर ने
(ग) रोशन के पिता ने (घ) रोशन ने
(च) रोशन की मां ने ( )

105. रोशन के लड़के को क्या रोग था ?
(क) डिप्थीरिया (ख) केवल बुखार
(ग) सिरदर्द (घ) निमोनिया ( )

106. "ये लोग इसकी जिन्दगी नहीं चाहते।" ये शब्द रोशन ने डॉक्टर से किसके बारे में कहे हैं ?
(क) उसका शगुन वालों के बारे में
(ख) गांव वालों के बारे में (ग) दूसरे रिश्तेदारों के बारे में
(घ) अपने मां-बाप के बारे में । ( )

107. रोशन के मां-बाप अरुण की गम्भीर हालत के समय भी क्या चाहते थे ?
(क) रोशन शगुन के लिए स्वीकृति दे दे
(ख) शगुन लाने वालों को बीमार अरुण को दिखाना
(ग) अरुण का अपने ढंग से इलाज करना
(घ) डॉक्टर को लौटा देना । ( )

108. "पागल न बनो।" ऐसे किसने कहा था ?
(क) डॉक्टर ने (ख) माँ ने
(ग) रोशन के पिता ने (घ) रोशन ने
(च) सुरेन्द्र ने । ( )

109. इस एकांकी में नायक कैसे वातावरण में जी रहा है ?
(क) विचित्र (ख) सुख-सुविधा पूर्ण
(ग) घुटनपूर्ण (घ) अजनबी । ( )

110. एकांकी के अन्त में क्या होता है ?
(क) सुरेन्द्र घर चला जाता है (ख) रोशन की पत्नी मर जाती है
(ग) रोशन का पुत्र मर जाता है (घ) रोशन का विवाह हो जाता है ।
( )

111. "नहीं जानती कि जो मर जाती है, वह भी किसी की लड़की होती है" यह रोशन ने किस से कहा है ?
(क) सुरेन्द्र से (ख) मां से
(ग) पिता से (घ) डॉक्टर से । ( )

112. "मुझे उस पर कोई विश्वास नहीं रहा। उसका कोई भरोसा नहीं—क्रूर और निर्दयी !" रोशन को किस पर विश्वास नहीं रहा ?
(क) पिता पर (ख) डॉक्टर पर
(ग) सुरेन्द्र पर (घ) ईश्वर पर । ( )

113. "हमें तो कहता है, बच्चे से प्यार नहीं" यह कथन रोशन के बारे में किसने कहा है ?
(क) माँ ने (ख) पिता ने
(ग) डॉक्टर ने (घ) सुरेन्द्र ने ( )

114. "तुम जानते हो बच्चा, दुनियाँ-जहान का यह कायदा है" ये शब्द सुरेन्द्र से किसने कहे हैं ?
(क) पिता ने (ख) डॉक्टर ने
(ग) माँ ने (घ) पड़ोसी ने । ( )

115. "उन से कहो, जहाँ से आये हैं, वहीं चले जाएँ" ये शब्द रोशन ने किसके बारे में कहे हैं ?
(क) सियाल कोट वालों के
(ख) माँ-बाप के बारे में (ग) पिता के बारे में
(घ) डॉक्टर के बारे में । ( )

116. "हाँ नाचो, गाओ, खुशियाँ मनाओ" इन शब्दों से व्यक्त हो रहा है—
(क) क्रोध (ख) घृणा
(ग) व्यंग्य (घ) उलाहना । ( )

5. वापसी

117. वापसी एकाँकी का कथ्य है—
(क) इन्सानियत (ख) शत्रुन का नाश
(ग) जन्मभूमि का प्रेम (घ) कर्त्तव्य परायणता । ( )

118. "जल्दी-से-जल्दी भारतीय जनता में पहुंचकर इस बात की कोशिश करो कि हिन्दू-मुसलमानों में लड़ाई हो जाए ।" यह कथन किसका है ?
(क) बुनियाद का (ख) असगर का
(ग) मुनीर का (घ) मकसूद का । ( )

119. "सब कुछ खत्म हो जाता है, अमन भी, जंग भी यह जंग भी खत्म हो जाएगी ।" यह किसने कहा है ?

(क) मकसूद ने (ख) बुनियाद ने
(ग) असगर ने (घ) चौधरी ने ( )

120. इसी धरती पर हमारे बड़े पैदा हुए। इसी धरती की गोद में सो गए।" यह कथन किसका है ?
(क) चौधरी का (ख) बुनियाद का
(ग) असगर का (घ) मकसूद का ( )

121. "हमें सोचने का कोई हक नहीं। हम आजाद कहाँ हैं ?" यह किसका कथन है ?
(क) असगर का (ख) चौधरी का
(ग) बुनियाद का (घ) मकसूद का ( )

122. "एक दिन यहाँ से जाने को मजबूर हुए, आज आने को मजबूर हुए हैं।" यह कथन है –
(क) बुनियाद का (ख) मकसूद का
(ग) चौधरी का (घ) असगर का ( )

123. "तुमने तो सिर धौर धड़ की बाजी लगाई थी। अब क्यों घबराते हो ?" यह किसने कहा है ?
(क) चौधरी ने (ख) मकसूद ने
(ग) असगर ने (घ) बुनियाद ने ( )

124. "दुश्मनी का माहौल! आह क्या यह माहौल बदल नहीं सकता।" यह कथन किसका है ?
(क) असगर का (ख) बुनियाद का
(ग) चौधरी का (घ) मकसूद का ( )

125. "ये सियासत वाले हर मुल्क में अपना उल्लू सीधा करने के लिए आपस में लड़ा करते हैं और लोगों को परेशान करते हैं।" यह कहा है—
(क) चौधरी ने (ख) असगर ने
(ग) बुनियाद ने (घ) मकसूद ने ( )

226. "रहने दे बेवकूफ। क्यों मौत के मुँह में जाना चाहता है ?" असगर ने यह किससे कहा है ?
(क) बुनियाद से (ख) मकसूद से
(ग) चौधरी से (घ) अपने अन्य सैनिकों से। ( )

127. "आओ मकसूद, अब कोई डर नहीं, हम अपने वतन में हैं।" असगर ने ऐसा किस समय कहा ?
(क) चौधरी के सामने आत्मसमर्पण के समय।
(ख) कश्मीर से भारत में तोड़फोड़ करने के लिए उतरते ही।

(ग) भारतीय सैनिकों को देखते ही ।

(घ) भारत में आकर कपड़े बदलने के बाद । ( )

128. "एक धरती, एक आसमान, फिर भी आदमी आदमी का दुश्मन ।" यह कथन है—

(क) असगर का (ख) बुनियाद का

(ग) चौधरी का (घ) इन्सपेक्टर का । ( )

129. 'वापसी' एकांकी का नायक है—

(क) बुनियाद (ख) चौधरी

(ग) मकसूद (घ) असगर । ( )

6. आवाज का नीलाम

130. 'आवाज का नीलाम' एकांकी का नायक है—

(क) बाजोरिया (ख) दिवाकर

(ग) बाजोरिया का नौकर (घ) दिवाकर की पत्नी । ( )

131. 'आवाज का नीलाम' एकांकी का उद्देश्य है—

(क) आर्थिक असमानता का चित्रण

(ख) शोषण का विरोध

(ग) शोषक व शोषित का चित्रण

(घ) सामाजिक असमानता का चित्रण ( )

132. "मैंने किसी के सामने सिर झुकाना ही नहीं सीखा था ।" यह किससे कहा गया है ?

(क) बाजोरिया (ख) अपने आप से

(ग) जनता से (घ) किसी दूसरे व्यक्ति से । ( )

133. 'आवाज' अखबार दिवाकर ने क्यों निकाला था ?

(क) आत्मा की और जनता की आवाज बनाने

(ख) नेताओं की प्रशंसा करने

(ग) विज्ञापन देकर धन कमाने

(घ) अपना नाम उजागर करने ( )

134. दिवाकर पियानो अक्सर कब बजाता था ?

(क) परेशान होने पर (ख) खुश होने पर

(ग) फुर्सत रहने पर (घ) कुछ सोचने के समय । ( )

135 बाजोरिया अपने अखबारों द्वारा क्या उद्देश्य पूरा करने की बात कहता है ?

(क) विज्ञापन देने की (ख) साँस्कृतिक स्तर ऊँचा उठाने की

(ग) अमेरिका की तरह अखबारों का स्तर उठाने की

(घ) जनता की आवाज व्यक्त करने की । ( )

136.A "इन्हीं ध्वंस और विनाश की आवाजों में, कहीं नये इन्सान की आवाज का भी निर्माण हो रहा है।" यह किसने कहा है ?
(क) बाजोरिया ने (ख) दिवाकर ने
(ग) लेखक ने (घ) दिवाकर की पत्नी ने। ( )

136 B 'आवाज' अखबार को कौन खरीदने को तैयार हुआ था ?
(क) कोई नेता (ख) बाजोरिया
(ग) बाजोरिया का मित्र (घ) कोई और व्यक्ति। ( )

137. दिवाकर की पत्नी की बीमारी के समय दिवाकर को आर्थिक सहायता दी थी—
(क) बाजोरिया ने (ख) एक नेता ने
(ग) किसी व्यापारी ने (घ) दिवाकर के मित्र ने। ( )

138. दिवाकर को उसकी पत्नी की गम्भीर हालत के समय अस्पताल कौन ले गया था ?
(क) एक डॉक्टर (ख) दिवाकर का मित्र
(ग) बाजोरिया (घ) बाजोरिया का सम्पादक ( )

139. दिवाकर को उसकी पत्नी का मृत्यु की सूचना किससे मिली ?
(क) बाजोरिया से (ख) समाचार लाने वाले एक व्यक्ति से
(ग) फोन से (घ) पत्र से। ( )

140. "कितना दयावान है ईश्वर ! कैसे मौके पर बाँह पकड़ता है।" दिवाकर ने ये शब्द कब कहे थे ?
(क) पत्नी के स्वस्थ होने पर (ख) आवाज अखबार वापस ले लेने पर
(ग) पत्नी के मरने के बारे में फोन मिलने पर
(घ) अस्पताल जाते समय। ( )

141. दिवाकर अपना अखबार क्यों बेचने पर मजबूर था ?
(क) अपनी ईमानदारी के कारण
(ख) बीमार पत्नी के इलाज हेतु रुपये पाने के लिए
(ग) सेठ बाजोरिया के दबाव के कारण
(घ) जनता में अखबार पसन्द न किये जाने के कारण। ( )

142. सेठ बाजोरिया का अखबार जनता में क्यों पसन्द था ?
(क) शोषण के विरोध में बातें छापने के कारण
(ख) सत्य की आवाज होने के कारण
(ग) दुनिया भर के समाचार देने के कारण
(घ) शोखकवर, भड़कीले चित्र, रंगबिरंगे विशेषांकों के कारण। ( )

143. 'आवाज का नीलाम' एकांकी के अन्त में क्या वर्णित है ?
(क) दिवाकर प्रसन्न होकर अपना अखबार बेच देता है।
(ख) बाजोरिया के सम्पादक बनर्जी का कथन।
(ग) दिवाकर की पत्नी की मृत्यु का समाचार
(घ) दिवाकर पागल सा हो जाता है। ( )

144. 'आवाज का नीलाम' एकांकी किसके द्वारा लिखा गया है।
(क) उपेन्द्रनाथ अश्क (ख) उदयशंकर भट्ट
(ग) धर्मवीर भारती (घ) विष्णु प्रभाकर। ( )

145.A दिवाकर 'आवाज' अखबार को बेचने का विचार कब बदल देता है ?
(क) पत्नी के स्वस्थ होने पर
(ख) बाजोरिया द्वारा कड़े शब्द कहे जाने पर
(ग) दिवाकर की आर्थिक स्थिति सुधर जाने पर
(घ) अपनी पत्नी की मृत्यु का फोन आने पर। ( )

145.B 'आवाज का नीलाम' एकांकी में किस भाषा के शब्द प्रयुक्त हैं ?
(क) हिन्दी (ख) अंग्रेजी
(ग) संस्कृत (घ) हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी। ( )

7. वरुण वृक्ष का देवता

146. 'वरुणवृक्ष का देवता' एकांकी के लेखक हैं—
(क) डॉ. रामकुमार वर्मा (ख) उदयशंकर भट्ट
(ग) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल (घ) भगवती चरण वर्मा ( )

147. अर्थशास्त्र की रचना की है—
(क) आचार्य चाणक्य ने (ख) पाणिनि ने
(ग) व्यासजी ने (घ) विष्णु शर्मा ने। ( )

148. 'हर राजनीतिज्ञ सँपेरा होता है।' यह कथन किसका है ?
(क) मलयकेतु का (ख) चाणक्य का
(ग) राक्षस का (घ) शकटार का ( )

149. 'राक्षस' कौन था ?
(क) चाणक्य का शिष्य (ख) नन्द का अमात्य
(ग) शकटार का भाई (घ) मलयकेतु का भाई। ( )

150. पाटलिपुत्र किसके राज्य की राजधानी थी ?
(क) नन्द (ख) राक्षस
(ग) विष्णु शर्मा (घ) चन्द्रगुप्त ( )

151. सर्वार्थसिद्धि कौन था ?
(क) नन्द का भाई (ख) राक्षस का भाई
(ग) विष्णु शर्मा का भाई (घ) मलयकेतु का भाई। ( )

152. सर्वार्थसिद्धि की हत्या के लिए कौन गया था ?
(क) चाणक्य (ख) शकटार
(ग) विष्णु शर्मा (घ) निपुणक। ( )

153. मलयकेतु कौन था ?
(क) राक्षस का गुप्तचर (ख) चाणक्य का शिष्य
(ग) शकटार का गुप्तचर (घ) चन्द्रगुप्त का गुप्तचर। ( )

154. धूर्तबुद्धि किसे कहा गया है ?
(क) राक्षस को (ख) नन्द को
(ग) चाणक्य को (घ) चन्द्रगुप्त को। ( )

155. सर्वार्थसिद्धि को वैरागी बनवाने किसे नियोजित किया गया ?
(क) विष्णु शर्मा को (ख) शकटार को
(ग) निपुणक को (घ) शारंग को। ( )

156. शकटार सर्वार्थसिद्धि की हत्य क्यों करना चाहता था ?
(क) चाणक्य को खुश करने (ख) चन्द्रगुप्त को खुश करने
(ग) सिकन्दर का कृपापात्र बनने (घ) अपने पुत्रों का बदला लेने ( )

157. सुवासिनी कौन थी ?
(क) शकटार की पुत्री (ख) विष्णु शर्मा की बहिन
(ग) राक्षस की पुत्री (घ) चन्द्रगुप्त की पुत्री। ( )

158. चाणक्य ने सुवासिनी का विवाह किससे कराया था ?
(क) सर्वार्थसिद्धि से (ख) विष्णु शर्मा से
(ग) चन्द्रगुप्त से (घ) राक्षस से। ( )

159. मलयकेतु किस वेश में उपस्थित हुआ था ?
(क) संपेरे के (ख) नर्तक के
(ग) गायक के (घ) धर्म प्रचारक के रूप में। ( )

160. चाणक्य एकांकी में कौन सा बड़ा त्याग करता है ?
(क) नीतिशास्त्र लिखना बन्द कर देता है।
(ख) सुवासिनी का अपने साथ विवाह न कर राक्षस के साथ विवाह करा देता है।
(ग) वह राजनीति छोड़ देता है।
(घ) वह दरबार त्याग देता है। ( )

व्याकरण से सम्बन्धित प्रश्न

निर्देश : प्रश्न 1 से 40 तक प्रयोग में चार विकल्प दिये गये हैं जिनमें से वर्तनी की दृष्टि से एक शुद्ध है। उस सही विकल्प को ज्ञात करके सामने के कोष्ठक में उसका क्रमांक लिखिए।

1. (क) घ्रनिष्ट (ख) घनिष्ठ
(ग) घनीष्ठ (घ) घनीष्ट ( )
2. (क) कवयत्री (ख) कवियित्री
(ग) कवयित्री (घ) कवित्री ( )
3. (क) उपरोक्त (क) उपरियुक्त
(ग) उपरिक्त (घ) उपर्युक्त ( )
4. (क) उज्वल (ख) उज्ज्वल
(ग) उज्जवल (घ) उजवल ( )
5. (क) पारितोषिक (ख) परितोषिक
(ग) पारीतोषिक (घ) पारितोसिक ( )
6. (क) कृतग्य (ख) ऋतज्ञ
(ग) कृतज्ञ (घ) कृत्घ ( )
7. (क) व्यवहारिक (ख) व्यवहारीक
(ग) व्यावहरिक (घ) व्यावहारिक ( )
8. (क) पुरषकार (ख) पुरष्कार
(ग) पुरस्कार (घ) पुरुस्कार ( )
9. (क) इच्छा (ख) ईच्छा
(ग) इक्षा (घ) ईक्षा ( )
10. (क) सौन्दर्य (ख) सौन्दर्यता
(ग) सौन्दरिय (घ) सौन्दरीय ( )
11. (क) रचियता (ख) रचयिता
(ग) रचीयता (घ) रचेता ( )
12. (क) निरपाधी (ख) निरपराधी
(ग) निरपराध (घ) निर्पराध ( )
13. (क) अध्यन (ख) अध्ययन
(ग) अध्यैन (घ) अधियन ( )
14. (क) कृतघ्न (ख) कृतघ्नी
(ग) ऋतघ्न (घ) ऋतघ्नी ( )
15. (क) नीरोग (ख) निरोग
(क) नि:रोगी (घ) नीरोगी ( )

16. (क) एकत्रित (ख) एकत्र
(ग) एकत्रीत (घ) ऐकत्रीत ( )
17. (क) स्मर्णीय (ख) स्मरणीय
(ग) स्मर्णिय (घ) स्मार्णिय ( )
18. (क) पश्चात्ताप (ख) पश्चाताप
(ग) पश्चाताप (घ) पश्चताप ( )
19. (क) अधोगती (ख) अधोगति
(ग) अधोगाती (घ) आधोगति ( )
20. (क) परिणति (ख) परिणिति
(ग) पारिणाति (घ) परीणति ( )
21. (क) मान्यनीय (ख) माननीय
(ग) मान्यानीय (घ) मानन्यीय ( )
22. (क) पूज्यनीय (ख) पूजनीय
(ग) पूजानीय (घ) पूजनिय ( )
23. (क) ऐतिहासिक (ख) ऐंतिहासिक
(ग) इतिहासिक (घ) इतीहासिक ( )
24. (क) लब्धप्रतिष्ठ (ख) लब्धप्रतिष्ठित
(ग) लबधप्रतिष्ठ (घ) लब्धप्रतीष्ठित ( )
25. (क) अनुवादित (ख) अनूदित
(ग) अनुदित (घ) अनूदीत ( )
26. (क) लाघवता (ख) लाघव
(ग) लाघवत्ता (घ) लघवता ( )
27. (क) अनुग्रहीत (ख) अनुग्रहित
(ग) अनुगृहित (घ) अनुगृहीत ( )
28. (क) साहित्तिक (ख) साहित्यक
(ग) साहित्यिक (घ) सहीत्तिक ( )
29. (क) हरीचन्द (ख) हरीचन्द्र
(ग) हरिश्चन्द्र (घ) हरीश्चन्द्र ( )
30. (क) मिष्ठान (ख) मिष्ठान्न
(ग) मिष्टान्न (घ) मिष्टान ( )
31. (क) महात्म्य (ख) महात्म
(ग) माहात्म्य (घ) माहात्म ( )
32. (क) पैतृक (ख) पैत्रिक
(ग) पैत्रिक (घ) पैत्रीक ( )

33. (क) निर्दयी (ख) निर्दय
(ग) निर्दयि (घ) निरदय ( )

34. (क) कर्मठ (ख) करमठ
(ग) कमर्ठ (घ) कर्मट ( )

35. (क) व्यस्क (ख) वयस्क
(ग) वयसक (घ) व्ययस्क ( )

36. (क) दुश्चरित्र (ख) दुस्चरित्र
(ग) दुसचरित्र (घ) दुस्चरीत्र ( )

37. (क) सुश्रुषा (ख) सुश्रूषा
(ग) सूश्रुषा (घ) सूश्रूसा ( )

38. (क) मणि (ख) मणी
(ग) मनी (घ) मनि ( )

39. (क) निसेध (ख) निशेध
(ग) निषेध (घ) नषेध ( )

40. (क) अत्युक्ति (ख) अत्यूक्ति
(ग) अत्यूक्ती (घ) अत्युक्ती ( )

निर्देश : प्रश्न 41 से 60 तक प्रत्येक प्रश्न में चार-चार शब्द हैं जिनमें से एक शब्द वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध है। उसे पहचान कर उसका क्रमांक कोष्ठक में लिखिए।

41. (क) यथार्थ (ख) उज्ज्वल
(ग) व्यवहारिक (घ) आश्चर्य ( )

42. (क) उपरोक्त (ख) शुभ
(ग) अध्ययन (घ) रचयिता ( )

43. (क) उपर्युक्त (ख) कवियित्री
(ग) अध्यापन (घ) ऐतिहासिक ( )

44. (क) निस्फल (ख) निष्पाप
(ग) अध्यापक (घ) कर्मठ ( )

45. (क) अनूदित (ख) अनुग्रहीत
(ग) अनुसरण (घ) निश्चय ( )

46. (क) निर्विकार (ख) निर्दय
(ग) निष्छल (घ) निश्छल ( )

47. (क) निरोग (ख) निडर
(ग) निर्भीक (घ) निस्तेज ( )

48. (क) घमंड (ख) घनिष्ट
(ग) विद्यार्थी (घ) सुखार्थी ( )

49. (क) दुष्टचरित्र (ख) संवेदना
(ग) अभ्यर्थी (घ) उदित ( )

50. (क) निराधार (ख) निरपराधी
(ग) अडिग (घ) अभिन्न ( )

51. (क) माननीय (ख) आदरणीय
(ग) पूज्यनीय (घ) अनुकम्पा ( )

52. (क) स्मर्णीय (ख) हँसी
(ग) अधोगति (घ) पतित ( )

53. (क) अध्याय (ख) उद्दृत
(ग) अनुशासन (घ) अवतरण ( )

54. (क) गुरु (ख) समदर्शी
(ग) एकत्रित (घ) समाहार ( )

55. (क) निर्विकार (ख) समालोचक
(ग) उद्दण्ड (घ) कृतघ्न ( )

56. (क) आश्चर्य (ख) समस्टि
(ग) उत्कृष्ट (घ) संयुक्त ( )

57. (क) परिणाम (ख) अनुपात
(ग) प्रतिफल (घ) परदूषण ( )

58. (क) साश्चर्य (ख) झङ्कार
(ग) विलोम (घ) गून्जार ( )

59. (क) संचालन (ख) इच्छा
(ग) अभीष्ठ (घ) प्रतीक्षा ( )

60. (क) अष्टावक्र (ख) उत्कष्ट
(ग) समारोह (घ) अवरोह ( )

निर्देश : प्रश्न 61 से 70 तक प्रत्येक प्रश्न में चार वाक्य दिये गये हैं जिनमें एक वाक्य शुद्ध है । इस शुद्ध वाक्य का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए ।

61. (क) आजकल अनेक विद्यार्थी पढ़ रहे हैं ।
(ख) अनेक विद्यार्थी पढ़ रहे हैं आजकल
(ग) आजकल अनेकों विद्यार्थी पढ़ रहे हैं
(घ) अनेकों विद्यार्थी आजकल पढ़ रहे होंगे । ( )

62. (क) नाटक उपन्यास और कविताओं में नया जीवन आकार पा रहा है।
(ख) नाटकों, उपन्यासों और कविताओं में नया जीवन आकार पा रहा है।
(ग) नाटकों, उपन्यासों और कविताओं में आकार पा रहा है नया जीवन।
(घ) नाटक, उपन्यासों और कविता में नया जीवन आकार पा रहा है। ( )

63. (क) वे कपड़े के पुराने व्यापारी हैं।
(ख) वे कपड़ों के पुराने व्यापारी हैं।
(ग) वे पुराने कपड़ों के व्यापारी हैं।
(घ) वे व्यापारी पुराने कपड़ों के हैं। ( )

64. (क) चोरों और पुलिस में लड़ाई हुई।
(ख) चोर और पुलिसों में लड़ाई हुई।
(ग) चोरों और पुलिसवालों में लड़ाई हुई।
(घ) पुलिसों और चोरों में लड़ाई हुई। ( )

65. (क) तब वर्षा आज शायद अवश्य होगी।
(ख) तब आज वर्षा होगी शायद।
(ग) तब आज वर्षा अवश्य होगी।
(घ) तब शायद आज वर्षा अवश्य होगी ( )

66. (क) कृपया यह काम अवश्य करने की कृपा करें।
(ख) यह काम कृपया अवश्य करने की कृपा करें।
(ग) यह काम अवश्य करने की कृपा करें।
(ध) वह काम करने की कृपा करें अवश्य कृपया। ( )

67. (क) जज ने हत्यारे को मृत्यु दण्ड की सजा दी।
(ख) जज ने हत्यारे को मृत्यु-दण्ड दिया।
(ग) जज ने मृत्यु दण्ड दिया हत्यारे को।
(घ) मृत्यु दण्ड हत्यारे को दिया जज ने। ( )

68. (क) मैं अपका दर्शन कर कृतार्थ हुआ।
(ख) मैं अपना कुर्सी नहीं छोड़ता।
(ग) मैं आपके दर्शन कर कृतार्थ हुआ।
(घ) मैं आपके दर्शन कर कृतघ्न हुआ।

69. (क) मैंने कागज पर अपना हस्ताक्षर कर दिया है।
(ख) मैंने कागज पर अपने हस्ताक्षर कर दिये हैं।
(ग) मैं यह काम शायद अवश्य कर लूंगा।
(घ) मैं चोर दण्ड देने के योग्य है।

70. (क) वह कुख्यात डाकू है।
(ख) वह विख्यात डाकू है।
(ग) उसे डाकुओं से डर लगते हैं।
(घ) वह अपना प्राण न्योछावर कर देगा। ( )

निर्देश : प्रश्न 71 से 74 तक प्रत्येत प्रश्न में चार वाक्य दिये गये हैं जिनमें से एक प्रश्न विराम चिन्ह की दष्टि से अशुद्ध है। इस अशुद्ध वाक्य का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए।

71. (क) राम ने पुस्तक पढ़ी ।
(ख) तुम अपने समय का उपयोग कैसे करते हो।
(ग) राम ने अपना पत्र पढ़ा।
(घ) हमें एक कमरे की आवश्यकता है। ( )

72. (क) अहा कैसा सुहावना मौसम है।
(ख) ओह ! तुम यहां हो।
(ग) अरे ! यह क्या है ?
(घ) भाई मैं आज नहीं जाऊंगा। ( )

73. (क) राम ने पूछा, मोहन तुम कहाँ रहते हो।
(ख) मैं तुम्हारी और मोहन की सहायता अवश्य करूंगा।
(ग) मोहन ने साहस बटोर कर कहा "अपका कथन सत्य है।"
(घ) हाय ! जिस पर विश्वास किया उसी ने धोखा दिया। ( )

74. (क) तुम मोहन सोहन और राजेश वहां मत जाना।
(ख) डॉक्टर ने विश्वासपूर्वक कहा, "धैर्य राखिये। इतने विचलित क्यों होते हो।"
(ग) राधे ने कहा— "राजू ! मैं एक दिन फिर आऊंगा।"
(घ) उफ ! बड़ी गर्मी है। ( )

निर्देश : निम्नांकित अवतरण पर आधारित प्रश्न के चार संभावित उत्तर दिये गये हैं। सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए।

हमारे यहाँ शिक्षा तो वास्तव में ज्ञान के सम्प्रेषण की विधि है। विधि का अर्थ है—सिखलाना। लेकिन हम सिखलाएं क्या ? इसके लिए हमारे यहाँ शब्द है विद्या। विद्या को शिक्षा के माध्यम से प्रेषणीय करते हैं। विद्या वह ज्ञातव्य विषय है जो हम आप तक पहुंचाना चाहते हैं। हमारे यहाँ मनीषियों ने इस विद्या को अर्थकारी और परमार्थकारी दो भागों में बांटा है। अर्थकारी वह विद्या है जो समाज में आपको उपयोगी बनाती है, जो अपको जीवन की विभीषिका की सुविधाएं देती हैं और परमार्थ कारी विद्या वह विद्या है जिससे आप समष्टि से जुड़ते हैं। उसमें मानवीय मूल्य हैं, जिससे आपका हृदय बनता है; आपकी बुद्धि बनती है,

आप उदार बनते हैं, स्नेहशील बनते हैं सद्भाव और सपन्नता से पूर्ण मानव बनते हैं, जिससे आपको बुद्धि और हृदय का परिष्कार होता है।

75. उपर्युक्त अवतरण का शीर्षक है ?
(क) शिक्षा का प्रचार (ख) शिक्षा के दो रूप।
(ग) शिक्षा का गलत अर्थ (घ) शिक्षा की कमियाँ। ( )

उत्तर–माला

साहित्य संचय

1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख)
6. (ख) 7. (क) 8. (क) 9. (ग) 10. (ख)
11. (क) 12. (ग) 13. (ग) 14. (ग) 15. (क)
16. (ग) 17. (क) 18. (ख) 19. (ख) 20. (क)
21. (क) 22. (ख) 23. (ग) 24. (क) 25. (ख) A 25. B (घ)
26. (क) 27. (ख) 28. (ख) 29. (ग) 30. (ख)
31. (घ) 32. (घ) 33. (ग) 34. (ख) 35. (ग)
36. A(ग) 36. B(ख) 37. (घ) 38. (ग) 39. (क) 40. (ग)
41. (ग) 42. (ग) 43. (घ) 44. (ख) 45. (ख)
46. (ग) 47. (घ) 48. (ग) 49. (क) 50. (क)
51. (ख) 52. (ख) 53. (ख) 54. (ख) 55. (क)
56. (क) 57. (ख) 58. (क) 59. (क) 60. (ख)
61. (ख) 62. (ग) 63. (ग) 64. (ग) 65. (ग)
66. (ख) 67. (क) 68. (ग) 69. (ग) 70. (ग)

कथा-सौरभ

1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ)
6. (ग) 7. (ख) 8. (घ) 9. (ख) 10. (ग)
11. (घ) 12. (घ) 13. (ख) 14. (घ) 15. A(घ) 15. B (ख)
16. (घ) 17. (क) 18. A(घ) 18. B(क) 19. (घ) 20. (घ)
21. (ग) 22. (घ) 23. (च) 24. (च) 25. (ग)
26. (घ) 27. (क) 28. (ख) 29. (ग) 30. (घ)
31. (ख) 32. (ख) 33 (ख) 34. (घ) 35. (घ)
36. (क) 37. (घ) 38. (क) 39. (ख) 40. ग)
41. (घ) 42. (घ) 43. (क) 44. (क) 45. (घ)

46. (च)	47. (ग)	48. (घ)	49. (घ)	50. (घ)
51. (ग)	52. (क)	53. (क)	54. (ग)	55. (ग)
56. ([illegible])	57. ([illegible])	58. (क)	59. (घ)	60. (क)
61. ([illegible])	62. (ख)	63. (क)	64. (ग)	65. (ख)
66. (ख)	67. (ग)	68. (घ)	69. (ग)	70. (ग)
71. (ख)	72. (ख)	73. (ग)	74. (ख)	75. (घ)
76. (ख)	77. (ख)	78. (घ)	79. (घ)	80. (क)
81. (क)	82. (ख)	83. (ख)	84. (ग)	85. (घ)
86. ([illegible])	87. ([illegible])	88. (ग)	89. (ख)	90. (ख)
91. (ख)	92. (ग)	93. (ख)	94. (क)	95. (घ)
96. (ख)	97. (ग)	98. (घ)	99. (घ)	100. (घ)
101. (ग)	102. (घ)	103. (ग)	104. (घ)	105. (ग)
106. (घ)	107. (क)	108. (क)	109. (ग)	110. (ख)
111. (ग)	112. (च)			

सरस एकांकी

1. (ख)	2. (घ)	3. (क)	4. (घ)	5. (ग)
6. (ख)	7. (घ)	8. (क)	9. (ग)	10. (च)
11. (क)	12. (च)	13. (ख)	14. (ख)	15. (घ)
16. (घ)	17. (ख)	18. (च)	19. (घ)	20. (क)
21. (घ)	22. (घ)	23. (घ)	24. (ग)	25. (घ)
26. (ख)	27. (ग)	28. (ग)	29. (घ)	30. (ख)
31. (ग)	32. (क)	33. (क)	34. (ख)	35. (घ)
36. (क)	37. (ख)	38. (ग)	39. (क)	40. (ग)
41. (क)	42. (घ)	43. (क) 44. (ग)	45 A (क)	45. B (ग)
46. (घ)	47. (क)	48. (ग)	49. (क)	50. (ख)
51. (ग)	52. (क)	53. (ग)	54. (ग)	55. (क)
56. (ख)	57. (घ)	58. (घ)	59. (घ)	60. (ख)
61. (क)	62. (ख)	63. (ग)	64. (क)	65. (क)
66. (ग)	67. (क)	68. (ग)	69. (घ)	70. (च)
71. (क)	72. (घ)	73. (ग)	74. (क)	75. (घ)
76. (क)	77. (घ)	78. (ग)	79. (घ)	80. (क)
81. (ख)	82. (घ)	83. (च)	84. (ख)	85. (क)
86. (क)	87. (ख)	88. (घ)	89. (क)	90. (ग)
91. (क)	92. (ख)	93. (ख)	94. (क)	95 (घ)
96. (ग)	97. (क)	98. (क)	99. (ग)	100. (क)

101. (ग)	102. (ग)	103. (ख)	104. (घ)	105. (क)
106. (घ)	107. (क)	108. (च)	109. (ग)	110. (ग)
111. (क)	112. (घ)	113. (क)	114. (ग)	115. (क)
116. (ग)	117. (ग)	118. (क)	119. (ग)	120. (ग)
121. (ख)	122. (घ)	123. (ख)	124. (क)	125. (ख)
126. (ख)	127. (क)	128. (ग)	129. (ग)	130. (ख)
131. (ख)	132. (ख)	133. (क)	134. (क)	135. (ख)

136. A (ख) 136 B ख 137. (क) 138. (ग) 139. (ग) 140. (ग)

141. (ख) 142. (घ) 143. (घ) 144. (ग) 145. (A) (घ) 145 (B) (घ)

146. (ग)	147. (क)	148. (ख)	149. (ख)	150. (घ)
151. (क)	152. (ख)	153. (क)	154. (ग)	155 (क)
156. (घ)	157. (क)	158. (घ)	159. (क)	160. (ख)

व्याकरण से सम्बन्धित प्रश्न

1. (ख)	2. (ग)	3. (घ)	4. (ख)	5. (क)
6. (ग)	7 (घ)	8. (ग)	9. (क)	10. (क)
11. (ख)	12. (ग)	13. (ख)	14. (क)	15. (क)
16. (ख)	17. (ख)	18. (क)	19. (ख)	20. (क)
21. (ख)	22. (ख)	23. (क)	24. (क)	25. (ख)
26. (ख)	27. (घ)	28. (ग)	29. (ग)	30. (ख)
31. (ग)	32. (क)	33 (ख)	34. (क)	35. (ख)
36. (क)	37. (ख)	38. (क)	39. (ग)	40. (क)
41. (ग)	42. (क)	43. (ख)	44. (क)	45. (ख)
46. (ग)	47. (क)	48. (ख)	49. (क)	50. (ख)
51. (ग)	52. (क)	53. (ख)	54. (ग)	55. (घ)
56. (ख)	57. (घ)	58. (घ)	59. (ग)	60. (ख)
61. (क)	62. (ख)	63. (ख)	64. (ग)	65. (ग)
66. (ग)	67. (ख)	68. (ग)	69. (ग)	70. (क)
71. (ग)	72. (क)	73. (क)	74. (क)	75. (ख)

साधना पास बुक्स

सीनियर हायर सैकण्डरी

अनिवार्य हिन्दी

(भाग–अ)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

साहित्य संचय

1. कविता क्या है ?

प्रश्न 1. कविता की प्रेरणा का क्या परिणाम दिखाई देता है ?

उत्तर—कविता की प्रेरणा से मनुष्य के भीतर मनोवेगों का प्रवाह जोर से बहने लगता है जिससे जीवन में नया जीव पड़ जाता है और सृष्टि सौन्दर्य के प्रति आकर्षण बढ़ जाता है। इससे मनुष्य कार्य में प्रवृत्त हो उठता है।

प्रश्न 2. कविता का मानव हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर—कविता के प्रभाव से हृदय द्रवित होता है फलतः उसमें जड़ता, कठोरता नहीं आ पाती और मनुष्य उचित अवसर पर भावों को व्यक्त करना सीखता है।

प्रश्न 3. कविता के मनोरंजक गुण का क्या असर होता है ?

उत्तर—मनोरंजन कविता का प्रधान गुण है। इसी से पाठक या श्रोता का मन उचट नहीं पाता। वह एकाग्र होता है। कविता इस गुण के कारण आचरण विशेष के सौन्दर्य की ओर आकृष्ट करती है।

प्रश्न 4. कविता की आवश्यकता क्यों है ?

उत्तर—कविता प्रकृति की ओर आकृष्ट करती है फलतः मनुष्य मनुष्यता नहीं खो पाता और उसमें दया, ममता, प्रेम, करुणा आदि भाव उभरते रहते हैं। भावों के दब जाने पर तो मनुष्य मृतवत् होता है।

प्रश्न 5. कविता का सृष्टि सौन्दर्य से क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर—कविता सृष्टि की वस्तुओं के भीतरी सौन्दर्य से परिचित कराती है। भीतरी सौन्दर्य के चित्रण बिना वस्तु का, व्यक्ति का वर्णन अधूरा ही रहता है। भीतरी सौन्दर्य से आकृष्ट होकर ही हम किसी की दयालुता, करुणा आदि से प्रभावित हो पाते हैं।

प्रश्न 6. कविता में क्या होना चाहिए ?

उत्तर—कविता में उचित शब्दों के प्रयोग, जैसे—'विवाह करना' के स्थान पर 'हाथ पकड़ना', नाद-सौन्दर्य; भाव-सौन्दर्य को महत्त्व दिया जाना चाहिए। शब्दों का प्रयोग प्रसंग या अवसर के अनुकूल होना चाहिए।

प्रश्न 7. कविता के सन्दर्भ में अलंकारों के महत्त्व के बारे में लेखक के क्या विचार हैं ?

उत्तर—कविता में अलंकार हठ पूर्वक लादे नहीं जाने चाहिए। स्वाभाविक रूप में आये हुए अलंकार पाठक में भाव, रस का प्रवाह ला देने में सहायक सिद्ध होते हैं।

2. हमारा देश और राष्ट्र भाषा

प्रश्न 8. हमारे साहित्य, कला, दर्शन आदि अपनी विविधता में भी एक किस कारण से हैं ?

उत्तर—रूपात्मक प्रकृति के प्रति हमारी रागात्मक दृष्टि, जीवन के प्रति हमारी आस्था, समाज, देश और विश्व के बारे में हमारी नैतिक मान्यताओं की तात्त्विक एकता ही इसका कारण है।

प्रश्न 9. हममें अंग्रेजी भाषा के प्रति आकर्षण क्यों रहा है ?

उत्तर—वह इसलिए है कि अंग्रेजी दीर्घकाल तक हमारे विचार-विनिमय और शिक्षा का माध्यम तो रही है हो, हमारे विद्वान् और संस्कृत होने का भी प्रमाण रही है।

प्रश्न 10. लेखिका की दृष्टि में हिन्दी के एक भारतीय रूप के होने के लिए कौन सा आधार है ?

उत्तर—उनकी दृष्टि में वह आधार है हिन्दी का संश्लिष्ट रूप और मूलगत गठन जो कि भाषा के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। वह दूसरी भाषाओं के शब्द ग्रहण करने में उदार रही है।

प्रश्न 11. हिन्दी की लिपि के सम्बन्ध में लेखिका का क्या विचार है ?

उत्तर—ब्राह्मी लिपि से लेकर नागरी लिपि तक आते-आते इसके स्वरूप में काफी परिष्कार हुआ है और वह मामूली परिवर्तन से ही मुद्रण लेखन यन्त्रों से अपनी संगति बिठा सकती है।

प्रश्न 12 महादेवी जी भाषा के सम्बन्ध में सबसे बड़ी बाधा किसे मानती हैं ?

उत्तर—वे सबसे बड़ी बाधा इसे मानती हैं कि हम राज्य मुखापेक्षी होते जा रहे हैं।

प्रश्न 13. हिन्दी के विकास के लिए किस बात की विशेष आवश्यकता है ?

उत्तर—इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे हृदय से हिन्दी का विकास करने की प्रेरणा मिले, हम हृदय से उसकी उन्नति चाहें।

3. हरी-हरी दूब और लाचार क्रोध

प्रश्न 14. ऐसी कौन-सी वस्तुएँ हैं जिनका प्रयोग हमारे देश में मांगलिक कार्य में प्राय: किया जाता है ?

उत्तर—ये हैं हल्दी और दूब जिनका प्रयोग हमारे देश में हर मांगलिक कार्य में किया जाता है।

प्रश्न 15. दूब का वास्तविक जन्म-स्थान कौन सा है ?

उत्तर—इसका वास्तविक जन्म-स्थान क्षीरसागर है। इसी कारण यह समुद्र कन्या है।

प्रश्न 16. पुराणों में राम के वर्ण की तुलना किससे की गई है ?

उत्तर—पुराणों में राम के श्याम वर्ण की तुलना दूर्वादल के रंग से की गई है।

प्रश्न 17. लेखक ने हमारी धरती को पार्वती रूपिणी किस आधार पर बताया है ?

उत्तर—लेखक ने धरती को पार्वती रूपिणी बताया है। जिस प्रकार पार्वती का सौभाग्य अमिट है उसी प्रकार धरती का सौभाग्य दूर्वा अमिट, अविनाशी है। वह हर परिस्थिति में जीवित रह जाती है।

प्रश्न 18. वैदिककाल से ही दूर्वा माँगलिक कार्यों में प्रयुक्त रही है, इसका उदाहरण दीजिए।

उत्तर—वैदिक काल में वरमाला दूर्वा और मधूक को गूँथकर बनाई जाती थी। यही उक्त कथन के लिए प्रमाण है।

प्रश्न 19. दूब सदाबहार आदि होते हुए भी गर्व नहीं करती, इसका क्या प्रमाण है ?

उत्तर—इसका प्रमाण यह है कि यह पैरों के नीचे कुचली जाने पर भी रोष नहीं करती और पनपने पर भी ऊँची नहीं होती।

प्रश्न 20. सच्चे हिन्दुस्तानी मन की क्या विशेषता है ?

उत्तर—वह यह है कि सच्चा हिन्दुस्तानी मन वनवासी राम को, पत्थर को, घासपात को पूज सकता है पर सिंहासन और सोने को नहीं पूजता।

प्रश्न 21. सच्चा हिन्दुस्तानी मन किस प्रकार की महानता को महत्त्व देता है ?

उत्तर—वह अन्त:करण की, हृदय की महानता को महत्त्व देता है। लट्ठे और ताड़ की सी महानता को महत्त्व नहीं देता। वह लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई को महत्त्व नहीं देता।

प्रश्न 22 प्राचीन बुद्धिजीवी की अखण्डना के पीछे कौन सी ताकत है कि वह राजा को भी फटकार सकता था ?

उत्तर–लेखक के अनुसार वह ताकत थी बुद्धिजीवी की' आस्तिक आस्था की।

प्रश्न 23. आज दी जाने वाली शिक्षा ईश्वर-निरपेक्ष मूल्यों की शिक्षा है, नैतिकता-निरपेक्ष शिक्षा है।

प्रश्न 24. क्या ईश्वर के अलावा भी किसी में आस्था हो सकती है ?

उत्तर–लेखक मानता है कि आस्था ईश्वर के स्थान पर लोकतन्त्र में भी हो सकती है जो अन्तर्बल प्रदान कर सकती है।

प्रश्न 25. हममें भी लोकतन्त्र के प्रति प्रेम है, इसका क्या सबूत है ?

उत्तर–इसका सबूत यह है कि जहाँ-कहीं लोकतन्त्र आहत होता है वहाँ हमारा मर्म पीड़ित होता है, हमें दुःख होता है। तब हम क्रुद्ध हो जाते हैं।

प्रश्न 26. लोकतन्त्र के प्रति आस्था के अभाव का क्या कारण है ?

उत्तर–लोकतन्त्र में हमारी गहरी आस्था न हो पाने का कारण यह है कि अभी हमारे देश में लोकतन्त्र क्षमतावान मजबूत नहीं हो पाया है।

4. राजस्थानी साहित्य में वीरतामूलक मानववाद

प्रश्न 27. सच्चा मानववाद क्या है ?

उत्तर–सच्चा मानववाद वह है जहाँ मनुष्य स्वकेन्द्रित न होकर समाज केन्द्रित अथवा विश्वकेन्द्रित बन जाता है।

प्रश्न 28. सच्ची वीरता का लक्ष्य क्या है ?

उत्तर–सच्ची वीरता का लक्ष्य है अत्याचार का दमन करना तथा न्याय की स्थापना करना।

प्रश्न 29. मृत्यु को पर्व की तरह कहाँ मनाया जाता है ?

उत्तर–लेखक की मान्यता है कि विश्व में राजस्थान को छोड़कर सम्भवतः कहीं भी मृत्यु को पर्व के रूप में नहीं मनाया जाता।

प्रश्न 30. बीकानेर में कविश्रेष्ठ राठौड़ पृथ्वीराज से अपना मृत्यु-गीत सुनने की इच्छा किसने व्यक्त की थी ?

उत्तर–राठौर पृथ्वीराज से अपने जीवनकाल में ही अपना मृत्यु-गीत सुनने की इच्छा कल्ला नामक वीर ने व्यक्त की थी। उसने शाही सेना से लोहा लेने का आश्वासन दिया था।

प्रश्न 31. वीर कल्ला ने किस पर शाही सेना का आधिपत्य न करने देने के लिए युद्ध किया था ?

उत्तर–वीर कल्ला ने सिवाणा पर अधिकार न करने देने के लिए शाही सेना से युद्ध किया था और वीरगति को प्राप्त हुआ था।

प्रश्न 32. मानववाद के क्षेत्र में स्वातन्त्र्य की भावना भी रहती है, इस बारे में कोई उदाहरण दीजिए।

उत्तर—रत्नसिंह सोढ़ा ने अंग्रेजों से अमरकोट को स्वतन्त्र कराने के लिए प्राणपण से युद्ध किया था और लड़ता-लड़ता मारा गया था।

प्रश्न 33. राजस्थानी ऐसे किसी कवि का नामोल्लेख कीजिए जिसने गदर के समय की परिस्थितियों से प्रेरित होकर स्वातंत्र्य-भाव पैदा करने वाला काव्य रचा ?

उत्तर—गदर के समय की परिस्थितियों से प्रेरित होकर महाकवि सूर्यमल्ल ने वीर रस पूर्ण काव्यकृति 'वीर सतसई' रची जो वीरों में स्वातंत्र्य भाव जगाने वाली है।

प्रश्न 34. भारतेन्दु से भी बहुत पहले कौन से राजस्थानी कवि ने राष्ट्रीय भावना व्यक्त की थी ?

उत्तर—भारतेन्दुजी से भी बहुत पहले बाँकादास राजस्थानी कवि ने हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की राष्ट्रीय भावना को काव्य में स्थान दिया था।

प्रश्न 35. पाठ में चारण कवियों की प्रशंसा राजस्थान के किस व्यक्ति ने की है ?

उत्तर—ठिकाना बाठरड़ा (मेवाड़) के ठा. गुमानसिंह जी ने चारण कवियों की इस बात के लिए प्रशंसा की है कि उन्होंने क्षत्रियों को युद्ध क्षेत्र में जाने की बड़ी भारी प्रेरणा दी।

प्रश्न 36. दिनकर जी ने राजस्थान की मिट्टी के सम्बन्ध में क्या कहा है ?

उत्तर—दिनकर जी ने कहा कि राजस्थानी मिट्टी वीरता की समाधि है जिस पर खड़े होकर भावनाओं को रोक पाना कठिन है। यह वीरता एवं बलिदान की याद दिलाती है।

5. हिन्दी की व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइयां

प्रश्न 37. अंग्रेजी प्रेमी कुछ भारतवासी भाषा के किस रूप को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करने की बात करते हैं ?

उत्तर—अंग्रेजी प्रेमी वे लोग कलकत्ता, बम्बई जैसे नगरों में अहिन्दी-भाषियों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करने की बात करते हैं।

प्रश्न 38. अंग्रेजी प्रेमी कुछ भारतवासी हिन्दी में क्या दोष निकालते हैं ?

उत्तर—वे कहते हैं कि हिन्दी दरिद्र भाषा है और उसका साहित्य उच्च-कोटि का नहीं है। उन्हें हिन्दी का लिंग-भेद अखरता है।

प्रश्न 39. लेखक की दृष्टि में भाषा की लिंग सम्बन्धी कठिनाई उसके विकास में बाधक नहीं हुआ करती। इसका क्या प्रमाण दिया गया है ?

उत्तर—लेखक ने संस्कृत भाषा के शब्दों की लिंग सम्बन्धी कठिनाई को उदाहरण रूप में दिया है और बताया है कि इसके कारण संस्कृत भाषा के प्रसार में बाधा नहीं पड़ी।

प्रश्न 40. यूरोप की भाषाओं और संस्कृति पर कहां की भाषा का प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—यूरोप की भाषाओं और सस्कृति पर प्राचीन यूनान की एथेन्स की भाषा का प्रभाव पड़ा। इसी प्रकार लैटिन भाषा का भी प्रभाव रहा।

प्रश्न 41 राष्ट्र भाषा हिन्दी में लेखक की दृष्टि में कौन से परिवर्तन नहीं हो सकते ?

उत्तर—उसका मत है कि राष्ट्र भाषा हिन्दी में लिंग संबंधी परिवर्तन नहीं हो सकते और अहिंदी प्रदेशों में व्यवहृत टूटी-फूटी हिन्दी रूप को राष्ट्र भाषा नहीं बनाया जा सकता। लोगों को लिंग संबंधी परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त करनी ही चाहिए।

प्रश्न 42. उर्दू का जन्म कैसे हुआ ?

उत्तर—भारत में बाहर से आने वाले मुसलमानों की भाषाओं और भारत की बोलियों के मेल से अथवा खड़ी बोली और फारसी के मेल से उर्दू का जन्म हुआ।

प्रश्न 43. डॉ. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या का हिन्दी के बारे में क्या विचार है ?

उत्तर—उनका विचार है कि यदि हिन्दी की व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइयां विशिष्टताएं दूर कर दी जाएं तो हिन्दुस्तानी भाषा सरल और ओजपूर्ण भाषा बन सकती है।

6. व्योम-पुत्र की अन्तरिक्ष-सैर

प्रश्न 44. राकेशशर्मा की अन्तरिक्ष-यात्रा के दृश्य को टेलीविजन पर देखा जाना कैसे सम्भव हुआ ?

उत्तर—भारत, रूस और 300 कि. मी. की ऊंचाई से पृथ्वी की परिक्रमा कर रही सेल्यूत-7 प्रयोगशाला के बीच संचार सम्बन्ध का सेतु स्थापित किये जाने से ऐसा सम्भव हुआ।

प्रश्न 45. राकेशशर्मा ने कहां से और कैसे अन्तरिक्ष में प्रवेश किया ?

उत्तर—उन्होंने रूस में स्थित बोकानूर के अन्तरिक्ष अड्डे से 300 टन के शक्तिशाली राकेट यान के जरिये अन्तरिक्ष में प्रवेश किया।

प्रश्न 46. राकेश शर्मा की अन्तरिक्ष यात्रा के प्रोग्राम भारत भेजने की व्यवस्था किस उपग्रह से की गई थी ?

उत्तर—ऐसी व्यवस्था भूमध्यरेखा के 36,000 कि. मी. ऊपर स्थित स्तातिओनार-2 नामक संचार-उपग्रह से की गई थी।

प्रश्न 47. देश के दूरदर्शन केन्द्रों तक राकेश शर्मा की अन्तरिक्ष यात्रा के दृश्य हमारे कौन से उपग्रह के जरिये प्रसारित किये जाते थे ?

उत्तर– वे दृश्य भूमध्यरेखा से 36.000 कि. मी. की ऊँचाई पर स्थित इन्सेट–1 बी उपग्रह के जरिये प्रसारित किये जाते थे।

प्रश्न 48. अन्तरिक्ष में गये हुए राकेश शर्मा से यह किसने पूछा था कि भारत कैसा लगता है। राकेश शर्मा ने इसके जवाब में क्या कहा था ?

उत्तर –इन्दिरा गांधी ने राकेश शर्मा से उक्त प्रश्न किया था जिसके उत्तर में राकेश शर्मा ने कहा था "सारे जहां से अच्छा ।"

प्रश्न 49. अन्तरिक्ष में चुस्त रहने की दृष्टि से राकेश शर्मा ने क्या उपाय किया था ?

उत्तर—उन्होंने वहां प्रतिदिन दो-दो मिनट के पाँच योगासन किये थे। इनसे उन्हें चुस्त रहने में सहायता मिली थी।

प्रश्न 50. राकेश मर्शा की अन्तरिक्ष यात्रा के द्वारा लिए गये भारतीय भू-भाग के चित्रों से हमारे वैज्ञानिकों को क्या लाभ होगा ?

उत्तर— उनसे वैज्ञानिकों को भारतीय भू-क्षेत्र की वन सम्पदा, खनिज सम्पदा और जलराशि की जानकारी मिलेगी ।

प्रश्न 51. अन्तरिक्ष की विशेषता क्या है ?

उत्तर —उसकी विशेषता यह है कि वहां भारहीनता की स्थिति है जिसका औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से बड़ा महत्व है। वहा बढ़िया क्रिस्टल और विशुद्ध औषधियाँ तैयार की जा सकती हैं।

7. हिन्दी–साहित्य की परम्परा में जीवन–सत्य

प्रश्न 52. लेखक की दृष्टि में साहित्य क्या है ?

उत्तर—लेखक शिवदानसिंह चौहान की दृष्टि में साहित्य जीवन के ही विविध अंगों की अभिव्यक्ति है, जीवन-सत्य की अभिव्यक्ति हैं।

प्रश्न 53. साहित्य की हर परम्परा की अपनी क्या विशेषता है ?

उत्तर — उसकी अपनी विशेषता यह है कि हर परम्परा में उसके कवियों के भाव-विचार वस्तु या जीवन विषयक दृष्टिकोण की समानता है।

प्रश्न 54. साहित्य की एक परम्परा के कवियों के दृष्टिकोण में कब परिवर्तन आता है ?

उत्तर— यह परिवर्तन तब आने लगता है जब कि जीवन में कोई मौलिक परिवर्तन होता है। तभी तो एक काल में सामाजिक जीवन की जानकारी उस काल की साहित्य-परम्परा से अच्छी तरह प्राप्त की जा सकती है।

प्रश्न 55. हिन्दी काव्य में साहित्य की सबसे प्राचीन परम्परा कौन सी है और वह कितने समय तक रही ?

उत्तर— हिन्दी काव्य में साहित्य की सबसे प्राचीन परम्परा वीर-गाथाओं की परम्परा है जो तीन-चार सौ वर्षों तक रही ।

प्रश्न 56. वीरगाथा काव्य के ग्रन्थों को क्या नाम दिया गया है ?

उत्तर—उन्हें 'रासो' नाम दिया गया है जैसे खुमान रासो, पृथ्वीराज रासो आदि ।

प्रश्न 57. वीरगाथा कालीन ग्रंथों में क्या सामाजिक जीवन के हर स्तर और वर्ग का चित्रण हुआ है ?

उत्तर— ऐसा उनमें नहीं हुआ । उनमें तो उस समय के पराक्रम, विजय-युद्धों और शत्रु कन्या-हरण का विस्तार से वर्णन हुआ है ।

प्रश्न 58. वीरगाथाओं की परम्परा कब समाप्त हुई ?

उत्तर— वह परम्परा हमारे देश में मुसलमानों की सत्ता स्थापित होने पर समाप्त हुई और तब जीवन के व्यापक प्रश्नों पर सोचने का विवशता का अनुभव हुआ ?

प्रश्न 59. आचार्य शुक्ल ने भक्तिकालीन काव्य परम्परा को कौन-कौनसी शाखाओं में विभक्त किया है ?

उत्तर— शुक्लजी ने उस काव्य परम्परा को (1) ज्ञानाश्रयी शाखा (2) प्रेममार्गी शाखा (3) रामभक्ति शाखा और (4) कृष्णभक्ति शाखा में विभक्त किया है ।

प्रश्न 60. उक्त चार शाखाओं में सबसे अधिक महत्व की शाखा कौनसी है और क्यों है ?

उत्तर— चारों में सर्वाधिक महत्व की शाखा ज्ञानाश्रयी शाखा है जिसके प्रतिनिधि कवि कबीर है । इस शाखा में जीवन सत्य की सबसे अधिक और स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति हुई है । उसमें सकल मानवीय एकता का आदर्श प्रस्तुत किया गया है ।

प्रश्न 61. भक्तिकाल में अधिक विरोध किस-किस वर्ग के बीच विद्यमान था ?

उत्तर— यह विरोध हिन्दू-मुसलमानों में इतना नहीं था जितना कि हिन्दुओं के उच्च वर्ग और दलित वर्ग के बीच विद्यमान था ।

प्रश्न 62. कबीर ने मुख्यतया क्या कार्य किया ?

उत्तर—उन्होंने जनता में एकता और समानता का भाव लाने का और हिन्दू-मुसलमानों के लिए मान्य एक उपासना स्वरूप की अभिव्यक्ति करने का कार्य किया ।

प्रश्न 63. प्रेममार्गी शाखा के कवियों ने कैसा वर्णन किया है ?

उत्तर—उन्होंने लौकिक प्रेम के रूपकों द्वारा भगवत्प्रेम का ही मुख्य रूप से वर्णन किया है।

प्रश्न 64. सूर-तुलसी के काव्य की क्या विशेषता है ?

उत्तर—उनके काव्य की विशेषता यह है कि उन्होंने अपने काव्य में अपने ग्रन्थों में सम्पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति करते हुए व्यापक मानवीय सहानुभूति व्यक्त की है।

प्रश्न 65. रीति परम्परा कहां पनपी ?

उत्तर—यह परम्परा राजाओं के दरबार में पनपी और वहीं तक सीमित रही। ये राजा विलासी थे और आमोद प्रमोद के साधन जुटाने में जीवन की सार्थकता समझते थे।

प्रश्न 66. छायावादी काव्य में क्या अभिव्यक्त हुआ है ?

उत्तर—इस काव्य में आधुनिक जीवन की विषमताओं के प्रति व्यक्ति के गहरे असंतोष को और मुक्ति की कामना को अभिव्यक्त किया गया है।

8. राजस्थानी उपाख्यानों में उदारता की महिमा

प्रश्न 67. राजस्थानी संस्कृति की दो प्रमुख विशेषताएं कौन सी हैं ?

उत्तर—राजस्थानी संस्कृति की दो प्रमुख विशेषताएं हैं— उदारता और वीरता। इनकी अभिव्यक्ति ऐतिहासिक काव्यों, ख्यातकर्त्ताओं और ऐतिहासिक उपाख्यानों में हुई है।

प्रश्न 68. उपाख्यानों में कवियों को दान में दी जाने वाली राशि के लिए क्या-क्या नाम प्रचलित रहे ?

उत्तर—पौर्वकालिक कवियों को दान में दी गई राशि के लिए 'लाख पसाव' और 'करोड़ पसाव' नामों का उल्लेख उपाख्यानों में उपलब्ध है।

प्रश्न 69. महाराणा भीमसिंह की क्या विशेषता थी ?

उत्तर—उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की विशेषता थी कि उन्होंने याचिकों को विषम परिस्थितियों में भी कभी निराश नहीं लौटाया। 'भीम विलास', भीम प्रकास' आदि में इसका उल्लेख है।

प्रश्न 70. 'लक्खी पूजा' का किससे सम्बन्ध है ?

उत्तर—कवियों ने ईडर राज्य के ठिकाने के सरदार सूरजमल्ल चौहान की युद्ध एवं वदान्यता पर एक लाख छंदों में रचनाकर लक्खी पूजा' की थी।

प्रश्न 71. सीकर राज्य के नेछवा ठिकाने के स्वामी रामसिंह की क्या विशेषता थी ?

उत्तर—रामसिंह प्रतिदिन कवि के आने पर अभिवादन करने पर दस रुपये की थैली प्रदान कर 'शुभराज' स्वीकार करते थे।

प्रश्न 72 बूंदी नरेश महाराव राजा शत्रुमाल हाडा ने किस प्रकार वीर गति पाई ?

उत्तर—उन्होंने सामूगढ़ के युद्ध में शाहजहाँ के शाहजादे मुराद और औरंगजेब की सम्मिलित सेना से युद्ध कर वीरगति पाई थी।

9. बाढ़ के जल पर नियन्त्रण

प्रश्न 73. नील नदी के बाँध के बारे में जानकारी दीजिए।

उत्तर—करीब 6000 वर्ष पूर्व मिश्र के बादशाह मेनेस ने नील नदी पर विशाल बाँध निर्मित कराया था जिस का बाढ़ से रक्षा करने तथा सिंचाई करने की दृष्टि से महत्व था।

प्रश्न 74. आधुनिक युग के इन्जीनियरों द्वारा बनवाये गये किसी बाँध का उल्लेख कीजिये ?

उत्तर—आधुनिक युग के इन्जीनियरों द्वारा बनवाये गये मिश्र के ऐस्वान बांध का नाम उल्लेख्य है। इसकी गिनती संसार के बड़े बांधों में की जाती है। इसमें एक अरब टन पानी आता है।

प्रश्न 75 भारत की बड़ी नदी घाटी योजनाओं को किस नाम से जाना जाता है ?

उत्तर—भारत में बड़ी नदी घाटी योजनाओं को बहुधन्धी योजनाओं के नाम से जाना जाता है क्योंकि इनसे अनेक काम लिए जा सकते हैं।

प्रश्न 76. भारत की सबसे बड़ी बहुधन्धी योजना के बारे में बताइये।

उत्तर—ऐसी सबसे बड़ी बहुधन्धी योजना है—भाँखरा नांगल योजना इसकी ऊंचाई 216 मी. है। इससे बनी झील गोविन्द सागर झील है जिसमें 10 लाख हैक्टेयर मीटर पानी समा सकता है। योजना का उद्‌घाटन नेहरू जी ने किया था।

प्रश्न 77. संसार की सबसे बड़ी सिंचाई नहर कौन सी है ?

उत्तर—वह नहर भाँखरा नांगल परियोजना की नांगल नहर है जो 65 कि. मी. लम्बी है।

प्रश्न 78. संसार का सबसे ऊंचा बाँध कौन सा है ?

उत्तर—संसार का सबसे ऊंचा बाँध अमेरिका में कोलोरेंडो नदी पर बना 'बोल्डर बाँध' है जिसकी ऊंचाई 221·5 मीटर है। यह आधुनिक इन्जीनियरिंग विज्ञान की सर्वोत्तम कृति है।

10. चलते हुए घर

प्रश्न 79. गाड़िया लोहार कहां के मूल निवासी हैं ?

उत्तर—वे राजस्थान के मूल निवासी हैं जो अपने आपको राणाप्रताप के खानदानी मानते हैं।

प्रश्न 80. गाड़िया लोहारों की प्रतिज्ञाएं कौन-कौन सी हैं ?

उत्तर—उनकी प्रतिज्ञाएं हैं– घर नहीं बनायेंगे, घास का बिस्तार काम में लेंगे, कुए से पानी नहीं भरेंगे, हुक्के की नेह लम्बी नहीं रखेंगे। नेहरू ने देश की स्वतंत्रा के बाद ये प्रतिज्ञांए तुड़वा दी थीं।

प्रश्न 81. गाड़िया लोहारों की सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु क्या है ?

उत्तर—उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु है उनकी गाड़ी। वह गाड़ी ही उनका घर है। उसी के सहारे उन्होंने चार सौ वर्ष गुजारे हैं। वह लम्बोतरे ताबूत की शक्ल की होती है।

प्रश्न 82. गाड़िया लोहारों के व्यवसाय के बारे में बताइये।

उत्तर—गाड़िया लोहार कुल्हाड़ी आदि लोहे का सामान बनाने का ही काम करते हैं। पहले वे बैलों का भी व्यापार करते थे। अब कुछ लोग खेती करते हैं।

11. आर्थिक विकास में मानवीय साधन

प्रश्न 83. आर्थिक विकास के लिए बनाई जाने वाली योजनाओं की सफलता के लिए क्या जरूरी है ?

उत्तर– इसके लिए जरूरी है कि योजनाएं जनता की आवश्यकताओं के अनुकूल हों और सामाजिक ढांचा नियोजन की मान्यताओं के अनुरूप हो।

प्रश्न 84. श्रमिकों की भलाई की दृष्टि से रोजगार केन्द्रों की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर– बहुत से श्रमिकों को अपनी क्षमता एवं रुचि के अनुकूल कार्यों का पता नहीं चल पाता। रोजगार केन्द्र श्रमिकों को यह जानकारी दे सकते हैं।

प्रश्न 85. श्रमिकों के सन्दर्भ मे उन्हें सम्पूर्ण मानव बनाने के लिए क्या-क्या जरूरी है ?

उत्तर—इसके लिए श्रमिकों को रोटी, कपड़ा और मकान की भौतिक आवश्यकताओं की ही पूर्ति पर्याप्त नहीं है, उनमें राष्ट्र प्रेम, भ्रातृत्व, स्नेह, नैतिकता आदि भावनाओं का भी विकास होना जरूरी है।

प्रश्न 86. अल्पविकसित देशों के आर्थिक विकास के लिए क्या जरूरी है ?

उत्तर—उसके लिए मानवीय साधनों का इष्टतम उपयोग और श्रमिकों की कार्य क्षमता में वृद्धि जरूरी है। आर्थिक विकास सम्पूर्ण मानव के निर्माण के लिए एक साधन मात्र है।

पद्य खण्ड

1. वन में राम

प्रश्न 87. 'वन में राम' कविता में किस समय का वर्णन है ?

उत्तर—वनवास दिये जाने पर जब राम, सीता, लक्ष्मण वन में आकर रहने लगे थे, इसमें तब का वर्णन किया गया है।

प्रश्न 88. पाप पुञ्ज पर बिजली की भांति टूटने की बात किसने कही है ?

उत्तर—यह बात वन में रह रही सीता ने कही है।

प्रश्न 89. 'मैं मनुष्यत्व का नाट्य खेलने आया।' इस कथन में मनुष्यत्व के नाट्य से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—गुप्तजी ने राम को भगवान के बजाय आदर्श मानव के रूप में चित्रित करना चाहा है इसीलिए उन्होंने राम से कहलवाया है कि यहां मैं अच्छे मनुष्य का उदाहरण प्रस्तुत करने आया हूं।

प्रश्न 90. 'जगदुपवन के झंखाड़ झांटने आया।, इस कथन से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—कवि ने बताया है कि राम ने संसार के दुष्ट लोगों, राक्षसों को दूर करने का लक्ष्य उसी प्रकार निर्धारित किया है जिस प्रकार माली उपवन को सुन्दर बनाये रखने के लिए झंखाड़ों को उखाड़ फेंकता है।

प्रश्न 91. जो नाम मात्र ही स्मरण मदीप करेंगे।
वे भी भवसागर बिना प्रयास तरेंगे।।

इस कथन से कवि की कौनसी विशेषता व्यक्त हो रही है ?

उत्तर—इससे यह प्रतीत होता है कि गुप्तजी राम के भक्त थे, वैष्णव भक्त थे और भक्ति का महत्त्व स्वीकार करते थे। वे भगवान के नाम-स्मरण, नाम जप का महत्त्व मानते थे।

प्रश्न 92. 'वसुधा का हरा दुकूल भरा लहरावे।' इस पंक्ति में हरा दुकूल किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

उत्तर—यहां 'हरा दुकूल' प्राकृतिक वनस्पति और फसलों की हरियाली सम्पन्नता का द्योतक है।

प्रश्न 93. इस कविता के आधार पर आर्यों के आदर्श बताइये।

उत्तर—आर्यों के आदर्श है तपस्या करना, वेदों को महत्त्व देना, हवन यज्ञ करना, त्याग भावना का परिचय देना।

2. जागो फिर एक बार

प्रश्न 94. 'अरुण पंख तरुण किरण
खड़ी खोलती है द्वार।'

यहां तरुण किरण किस के लिए प्रयुक्त है ?

उत्तर— तरुण किरण सूर्य की किरणों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

प्रश्न 95. 'जागो फिर एक बार' कविता में क्या संदेश दिया गया है ?

उत्तर—इसमें जन जागृति का सन्देश दिया गया है।

प्रश्न 96. 'जागो फिर एक बार' कविता के रचयिता कौन हैं ?

उत्तर—इसके रचयिता श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' है।

प्रश्न 97. 'ऐसे ही संसार के बीते दिन, पक्ष, मास, वर्ष कितने ही हजार' इस कथन से क्या व्यक्त होता है ?

उत्तर—इससे संसार की परिवर्तनशीलता, समय के स्थायी न रहने की, गतिशीलता की विशेषता व्यक्त होती है।

3. मनुज का श्रेय

प्रश्न 98. कवि ने 'मनुज का श्रेय' कविता में विज्ञान को मनुष्य के लिए श्रेयस्कर क्यों नहीं माना ?

उत्तर—कवि ने विज्ञान को इसलिए श्रेयस्कर नहीं माना कि विज्ञान विश्व को जलाने वाला, मृत्यु ला देने वाला है। वह सृष्टि में कष्ट ही बढ़ाने वाला है।

प्रश्न 99. कवि ने विज्ञान रूपी तलवार को फेंक देने की बात क्यों कही है ?

उत्तर—कवि ने इसलिए ऐसा कहा है कि मनुष्य का व्यवहार उस बच्चे के समान है जिसे फूल और कांटों की स्पष्ट पहचान नहीं है। मनुष्य विज्ञान के आविष्कारों से कहीं अपना नुकसान न करले, इस दृष्टि से उसने विज्ञान रूपी तलवार फेंकने के लिए कहा है।

प्रश्न 100. कवि ने विज्ञान को किस रूप में वरदान माना है ?

उत्तर—विज्ञान के लाभ सब को उपलब्ध हों, इससे मनुष्य के श्रम का शोषण न हो, प्रकृति का दोहन कर मानव जाति को समृद्ध बनाया जाए, तभी विज्ञान को श्रेयस्कर कहा जा सकता है।

प्रश्न 101. कवि मनुष्य के नये कैसे इतिहास की कल्पना करता है ?

उत्तर—वह चाहता है कि मनुष्यों में समानता, न्याय, निडरता, दृढ़ विश्वास हो और कहीं किसी का शोषण न हो।

प्रश्न 102. 'वन में श्रेय' कविता का मूलभाव लिखिए।

उत्तर—कवि ने इसमें स्पष्ट किया है कि अभी तो मनुष्य वैज्ञानिक आविष्कारों का दुरुपयोग कर रहा है। इन आविष्कारों से संसार में भय व्याप्त हो गया है। मनुष्य भावनाओं का महत्त्व भुला बैठा है, आत्मा की आवाज की परवाह नहीं करता। विज्ञान का उपयोग मनुष्य-मनुष्य के बीच समानता, न्याय की स्थापना करने के लिए होना चाहिए। संसार से युद्ध, रक्तपात, शोषण समाप्त हो जाने चाहिए।

4. युद्ध विराम

प्रश्न 103. 'युद्ध विराम' कविता में क्या वर्णित है ?

उत्तर – प्रस्तुत कविता में कवि ने स्पष्ट किया है कि भले ही अब युद्ध न हो परन्तु युद्ध का भय नहीं मिटा है। युद्ध आगे भी हो सकता है महाशक्तियां युद्ध की तैयारी किये हुए हैं। वे धोखा भी दे सकती हैं। दलित वर्ग अभी स्वतंत्र नहीं है। अब भी लोगों में, देशों में वैरभाव विद्यमान है। भारत ही इस धरती को युद्धों से बचा सकता है।

प्रश्न 104. पहाड़ी खोहों में
चट्टानों की ओट में
वनैली खूंखार आंखें
घात में बैठी हैं। इन पंक्तियों का क्या आशय है ?

उत्तर—कवि इनके द्वारा बताना चाहता है कि हथियारों से सम्पन्न देश युद्ध करने के लिए मौके की तलाश में तैयार बैठे हैं। उनका व्यवहार खतरनाक लगता है।

प्रश्न 105. 'नहीं' अभी कुछ नहीं बदला है ;
हिम-चोटियों पर छाये हुए बादल तो
केवल परदा हैं" इन पंक्तियों द्वारा कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है ?

उत्तर—कवि ने स्पष्ट करना चाहा है कि अभी पूर्ण शांति का माहौल नहीं बना है। युद्ध हमेशा के लिए बन्द नहीं हुए हैं। शांति वार्ताएं आदि के चलते हुए भी कुछ देश युद्ध की तैयारी में जुटे हैं वार्ताएं आदि तो युद्ध की तैयारी आदि पर पर्दा हैं, युद्ध की तैयारी को छिपाने के लिए आवरण हैं।

प्रश्न 106. 'बन्दूक के कुन्दे से
हल के हत्थे की छुअन
हमें अब भी अधिक चिकनी लगती है।'
इस कथन से क्या आशय है ?

उत्तर—कवि बताना चाहता है कि आज की परिस्थितियों में भी सामान्यतया लोगों को युद्ध अच्छे नहीं लगते। उन्हें अपने कामों को सम्पन्न करना, परिश्रमपूर्वक जीवन यापन करने जैसी बातें ही पसन्द हैं।

प्रश्न 107. 'अब भी हमारी धरती पर
वैर की जलती पगडण्डियाँ दिख जाती है।'
इस कथन द्वारा कवि ने क्या कहना चाहा है ?

उत्तर—कवि ने बताना चाहा है कि भले ही युद्धों को दुनिया से हमेशा के लिए बन्द कर देने के प्रयास क्यों न चल रहे हैं परन्तु इतना स्पष्ट है कि अब भी देशों के बीच दुश्मनी का भाव विद्यमान है।

प्रश्न 108. कवि की दृष्टि में भारत के निवासियों में कौनसी ऐसी विशेषताएं है जिनके आधार पर वह आशव करता है कि विश्वशान्ति कभी भारत के प्रयासों से ही आयेगी।

उत्तर—कवि की दृष्टि में भारतवासियों में स्नेह और विश्वास की भावनाएं पाई जाती हैं। उनमें सहिष्णु, क्षमा, तप आदि की विशेषताएं हैं जिनके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत के प्रयासों से ही विश्व में शांति लाई जा सकेगी क्योंकि अन्य लोगों में ये अच्छाइयां नहीं हैं।

5. आह्वान

प्रश्न 109 'आह्वन' गीत में कवि केवल युवकों का ही आह्वान क्यों करता है ?

उत्तर—कवि ऐसा मानता है कि केवल युवक ही विनाश पर हँस सकते हैं, उनमें नया खून है, जोश है, वे भविष्य का अनुमान लगा सकते हैं, वे नये इन्सान के निर्माण की कल्पना कर सकते हैं और उनमें अदम्य उत्साह है, कष्ट सहिष्णुता है।

110. 'ओ जो तुम नये जीवन, नये संसार के लिए स्वागतकार' ऐसा नवयुवकों के लिए कवि ने क्यों कहा है ?

उत्तर—कवि कहना चाहता है कि युवक वृद्धों की तुलना में नये हैं। उनमें नई उमंगें, नया जोश है, वे नई परिस्थितियों को ज्यादा जानते हैं। उन्हें ही भविष्य में सामने आने वाली परिस्थितियों का सामना करना है क्योंकि तब तक वृद्ध लोग जीवित नहीं रहेंगे।

प्रश्न 111. 'ओ जो तुम अन्धकार में किरणों के उभार'—इस पंक्ति से क्या व्यंजित होता है ?

उत्तर—कवि कहना चाहता है कि निराशा के वातावरण में भी युवक उसी प्रकार दृढ़ रह सकते हैं जिस प्रकार अन्धकार में प्रकाश की किरणें रहती है, नवयुवक ही निराशा एवं विषम परिस्थितियों में आगे बढ़ने की क्षमता रखते हैं।

प्रश्न 112. कवि ने 'आह्वान' कविता द्वारा क्या उद्देश्य पूरा करना चाहा है ?

उत्तर—कवि ने इस कविता द्वारा नवयुवकों को उनकी क्षमताओं, उनकी शक्तियों से अवगत कराना चाहा है और उन्हें अपनी क्षमताओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित करना चाहा है। कारण यह है कि वृद्धों के बजाय युवकों को ही भविष्य की परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। उनका सावधान रहना जरूरी है।

6. मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला

प्रश्न 113. कवि ने देश को जलता हुआ क्यों बताया है ?

उत्तर—स्वतन्त्रता के बाद देश में असंख्य परिवार वाले आपस में फूट रखते हैं, लड़ते-झगड़ते हैं, कलह करते हैं, कुछ नेताओं जैसे लोग दूसरों में फूट पैदा किया करते हैं। बहुत से लोग अपना ही स्वार्थ देखते हैं और देश-हित की चिन्ता नहीं करते। इस कारण ही कवि देश को जलता हुआ बताया है :

प्रश्न 114. 'किन्तु नहीं जलते सदियों से
जकड़े गर्हित बन्धन।'

ऐसा कह कर कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है ?

उत्तर—कवि वे बताया है कि परिवार वाले आपसी फूट, कलह के शिकार हैं, वे मानो जल रहे हैं परन्तु उनकी जो रूढ़ियाँ हैं, हानिप्रद रीति-रिवाज, अन्ध-विश्वास हैं वे अभी तक नहीं मिट सके हैं।

प्रश्न 115. 'दूर बैठकर ताप रहा है, आग लगाने वाला' इस पंक्ति में आग लगाने वाले से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—कवि ने बताया है कि देशवासी आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। परिवार जन ही सम्पत्ति के बँटवारे को लेकर झगड़ा करते हैं। उन्हें दूसरे लोग भड़का देते हैं और फिर उन्हें झगड़ते देखकर खुश होते हैं. अपना लाभ उठाने का प्रयत्न करते हैं।

प्रश्न 116. किन्तु एक दिन को भी
हमको अखरी नहीं गुलामी।'

ऐसा कवि ने किस आधार पर कहा है ?

उत्तर—हम जानते हैं कि देश की गुलामी दूर करने वाले तो गाँधीजी, चन्द्रशेखर जैसे लोग ही थे, बाकी ज्यादातर जनता तो अंग्रेजों के अत्याचार, उनकी गुलामी सह रही थी। उसने अंग्रेजों के खिलाफ उस तरह झगड़े, उस तरह विरोध नहीं किया था जिस तरह वे अब अपने भाइयों से सम्पत्ति के बँटवारे आदि के लिए झगड़ रहे हैं।

प्रश्न 117. 'कुल - कलंक - संतान
सौर में गला घोंट मैं देती।'

माँ ने अपनी संतान के बारे में ऐसा क्यों कहा है ?

उत्तर– हरेक माँ चाहती कि उसकी सन्तान उसकी आज्ञा मानने वाली, घर की उन्नति में योग देने वाली हो परन्तु जब सन्तानें आपस में लड़ती हुई यह भी ध्यान नहीं रखती कि इस आचरण से हमारे घर, खानदान की बदनामी होती है तो दुखी माँ ऐसा ही सोचती, कहती है।

प्रश्न 102. भगतसिंह, अशफाक, गणेश बलिदानी व्यक्तियों के बारे में ऐसा क्यों कहा गया है कि वे अपनी कुर्बानी को व्यर्थ मान रहे होंगे ?

उत्तर— भगतसिंह आदि बलिदानी व्यक्तियों ने आशा की थी कि स्वतन्त्र होने के बाद देश में शांति, प्रेम, सद्भाव, भाई चारे की भावना दिखाई देगी और सभी देशवासी सुखी होंगे तथा देशहित के लिए कार्य करेंगे। परन्तु देशवासियों में आपसी फूट, स्वार्थ आदि की बुराइयाँ दिखाई देती हैं। इस कारण ही कवि ने उक्त बात कही है।

प्रश्न 103. 'हँसते हैं सब देख गुलामों का यह ढंग निराला।' ऐसा क्यों कहा गया है ?

उत्तर—कवि ने ऐसा इसलिए कहा है गुलाम रहे भारतवासी अब स्वतन्त्र होने के बाद आपस में लड़ते हैं। इतना ही नहीं देशहित की भावना छोड़कर स्वार्थ हित के लिए अबोध बच्चों तक की हत्या कर देते हैं। जो गुलामी की हालत में विदेशी सत्ता के खिलाफ कुछ न बोल सके वे अब अपने ही देश के निरपराध, निरीह बच्चों की हत्या करने में जैसे अपनी बहादुरी दिखा रहे हैं।

प्रश्न 104. 'आज सर्वहारा तू ही है एक हमारी आशा।' कवि ने सर्वहारा से ऐसी आशा क्यों की है ?

उत्तर—कवि ऐसा मानता है कि अभी तक शोषक वर्ग ही सत्ता में रहा है और देश की स्थिति सुधर नहीं पाई है। सर्वहारा वर्ग युगों से शोषण और गरीबी का शिकार रहा है इसलिए वह दुखी व्यक्तियों के दुखदर्द का अनुभव कर सकता है और इस वर्ग की उन्नति के लिए ज्यादा ध्यान दे सकता है।

कथा सौरभ

1. प्रेरणा

प्रश्न 1. इन्सपेक्टर के मुआइने के अवसर पर प्रिंसिपल साहब ने छात्रों को क्या हुक्म दिया था ?

उत्तर— प्रिंसिपल साहब ने हुक्म दिया था कि इन्सपेक्टर साहब के मुआइने के लिए आने के कारण छात्र निर्दिष्ट समय से आधा घण्टा पहले उपस्थित होवें ताकि उन्हें कुछ जरूरी बातें बताई जा सकें।

प्रश्न 2. इन्सपेक्टर साहब के मुआइने के लिए आने के दिन सूर्यप्रकाश ने क्या शरारत की थी ?

उत्तर— प्रिंसिपल साहब ने उस दिन छात्रों को निर्दिष्ट समय से आधा घण्टा पहले उपस्थित होने का हुक्म दिया था। परन्तु सूर्यप्रकाश ने उन्हें ग्यारह बजे से पूर्व स्कूल में प्रविष्ट ही नहीं होने दिया था।

प्रश्न 3. सूर्यप्रकाश के कक्षाध्यापक को अपना संचालन कौशल ऐसा क्यों प्रतीत हुआ जैसे वह मोर्चा खा गया है ?

उत्तर—कक्षाध्यापक को अध्यापन का दस वर्ष का अनुभव था। उन्हें अपनी संचालन-विधि पर गर्व था। ट्रेनिंग कॉलेज में इस विषय में उन्होंने ख्याति अर्जित

की थी पर सूर्यप्रकाश को वे नियन्त्रण में, अनुशासन में लाने में असमर्थ रहे थे। इसीलिए उन्हें अपना संचालन कौशल ऐसा लगा जैसे वह मोर्चा खा गया हो।

प्रश्न 4. शरारती सूर्यप्रकाश को विद्यालय के अध्यापक स्कूल से निकालने में क्यों झिझकते थे ?

प्रश्न—ऐसा करना वे अपनी अयोग्यता का प्रमाण मानते थे। इसीलिए अध्यापकों ने उसे स्कूल से निकाल देने का प्रस्ताव नहीं रखा था।

प्रश्न 5. अध्यापकों को कौन सा विचार निराशाजनक लगता था ?

उत्तर—उन्हें यह विचार निराशाजनक लगता था कि हम बीस-बाईस अनुभवी और शिक्षण-शास्त्र के आचार्य भी एक बारह-तेरह साल के उद्दण्ड बालक का सुधार नहीं कर पा रहे।

प्रश्न 6. लेखक सूर्यप्रकाश से सबसे ज्यादा परेशान क्यों था ?

उत्तर—यों तो स्कूल के सभी कर्मचारी सूर्यप्रकाश के कारण परेशान थे पर लेखक उसका कक्षाध्यापक होने के कारण सबसे ज्यादा परेशानी अनुभव करता था। उसे ही उस छात्र की शरारतों का सबसे ज्यादा कुफल भोगना पड़ता था।

प्रश्न 7: क्या सूर्यप्रकाश कक्षाध्यापक को दिये गये अपने पास होने के वचन को निभा पाया था ?

उत्तर—सूर्यप्रकाश ने कहा था कि मैं अब की बार भी पास हूँगा और वह सचमुच ही पास हुआ था। इतना ही नहीं उसके अंक उनके दोनों उत्तर-पत्रों में सबसे ज्यादा थे।

प्रश्न 8. आप कैसे कह सकते हैं कि सूर्यप्रकाश के कक्षाध्यापक स्वभाव से निराशावादी थे।

उत्तर—अन्य अध्यापक सूर्यप्रकाश के बारे में चिन्तित न थे पर कक्षाध्यापक तो उसके बारे में यहाँ तक सोचते थे कि वह या तो जेल में होगा या पागलखाने में। वे उसके सुधार की आशा न रखते थे। इसीलिए माना जा सकता है कि वे निराशावादी थे।

प्रश्न 9. अपने तबादले की बात से सूर्यप्रकाश के कक्षाध्यापक को प्रसन्नता क्यों हुई थी ?

उत्तर—उन्हें यह सोचकर प्रसन्नता हुई थी कि अब सूर्यप्रकाश उनके मार्ग का काँटा न रह सकेगा।

प्रश्न 10. स्टेशन पर सबसे विदा लेकर जब गाड़ी आगे पहुँची तब उसमें बैठे हुए अध्यापक को कैदी की भांति घृणा का अनुभव क्यों हुआ ?

उत्तर—अध्यापक ने गाड़ी से जब स्टेशन की ओर देखा था तब वहाँ उन्हें एक व्यक्ति दिखाई पड़ा था जो सूर्यप्रकाश ही हो सकता था। अध्यापक ने उसे इस

प्रकार खड़ा देखकर और दुखी देखकर अपने भीतर घृणा का अनुभव किया था। उन्हें घृणा इसलिए हुई कि दुख का अनुभव करने वाले, पश्चाताप करने वाले सूर्यप्रकाश से वे दो बातें क्यों न करके आये।

प्रश्न 11. 'शायद दुनिया का यही दस्तूर है।' लेखक ने ऐसा कहकर क्या व्यक्त करना चाहा है ?

उत्तर—लेखक ने यह कहकर व्यक्त करना चाहा है कि हम एक-दूसरे को भले ही कितना भी क्यों न चाहें पर दूर रहने पर एक-दूसरे को सदा उसी प्रकार नहीं याद रख पाते हैं और न कुछ समय बाद परस्पर पत्र-व्यवहार जारी रख पाते हैं।

प्रश्न 12. "किन्तु पदलिप्सा अब किसी और भी ऊँची डाली पर आश्रय लेना चाहती थी।" लेखक की पदलिप्सा के बढ़ने का क्या कारण था ?

उत्तर—पहले तो लेखक अध्यापक के रूप में बारह-तेरह साल के एक शरारती बालक को ही सन्मार्ग पर लाने में असफल रहा था पर बाद में उसे इग्लैण्ड में विद्याभ्यास करने का भी अवसर मिल गया था। वह तीन साल बाद कॉलेज का प्रिंसिपल भी बना दिया गया था। इस निरन्तर उन्नति के आधार पर ही उसकी पदलिप्सा बढ़ गई थी।

प्रश्न 13. लेखक अनिवार्य शिक्षा का सिद्धांत रूप में विरोधी क्यों रहा है ?

उत्तर—अनिवार्य शिक्षा में शिक्षा पाने की विवशता होती है जबकि लेखक व्यक्ति को निजी मामलों में स्वाधीनता दिलाने का पक्षपाती है। इसी कारण वह अनिवार्य शिक्षा का विरोधी रहा है।

प्रश्न 14 लेखक की दृष्टि में छोटी उम्र में बच्चों को स्कूल भेजना हानिकारक क्यों है ?

उत्तर—लेखक की मान्यता है कि हम युवावस्था में कम समय में ज्यादा शिक्षा ग्रहण करने में समर्थ होते हैं। छोटी उम्र में स्कूल भेजना बच्चों को बन्धन में डालना है। इससे उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास बाधित होता है।

प्रश्न 15. लेखक ने प्रिंसिपल का पद क्यों त्याग दिया था ?

उत्तर—उसने प्रिंसिपल की हैसियत से अनुशासन के उद्देश्य से कॉलेज के एक चपरासी को कॉलेज से निकाल दिया था। इस पर उसका बड़ा भारी विरोध हुआ था। मिनिस्टर साहब ने चपरासी को बहाल कर दिया था। तब से कॉलेज के कर्मचारी प्रिंसिपल के सामने अनेक प्रकार की शिकायतें लाने लगे थे और वे स्वतन्त्र रूप से काम करने में कठिनाई अनुभव करने लगे थे।

प्रश्न 16. प्रिंसिपल का पद-त्याग करने के बाद लेखक संसार से विरक्त क्यों हो गया था ?

उत्तर—लेखक की पत्नी उसके लिए बहुत बड़ा सहारा थी परन्तु वह समाप्त हो गई थी। उसके बिना जीवन में आगे बढ़ना उसे कठिन था असम्भव लगा था। वह आगे बढ़ते रहने को ही जीवन मानता था। पत्नी के निधन से उसके जीवन का विकास अवरुद्ध हो गया था। फलतः वह संसार से विरक्त हो गया था।

प्रश्न 17. एक डिप्टी कमिश्नर को अपने पैरों पर सिर रखते देखकर लेखक ने ऐसा क्यों माना था कि मैं ऐसा श्रद्धा का पात्र नहीं हूँ ?

उत्तर—उसे यह पता न था कि डिप्टी कमिश्नर उनका ही छात्र है। लेखक ऐसी श्रद्धा का पात्र तो साधुओं और ज्ञानियों को ही मानता था। उसी कारण वह न जानने तक कि डिप्टी कमिश्नर उनका छात्र है, सकपका गया था।

प्रश्न 18. "जी हाँ मैं आपका वही अभागा शिष्य हूं।" डिप्टी कमिश्नर बने सूर्यप्रकाश ने अपने अपको अभागा क्यों कहा होगा ?

उत्तर—सूर्यप्रकाश लेखक की कक्षा का छात्र था और सबसे शरारती था। वह उनके समझाने पर भी नहीं माना करता था। तब उसे भी अपने इस प्रकार के उत्थान की कल्पना न थी। लेखक को तो उसकी उन्नति के बारे में बिल्कुल आशा ही न थी। शायद यह सोच समझ कर कि मैं तो अभागा ही था पर अब किसी प्रकार इस पद पर आ पहुंचा हूं अपने बारे में अभागे शब्द का प्रयोग किया होगा।

प्रश्न 19. सूर्यप्रकाश का ऐसा कहने का क्या आशय था कि "हम लोग अभी अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना नहीं जानते"।

उत्तर—उसने सुना था कि मिनिस्टर साहब ने कर्त्तव्य का पालन करने वाले प्रिंसिपल का इसलिए पक्ष नहीं लिया, उनके साथ इसलिए न्याय नहीं किया कि अन्य लोग उनका विरोध करेंगे। इसी आधार पर उसने अधिकारियों को लक्ष्य कर यह कहा था कि हम लोग जिम्मेदारियों को पूरा करना नहीं जानते।

प्रश्न 20. प्रिंसिपल के रूप में लेखक ने कॉलेज के चपरासी को नौकरी से अलग कर दिया था इससे मामला तूल पकड़ गया था और प्रिंसिपल ने स्वेच्छा से त्याग पत्र दे दिया था। इस संबन्ध में लेखक ने यह क्यों कहा है कि मुझे अपनी स्वार्थ लिप्सा की सजा मिल गयी।"

उत्तर—लेखक ने चपरासी को नौकरी से इसलिए निकाला था कि इससे डर कर लोग अनुशासन हीनता आदि का परिचय नहीं देंगे और कॉलेज में माहौल अनुशासनपूर्ण होगा। इससे प्रिंसिपल का रौब बढ़ाता। यही उनकी स्वार्थ लिप्सा थी मिनिस्टर ने लोगों के दबाव में आकर चपरासी को बहाल कर दिया था प्रिंसिपल ने इसे अपना अपमान मानकर स्तीफा दे दिया था। इसे बाद में लेखक ने अपनी स्वार्थ लिप्सा की उचित सजा माना।

प्रश्न 21. "सम्पत्ति की अट्टालिका तक पहुँचने में दूसरों की जिन्दगी ही जीनों का काम देती है" यह कथन लेखक प्रिंसिपल पर कहाँ तक लागू होता है ?

उत्तर—प्रिंसिपल ने कॉलेज में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए अनुशासन को मजबूत बनाकर अपना काम आसान करने के लिए चपरासी को नौकरी से अलग कर दिया था। इससे प्रिंसिपल को लाभ ही मिलता था। इस दृष्टि से उक्त कथन प्रिंसिपल पर भी लागू होता है।

प्रश्न 22. सूर्यप्रकाश का चरित्र आशातीत ढंग से कैसे सुधर गया था?

उत्तर—सूर्यप्रकाश के पास उसका एक ममेरा भाई पढ़ाने आया था जो दया का पात्र था। सूर्यप्रकाश ने दयाकर उसकी सब प्रकार से सहायता की, उसकी उन्नति करनी चाही। इसके लिए यह जरूरी था कि वह स्वयं के चरित्र में सुधार करता और उसने खुद में सुधार किया।

प्रश्न 23. प्रेरणा कहानी का उद्देश्य क्या है

उत्तर—इस कहानी का उद्देश्य यह बताना है कि विद्यार्थी जीवन में कभी-कभी अप्रत्याशित परिवर्तन आ जाते हैं। सूर्य प्रकाश के बारे में कोई सोच भी न सकता था कि वह सुधर जायेगा और एक दिन डिप्टी कमिश्नर बनेगा। यह सब उसमें हुए अप्रत्याशित परिवर्तन का ही परिणाम था।

प्रश्न 24. 'प्रेरणा' कहानी आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी कैसे कही जा सकती है?

उत्तर—शुरू में इसके नायक सूर्यप्रकाश का यथार्थवादी ढंग से चित्रण कर उसे बेहद शरारती दर्शाया गया है। आगे मोहन को उसके जीवन में लाकर लेखक ने सूर्यप्रकाश में अप्रत्याशित सुधार दिखाया है और उसे डिप्टी कमिश्नर बना दिया है। वह लेखक ने ऐसा यह बताने के लिए किया है कि शरारती छात्र को भी सुधारने की आशा नहीं त्यागनी चाहिए।

प्रश्न 25 सूर्यप्रकाश ने ऐसा किस अधार पर कहा कि "मैं जो कुछ हु उसी का बनाया हुआ हूँ।"

उत्तर—सूर्यप्रकाश पहले स्कूल का सबसे ज्यादा शरारती छात्र था। जब से मोहन उसके पास आकर रहने लगा तब से सूर्यप्रकाश में समय की पाबन्दी, चारित्रिक अच्छाइयाँ आई। उसने यह सूर्य मोहन की उन्नति के लिए किया। मोहन की भलाई करने के प्रयास में वह खुद सुधर गया और अफसर भी बना।

प्रश्न 26. मानव प्रवृति का यह एक ऐसा रहस्य है जिसे मैं आज तक नहीं समझ सका" लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर—ऐसा सूर्यप्रकाश में हुए अप्रत्याशित परिवर्तन को देखकर कहा है।

प्रश्न 27. सूर्यप्रकाश आस्तिक कैसे हो गया था?

उत्तर—मोहन कहता था कि जब भगवान सब जगह रहते हैं तो वे मेरे पास भी मेरी रक्षा करने के लिए भी रहते होंगे, तब सूर्यप्रकाश उसे सान्त्वना देने हाँ, कह देता था। धीरे-धीरे वह आस्तिक हो गया था।

2. एक गौ

प्रश्न 28. हीरासिंह के सामने अपनी बीबी बच्चों की परवरिश करने की समस्या कैसे खड़ी हो गयी थी ?

उत्तर—वह जमींदार खानदान का था पर घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ती चली गई थी। इसीलिए घर की परवरिश करने की समस्या आ गई थी।

प्रश्न 29. हीरासिंह अपने घर की दयनीय स्थिति के लिए किसे दोष देता था ?

उत्तर—वह अपने भाग्य को ही दोष देता था।

प्रश्न 30. लोगों को सुन्दरिया से ईर्ष्या क्यों होती थी ?

उत्तर—वह डीलडौल में बहुत बड़ी और बहुत तन्दुरुस्त थी, इसलिए उससे लोगों को ईर्स्या होती थी।

प्रश्न 31. पटवारी ने सुन्दरिया के दो सौ रुपये लगा दिये थे फिर भी हीरासिंह ने पटवारी को उसे क्यों नहीं बेचा था ?

उत्तर—अपने बाप-दादों के घर में बैठा वह गाँव के एक पटवारी के घर पर सुन्दरिया को बँधी देखे यह उसे सहन न था। इसलिए उसने गाय गाँव में नहीं बेची थी।

प्रश्न 32. हीरासिंह के मन में अपने लड़के की ओर से क्या आशंका थी ?

उत्तर—उसे आशंका थी कि कहीं लड़का जवाहरसिंह पटवारी के यहाँ से अपनी बेची हुई गाय खोल न लाये।

प्रश्न 33. हीरासिंह जमींदार होकर भी दिल्ली नौकरी खोजने क्यों गया था ?

उत्तर—उसका परिवार आर्थिक कठिनाई में था, इसलिए जीवन निर्वाह के लिए नौकरी खोजने वह दिल्ली गया था।

प्रश्न 34. सेठ ने हीरासिंह से ही गाय का बन्दोबस्त करने को क्यों कहा था ?

उत्तर—सेठ जानता था कि हरियाणा में अच्छी गायें मिलती हैं और हीरासिंह हरियाणा का ही रहने वाला था।

प्रश्न 35. गाय की बात तय होती देखकर हीरासिंह को दुख क्यों हुआ था ?

उत्तर—एक तो यह सोचकर कि वह गाय को बेचने के लिए राजी हो रहा है और दूसरे इसलिए कि उसने सेठ से सच्ची बात नहीं कही, सेठ को बताया नहीं कि वह गाय मेरी ही है।

प्रश्न 36. सेठ से गाय का सौदा करते समय हीरासिंह के मन में क्या शंका थी ?

उत्तर—उसे शंका थी कि कहीं लड़का जवाहरसिंह गाय बेचने के लिए मना न कर दे।

प्रश्न 37. हीरासिंह ने सेठ से गाय की नौकरी पर कर देने के लिए कब कहा था ?

उत्तर—उसने तब कहा था जब गाय सेठ के घोसी को सौंपते समय उसने देखा था कि गाय हीरासिंह से अलग होना ही नहीं चाहती और उसकी आँखों में आँसू आ गये हैं।

प्रश्न 38. सेठ ने हीरासिंह को गाय की नौकरी क्यों नहीं दी थी ?

उत्तर—सेठ हीरासिंह को बहुत ईमानदार चौकीदार मानता था। इसलिए उसे चौकीदारी के काम पर ही रखना चाहता था।

प्रश्न 39. सेठ उसे ईमानदार समझता है, यह जानकर हीरासिंह को और दुख ही हुआ, क्यों ?

उत्तर—हीरासिंह को इसमे विश्वास हो गया कि अब सेठ उसे गाय की नौकरी पर नहीं भेजेगा। गाय से अलग रहने का हीरासिंह को दुःख था ही।

प्रश्न 40. हीरासिंह ने गाय की कीमत के रूप में प्राप्त नोटों को हाथ की मुट्ठी से क्यों कुचला ?

उत्तर—हीरासिंह गाय को बेचना नही चाहता था। नोट प्राप्त कर लेने पर गाय पराई हो गई थी और हीरासिंह को दुःख हुआ था। इसी कारण उसने नोटों को मुट्ठी में कुचल दिया था।

प्रश्न 41. सेठ ने हीरासिंह से ऐसा क्यों कहा था कि 'यह तुम मुझे धोखा तो नहीं देना चाहते ?

उत्तर—हीरासिंह की गाय ने उससे अलग होने के बाद पूरा दूध नहीं दिया था, इसी कारण सेठ ने हीरासिंह से ये शब्द कहे थे।

प्रश्न 42. जब सुन्दरिया के पूरा दूध न उतरा तो सेठ ने हीरासिंह को क्या दण्ड दिया ?

उत्तर—उसने गाय की कीमत के रुपये उसकी तनख्वाह से काट लिए थे और कीमत पूरी होने पर गाय लौटाने के लिए कहा था।

प्रश्न 43. गाय का दूध हीरासिंह के पास ड्योढ़ी में आकर तो यों ही बिखर जाता था पर सेठ के खूँटे पर उसके नीचे बहुत कम दूध क्यों प्राप्त होता था ?

उत्तर—गाय को हीरासिंह से अलग रहकर दुःख होता था। उससे अलग रहकर उसके पूरा दूध उतरता ही न था।

प्रश्न 44 हीरासिंह गरीबी की हालत में भी बेची हुई अपनी गाय को सेठ के यहाँ से वापस क्यों ले गया था ?

उत्तर—उसे अपनी गाय का दुःख सहन नहीं हुआ था इसीलिए वह उसे वापस ले गया था।

प्रश्न 45. 'एक गो' कहानी द्वारा लेखक ने क्या स्पष्ट करना चाहा है ?

उत्तर—लेखक ने बताना चाहा है कि पशुओं में अपने मालिक के प्रति बड़ा प्रेम होता है।

3. प्रवासी

प्रश्न 46. गोपालन को अकेलापन क्यों महसूस होता था ?

उत्तर—हिन्दी भाषा न जानने के और दक्षिण का निवासी होने के कारण उसके मित्र नहीं थे, इस कारण उसे अकेलापन महसूस होता था।

प्रश्न 47. गोपालन को अपनी जिन्दगी कैसी लगती थी।

उत्तर—मन्दिर के पत्थरों की भांति कठोर लगती थी।

प्रश्न 48. गोपालन उत्तर के लोगों को दक्षिण वालों से अच्छा क्यों मानता था ?

उत्तर—वह देखता था कि उत्तर के लोग आपस में बड़े स्नेह से रहते हैं जब कि दक्षिण के लोग परस्पर झगड़ते हैं।

प्रश्न 49. 'यह अज्ञात सुहाग उसके नारी जीवन का एक विराट षड्यन्त्र था।' राजम के बारे में ऐसा क्यों कहा गया है ?

उत्तर—राजम एक सुहागिन की तरह रहती थी भले ही उसका पति उसे छोड़कर अज्ञातवास कर रहा था। उसे राजम की चिन्ता ही न थी। राजम फिर भी मानो अपने पति को अपना सुहाग मानने पर विवश थी। वह दूसरा पति नहीं बना सकती थी।

प्रश्न 50. कोमल ने अपने विवाह में दक्षिणा लेने के लिए गोपालन को निमन्त्रण दिया तो गोपालन को ऐसा क्यों लगा जैसे उसके रोम-रोम पर अंगारे फेर दिये हों ?

उत्तर—गोपालन तो कोमल से विवाह करने का स्वप्न देख रहा था और कोमल ने किसी दूसरे से विवाह कर उसे दक्षिणा लेने को निमन्त्रित किया तो गोपालन को बुरा लगा।

प्रश्न 51. कोमल के विवाह के बाजे की आवाज सुनकर गोपालन क्यों रो पड़ा था ?

उत्तर—उसे लगा था कि कोमल से मेरा विवाह इसलिए न हो सका कि कोमल धनवान है और मैं गरीब। यह विचार कर, खुद की गरीबी के बारे में सोचकर वह रो पड़ा।

प्रश्न 52. ब्राह्मण समाज यह जानकर भी कि वेंकट रामन शराब पीता है, उसका बहिष्कार करने का साहस क्यों न कर सका था ?

उत्तर—ब्राह्मण समाज उसे धर्मी समझने के कारण ऐसा साहस न कर पाया था।

प्रश्न 53. विधवा कोमल ने एक लड़के को भेजकर गोपालन को बुलाया था तो गोपालन उसके पास क्यों नहीं गया था ?

उत्तर—गोपालन को लड़के से बुलावे की सूचना पाकर जाने में अपमान का अनुभव हुआ था, इसीलिए वह कोमल के घर नहीं गया था।

प्रश्न 54. 'दोष तो मेरे सुहाग का है, उनका नहीं।' ऐसा कोमल ने क्यों कहा था ?

उत्तर-कोमल विधवा होने से दुखी थी, इसलिए उसने अपने आपको ही अपने सुहाग को ही दोषी माना था, पति को नहीं।

प्रश्न 55. 'लेकिन मैं भी सिर नहीं झुकाऊँगी।' कोमल के इस कथन से उसके मन का कौन-सा भाव व्यक्त होता है ?

उत्तर—इससे उसका स्वाभिमानी होना व्यक्त होता है।

प्रश्न 56. 'और फिर एक जमींदार का क्रिया-कर्म भी तो उसकी प्रतिष्ठा के अनुकूल और अनुरूप ही होना चाहिए।' कोमल के इस कथन से उसकी क्या चारित्रिक विशेषता व्यक्त होती है।

उत्तर—इससे व्यक्त होता है कि उसे अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा का बड़ा ध्यान था।

प्रश्न 57. अपने पति के मरने के बाद भी कोमल ने किस स्थिति में सधवा की तरह शृंगार करते रहने की बात कही थी ?

उत्तर—उसने गोपालन से उस स्थिति में ऐसा करने के लिए कहा कि जबकि ब्राह्मण उसके पति के क्रिया-कर्म कराने को तैयार न होते।

प्रश्न 58. गोपालन कब कोमल के पति के क्रिया-कर्म कराने को तैयार हुआ था ?

उत्तर—गोपालन तब तैयार हुआ था जबकि कोमल ने कहा कहा था कि यदि ब्राह्मण क्रिया-कर्म न करायेंगे तो मैं सधवा की तरह शृंगार करती रहूँगी, भले ही ब्राह्मण समाज मेरी हत्या ही क्यों न कर दें।

प्रश्न 59. गोपालन की दृष्टि में ब्राह्मण का सबसे बड़ा अपराध क्या था ?

उत्तर—उसकी दृष्टि में ब्राह्मण का सबसे बड़ा अपराध उसका धर्म के काम न आना था।

प्रश्न 60. यमभोज से क्या तात्पर्य होता है ?

उत्तर - मृतक के एकादश के दिन ब्राह्म प्रेत का भोजन खाता है उसे यमभोज कहा जाता है। उसे खाने वाला अधिक दिन जीवित नहीं रहता।

प्रश्न 61. कोमल के पास पति के क्रिया-कर्म कराने के लिए रुपये कहाँ से आये थे ?

उत्तर—ये रुपये कोमल के गहने बेचकर गोपालन लाया था।

प्रश्न 62. क्रिया-कर्म के समय राजम कोमल से क्या अपेक्षा करती थी ?

उत्तर—वह चाहती कि धनवान होने के कारण कोमल क्रिया-कर्म कराने वाले उसके देवर गोपालन को काफी धन दे।

प्रश्न 63. गोपालन के बारे में यह जानकर कि वह एकाह में बैठेगा, राजम पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी ?

उत्तर—वह चिन्तित हुई थी और उसने अपने ससुर नयनाचारी को यह समाचार दे दिया था ताकि वे देवर को एकाह में न बैठने दें।

प्रश्न 64. वरदाचारी कौन था ?

उत्तर—वह राजम का पति था जो काफी समय पूर्व घर छोड़कर चला गया था।

प्रश्न 65. अपने घर के किसी व्यक्ति का एकाह में बैठना क्या राजम को अच्छा लगा था ?

उत्तर—उसे अपने घर के किसी भी व्यक्ति का एकाह में बैठना अच्छा नहीं लगा था। वह चिन्तित हुई थी।

प्रश्न 66. लोग कोमल और गोपालन के सम्बन्ध को कैसा मानते थे ?

उत्तर—वे उनके सम्बन्ध को अनौचित्यपूर्ण मानते थे।

प्रश्न 67. एकाह में बैठने के बाद नयनाचारी पर क्या असर हुआ ?

उत्तर—नयनाचारी एकाह में बैठने के तीसरे दिन समाप्त हो गये थे।

प्रश्न 68. गोपालन ने ऐसा क्या किया था कि उसके मुँह पर काला रंग पुत गया ?

उत्तर—जमींदारी का काम सम्भालने के लिए अपने घर पर रखे गोपालन ने एक दिन कोमल का हाथ पकड़ लिया था और इस आचरण के लिए कोमल ने उसे फटकार दिया था। इसी से उसके मुँह पर काला रंग पुत गया था यानी वह शर्मिन्दा हुआ था।

प्रश्न 69. कोमल ने गोपालन को अपने घर से क्यों चले जाने के लिए कहा था ?

उत्तर—उसे डर था कि कहीं साथ रहते-रहते मैं विधवा अपवित्र न हो जाऊँ।

5. नौकरी पेशा

प्रश्न 70. राधेलाल जैसे व्यक्तियों का नौकरी करना लेखकों को कैसा लगा है

उत्तर— राधेलाल की तरह नौकरी करना अच्छा ,नहीं लगा । उसकी दृष्टि में इससे तो उसका पैतृक दुकान पर बैठना ही उसे अच्छा लगा है ।

प्रश्न 71 छुट्टी के दिन राधेलाल को किसने बुलाया था ?

उत्तर –उन्हें उनके साहब ने बुलवाया था ।

प्रश्न 72. जब राधेलाल ने अपनी पत्नी के आगे ऐसा भाव व्यक्त किया कि साहब मेरे प्रति बड़ी आत्मीयता रखते हैं तो उसे कैसा लगा ?

उत्तर—पति की प्रशंसा सम्बन्धी बातें सुनकर राधेलाल की पत्नी को अच्छा लगा ।

प्रश्न 73. राम भरोसे के मन में राधेबाबू के बारे में क्या धारणा थी ?

उत्तर—रामभरोसे ऐसा मानते थे कि राधेबाबू किसी भी दफ्तर की कभी बुराई नहीं करते ।

प्रश्न 74. राधेबाबू दूसरों को अपना किस रूप में परिचय दिया करते थे ?

उत्तर—वे अपने आपको नौकरी पेशा आदमी बताया करते थे ।

प्रश्न 75. लाला रामभरोसे ने अपने नाती के जन्म के उपलक्ष में किये गये आयोजन में राधेबाबू को पूड़ियां तैयार कराने का जो काम सौंपा था, उसे उन्होंने क्यों नहीं पूरा किया था ?

उत्तर—राधेबाबू पूड़ियाँ बनाने वाले हलवाई के पास इसलिए नहीं बैठे कि रामभरोसे घासलेट की पूड़ियां बनवा रहे थे । राधेबाबू को घी की पूड़ियां बनवाये जाने की आशा थी ।

प्रश्न 76. राधेलाल को घासलेट की पूड़ियां बनाने वाले हलवाई का काम देखने में क्या संकोच था ?

उत्तर – उन्हें संकोच था कि गांव के बिरादरी के लोग कहेंगे कि राधेलाल क्यों बैठकर घासलेट की पूड़ी बनवाते रहे ? उन्होंने यह सहन क्यों किया ।

प्रश्न 77. "नौकरी पेशा जिन्दगी में उन्हें आज पहली बार अपने छूटे हुए गांव की याद आयी थी ।" राधेबाबू के साथ ऐसा क्या हुआ था ?

उत्तर—राधेबाबू सोचते थे कि रामभरोसे उनकी नौकरी की सिफारिश नहीं करेंगे पर जब राधेबाबू को मुख्तार साहब से पता चला कि रामभरोसे ने उनके लिए ही सिफारिश की थी तब उन्हें गांव की याद आई थी । उन्हें लगा था कि गांव के लोग ही ज्यादा सहायक होते हैं ।

प्रश्न 78. रामभरोसे और राधेबाबू में से आपको किसका चरित्र अपेक्षाकृत घटिया स्तर का लगा है ?

उत्तर—हमें रामभरोसे की तुलना में राधेबाबू का चरित्र घटिया लगा है क्योंकि राधेबाबू उनके बारे में हमेशा शक करते थे जबकि रामभरोसे मरते समय भी राधेबाबू के लिए नौकरी की सिफारिश कर गये थे।

6. रानी मां का चबूतरा

प्रश्न 79. रामी धन्नी को रानी मां के चबूतरे पर दीया जलवाने क्यों लाई थी ?

उत्तर—धन्नी के कोई सन्तान न थी। रामी को आशा थी कि वहां दीया जलवाने से धन्नी को भी सन्तान प्राप्त हो जाएगी।

प्रश्न 80. रानी मां की कथा के बारे में स्त्रियों का क्या विश्वास था ?

उत्तर—उनका विश्वास था कि कथा को कहने-सुनने से पुण्य बढ़ता है।

प्रश्न 81 रानी मां का चबूतरा की कहानी क्या थी ?

उत्तर—नगर सेठ की पत्नी अपने बच्चे को शीतला के प्रकोप से बचाने के लिए एक साधु के कहने से सात दिन तक बिना अन्न के रही थी और मर गई थी। उसी की याद में चबूतरा बनवाया गया था।

प्रश्न 82. गुलाबी की परेशानी में सारी बस्ती उसकी सहायता करने को तैयार रहती थी फिर कौनसा कारण है कि वह परेशानियों की शिकार रही ?

उत्तर—गुलाबी इतनी हेकड़ी वाली थी कि न किसी की सहायता स्वीकार करती थी और न किसी से कोई सम्पर्क रखती थी।

प्रश्न 83. गुलाबी के बच्चे दुःखी रहते थे। कौन उसका एक बच्चा लेना चाहता था ?

उत्तर—धन्नी के कोई सन्तान न थी। वह गुलाबी का एक बालक पाल लेने के लिए इच्छुक थी।

प्रश्न 84. सवेरे सात बजे की घण्टी बजने पर गुलाबी अपने घर से कहां जाया करती थी ?

उत्तर—वह अपने घर से बाहर मजदूरी करने जाती थी।

प्रश्न 85 गुलाबी किस आशंका से मजदूरी पर तेज गति से जाना करती थी ?

उत्तर—उसे आशंका रहती थी कि यदि देर हो गई तो ठेकेदार अन्य उम्मीदवार को उसकी जगह काम दे देगा।

प्रश्न 86. गुलाबी अपने पति को क्यों कोसती थी ?

उत्तर—उसका पति दारूखोर था और वह बच्चों को लालन-पालन के लिए गुलाबी पर ही छोड़ गया था।

प्रश्न 87. गुलाबी ने अपनी लड़की मेवा के पास हरी चूड़ियाँ देखकर अपनी क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की थी ?

उत्तर—गुलाबी को लगा था कि वह उन्हें चुराकर लाई है इसलिए गुलाबी ने मेवा को पीटा था ?

प्रश्न 88. जब गुलीबी चूड़ियों के लिए अपनी लड़की मेवा को पीट रही थी तब मेवा को किसने बचाया था ?

उत्तर—गुलाबी की पड़ौसिन रामी ने आकर मेवा को गुलाबी से छुड़ाया, बचाया था।

प्रश्न 89. गुलाबी ने अपने बच्चे को सरकारी 'शिशु-सुरक्षा केन्द्र' में भरती क्यों नहीं कराया था ?

उत्तर - गुलाबी अपने आपको उस केन्द्र की पांच रुपये फीस देने में असमर्थ पाती थी, इसीलिए उसने उसमें अपने बच्चे को प्रवेश नहीं दिलाया था।

प्रश्न 90. गांव वाले प्रवेश के लिए पांच रुपये देने को तैयार थे, फिर गुलाबी ने वे क्यों नहीं लिए थे ?

उत्तर—गुलाबी किसी से दान आदि के रुपये कुछ नहीं लेना चाहती थी।

प्रश्न 91. जब किसी ने रात को अपने मकान में सीमेंट लगाते समय गुलाबी से पूछ लिया कि इस समय गुलाबी तू क्या कर रही है तब गुलाबी ने क्या जवाब दिया था ?

उतर—उसने पूछने वाले से कहा था "तेरी कबर खोद रही हूँ।"

प्रश्न 92. कुछ दिन से गुलाबी बच्चों को कोठरी में बन्द कर दिनभर कहीं बाहर रहती थी। इससे गांव वालों पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी ?

उत्तर—गांव वाले उसके बारे में कई प्रकार के अनुमान लगाते थे और बच्चों की दुर्दशा पर विचार कर गुलाबी के प्रति आवेश से भर उठते थे।

प्रश्न 93. गोपाल ने महिलाओं के आगे रानी मां के चबूतरे के पास गुलाबी का चबूतरा बनवाने और उसे गिनकर दस-दस जूते मारने की बात क्यों कही थी

उत्तर - गुलाबी को अपने बच्चों का दर्द नहीं था, ऐसा मानकर, महिलाओं से सुनकर ही गोपाल ने उक्त बात कही थी।

प्रश्न 94. गुलाबी घर से हांडी से पैसे लेकर कहां गई थी ?

उत्तर वह मेवा के लिए चूड़ियां लेने और शिशु सुरक्षा केन्द्र की रसीद लेने गई थी।

प्रश्न 95. गुलबी का अन्त कैसे हुआ

उत्तर—गुलाबी मजदूरी की कमी से घर के लिए पेटभर सत्तुओं की भी

व्यवस्था न कर पाई तं खुद भूखी रही। एक दिन कांच की चूड़ी लाने और शिशु सुरक्षा केन्द्र की फीस जमा कराने गई तो अचेत होकर गिर गई।

7. गौरू गाड़ी के यात्री

प्रश्न 96. रामजी लोहार के पूर्वजों के त्याग, बलिदान ने किन में नया जोश उत्पन्न कर दिया था ?

उत्तर—उसके त्याग, बलिदान ने मेवाड़ के सूर्यवंशियों में नया जोश भर दिया था।

प्रश्न 97. रामजी लोहार के पूर्वज गौरू गाड़ी में अपना सामान लादकर कहां से निकालकर जहाँ तहां बिखर गये थे

उत्तर—वे चित्तौड़ को छोड़कर जहां-तहां बिखर गये थे।

प्रश्न 98. बीकानेर पर जोधपुर की सेना नें कब आक्रमण किय था ?

उत्तर— तब आक्रमण किया था जब बीकानेर के महाराज बादशाह के सेवा में दक्षिण की ओर गये हुए थे।

प्रश्न 99. रामजी लोहार को किस बात का दुख था

उत्तर—उसे दुख था कि महाराज की अनुपस्थिति में जोधपुर की सेना ने बीकानेर पर आक्रमण कर दिया है और राजपूत लोग उसका सामना करने को तैयार नही है।

प्रश्न 100. रामजी लोहार को बीकानेर की चिंता क्यों थी ?

उत्तर— वह चित्तौड़ से आकर बीकानेर की सेना में रहा था। उसने बीकानेर नरेश का नमक खाया था। उसी बीकानेर पर शत्रु ने आक्रमण कर दिया था और कोई उसका सामना करने को तैयार न था।

प्रश्न 101. बीकानेर गढ़ के रक्षक उस समय कौन थे जिस समय जोधपुर की सेना ने आक्रमण किया था ?

उत्तर - तब गढ़ के रक्षक सांखला राजपूत थे। दौलतसिह उनका सरदार था।

प्रश्न 102. बीकानेर पर जोधपुर की सेना के आक्रमण के समय बीकानेर राज्य की क्या स्थिति थी ?

उत्तर —तब सभी बड़े-बड़े सरदार या तो गुप्त रूप से जोधपुर वालों से मिल गये थे या उनमें शत्रु का सामना करने का साहस नहीं था।

प्रश्न 103 रामजी लोहार ने शत्रु से लड़ने जाने से पूर्व किसकी पूजा की थी ?

उत्तर—उसने सूर्य की पूजा की थी।

प्रश्न 104. अकेले रामजी को शत्रु से लड़ने के लिए जाते देखकर सब से पहले किसने राजपूतों को उलाहने दिये ?

उत्तर—मुकरमा के ठाकुर पृथ्वीराज की पत्नी और मलसीसर के ठाकुर हिन्दसिंह की पत्नी ने अपने-अपने पतियों को उलाहने दिये।

सरस एकांकी

1. कौमुदी महोत्सव

प्रश्न 1. यशोवर्मन को नन्द के बाद उसके मंत्री राक्षस की ओर से किस प्रकार की आशंका थी ?

उत्तर—उसे आशंका थी कि राक्षस छिपे-छिपे ही चन्द्रगुप्त के विरुद्ध षड़यंत्र कर सकता है।

प्रश्न 2. चन्द्रगुप्त की दृष्टि में नन्दवंश का विनाश करने वाली क्या चीज है ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त की दृष्टि में चाणक्य की राजनीति ही नदवंश का विनाश करने वाली रही है।

प्रश्न 3. चन्द्रगुप्त चाणक्य की मृत्यु ला देने वाली राजनीति की जगह कौनसी नीति अपनाना चाहता था ?

उत्तर—वह लोगों में नया जीवन ला देने वाली नीति अपनाना चाहता था।

प्रश्न 4. चन्द्रगुप्त अच्छे शासन का मापदण्ड क्या मानता था ?

उत्तर—वह प्रजा के सन्तोष और सुख को ही अच्छे शासन का मापदण्ड मानता था।

प्रश्न 5. कौमुदी महोत्सव कौन से दिन करने की घोषणा की गई थी ?

उत्तर—वह उत्सव शरद पूर्णिमा के दिन करने की घोषणा की गई थी।

प्रश्न 6. घनानन्द कौन था ?

उत्तर—वह शूद्र राजा महापद्म का पुत्र था।

प्रश्न 7. चन्द्रगुप्त ने कौमुदी महोत्सव के प्रारम्भ का संकेत कैसे देने के लिए कहा था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त ने कार्यान्तिक पुष्पदन्त से कहा था कि उसे महोत्सव आरम्भ होने की सूचना सूर्यनन्द से प्राप्त हो।

प्रश्न 8. चन्द्रगुप्त ने वसुगुप्त की तुलना किससे की थी ?

उत्तर—उसने वसुगुप्त की तुलना कात्यायन से की थी।

प्रश्न 9. चन्द्रगुप्त के पास रहने से पहले कौन चाणक्य को तक्षशिला में रखने का इच्छुक था ?

उत्तर—तक्षशिला का शासक आम्भीक चाणक्य को तक्षशिला में रखने का इच्छुक था।

प्रश्न 10. चन्द्रगुप्त किस कारण चाणक्य से कौमुदी महोत्सव के बारे में परामर्श नहीं कर पाया था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त संग्राम की उलझनों के कारण चाणक्य से परामर्श करने अवकाश नहीं प्राप्त कर सका था।

प्रश्न 11. यदि चन्द्रगुप्त कौमुदी महोत्सव के बारे में चाणक्य से परामर्श लेना चाहता तो वसुगुप्त को कैसा लगता ?

उत्तर— वसुगुप्त बिल्कुल पसंद न करता कि चन्द्रगुप्त चाणक्य से कौमुदी महोत्सव के बारे में परामर्श करे। उसे डर था कि कहीं चाणक्य षड़यन्त्र का अनुमान न लगा लें।

प्रश्न 12. यशोवर्मन ने अलका के नृत्य से पहले चन्द्रगुप्त से अलका के बारे में क्या निवेदन किया था ?

उत्तर उसने कहा था कि यह नन्दवंश की राजनीति में है। वह नन्दवंश के विनाश का कारण बनी थी, इसीलिए निर्दोष नहीं है।

प्रश्न 13. अलका की ओर से अमंगल की आशंका होते हुए भी चन्द्रगुप्त ने उसे नृत्य का अनुमति क्यों दी थी ?

उत्तर— चन्द्रगुप्त ने अलका के नृत्य की अनुमति महोत्सव की शोभा बढ़ाने और कुसुमपुर की जनता के मन में अपने प्रति अच्छा भाव जगाने हेतु दी थी।

प्रश्न 14. यशोवर्मन ने अलका राजनर्तकी के नृत्य-समारोह में चाणक्य को सम्मिलित करने का सुझाव चन्द्रगुप्त को क्यों दिया था ?

उत्तर—यशोवर्मन को नृत्य समारोह से किसी अनिष्ट की आशंका थी, किसी षड़यंत्र की आशंका थी, इसीलिए उसने यह सुझाव दिया था।

प्रश्न 15. चाणक्य ने राजनर्तकी अलका के नृत्य के समय आकर वसुगुप्त और अलका को क्यों बन्दी बनवा लिया था ?

उत्तर—चाणक्य को ऐसी आशंका थी कि इस समारोह के माध्यम से ये दोनों चन्द्रगुप्त को समाप्त कर सकते हैं इसीलिए चाणक्य ने यह कदम उठाया था।

प्रश्न 16. चन्द्रगुप्त ने चाणक्य पर क्या आरोप लगाया था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त ने कहा था कि तुम्हारे योगदान से विजय मिली, इसका तुम्हें घमंड हो गया है।

प्रश्न 17. चन्द्रगुप्त के द्वारा लगाये गये आरोपों से चाणक्य को क्या अनुभव हुआ था ?

उत्तर—उसे लगा कि चन्द्रगुप्त द्वारा मेरा अपमान किया गया है।

प्रश्न 18. चाणक्य की चन्द्रगुप्त के राज्य के बारे में क्या धारणा थी ?

उत्तर—वह ऐसा मानता था कि राज्य की सुदृढ़ता का आधार मेरी राजनीति है।

प्रश्न 19 चन्द्रगुप्त कौमुदी महोत्सव की घोषणा न होने देने के अपराध के लिए चाणक्य को क्या दण्ड दिया था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त ने चाणक्य को महामंत्री पद से मुक्त कर दिया था।

प्रश्न 20. चन्द्रगुप्त द्वारा अपमान महसूस कर चाणक्य के सामने कौन सा द्वन्द्व उत्पन्न हो गया था ?

उत्तर—चाणक्य का द्वन्द्व यह था कि वह या तो मौर्यवंश का विनाश करे या अपनी करुणा और शांति से पृथ्वी का सिंचन करे।

प्रश्न 21. चाणक्य द्वारा बन्दी बनाकर लाए गए वसुगुप्त और अलका ने चन्द्रगुप्त से क्या शिकायत की ?

उत्तर—उन्होंने चन्द्रगुप्त से शिकायत की थी कि सम्राट हमारा अपमान हुआ है।

प्रश्न 22. वसुगुप्त ने चाणक्य के सामने अलका के नाम से कहां परिचित होना स्वीकार किया था ?

उत्तर—वसुगुप्त ने पिछले वर्ष नन्द के वसंतोत्सव में अलका के नाम से परिचित होना स्वीकार किया था।

प्रश्न 23 चाणक्य से आसव पान कराये जाने की बात सुनकर अलका परेशान क्यों हो उठी थी ?

उत्तर अलका को अपने षड़यंत्र के प्रकट होने का डर था।

प्रश्न 24. वसुगुप्त अलका के अधरों से लगाया गया आसव पीने से मना क्यों कर रहा था ?

उत्तर—उसे मालूम था कि विषकन्या अलका के अधरों का स्पर्श प्राप्त आसव उसे समाप्त कर देगा, उसके लिए विष बन जायेगा।

प्रश्न 25. वसुगुप्त और अलका के रहस्य का उद्घाटन करके चाणक्य ने अपना क्या निश्चय सुनाया था ?

उत्तर—तब चाणक्य ने राज्य से दूर तपोवन में चले जाने का निश्चय सुनाया था।

प्रश्न 26. चाणक्य द्वारा वसुगुप्त एवं अलका का रहस्य प्रकट किये जाने पर चन्द्रगुप्त ने क्या घोषणा की थी ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त ने घोषणा की थी कि कौमुदी महोत्सव नहीं होगा।

प्रश्न 27. राजनीतिक सूझबूझ की दृष्टि से आप चन्द्रगुप्त और चाणक्य में किसे श्रेष्ठ मानते हैं ? प्रमाणपूर्वक बताइये।

उत्तर—राजनीतिक सूझबूझ की दृष्टि से चाणक्य चन्द्रगुप्त से आगे थे। यदि चाणक्य ने वसुगुप्त और अलका का रहस्य स्पष्ट न किया होता तो चन्द्रगुप्त अलका द्वारा मार दिया गया होता।

2. नये महमान

प्रश्न 28. गर्मी में भयंकर परेशानी रहने पर भी विश्वनाथ और रेवती किराये के उस छोटे से मकान में ही क्यों रह रहे थे ?

उत्तर—शहर होने के कारण उन्हें किराये का बडा मकान काफी समय से मिल ही नहीं रहा था।

प्रश्न 29. विश्वनाथ के पड़ौसी की छत खाली रहती थी फिर भी वे भयंकर गर्मी में उस पर रात को क्यों नहीं सोते थे ?

उत्तर—पड़ौसी किरायेदार अपनी छत का उन्हें उपयोग करने ही नहीं देता था।

प्रश्न 30. विश्वनाथ की पत्नी पड़ौसिन की छत पर अपने बच्चों को रात को सुलाने राजी क्यों नहीं होना चाहती थी ?

उत्तर—उसे डर था कि वह कहीं उसके बच्चों को नुकसान न पहुंचा दे।

प्रश्न 31. विश्वनाथ ने बीमार रहे अपने बड़े बच्चे को गर्मियों में कहा रखा था और क्यों

उत्तर—विश्वनाथ ने उसे गर्मियों में गर्मी से बचने के लिए शिमला भेज दिया था।

प्रश्न 32. विश्वनाथ अपने घर पर आकर ठहरे अतिथियों से बार बार उनका परिचय क्यों पूछ रहा था ?

उत्तर—उसका अतिथियों से कोई परिचय नहीं था, इसीलिए वह जानना चाहता था कि वे आखिर कौन हैं और कहां से आये हैं ? उसे थोड़ा यह भी शक था कि वे कहीं गलती से तो वहां नहीं आ गये।

प्रश्न 33. रेवती ने अतिथियों के लिए खाना बनाने के लिए कब हां की थी ?

उत्तर—विश्वनाथ ने जब उनके लिए बाजार से खाना मंगाने की बात कही तो खर्च के डर से रेवती ने उनके लिए घर पर ही खाना बनाने की हां कर ली थी।

प्रश्न 34 अतिथियों को वास्तव में कहां जाना था और वे कैसे विश्वनाथ के घर आ गये थे

उत्तर—उन्हें वास्तव में कविराज रामलाल के यहां जाना था और वे पूरा पता न जानने के कारण विश्वनाथ के घर गलती से आ गये थे ?

प्रश्न 35. रेवती को रात में अपने भाई के आ जाने पर कैसा लगा था ?

उत्तर—रेवती को भाई का आना प्रसन्नतादायक लगा था। वह तब तक अपना सिरदर्द भी भूल गई थी।

प्रश्न 36. लेखक ने इस एकांकी द्वारा क्या स्पष्ट करना चाहा है

उत्तर---इसके द्वारा एकांकीकार ने बताना चाहा है कि शहर में किसी के पास जाने वाले को उसका पूरा पता जान लेना चाहिए और साथ ही उसे चाहे जिस व्यक्ति के पास नहीं जाना चाहिए। इससे शहर के व्यक्ति को कष्ट होता है।

3. दो कलाकार

प्रश्न 37. दो कलाकार एकांकी में दो कलाकार कौन-कौन हैं ?

उत्तर---इसमें चूड़ामणि और मार्तण्ड दो कलाकार हैं जो क्रमशः कवि और चित्रकार है।

प्रश्न 38. चूड़ामणि कहां से रुपये लेने गया था ?

उत्तर---वह परमानन्द प्रकाशक से रुपये लेने गया था।

प्रश्न 39. मार्तण्ड कहां अपना चित्र बेचने गया था ?

उत्तर---वह रईस रामनाथ के पास अपना चित्र बेचने गया था।

प्रश्न 40. चूड़ामणि प्रकाशक द्वारा रुपये न दिये जाने पर उसका क्या सामान ले आया था ?

उत्तर---वह उसकी सोने की घड़ी उठा लाया था।

प्रश्न 41. मार्तण्ड रामनाथ के पिता का विदेश से बनवाकर मंगया हुआ चित्र क्यों उठा लाया था ?

उत्तर---वह इसलिए उस चित्र को उठा लाया कि रामनाथ ने मार्तण्ड के पचास रुपये के चित्र का मूल्य केवल सात रुपये ही लगाया था।

प्रश्न 42. परमानन्द प्रकाशक ने कवि चूड़ामणि के रुपये किस स्थिति में दिये थे ?

उत्तर---जब चूड़ामणि परमानन्द की सोने की घड़ी उठा लाया था तब वह उसके पास आया था। अपनी बुराई का बखान करने वाला पुराण कवि द्वारा रचा जाते देखकर उसने चूड़ामणि को रुपये दे दिये थे।

प्रश्न 43. परमानन्द ने चूड़ामणि को अपनी सोने की घड़ी किस स्थिति में भेंट की थी ?

उत्तर---परमानन्द ने जब देखा कि कवि फिर उसकी बुराइयों पर एक पुराण रच रहा है तब उसने पुराण लिखना बन्द कराने अपनी घड़ी कवि को भेंट रूप में दे दी थी।

प्रश्न 44. मार्तण्ड रामनाथ से पचास रुपये किस तरह प्राप्त कर सका ?

उत्तर---मार्तण्ड ने रामनाथ के पिता की तस्वीर लाकर उसमें से नाक काट दी थी। रामनाथ ने जब मार्तण्ड को पचास रुपये दिये तभी उसने नाक ठीक कर वह तस्वीर लौटाई।

प्रश्न 45. क्या मकान मालिक बुलाकी दास को अपने किरायेदार चूड़ामणि और मार्तण्ड से मकान किराया प्राप्त हुआ ?

उत्तर—बुलाकीदास को मकान का किराया प्राप्त नहीं हुआ था।

4. लक्ष्मी का स्वागतम

प्रश्न 46. अपने पुत्र अरुण के इलाज के लिए रोशन ने डॉक्टर को बुलाने के लिए जिस व्यक्ति को भेजा था, उसका क्या नाम था ?

उत्तर—उस व्यक्ति का नाम भाषी था।

प्रश्न 47. सुरेन्द्र कौन था ?

उत्तर—वह रोशन का मित्र था जो रोशन के पुत्र की बीमारी की स्थिति में उसके पास रहा था।

प्रश्न 48. रोशन अपनी पत्नी सरला के निधन और पुत्र अरुण की बीमारी के कारण बहुत दुखी था। उस स्थिति में उसकी सबसे ज्यादा सहायता करने वाला कौन था ?

उत्तर—उस स्थिति में रोशन की सबसे ज्यादा सहायता सुरेन्द्र ने की थी।

प्रश्न 49. अरुण गंभीर रूप से बीमार था फिर रोशन की मां का सबसे ज्यादा ध्यान किस ओर था ?

उत्तर—रोशन की मां ने सबसे ज्यादा ध्यान इस ओर दिया था कि सियालकोट वालों से रोशन का किसी प्रकार शगुन ले लिया जाय।

प्रश्न 50. रोशन के माता-पिता ने रोशन के पुत्र के मरणासन्न होने की हालत में भी, सियालकोट वालों से रोशन का शगुन ले लिया था। इससे क्या व्यक्त होता है ?

उत्तर—उनके इस व्यवहार से व्यक्त होता है कि उन्हें दहेज का लोभ था और अरुण की जैसे बिलकुल चिन्ता न थी।

प्रश्न 51. सियालकोट वाले बार-बार रोशन के घर क्यों आये थे ?

उत्तर—वे रोशन के साथ अपनी लड़की का विवाह सम्बन्ध तय करना चाहते थे।

प्रश्न 52. क्या रोशन को अपने माता-पिता का यह विचार पसंद था कि रोशन का जल्दी विवाह सम्बन्ध कर लिया जाय

उत्तर—रोशन अत्यन्त दुखी था। उसे मां-बाप का विवाह सम्बन्धी विचार बिलकुल पसन्द न था।

प्रश्न 53. अरुण के प्रति सबसे अधिक ममता किसे थी।

उत्तर—बीमार अरुण के प्रति सबसे अधिक ममता रोशन को ही थी। ?

प्रश्न 54. रोशन ने सुरेन्द्र से ऐसा क्यों कहा था कि यह घर इस बच्चे के लिए वीराना है ?

उत्तर—रोशन को लगता था कि उसके मां-बाप बालक अरुण को बड़ा रिश्ता पाने के रास्ते में रोड़ा मानते हैं। इसीलिए उसने उक्त बात कही थी।

प्रश्न 55. रोशन की पत्नी सरला के बीमार होने पर रोशन की माँ ने सरला का इलाज किससे कराया था ?

उत्तर—मां ने सरला का इलाज हकीम से कराया था।

प्रश्न 56. रोशन की मां को इलाज के मामले में क्या बात पसन्द न थी

उत्तर—रोशन की मां को यह पसन्द न था कि घर में मरीज का इलाज डॉक्टर से कराया जाय।

प्रश्न 57. क्या रोशन ने बीमार अरुण के इलाज के मामले में अपनी मां की कोई बात मानी थी ?

उत्तर—रोशन ने अरुण के इलाज के सम्बन्ध में अपनी माँ की कोई बात नहीं मानी थी।

प्रश्न 58. रोशन ने अपनी मां का कोई भी सुझाव अरुण के इलाज के सम्बन्ध में क्यों नहीं माना था ?

उत्तर—इसका कारण यह था कि मां अरुण को घुट्टी देना ही पर्याप्त मानती थी। वह डॉक्टर से इलाज कराना जरुरी नहीं मानती थी।

प्रश्न 59. सरला के निधन के तुरन्त बाद ही रोशन की माँ रोशन का शगुन क्यों लेना चाहती थी ?

उत्तर—उसे डर था कि कुछ समय बाद फिर कोई लड़की वाला रोशन का विवाह नहीं करना चाहेगा और लोग अनेक प्रकार की बातें बनायेंगे।

प्रश्न 60. रोशन के पिता सियालकोट वालों से रोशन का शगुन लेने को उतावले क्यों थे ?

उत्तर—उन्हें सिलायकोट वाले धनवान प्रतीत होते थे। उनसे उन्हें ज्यादा दहेज मिलने की आशा थी।

प्रश्न 61. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का अन्त कैसे हुआ है ?

उत्तर—एकाँकी का अन्त रोशन के पिता की शगुन ले लिए जाने की खुशी और रोशन द्वारा अरुण का शव लेकर निकलने के वर्णन द्वारा हुआ है।

प्रश्न 61. इस एकाँकी से रोशन के पिता के बारे में क्या धारणा बनती है ?

उत्तर—इससे यह धारणा बनती है कि रोशन के पिता को रोशन के पुत्र अरुण की चिन्ता न थी। उन्हें दहेज का लोभ था।

प्रश्न 62. इस एकाँकी में किस बारे में व्यंग्य किया गया हैं ?

उत्तर—इस एकांकी में पुरानी पीढ़ी की रूढ़िवादिता एवं दहेज सम्बन्धी लोभ पर व्यंग्य किया गया है ?

5. वापसी

प्रश्न 63. वापसी एकांकी का क्या उद्देश्य है ?

उत्तर—असगर के माध्यम से जन्मभूमि के प्रेम को दर्शाना इस एकाँकी का उद्देश्य है।

प्रश्न 64. पाकिस्तान ने भारत में अपने भेदिये किस लिए भेजे थे ?

उत्तर—वे भारत में हिन्दू-मुसलमानों में लड़ाई कराने के उद्देश्य से भेजे गये थे।

प्रश्न 65. असगर ने भारत की भूमि पर आकर अपना काम करने के उद्देश्य से क्या सावधानी रखी थी ?

उत्तर—उसने पहचान में आने की दृष्टि से भारतीय किसान के से कपड़े पहने थे और छिपने की कोशिश की थी ताकि पकड़ा न जा सके।

प्रश्न 66. असगर ने मकसूद के सामने अपने अफसरों के बारे में क्या शिकायत की थी ?

उत्तर—उसने शिकायत की थी कि हमें सिर्फ आधा घण्टा पूर्व ही सूचना क्यों दी और पहले से क्यों नहीं कुछ बताया था।

प्रश्न 67. आजाद देश का नागरिक होते हुए भी असगर अपने आपको आजाद क्यों नहीं मानता था ?

उत्तर—वह इसलिए कि स्वयं को आजाद नहीं मानता था कि उसे, उसके साथियों को स्वतन्त्र रूप से सोचने, बोलने और लिखने की आजादी नहीं थी। उन्हें देश में दूसरों के इशारे पर चलना पड़ता था।

प्रश्न 68. क्या असगर ने भारत आते समय दुश्मन को बर्बाद करने की कसम मन में खाई थी ?

उत्तर—असगर ने कसम तो खाई थी पर मन से नहीं क्योंकि वह मानता था कि हमें मन की आजादी है ही नहीं।

प्रश्न 69. भारत भूमि पर आकर असगर दुश्मनी के बारे में क्या सोचता था ?

उत्तर—वह सोचता था कि क्या यह दुश्मनी का माहौल बदल नहीं सकता, क्या हम एक-दूसरे को प्यार नहीं कर सकते।

प्रश्न 70. असगर सियासत वालों के बारे में क्या सोचता था ?

उत्तर—वह सोचता था कि ये सियासत वाले हर मुल्क में अपना उल्लू सीधा करने के लिए आपस में लड़ा करते हैं और लोगों को परेशान करते हैं।

प्रश्न 71. एकाँकी के अन्त में असगर क्या करता है ?

उत्तर—वह चौधरी आदि के सामने आत्मसमर्पण कर देता है।

6 आवाज का निलाम

प्रश्न 75. 'आवाज का नीलाम' एकांकी में क्या व्यक्त करना चाहा गया है ?

उत्तर— इसमें दिवाकर के माध्यम से सत्य और ईमानदारी के लिए संघर्ष कर रहे व्यक्ति की जिजीविषा का चित्रण करना चाहा है।

प्रश्न 73. प्रस्तुत एकांकी में पाठक की सहानुभूति किसके साथ है ?

उत्तर—इसमें पाठक की सहानुभूति दिवाकर के साथ है।

प्रश्न 74. दिवाकर को बाजोरिया के प्रति क्या शिकायत थी ?

उत्तर—उसे शिकायत थी कि अखबार निकालने के समय आने वाली कठिनाइयों में तो बाजोरिया ने सहायता की नहीं पर अखबार बेचने के समय वह बहुत सहानुभूति दिखा रहा था।

प्रश्न 75 दिवाकर पत्नी शीला के सीढ़ी से गिर जाने के अवसर पर उसके पास क्यों नहीं जा सका था ?

उत्तर—वह 'आवाज' अखबार का विशेषांक निकालने की व्यस्तता के कारण पत्नी को देखने नहीं जा सकता था।

प्रश्न 76. कोई एक ऐसा उदाहरण बताइये जो यह दर्शाता हो कि दिवाकर में 'आवाज' अखबार निकालने की बड़ी भारी लगन थी।

उत्तर—पत्नी शीला के सीढ़ी से गिर जाने के समय दिवाकर उसे देखने नहीं जा सका था और उसकी दवा के रुपये भी प्रेस वाला टाइप खरीदने के लिए काम में ले लिए थे।

प्रश्न 77. दिवाकर ने अपने अखबार का नाम 'आवाज' क्यों रखा था ?

उत्तर—ध्वंस और विनाश के बीच जिस इन्सान का जन्म हो रहा है, उसी की आवाज को जिन्दा रखने के लिए उसने अखबार का नाम 'आवाज' रखा था।

प्रश्न 78. आज जनता अखबार में सामान्यतया क्या चाहती है ?

उत्तर—वह चाहती है शोख कवर, भड़कीले चित्र और रंग-बिरंगे विशेषांक।

प्रश्न 79. सेठ बाजोरिया ने दिवाकर से क्यों सम्पर्क बढ़ाया था ?

उत्तर—उसने दिवाकर के 'आवाज' अखबार को खरीदने के लिए सम्पर्क बढ़ाया था।

प्रश्न 80. दिवाकर ने बाजोरिया पर चैटर्जी के बारे क्या शिकायत की थी।

उत्तर—उसने बाजोरिया से शिकायत की थी कि आप अपने सम्पादक चटर्जी को सम्पादकीय लिखने की छूट न देकर उससे डिक्टेशन लिखवाते हो।

प्रश्न 81. बाजोरिया ने चैटर्जी को गृहमन्त्री के खिलाफ न लिखने देने का क्या तर्क दिया था ?

उत्तर—उसने कहा था कि गृहमन्त्री मेरे मित्र थे इस कारण मैंने चैटर्जी को सम्पादकीय में उनके खिलाफ लिखने से रोका था।

प्रश्न 82. दिवाकर ने बाजोरिया से यह कब कहा था कि आप देवता हैं ?

उत्तर— जब बाजोरिया ने अस्पताल से पत्नी की नाड़ी डूबने की खबर पाकर रुपयों के लिए परेशान दिवाकर को रुपये दिये थे और उसे अपनी कार में अस्पताल ले जाने लिए कहता था तब दिवाकर ने सेठ को देवता कहा था।

प्रश्न 83. 'आवाज' अखबार के बेचने से सम्बन्धित कागजों पर दस्तखत क्या दिवाकर ने किसी के कहने से किए थे ?

उत्तर— उसने वे दस्तखत अपनी इच्छा से किये थे।

प्रश्न 84. क्या दिवाकर पत्नी की नाड़ी डूबने की अस्पताल से खबर पाकर अस्पताल गया था ?

उत्तर— वह अस्पताल जाने की तैयारी में था तभी उसे पत्नी की मृत्यु की दूसरी सूचना मिल गई थी और वह अस्पताल नहीं गया था।

प्रश्न 85. पत्नी की मृत्यु की सूचना पाकर दिवाकर क्यों खुश हुआ था ?

उत्तर—इससे दिवाकर को अखबार बेचने की, रुपये प्राप्त करने की मजबूरी नहीं रह गई थी, इसी कारण वह खुश हुआ था ?

प्रश्न 86. दिवाकर ने बाजोरिया से बेचाननामा वापस क्यों मांगा था ?

उत्तर—पत्नी के मर जाने पर दिवाकर ने 'आवाज' को बेचने का इरादा बदल दिया था, इसीलिए उसने बाजोरिया से बेचाननामा वापस मांगा था।

प्रश्न 87. प्रस्तुत एकांकी के अन्त में क्या वर्णन है ?

उत्तर—एकांकी के अन्त में दिवाकर बाजोरिया से 'आवाज' सम्बन्धी बेचान-नामा वापस लेने भागता दिखाया गया है और बाजोरिया बेचाननामा दे नहीं रहा।

7. वरुण वृक्ष का देवता

प्रश्न 88. 'वरुणवृक्ष का देवता' एकांकी का नायक कौन है ?

उत्तर— एकांकी का नायक चाणक्य है।

प्रश्न 89. 'वरुणवृक्ष का देवता' का अन्त किस वर्णन के साथ हुआ है।

उत्तर— चाणक्य के त्याग के वर्णन के साथ एकांकी का अन्त होता है।

प्रश्न—90. चाणक्य का यहां मुख्यरूप से कौन-सा त्याग दिखाया गया है।

उत्तर—यहां चाणक्य की सुवासिनी के प्रति प्रेम का त्याग दिखाया गया है।

प्रश्न 91. चाणक्य किसलिए त्याग करता है ?

उत्तर—चाणक्य लोक कल्याण हेतु त्याग करता है।

प्रश्न 92. मलयकेतु सपेरा बनकर कहाँ आराम करने लगता है ?

उत्तर— वह चाणक्य के तपोवन में जाकर आराम करने लगता है।

प्रश्न 93. मलयकेतु को तपोवन से भाग जाने के लिए कौन कहता है ?

उत्तर—चाणक्य का शिष्य शारंग उससे भाग जाने के लिए कहता है।

प्रश्न 94. चाणक्य को तपोवन के रास्ते से कहाँ जाना था ?

उत्तर—उन्हें सूर्यपूजा के लिए जाना था।

प्रश्न 95. चन्द्रगुप्त के शासन की किस विशेषता के बारे में शारंग ने मलयकेतु से कहा था ?

उत्तर—उसने मलयकेतु से कहा था कि चन्द्रगुप्त के शासन में सबको अपनी मर्यादा और दायित्व में रहना है। यहाँ कोई नियम के विरुद्ध आचरण नहीं कर सकता।

प्रश्न 96. मलयकेतु जब गाना सुनाकर तपोवन से जाने लगता है तब चाणक्य ने उससे यह क्यों कहा था कि हर राजनीतिज्ञ एक सपेरा होता है ?

उत्तर—चाणक्य को शक हुआ था कि यह सपेरा कहीं कोई राजनीतिज्ञ तो नहीं है इसीलिए उससे ऐसा कहा था और उसे रोककर पूछताछ की थी।

प्रश्न 97. शारंगख से मलयकेतु तपोवन में आने वालों में निपुणक का नाम सुनकर ही क्यों चौंक उठा था ?

उत्तर—उसके नाम से वह इसलिए चौंका था कि निपुणक को ही चाणक्य द्वारा राक्षस का पक्ष लेने वालों के बारे में जानने हेतु भेजा गया था और मलय उन्हीं में से एक था।

प्रश्न 98. निपुणक ने मगध की जनता में से राक्षस के रूप के लोगों की जानकारी लेने हेतु क्या वेश धारण किया था ?

उत्तर—उसने साधु वेश धारण किया था।

प्रश्न 99. मलयकेतु विष्णुशर्मा के बारे क्या जानता था ?

उत्तर—वह जानता था कि विष्णुशर्मा ने ही नन्द के भाई सर्वार्थसिद्धि को वैरागी बनाया था।

प्रश्न 100. शारंगख से यह सुनकर क्यों भागने लगा था कि शटकार कल सर्वार्थसिद्धि की हत्या करने गया है ?

उत्तर—मलयकेतु सपेरे के वेश में नन्द के अमात्य राक्षस का गुप्तचर था। नन्द के भाई की हत्या की बात जानकर यही सूचना जल्दी पहुँचाने हेतु वह भागने लगा था।

प्रश्न 101. मलयकेतु ने अपने गाथा-गीत में धूर्तबुद्धि पहले किसके लिए प्रयुक्त हुआ बताया था और बाद में किसके लिए ?

उत्तर—उसने पहले तो धूर्तबुद्धि बगुले के लिए और फिर केकड़े के लिए प्रयुक्त हुआ बताया था।

प्रश्न 102 "मैं भी एक सपेरा हूँ मलयकेतु"—ऐसा चाणक्य ने क्यों कहा था ?

उत्तर—चाणक्य जान गये थे कि मलय गुप्तचर है। वे उसे बताना चाहते थे कि जिस प्रकार तुम गुप्तचर होकर सपेरे बने हुए हो वैसे ही तपस्वी होकर मैं भी राजनीतिज्ञ हूँ।

प्रश्न 103. चाणक्य ने मलयकेतु के गाथा-खेल के अनुसार किसे धूर्तबुद्धि ठहराया था ?

उत्तर—चाणक्य ने गाथाखेल के अनुसार अपने आपको ही धूर्तबुद्धि ठहराया था।

प्रश्न 104. चाणक्य ने यह जानकर भी कि सपेरा मलयकेतु अमात्य राक्षस का गुप्तचर है, उसे आश्वस्त क्यों कर दिया था, उसे दण्ड क्यों नहीं दिया था ?

उत्तर—चाणक्य ने मलयकेतु को इसलिए दण्ड नहीं दिया था कि तब वे राजनीतिक व्यक्ति नहीं रहे थे, वानप्रस्थाश्रम के यती थे।

प्रश्न 105. यती हो जाने पर भी चाणक्य ने नन्द के भाई को छद्मरूप धारण करने वाले विष्णुशर्मा द्वारा वैरागी क्यों बनवाया था ?

उत्तर—नन्द के भाई सर्वार्थसिद्धि से वर्णाश्रम धर्म का पालन कराने के लिए ऐसा कराया था।

प्रश्न 106. एकांकी में वरुणवृक्ष का देवता कौन सा पात्र है ?

उत्तर—एकांकी में वरुणवृक्ष का देवता चाणक्य है।

प्रश्न 107. मलयकेतु ने शटकार से सर्वार्थसिद्धि की रक्षा करने, न्याय करने, की प्रार्थना क्यों की थी ?

उत्तर—क्योंकि चाणक्य ने मलयकेतु के सामने अपने आपको न्याय करने वाला वरुणवृक्ष का देवता बताया था।

प्रश्न 108. चाणक्य ने ब्रह्म की क्या परिभाषा दी थी ?

उत्तर—उसने कहा था कि दया की शक्ति, हृदय की शक्ति ही ब्रह्म है।

प्रश्न 109. मलय ने चाणक्य को बगुला क्यों कहा ?

उत्तर—मलय को सन्देह था कि चाणक्य ने ही सर्वार्थसिद्धि को मारने के लिए शटकार को प्रेरित किया है, इसीलिए चाणक्य को मलय ने बगुला कहा।

प्रश्न 110. चाणक्य अचेत हुए सर्वार्थसिद्धि को कैसे होश में ला पाये ?

उत्तर—चाणक्य अपने हृदय की शक्ति से ही ऐसा कर सके।

प्रश्न 111. शटकार ने सर्वार्थसिद्धि को मारने का प्रयत्न क्यों किया था ?

उत्तर—वह नन्दवंश से अपने मारे गये पुत्रों का बदला लेना चाहता था और सर्वार्थसिद्धि नन्दवंश का ही था, नन्द का भाई था।

प्रश्न 112. चाणक्य ने शटकार की पुत्री सुवासिनी का विवाह राक्षस से करने की बात क्यों कही ?

उत्तर—शटकार सबसे अधिक घृणा राक्षस से करता था जिसे दूर करने के लिए ही चाणक्य ने यह प्रस्ताव रखा था।

प्रश्न 113. चाणक्य ने जब मलयकेतु से कहा कि जाओ अपने अमात्य राक्षस से कहो कि उससे शटकार की पुत्री का विवाह होने जा रहा है, तब मलय को आश्चर्य क्यों हुआ ?

उत्तर—उसे इसलिए आश्चर्य हुआ कि चाणक्य का यह न्याय अप्रत्याशित था। मलय को ऐसे अच्छे न्याय की आशा न थी।

प्रश्न 114. इस न्याय से सर्वार्थसिद्धि चाणक्य के आगे नतशिर और करबद्ध क्यों हो गया था ?

उत्तर—उसे चाणक्य पर शक था परन्तु ऐसे अच्छे न्याय से उसे अपना शक निराधार प्रतीत हुआ इसीलिए उसे अपने ऊपर संकोच और चाणक्य के प्रति श्रद्धा हुई थी।

प्रश्न 115. 'वरुणवृक्ष का देवता' एकांकी में क्या चाणक्य को सचमुच वरुणवृक्ष के देवता के अनुरूप चित्रित किया जा सकता है ?

उत्तर—हाँ यहाँ चाणक्य को देवता के अनुरूप ही चित्रित किया गया है अपने प्रति प्रेम रखने वाली सुवासिनी का राक्षस से विवाह कराना उसके त्याग का तथा शटकार और नन्दवंश के बीच की घृणा को दूर कराने का प्रमाण है। यही व्यवहार उसे देवता सिद्ध करता है।

प्रश्न 114. चाणक्य ने यह जानकारी भी की कि मलयकेतु राक्षस का गुप्तचर है, उसे निर्दोष क्यों कहा ?

उत्तर—चाणक्य ने उसे इसलिए निर्दोष कहा कि उसने अपने कर्त्तव्य का सफलतापूर्वक पालन किया।

प्रश्न 17. चाणक्य ने ब्राह्मण का क्या धर्म बताया है ?

उत्तर—चाणक्य ने नास्तिक को आस्तिक बनाना, जन-जन से वर्णाश्रम धर्म का पालन कराना ब्राह्मण का धर्म बताया है।

साधना पास बुक्स
परीक्षा हायर सैकण्डरी परीक्षा
अनिवार्य हिन्दी
भाग–(ब)

लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक प्रश्न

1. कविता क्या है ?

प्रश्न 1. कविता मनुष्य के भावों की रक्षा करती है। इसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—शुक्लजी की मान्यता है कि कविता से मनुष्य के भावों की रक्षा होती है। मनुष्य के भीतर भाव न हो तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। उन्हीं भावों की कविता रक्षा करती है, उन्हें उत्तेजित करती है और इस प्रकार हममें नया जीवन डालती है। कविता पढ़-सुनकर हमारे मनोवेगों का प्रवाह जोर से बहने लगता है। हममें प्रकृति की, सृष्टि की सुन्दरता के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है और भावना के कारण ही कोई अनुचित कार्य हमें बुरा, असह्य लगा करता है। भावनाओ के उत्तेजित होने पर हमें अपना जीवन कई गुना अधिक जान पड़ता है। कविता सृष्टि के पदार्थों का विवेचन इस प्रकार से करती है कि वे पदार्थ या व्यापार हमारे आँखों के सामने नाचने लगते हैं, अधिक स्पष्ट हो जाते हैं और तब बुद्धि पर जोर डाले बिना ही हम उनकी उत्तमता-अनुत्तमता को जानकर सुखी या दुखी होते हैं। इस प्रकार कविता हमारे भावों को उत्तेजित करती है, उनकी रक्षा करती है और आदमी को जड़ नहीं होने देती। भावों के कारण ही मनुष्य को मनुष्य बना सकती है।

प्रश्न 2. कविता हमें कार्यों में प्रवृत्त करती है। कैसे ?

उत्तर—जब यह स्पष्ट हो गया कि कविता हमारे भीतर भावों को, मनोवेगों को उत्तेजित करती है और हम जान लेते हैं कि कौन-सा कार्य अच्छा है, कौन सा बुरा है तभी हम उसे करने या न करने का निर्णय करते हैं या कहना चाहिए तभी हमें कार्य में प्रवृत्त होते हैं या उससे अलग रहते हैं। जब कविता देश की गरीबी या अकाल का भीषण दृश्य उपस्थित करती है तो उससे हमारा हृदय प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। हम अपने बालक के पास बैठी असहाय भूख से तड़पती माँ का दृश्य कविता में देखकर करुणा से युक्त हो उठते हैं तभी उसका दुख दूर करने के लिए प्रवृत्त होते हैं। इस प्रकार कविता विषय को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत कर हमें ज्यादा भावविभोर करती है जिसके परिणामस्वरूप हम कार्य में प्रवृत्त हुए बिना नहीं रह पाते। इस प्रकार कविता से जितना अच्छी तरह, जितने जोश से हम कार्य में प्रवृत्त होते हैं उतने जोश से राजनीतिज्ञ के सूखे भाषण को सुनकर प्रवृत्त नहीं होते।

प्रश्न 3. यह कैसे कहा जा सकता हैं कि कविता मनोरंजन के अलावा हमारे स्वभाव का संशोधन करती है ?

उत्तर—कविता मनोरंजन का साधन तो है ही, इसके अलावा वह हमारे स्वभाव का संशोधन करने का भी साधन है। किसी के कहने से ही कोई व्यक्ति

सत्यवादी हो जाय, उदार हो जाय या चोरी करना छोड़ दे, यह जरूरी नहीं परन्तु कविता, कविता है, उसमें मानव भावों को उत्तेजित करने वाला दृश्य प्रस्तुत किया गया है तो उससे मनुष्य में अपेक्षित प्रभाव अवश्य उत्पन्न होगा। कारण यह है कि कविता में जो दृश्य प्रस्तुत किया गया है उससे हमारा चित्त एकाग्र होता है फलतः हम उसमें दी गई नसीहत को ध्यान से, गहराई से अपनाते हैं। रामचरितमानस में राम,भरत आदि के चरित्र के त्याग, प्रतिज्ञापालन, सत्यव्रताचरण पितृभक्ति आदि का इस ढंग से वर्णन हुआ है कि उनके प्रति हमारे भीतर श्रद्धा, भक्ति का भाव उमड़ता है। जड़ से जड़ व्यक्ति भी उनके आचरण से प्रभावित होता है और तभी उसके स्वभाव का भी संशोधन होता है।

प्रश्न 4. कविता के माध्यम से हमें सौन्दर्य कई गुना प्रतीत होता है, कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हम प्रकृति के सौन्दर्य को प्रायः देखा करते हैं पर उससे न कोई शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं और न उससे भावविभोर होते हैं। कवि भावुक प्राणी होता है, वह तो प्रकृति सौन्दर्य को देखकर भावविभोर हो सकता है। सामान्य मनुष्य तो प्रकृति के सौन्दर्य से तभी प्रभावित होता है जब वह काव्य में प्रकृति के सौन्दर्य कों, जिसमें कि कवि के दृश्य का सौन्दर्य भी जुड़ गया होता है, पढ़ता है या सुनता है। कवि किसी रमणी के बाह्य सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन नहीं करता अपितु उसके हृदय के, अन्तःकरण के सौन्दर्य परोपकार, करुणा, दया के भाव से भावनाओं के सौन्दर्य से भी अवगत कराता है जिससे कविता में वर्णित रमणी का सौन्दर्य कई गुना होकर सामने आता है और हमें ज्यादा प्रभावित करता है। हम इतने प्रभावित होते हैं जितने उस रमणी को देखकर ही न हो पाते। हरिश्चन्द्र की पत्नी तारामती को, उसके सौन्दर्य को देखकर ही हममें उसके प्रति वैसी श्रद्धा उत्पन्न नहीं हो सकती थी जैसा कि सत्य हरिश्चन्द्र नाटक देख-पढ़कर या काव्य में उसका त्याग, उसकी कष्टसहिष्णुता का आचरण देखकर उत्पन्न होती है।

प्रश्न 5. शुक्लजी के अनुसार कविता की आवश्यकता है ?

उत्तर—शुक्लजी की मान्यता है कि जीवन में कविता की बड़ी आवश्यकता है। कविता हरेक जाति में हमेशा रहती है। कारण यह है कि कविता ही मनुष्य की मनुष्यता को बनाये रखा करती है। संसार के असंख्य कार्य-व्यापारों में, झमेलों में फँसे हुए व्यक्ति की मनुष्यता समाप्त होने का डर रहता है। ऐसा व्यक्ति न तो अत्याचार की शिकार किसी असहाय नारी की ओर ध्यान देकर उसकी सहायता करने की फुर्सत रखता है और न ऐसा भाव ही। यदि इस प्रकार से लोग हृदयहीन, भावनाहीन हो जाएँ तो उनमें मनुष्यता कहाँ रहेगी। ऐसे व्यक्ति तो जीवित रहते हुए भी मृतवत् हैं। कविता इन्हीं व्यक्तियों में भाव जगाने का साधन है। वह ऐसे ढंग से, मार्मिकता से दृश्य प्रस्तुत करती है कि उनमें दया आदि के

भाव उमड़ आते हैं। ये दया आदि के भाव ही मनुष्यता की आधारशिला है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि मानव जीवन में कविता की बड़ी भारी आवश्यकता है। भौतिकता को सर्वस्व मानने वाला व्यक्ति तो धन कमाने में व्यस्त रहकर अकाल की विभीषिका के शिकार लोगों की ओर ध्यान ही न दे पायेगा। फिर उसे मनुष्य भी कैसे कहा जा सकेगा। मनुष्य तो वही है जो मनुष्य के काम आये। कविता ही उसमें ऐसी विशेषता लाती है और यह काम करती है वह हृदयस्पर्शी चित्रण करके, मन को छूने वाले दृश्य प्रस्तुत करके।

प्रश्न 6. कविता में आये अलंकार सम्बन्धी शुक्लजी के विचार व्यक्त कीजिये।

उत्तर—कविता में प्रयुक्त भाषा को जोरदार बनाना पड़ता है। इसके लिए उसकी सभी शक्तियों को काम में लेना होता है। भाषा को सुन्दर बनाने में कल्पना शक्ति का भी प्रयोग किया जाता है। भिन्न-भिन्न प्रकार की वर्णन प्रणालियों को अलंकार कहा जाता है। अलंकार उसी प्रकार काव्य की शोभा बढ़ाते हैं जिस प्रकार गहने नारी का सौन्दर्य बढ़ा देते हैं। अलंकार का प्रयोग सोच समझकर किया जाना चाहिए। अलंकार वर्णन शैली में सौन्दर्य ला देते हैं। कविता पर अलंकारों का बोझ नहीं लादा जाना चाहिए। अलंकार काव्य के प्राण नहीं हैं। कविता का प्राण तो रस ही है। अलंकार रस संचार करने में सहायक होते हैं। कविता में हठपूर्वक अलंकार ला देने से कविता बिगड़ जाती है। केवल अलंकार ही असुन्दर को सुन्दर नहीं बना सकते। वे तो सुन्दर का ही सौन्दर्य बढ़ाते हैं, जैसे कि एक भद्दी, कुरूप नारी गहने लादकर सुन्दर नहीं हो जाती और सुन्दर नारी उचित अनुपात में गहने धारण कर और सुन्दर लगने लगती है, यही बात कविता के साथ लागू होती है।

2. हमारा देश और राष्ट्रभाषा

प्रश्न 7. महादेवी जी के दो राष्ट्र सम्बन्धी विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर—जिस प्रकार देवता के विग्रह में हाथ, पैर आदि कई अंग होते हैं और उनमें से एक के खण्डित होने से ही देव-विग्रह खण्डित हो जाता है उसी प्रकार एक देश की विविधता में एकता की स्थिति रहती है। भौगोलिक विविधता में भी सांस्कृतिक एकता रहा करती है। उसके बिना तो देश, पर्वत, नदी आदि का संग्रह भर कहा जायेगा। हरेक देश की अपनी भौगोलिक विशेषताएँ होती हैं, अपनी राजनीतिक सत्ता होती है, संस्कृति होती है। ये सभी एक-दूसरे को प्रभावित करती है। एक स्वस्थ मानव में जैसे शरीर होता है और उसकी चेतना होती है उसी प्रकार राष्ट्र में भी स्थूल और सूक्ष्म रूपों का मेल रहता है। संस्कृति एवं भाषा सूक्ष्म रूप है। राष्ट्र के लिए भौगोलिक अखण्डता, सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रभाषा जरूरी होती है।

प्रश्न 8. यों तो मानव संस्कृति एक ही होती है फिर भी अलग-अलग देशों की संस्कृति में थोड़ा अन्तर, मानव संस्कृति में विविधता होती है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-- महादेवी जी मानती हैं कि व्यापक अर्थ में मानव संस्कृति एक ही क्योंकि मनुष्य जीवन के समान ही उसके बुद्धि और हृदय और संस्कारों का क्रम रहता है। जिस प्रकार पेड़ एक है भले ही उसमें तना, शाखाएं, फूल आदि अलग-अलग दिखाई देते हैं उसी प्रकार मानव संस्कृति एक है। तने, शाखाओं, फूलों की भांति ही संसार की संस्कृति में तथा देश की संस्कृति में विभिन्नता रहा करती है और यही विविधता उसके विकास की द्योतक है। संस्कृति नदी के समान है जो एक ही पर्वत से निकलती है, एक ही समुद्र में गिरती है पर गिरने से पहले कई शाखाओं में विभक्त दिखाई देती है। उसी प्रकार देश की संस्कृति मूलतः एक है, उसमें प्रदेशगत विविधता नदी शाखाओं के सामान ही है। नदी की शाखाओं के बावजूद नदी एक ही कही, मानी जाती है उसी प्रकार प्रदेशगत विविधताओं के बावजूद देश की संस्कृति एक है। जैसे रक्त का सम्बन्ध एक हृदय काल से ही है भले ही वह अनेक धमनियों आदि में प्रवाहित होता रहता है वैसे ही संस्कृति की विविधता में मूलगत एकता रहती है। विविधता उसकी गति है, विकास हैं।

प्रश्न 9. महादेवी जी के भाषा सम्बन्धी विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--महादेवी जी की मान्यता है कि एक स्वतन्त्र स्वाभिमानी राष्ट्र के लिए एक भाषा जरूरी है। भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है। वह जीवन के विकास की उसी प्रकार द्योतक कही जा सकती है जिस प्रकार सौरभ फूल के विकास का द्योतक होता है। मुरझाए या अनखिले फूल में सौरभ नहीं होता। भाषा का संस्कृति के बिना विकास नहीं होता। संस्कृति के बिना भाषा के विकास की आवश्यकता ही नहीं होती। भाषा के स्तर से किसी देश की संस्कृति के स्तर को जाना जा सकता है। यदि संस्कृति का विकास न हो तब तो हाट-बाजार में क्रय-विक्रय के काम के लिए इन गिने शब्द ही पर्याप्त रहेंगे। विकसित भाषा की आवश्यकता तो मनुष्यों के भाव जगत, सौन्दर्य बोध को भली प्रकार व्यक्त करने के लिए होती है। हिन्दी अनेक प्रादेशिक भाषाओं की सहोदरा है। वह समृद्ध है। वह राजतन्त्र के युग से आज तक विकसित होती रही है। एक राष्ट्र के लिए एक भाषा, एक साहित्यवती भाषा होनी ही चाहिए। इससे प्रादेशिक भाषाओं को भी कोई क्षति नहीं होती। मिट्टी में जैसे अंकुर फूटता है वैसे ही जीवन-विकास के साथ विकसित परिमार्जित होती चला करती है। राष्ट्रीय एकता के लिए एक भाषा का होना जरूरी है। हिन्दी की लिपि मुद्रण-लेखन यंत्रों की दृष्टि से भी अनुपयुक्त नहीं है।

प्रश्न 10. भारतीय संस्कृति में विविधता में भी एकता है, इसे स्पष्ट कीजिये।

उत्तर--महादेवी जी ने स्पष्ट करना चाहा है कि भारतीय संस्कृति में पाई

जाने वाली विविधता कोई बुराई नहीं वरन् अच्छाई है, उसकी जीवंतता उसके विकास की प्रमाण है। जैसे सौरभ फूल से भिन्न प्रतीत होता है पर वह है तो फूल के विकास का ही प्रमाण, उसके खिल होने का प्रमाण। अनेक अंगों के कारण ही तो मानव शरीर पूर्ण कहा जाता है। तने, शाखाओं, पत्तियों, फूलों की विविधता से ही तो वृक्ष जीवित रहता है। सभी अंगों के कारण हो तो देव-विग्रह पूर्ण माना जाता है। नदी एक ही पर्वत से निकलती है, एक ही समुद्र में गिरती है पर समुद्र में गिरने से पूर्व अनेक शाखाओं में विभक्त दिखाई देती है। इन शाखाओं के रहते हुए भी, वह एक नदी कही जाती है, वैसे ही विविधताओं से युक्त हमारी संस्कृति एक है। साहित्य, कला आदि के माध्यम से हम भारतवासियों की जीवन के प्रति जो आस्था, देश और विश्व के बारे में जो नैतिक मान्यताएं व्यक्त हुई हैं वे तत्त्वतः एक ही हैं।

3. हरी-हरी दूब और लाचार क्रोध

प्रश्न 11. दूब का सांस्कृतिक महत्त्व स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर—लेखक ने दूब के महत्त्व को स्पष्ट किया है। यों तो दूब एक तुच्छ सी वस्तु प्रतीत होती है पर उसका सांस्कृतिक दृष्टि से बड़ा भारी महत्त्व रहा है। वैदिक काल से ही उसका सांस्कृतिक महत्त्व रहा है प्रायः हरेक मांगलिक कार्य में दूब और हल्दी को स्थान दिया जाता है। दूब को समुद्र की कन्या बताया गया है और उसे वंश की वृद्धि करने वाली माना गया है। वैदिक काल में दूब और मधुक को एक जगह गूँथकर ही वरमाला बनाई जाती थी शक्तिग्राम के शीश पर भी तुलसीदल के साथ दूर्वा चढ़ाई जाती है। कवियों ने श्री राम के श्यामवर्ण के लिए दूर्वा को उपमान बनाया है 'राम दूर्वादल श्यामं, पद्माक्षं, पीत वाससा।' दूर्वा सौभाग्य की प्रतीक मानी जाती है तभी तो वैदिक काल में इसे वरमाला में प्रयुक्त किया जाता था। इस प्रकार नन्ही सी दिखाई देने वाली दूब या दूर्वा का हमारे देश में बड़ा सांस्कृतिक महत्त्व रहा है।

प्रश्न 12. स्पष्ट कीजिये कि दूब जिजीविषा की प्रतीक है।

उत्तर—लेखक ने अपने लेख में दूब को जिजीविषा का प्रतीक माना है। यह मनुष्य की जिन्दा रहने की इच्छा की प्रतीक है। जो व्यक्ति कमजोर मन वाला नहीं है वह विषम से विषम परिस्थितियों में भी आत्महत्या करने का विचार कभी मन में नहीं लाता। वह उन परिस्थितियों का सामना करता है और आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है। ऐसे ही मनुष्य की जिन्दा रहने, आगे बढ़ने की इच्छा की प्रतीक के रूप में दूब का प्रयोग किया गया है। कारण यह है कि दूब भी मरना नहीं जानती। भीषण गर्मी में झुलस जाने के बावजूद दूब मरती नहीं। वर्षा की फुहार पड़ते ही पुनः हरी भरी दिखाई पड़ जाती है। यह पैरों तले रौंदी जाने पर भी नहीं मरती।

यह तो मानो मृत्यु को भी पराजित कर देने वाली, उसे भी लाचार दीन सिद्ध कर देने वाली है। यह सहनशील, विनम्र, म्दुकी हुई रहकर भी उभर जैसी है।

प्रश्न 13. दूब हिन्दूस्तानी मन को प्रतीक कैसे कही जा सकती है ?

उत्तर—लेखक ने दूब की विशेषताएं बताई हैं। ये विशेषताएं ही बहुत कुछ सच्चे हिन्दुस्तानी में पाई जाती हैं। सच्चा हिन्दुस्तानी मन सिंहासन और सोने को महत्त्व नहीं देता, जिस प्रकार कि दूब पेड़ की तरह बड़प्पन को प्राप्त नहीं करती, उसे महत्त्व नहीं देती। जिस प्रकार दूब पेड़ की सी ऊंचाई को नहीं अपनाती, नहीं महत्त्व देती उसी प्रकार सच्चे भारतीय मन का प्रतिनिधित्व करने वाले कवि कबीर दास भी पेड़ की केवल ऊंचाई को महत्त्व नहीं देते। वे खजूर की तरह लम्बे, ऊंचे हो जाने को बेकार बताते हैं क्योंकि खजूर पर फल दूर लगता है जिसे प्राप्त करना कठिन है और उससे पंथी को छाया भी नही मिल पाती। इसी प्रकार जो व्यक्ति बड़ा हो गया पर दूसरों को लाभ नहीं पहुँचाता तो उसका बड़ा होना व्यर्थ है, बेमानी है। सच्चा हिन्दुस्तानी मन धन वैभव नहीं मांगता है और न उसे महत्त्व देता है जैसे दूब छोटा रूप रखना विनम्र रहना पसन्द करती है उसी प्रकार सच्चा हिन्दुस्तानी मन धनवैभव के बजाय भक्ति, विनम्रता मांगता है।

प्रश्न 14. 'मानसिक दृढ़ता, अन्तर्बल के लिए जीवन में किसी प्रकार की आस्था का होना जरूरी है। इस कथन को स्पष्ट कोजिए।

उत्तर—लेखक कुबेरनाथ राय का मानना है कि हममें आस्था का अभाव है। आगे बढ़ने के लिए, निडर बनने के लिए, भीतरी विकास करने के लिए किसी प्रकार की आस्था जरूरी हुआ करती है। वह आस्था ईश्वर के प्रति हो सकती है, लोकतत्र के प्रति हो सकती है। कबीर आदि बुद्धिजीवियों में जो शक्ति थी उसका कारण था उनमें विद्यमान आस्था तभी तो वे राजाओं को भी फटकार सकते थे। अब हमें जो शिक्षा दी जाती है वह सिखाती है संशय या आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना। हमारी शिक्षा ईश्वर-निरपेक्ष मूल्यों की ओर नैतिकता-निरपेक्ष शिक्षा है। इसी कारण हममें बुद्धि जीवियों में कुर्सी को, सत्ता प्राप्त व्यक्ति को फटकारने की क्षमता नहीं आई है। हममें न ईश्वर के प्रति आस्था है न लोकतंत्र के प्रति। जबकि अन्तर्बल प्राप्त करने के लिए आस्था रखना जरूरी है। हम गलती करने वाले को कबीर की तरह फटकार नहीं सकते।

प्रश्न 15. लोकतन्त्र और लाचारक्रोध के बारे में लेखक के विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हमारे देश में लोकतंत्र हैं। हममें लोकतंत्र के प्रति लगाव, प्रेम भी है। जब हमारा लोकतंत्र आहत होता है, लोकतंत्र को आघात पहुँचता है तो हमें दुख होता है। हम क्रुद्ध हो जाते हैं पर क्रोध की लाचारी को पी जाते हैं, उसे भुला देते हैं। उसे कबीर-तुलसी की भांति दृढ़ता से व्यक्त नहीं कर सकते। इसका

कारण यह है कि लोकतंत्र में सच्चाई नहीं है, लोकतन्त्र मजबूत नहीं हुआ है। उसके प्रति हममें दृढ़ आस्था नहीं है। हमें विश्वास नहीं होता कि सत्ता को दुत-कारने पर लोकतन्त्र, संविधान हमारी रक्षा कर लेगा। यदि संविधान, लोकतन्त्र मजबूती से लागू हो गया होता तो सत्ता प्राप्त व्यक्ति की गलती को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने पर हमारा कोई बाल बांका न कर पाता। हममें स्पष्ट रूप से, कबीर की तरह अखड़ता पूर्वक अपनी सच्ची बात कहने की हिम्मत आती। कहने का मतलब यहां लोकतंत्र अभी मजबूत नहीं हुआ है। हम लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को ही पसन्द करते हैं। उसको जब हानि होती है। जब कोई अलोकतांत्रिक कार्य होता है तो आज के बुद्धिजीवी को बुरा लगता है, वह क्रुद्ध होता है पर न्याय मिलने की आशा न होने से वह क्रोध को दबाकर रह जाता है। कमजोर लोकतन्त्र के प्रति हमारी आस्था दृढ़ नहीं हो पाई जो कि दृढ़ता अन्तर्बल के लिए अपेक्षित हुआ करती है। हम क्रोध की लाचारी भोगकर रह जाते हैं, क्रोध को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर पाते। यही क्रोध की लाचारी की स्थिति है। ऐसा नहीं है कि द्रोणाचार्य की तरह आज के बुद्धिजीवी ने ईमान बेच दिया हो और वह सताधारी को गलती करते देखकर भी कहना न चाहता हो। उसके सामने तो मजबूरी है कि उसे मजबूत लोकतांत्रिक शासन में जो न्याय मिलना चाहिए उसके मिलने का विश्वास नहीं है। क्योंकि अभी लोकतन्त्र मजबूत नहीं हुआ है। लोकतन्त्र मजबूत होने पर शासन चलाने वाला ही क्यों न हो उसे दण्ड मिलेगा ही। यह विश्वास होने पर ही बुद्धिजीवी में लोकतन्त्र के प्रति दृढ़ आस्था होगी। तभी उसमें स्पष्ट रूप से कहने की शक्ति आयेगी।

4. राजस्थानी साहित्य में वीरता मूलक मानववाद

प्रश्न 16. वीरतामूलक मानववाद से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—लेखक के अनुसार आत्मकेन्द्रित न रहने के बजाय समाज या विश्व के लिए कार्य करना मानववाद है। मतलब वे व्यक्ति मानववादी कहे जायेंगे जो अपने हित की परवाह न कर समाज या विश्व के हित का कार्य करते हैं। व्यक्ति को महत्व तभी मिलता है जब वह ऐसे कार्य करता है जो कि उसे जगत में, इतिहास में ऊंचा स्थान प्रदान करते हैं। मनुष्य अपनी शक्तियों का उपयोग करे तो अपने विवेक द्वारा प्राकृतिक जगत को स्वातंत्र्य का साधन बना सकता है।

प्रश्न 17. वीरतामूलक मानववाद के रूपों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—लेखक की मान्यता है कि वीरतामूलक मानववाद के अनेक रूप हो सकते हैं। इसका एक रूप तो वह है जो बुद्ध द्वारा बताई गई दया और करुणा की भावना पर आश्रित है। दया और करुणा द्वारा ज्यादा से ज्यादा लोगों का हित करने वाला व्यक्ति भी मानववादी कहा जायेगा। दूसरा रूप वह है जिसे गांधीवादी

शब्दावली में 'श्रहिंसक वीरता' कह सकते हैं। मतलब श्रहिंसा को अपना कर दूसरों की भलाई में जुटे रहना भले ही कष्ट क्यों न उठाने पड़े, यह भी वीरता है, मानववाद है। लेखक की मान्यता है कि युद्धवीर भी सच्चे मानव का आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। अहिंसक, करुणावान, दयावान जैसे व्यक्तियों की तरह जो कि परहित के लिए श्रम करते हैं, युद्धवीर भी मानवों का हित कर सकता है। वह अत्याचार का दमन करने को अपनी वीरता का प्रदर्शन कर सकता है।

प्रश्न 18. राजस्थानी साहित्य में वीरता मूलक मानववाद के मूल में कौन-कौन सी भावनाएं दर्शायी गई हैं ?

उत्तर राजस्थानी साहित्य में जिस वीरतामूलक मानववाद का उल्लेख किया गया है उसके मूल की भावनाएं वर्णित की गई है जैसे--1. देशभक्ति और धरती प्रेम 2. मरण त्योहार और अमरता की आकांक्षा 3. स्वातन्त्र भावना 4. राष्ट्रीय उद्गार 5. कवि-प्रेरणा। यदि ध्यान से देखा जाय तो ज्ञात होगा कि राजस्थानी साहित्य में वीरता की कई प्रकार से चर्चा की गई और वह वीरता समाज देश के हित के लिए है।

देशभक्ति और धरती प्रेम—राजस्थानी कवि ने देशभक्ति की भावना को, धरती के प्रति प्रेम की भावना को विस्तार से वाणी दी। कवि ने वर्णन किया है कि देश के लिए पुत्र के मरने पर उसके बन्धु बान्धव ही नहीं मां भी प्रसन्न हुई। एक उदाहरण—

सुत मरियो हित देस रै, हरख्यो बन्धु समाज।
मा नहं हरखी जनम दे, जितणी हरखी आज॥

मरण-त्योहार और अमरता की आकांक्षा—राजस्थानी साहित्य में दर्शाया गया है कि सच्चे वीर मृत्यु को त्योहार के रूप में लिया है। उन्होंने इतिहास में अमर हो जाने के लिए देश और धर्म की रक्षा के लिए लड़ते-लड़ते अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। कल्ला ने इतिहास में अमर होने की इच्छा से अपनी अद्भुत वीरता का परिचय दिया था। उसने सिवाणा के किले की रक्षा के लिए युद्ध किया था।

स्वातन्त्र्य भावना—राजस्थानी साहित्य में स्वतंत्र्य की भावना का भी चित्रण हुआ है। यहां के अनेक वीरों ने स्वातंत्रता के लिए युद्ध किया। अमर सिंह सोढ़ा ने अमरकोट को अंग्रेज से मुक्त कराने को अपनी वीरता का परिचय दिया था उससे सम्बन्धित मांड़ मरसिये के रूप में गाई जाती थी। सूर्यमल्ल ने वीर सतसई में ऐसे वीररस पूर्ण उद्गार व्यक्त किये हैं जो वीरों में स्वतन्त्रता की लहर दौड़ा देते हैं।

राष्ट्रीय उद्गार—जिस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने काव्य में राष्ट्रीय भावनाओं को व्यक्त किया है उसी प्रकार बहुत पहले बाँकादास ने राजस्थानी में हिन्दू मुस्लिम ऐक्य की राष्ट्रीय भावना व्यक्त की थी । उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध एक होकर लड़ने की प्रेरणा दी थी ।

कवि-प्रेरणा—राजस्थानी कवियों ने राजस्थान के वीरों में वीरता की भावना जगाए रखने का आश्चर्यजनक ढंग से कार्य किया । इस दृष्टि से चारण कवियों का बड़ा भारी योग रहा । चारण कवियों के इस कार्य के लिए ठिकाना लाठरड़ा (मेवाड़) के ठाकुर गुमानसिंह जी ने बड़ी प्रशंसा की है ।

इसी प्रकार राजस्थानी साहित्य वीरतामूलक मानववाद का खूब वर्णन देखने मिलता है । देश की धरती के लिए, अमर होने के लिए, स्वतन्त्र होने के लिए, राष्ट्र के हित के लिए वीरता का वर्णन किया गया है ।

5. हिन्दी की व्याकरण-सम्बन्धी कठिनाइयां

प्रश्न 19. अंग्रेजी प्रेमी कुछ भारतीय हिन्दी की व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइयों को लेकर क्या कहते हैं ?

उत्तर—उनका कहना है कि हिन्दी की व्याकरण कठिन है जिससे हिन्दी भाषा का सीखना और बोलना कठिन है । वे चाहते हैं कि व्याकरण का ध्यान दिये बिना ही, मनमाने ढग की हिन्दी प्रयोग में लाई जाय । वे यह भी कहते हैं कि कलकत्ता और बम्बई जैसे नगरों में अहिन्दी भाषी हिन्दी का जो रूप व्यवहार में लाते हैं उस रूप को राष्ट्रभाषा माना जाय । अंग्रेजी प्रेमी ये भारतीय कहते हैं कि हिन्दी दरिद्र भाषा है । इसका साहित्य भी उच्च कोटी का नहीं है । ये चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी भाषा राष्ट्र भाषा मानी जाय जिसमें कि व्याकरण की कठिनाइयाँ नहीं है । हिन्दी की व्याकरण सम्बन्धी कठिनाईयों में मुख्य कठिनाई उनकी दृष्टि में हिन्दी का लिंग भेद है ।

प्रश्न 20. डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या के हिन्दी व्याकरण सम्बन्धी विचार स्पष्ट कीजिये ।

उत्तर—डॉ. चाटुर्ज्या ने हिन्दी की व्याकरण के नियमों के कारण अहिन्दी भाषी आदि लोगों को जो कठिनाई होती है उसे ध्यान में रखकर कुछ अपने सुझाव दिये हैं । उनका सुझाव है कि हिन्दी की व्याकरण सम्बन्धी जो विशेषताएं हैं वे ही बहुत से भारतवासियों के लिए कठिनाई बनी हुई है, इसीलिए उन्हें कम कर देना चाहिए । तब हिन्दुस्तानी भाषा सहज सुबोध हो जायेगी । इस हिन्दुस्तानी में व्याकरण के नियम इतने कम होंगे कि उन्हें एक पोस्टकार्ड पर लिखा जा सकेगा । उनका सुझाव है कि बाजारू हिन्दुस्तानी को ही थोड़ा ऊंचा उठा दिया जाय ताकि वह सार्वजनिक सभाओं, सम्मेलनों आदि में प्रयुक्त होने योग्य बन जाय । इसी में आगे चल

कर साहित्य सृजन हो सकता है। चाटुर्ज्या ने दूसरी बात यह कही है कि इसे अभी राष्ट्र भाषा के बजाय द्वितीय भाषा के रूप में स्वीकार किया जाय। लोग धीरे धीरे इसे सीख लेंगे।

प्रश्न 21. डॉ. राम विलास शर्मा के हिन्दी सम्बन्धी विचार स्पष्ट कीजिये।

उत्तर–डॉ. रामविलास शर्मा को अंग्रेजी प्रेमी भारतवासियों के हिन्दी सम्बन्धी विचार पसन्द नहीं है। उनका कहना है कि हिंदी के व्याकरण विहीन रूप को अपनाने की बात गलत है। उन्हें उन लोगों से चिढ़ है जो अंग्रेजी शिक्षा का तो स्तर ऊंचा उठाना चाहते हैं और हिंदी के व्याकरण विहीन रूप को अपनाने का सुझाव देते हैं। उनका कहना है कि यदि हिन्दी में व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइयां हैं तो अंग्रेजी जिसे डेढ़ सौ से ज्यादा वर्षों से पढ़ा जा रहा है, को सीखने में कठिनाई क्यों आती और क्यों उसका स्तर गिरता जा रहा है। अंग्रेजी प्रेमी अंग्रेजी की कठिनाइयों की शिकायत क्यों नहीं करते। यह स्पष्ट रूप से पक्षपात ही है डॉ. शर्मा का तर्क है कि यदि हिन्दी की लिंग सम्बन्धी कठिनाइयों की शिकायत की जाती है तो क्या ये कठिनाइयां अन्य भाषाओं में नहीं है। संस्कृत में शत्रु पुल्लिंग है तो मित्र नपुंसिक लिंग है। दूसरे संस्कृत की लिंग सम्बन्धी कठिनाई से उस भाषा के प्रसार में कभी बाधा नहीं आई थी फिर हिन्दी के सम्बन्ध में ही लिंग सम्बन्धी कठिनाइयों को लेकर क्यों विवाद खड़ा किया जाता है।

प्राचीन यूनान की भाषा, जिसकी यूरोप की भाषाओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा, इसमें भी लिंग सम्बन्धी कठिनाइयां हैं। उसमें गिनौस (जन) नपुंसक लिंग है और दिमौस (जनता) पुल्लिंग है। लैटिन भाषा में भी लिंग भेद है। इसमें अग्नि के लिए दो शब्द हैं इग्कोंदियम और इग्निस। इनमें पहला नपुंसक और दूसरा पुल्लिंग है। लैटिन की भांति फ्रांसीसी में भी यह स्थिति है। फ्रांसीसी पर्वत को स्त्रीलिंग और और पुस्तक को पुल्लिंग मानते हैं। जर्मन, रूसी भाषाओं में तीन लिंग हैं।

वस्तुतः लिंग भेद शब्द द्वारा व्यक्त वस्तु के लिंग के अनुसार न होकर शब्द के रूप के अनुसार हुआ करता है। भाषा भौतिक जगत और मनुष्य के भौतिक जीवन से अलग होकर विकसित नहीं होती। अंग्रेजी ने अनेक भाषाओं के शब्द लिए हैं किन्तु व्याकरण के रूप अपने ही रखे हैं। मतलब जब अंग्रेजी अपने व्याकरण सम्बन्धी नियमों में ढील नहीं दे रही तो हिन्दी की व्याकरण में ढील देने की बात क्यों कही जाती है। बाहर से आने वाले मुसलमानों को यहां की खड़ी बोली के व्याकरण रूपों से कोई शिकायत नहीं रही थी। फिर अंग्रेजी प्रेमी लोगों को हिन्दी के व्याकरण में परिवर्तन की क्यों आवश्यकता हो रही है? बंगला आदि भाषाओं के रूप हिन्दी के जितने निकट है उतनी उर्दू निकट नहीं है फिर भी उर्दू वालों को

हिन्दी के प्रति शिकायत नहीं रही । यह शिकायत बँगला भाषी लोगों को क्यों हो रही है ? मतलब यही है कि हिन्दी की व्याकरण में परिवर्तन करने की जरूरत नहीं है । व्याकरण सम्मत हिन्दी ही राष्ट्र भाषा बनाई जाने योग्य है ।

6. व्योम पुत्र की अन्तरिक्ष सैर

प्रश्न 22. भारत में राकेश शर्मा की अान्तरिक्ष यात्रा के दृश्य टेलीविजन पर कैसे देखे जाने संभव हुए ।

उत्तर—राकेश शर्मा की अान्तरिक्ष यात्रा के दृश्य टेलीविजन पर एक संचार सम्बन्ध सेतु के माध्यम से देखे जाने संभव हुए । वह सेतु भारत, रूस सेल्यूत-7 प्रयोगशाला के बीच स्थापित किया गया था ।

प्रश्न 23. राकेश शर्मा कब कहां से अन्तरिक्ष में गये थे ?

उत्तर—राकेश शर्मा 3 अप्रेल को रूस के बैकोनूर अन्तरिक्ष अड्डे से 300 टन भार के राकेट यान सयूस-11 द्वारा दो रूसी साथियों के साथ अन्तरिक्ष में गये थे । मास्को से 25 किलोमीटर दूर स्थित कालीनिनग्राद के नियन्त्रण केन्द्र से अन्तरिक्ष यान का नियन्त्रण किया गया था । संचार साधनों के जरिये अन्तरिक्ष यात्रा की तमाम गतिविधियों पर नजर रखी गई थी । रूस के संचार उपग्रह से अन्तरिक्ष यात्रा के प्रोग्राम भेजने की व्यवस्था हुई थी ।

प्रश्न 24. रूस के संचार उपग्रह के बारे में बताइये ।

उत्तर—रूस का सचार उपग्रह का नाम स्तारिस ओनार-2 है । यह भूमध्य-रेखा के 36 हजार किलोमीटर ऊपर स्थिर है । रूस के सेल्यूत-7 प्रयोगशाला के टेलीविजन कैमरों से नियन्त्रण कक्ष को भेजे जाते हैं वहां से वे मास्को के टेलीविजन केन्द्र को भेजे जाते हैं । प्रोग्राम को आगे दूर-दूर भेजने के उद्देश्य से दुबना के भू-केन्द्र को भेजा जाता है जहां से प्रोग्राम को सचार उपग्रह की ओर भेजा जाता है । यहीं से अन्तरिक्ष यात्रा के प्रोग्राम भेजने की व्यवस्था हैं ।

प्रश्न 25. देश के प्रमुख शहरों में राकेश शर्मा की अन्तरिक्ष यात्रा के प्रोग्राम देखे जाने कैसे संभव हुए ।

उत्तर—रूस के संचार उपग्रह से हमारे सिकन्दराबाद उपग्रह-भूकेन्द्र की ओर प्रोगाम भेजे जाते थे । सिकन्दराबाद उपग्रह केन्द्र से उन्हें माइक्रोवेव टावरों के जरिये नई दिल्ली के राजेन्द्र नगर के माइक्रोवेव टावर पहुंचाया जाता था । वहां से वे दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र भेजे जाते थे और दिल्ली से टेलीविजनों पर भेजे जाते थे । प्रोग्राम को सारे देश के दूरदर्शन केन्द्रों तक पहुंचाने के लिए उसे भूकेन्द्र से इन्सेट-1 बी उपग्रह की ओर भेजा जाता था । इसी उपग्रह से प्रमुख शहरों के टेलीविजनों पर प्रोग्राम दिखाये जाते थे ।

प्रश्न 26. राकेश शर्मा तथा उनके साथियों से जो कुछ प्रश्न पूछे गये थे उनके उत्तरों को लिखिये ।

उत्तर— राकेश शर्मा ने बताया था कि यहां तारे झिलमिलाते नहीं। खूब साफ चमकीले दिखाई देते हैं। उनका भारत संबंधी प्रश्न का उत्तर था "सारे जहां से अच्छा।" उन्होंने बताया था कि अन्तरिक्ष का विस्तार अथाह है दिमाग को चकित कर देने वाला है। उन्होंने सुदूर अन्तरिक्ष के प्राणी से मुलाकात होने के बारे में कहा था कि यदि भेंट हो जाय तो खुशी ही होगी।

प्रश्न 27. एक सप्ताह की अन्तरिक्ष यात्रा के द्वारा राकेश शर्मा तथा उनके साथियों ने जो प्रयोग किये उनके बारे में प्रकाश डालिए।

उत्तर—राकेश शर्मा अन्तरिक्ष में 2-2 मिनट के पांच योगासन करते थे। यह जानता था कि क्या योगासन निर्धारित व्यायामों का स्थान ले सकते हैं। योगासनों से राकेश शर्मा चुस्त रहे। अन्तरिक्ष की भारहीनता की स्थिति औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से लाभप्रद है। वहां बढ़िया मणिभ यानी क्रिस्टल तैयार किये जा सकते हैं और विशुद्ध औषधियां तैयार की जा सकती हैं। वहां चांदी और जर्मीनियम धातुओं को मिलाने के भी प्रयोग किये थे जो लाभप्रद माने गये। राकेश शर्मा ने भारतीय भू-क्षेत्र के हजारों चित्र लिए जो यहाँ की वन सम्पदा, खनिज सम्पदा और जलराशि की बड़ी जानकारी देंगे।

7. हिन्दी-साहित्य की परम्परा में जीवन-सत्य

प्रश्न 28. स्पष्ट कीजिए कि साहित्य जीवन के रूपों की अभिव्यक्ति है।

उत्तर—लेखक शिवदानसिंह चौहान ने बताया है कि साहित्य की कोई भी विधा हो, वह करती जीवन के किसी रूप की ही अभिव्यक्ति है। साहित्य की परम्पराएँ भी जीवन सत्य की अभिव्यक्ति करती हैं। वीरगाथा काल के काव्य में उस समय के पराक्रम, राजाओं के विजय-युद्धों, शत्रु कन्या हरण का वर्णन मिलता है। भक्तिकालीन काव्य में नई नैतिकता की अभिव्यक्ति हुई है। उस साहित्य में हिन्दू-मुस्लिम एकता, मनुष्य मात्र की समानता का वर्णन हुआ है। उसमें लौकिक प्रेम के साथ अलौकिक प्रेम की, धर्म और भक्ति भावना की अभिव्यक्ति हुई है। जीवन को जीने योग्य बनाने वाले जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। रीतिकालीन काव्य से पता चलता है कि उस काल का काव्य समाज सुधार को, सामन्ती बन्धनों की क्रूरता के विरोध को व्यक्त करता है। इस प्रकार साहित्य में जीवन के ही किसी न किसी रूप की अभिव्यक्ति हुई है।

प्रश्न 29. साहित्य की परम्परा से क्या तात्पर्य है और वे कैसे बनती हैं?

उत्तर—जितने समय तक अनेक कवि थोड़े-बहुत अन्तर से एक से विषयों पर एक-सी कविताएँ करते रहते हैं तो उन रचनाओं को साहित्य की एक परम्परा माना जाता है, एक नाम दिया जाता है। एक साहित्य-परम्परा की रचनाओं में

साहित्य की आत्मा संबंधी साम्य रहता है। साहित्य की आत्मा के अन्तर्गत काव्य के भाव-विचार, वस्तु या जीवन के प्रति कवि के दृष्टिकोण को लिया जा सकता है। यों अनेक कवियों की रचनाओं के स्तर में थोड़ा बहुत अन्तर मिल जाता है जो कवियों की प्रतिभाओं की भिन्नता के कारण होता है। रचनाओं में अलंकारों, प्रतीकों, छन्दों में बहुत कुछ साम्य रहता है, यों उनमें थोड़ा बहुत अन्तर और वैविध्य भी हो सकता है। समानता मुख्य रूप से काव्य की आत्मा से सम्बन्धित होती है।

ये परम्पराएं कैसे बनती हैं, इस बारे में विचार करें तो ज्ञात होगा कि साहित्य में जीवन सत्य की अभिव्यक्ति होती है और जीवन सत्य दिन प्रतिदिन नहीं बदला करता। जब तक जीवन में कोई मौलिक परिवर्तन न हो जाय तब तक साहित्य उसी जीवन की अभिव्यक्ति करता रहता है। इस प्रकार समाज के एक दीर्घकाल तक के अपेक्षाकृत स्थिर जीवन भी अभिव्यक्ति करने वाला साहित्य एक साहित्य परम्परा में रखा जाता है। जब समाज में, जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन आ जाता है तो उस परिवर्तित जीवन की अभिव्यक्ति करने वाला साहित्य, काव्य दूसरी परम्परा में गिना जाता है।

प्रश्न 30. वीरगाथा कालीन काव्य परम्परा के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—वीरगाथा कालीन काव्य परम्परा हिन्दी साहित्य की सबसे प्राचीन परम्परा है। यह लगभग तीन-चार सौ वर्षों तक चलती रही। इस काव्य परम्परा के कवियों ने प्रबन्ध काव्य या वीरगीत रचे जिन्हें सामान्यतया 'रासो' कहा गया है। ये 'रासो' काव्य कम संख्या में प्राप्त हैं। दक्षपति विजय का खुमान रासो, चन्द वरदाई का पृथ्वीराज रासो, जगनिक का आल्हखण्ड ऐसे ही काव्य ग्रंथ हैं। इन प्रबन्ध काव्यों और वीर गीतों में उस समय के लोगों के पराक्रम, विजय युद्धों, शत्रु कन्याओं के हरण का वर्णन मुख्य रूप से वर्णित है। इसके अलावा कवियों ने अपने आश्रय दाता राजाओं का बढ़ा चढाकर वर्णन किया है। इन काव्य ग्रन्थों में समाज के जीवन का विस्तृत चित्रण नहीं हुआ। कारण यह है कि वह युद्धों का काल था। चारण कवि अपने राजा में युद्ध का उन्माद पैदा करने का प्रयत्न करते थे। तब राजा लोग आपस में लड़ते रहते थे। उस समय क्षत्रिय का धर्म युद्ध करना था भले ही वह कम उम्र में ही क्यों न मर जाय। मुसलमानों का आधिपत्य स्थापित होने पर वीरगाथा कालीन साहित्य परम्परा समाप्त हो गई थी।

प्रश्न 31. भक्तिकालीन साहित्य परम्परा से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—भारत में मुसलमानों का आधिपत्य स्थापित होने से पहले देश में अनेक छोटे-बड़े राजा थे। वे प्रायः आपस में लड़ते रहते थे। मुसलमानों के भारत में आने पर सामाजिक जीवन मे परिवर्तन आया। समाज में नई-नई समस्याएं उठ

खड़ी हुई । उस समय के कवियों ने नये जीवन मूल्य निर्धारित किये, साहित्य में परिवर्तन आया और नई साहित्य परम्परा प्रकाश में आई जिसे भक्तिकाल की साहित्य-परम्परा नाम दिया गया है : जैसा कि नाम से स्पष्ट है, तब कवियों ने ईश्वर-भक्ति की बड़ी चर्चा की । जनता एक प्रकार से असहाय थी । कोई बड़ा हिन्दू राजा न था । जो भारतीय जनता को मुसलमान बादशाहों के अत्याचारों से मुक्ति दिला पाता । इस कारण 'दूसरे को हरिनाम' वाली उक्ति चरितार्थ हुई । इस भक्ति-काल को शुक्लजी ने चार शाखाओं में विभक्त किया है—ज्ञानाश्रयी शाखा, प्रेममार्गी (सूफी) शाखा, रामभक्ति शाखा और कृष्णभक्ति शाखा ।

प्रश्न 32. ज्ञानाश्रयी शाखा की विशेषताएं बताइये ।

उत्तर—यह शाखा भक्तिकाल की ही एक शाखा है । इसके प्रतिनिधि कवि कबीरदास हैं । इस शाखा को संतकाव्य शाखा भी कहा जाता है । इस शाखा के कवियों की सामाजिक दृष्टि अधिक व्यापक थी । इसी कारण इस शाखा को अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है । इसमें जीवन सत्य की अभिव्यक्ति सबसे अधिक और स्पष्ट रूप मे हुई है । वह अभिव्यक्ति कवियों की दृष्टि अधिक उदार है तथा सकल मानवीय एकता के आदर्श को लेकर चली है । कबीर ने पहले से चली आ रही सिद्धों और जोगियों की वाणी को जन-जन तक पहुंचा दिया, उसे गरिमामय बना दिया कबीर ने बताया है कि हिन्दू-मुसलमानों मे उतना बैर-भाव न था जितना उच्च और निम्न वर्ग के हिन्दुओं में था । कबीर, रैदास, नानक आदि कवियों ने मनुष्य मात्र की समानता, हिन्दू-मुस्लिम एकता पर प्रकाश डाला । उन्होंने हिन्दू मुस्लिम दोनों को ग्राह्य उपासना स्वरूप निर्दिष्ट किया ।

प्रश्न 33. प्रेममार्गी शाखा से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—प्रेममार्गी शाखा भक्तिकालीन काव्य परम्परा की चार शाखाओं में से एक है । इसके सबसे प्रमुख कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं । इस शाखा का प्रारम्भ ज्ञानाश्रयी शाखा की प्रतिक्रिया के रूप में तथा सूफी मत के प्रभाव के कारण हुआ था । इसमें लौकिक प्रेम, राजकुमारों-राजकुमारियों की प्रेम कथाओं के माध्यम से अलौकिक प्रेम की तथा उस समय के जीवन की अभिव्यक्ति की है । उस समय भक्तिभावना का प्राबल्य था । इस शाखा के कवियों ने साम्प्रदायिक सद्-भाव, मानव समानता की बात कही है ।

प्रश्न 34. रामभक्ति शाखा के बारे में वर्णन कीजिए ।

उत्तर—तुलसीदास इस शाखा के प्रतिनिधि कवि थे । उन्होंने हिन्दुओं को अपना स्वरूप पहचानने की प्रेरणा दी परन्तु इस्लाम आदि के विरुद्ध नहीं लिखा । तब सामन्ती व्यवस्था था, मुगलों का शासनकाल था । रामभक्ति शाखा के काव्य में सगुणोपसा पर जोर दिया गया है और आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना की गई है, तुलसी ने सम्पूर्ण जीवन का चित्रण किया है ।

प्रश्न 35. रीति परम्परा की विशेषताएं स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भक्तिकाल के बाद रीतिकाव्य परम्परा का सूत्रपात हुआ। इस परंपरा का सम्बन्ध मुख्यतः दरबारी माहौल से रहा। इसमें राजाओं की विलासिता, कामुकता, उनकी दरबारी शान शौकत का चित्रण हुआ है। इस परम्परा के कवियों ने नायक नायिका भेदों का विस्तार से वर्णन किया है। इस काल के कवियों के काव्य में श्रृंगार रस प्रमुख है। बिहारी, देव, पद्माकर, घनानन्द आदि इस काल के प्रमुख कवि हैं। श्रृंगार के अलावा जीवन के अन्य व्यापारों का इस काव्य परम्परा में अभाव है।

8. राजस्थानी उपाख्यानों में उदारता की महिमा

प्रश्न 36. राजस्थानी उपाख्यानों में मुख्य विषय क्या रहा है?

उत्तर—राजस्थानी उपाख्यानों में मुख्य रूप से उदारता एवं वीरता की भावनाओं का अंकन किया गया है। उदारता वीरता की और वीरता उदारता की पूरक रही है। ये दोनों राजस्थानी संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। इन दोनों का आधार त्याग है। दानी तो धन को क्षण भंगुर मानकर उसको दूसरों को देने में उसकी सार्थकता मानता है और वीर जीवन को नाशवान मानता है। कवियों की रचनाओं से रीझ कर उन्हें 'लाख पसाव', करोड़ पसाव तक देने की चर्चा की गई है। इन उपाख्यानों में धन को 'हाथ का मैल' या 'बादल की छांह' माना गया है। उन्हीं को जीवन सार्थक बताया गया है जिन्होंने धन पाकर उसका दान किया है। याचकों को निराश लौटाने वालों को 'नाजोगा' या जिन्दा रहते हुए भी मृतक तुल्य बताया गया है।

प्रश्न 37. राजस्थान के दानियों के कुछ उदाहरण दीजिये।

उत्तर—राजस्थानी उपाख्यानों में असंख्य दानी व्यक्तियों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। कृपण लोगों का तो सुबह दर्शन भी अशुभ बताया गया है। उदयपुर के महाराणा भीमसिंह बड़े काव्य प्रेमी, दानी थे। उनके समय में बड़ी अराजकता थी फिर भी वे याचकों को कभी निराश नहीं करते थे। 'भीम विलास' 'भीम प्रकास' 'महाराणा भीमसिंह री झमाल' जैसी काव्य कृतियों में उनकी उदारता का वर्णन है। जोधपुर के महाराजा कानसिंह भी ऐसे ही उदार पुरुष थे। महाराजा भीमसिंह ने एक भी दिन ऐसा न बीतने दिया जब उन्होंने किसी न किसी को कुछ न कुछ दिया न हो। ईडर राज्य के ठिकाने के सरदार सूरजमल्ल चौहान की दानशीलता के आधार पर तुलना सूर्य से की गई थी। बीकानेर के महाराजा रायसिंह ने शंकर बारहठ को उनके काव्य के लिए सवा करोड़ द्रव्य दिया था। अनेक कवियों को उन्होंने हाथी दिये थे बूंदी नरेश महाराव राजा शत्रुमाल हाड़ा ने मृत्यु के समय भी कवियों को याद किया था।

9. बाढ़ के जल पर नियन्त्रण

प्रश्न 38. मनुष्य ने नदियों के जल को बांधने का प्रयत्न क्यों शुरू किया ?

उत्तर—हजारों वर्ष पहले ही मनुष्य ने नदियों का जल बांधने का प्रयत्न शुरू कर दिया था, बांध बनाये थे। कारण यह है कि वर्षा ऋतु में नदियों द्वारा बहुत सा पानी व्यर्थ ही समुद्र में चला जाता है। इतना ही नहीं हमारे मानसून प्रधान देश में तो इन नदियों के जल से अनेक जगह भयंकर बाढ़ आ जाती है और विनाश हो जाता है। वर्षा ऋतु के बाद खेतों में सिचाई के लिए पानी का अभाव हो जाता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य ने नदियों के जल को बांध बनाकर नियन्त्रित करने का प्रयत्न शुरू किया। ताकि बाढ़ से बचाव भी हो और खेतों की सिचाई भी कर ली जाय।

प्रश्न 39. मिस्र में लगभग 6,000 वर्ष पूर्व किसने बाँध बनवाया था ?

उत्तर—मिस्र में लगभग 6 हजार वर्ष पूर्व नील नदी पर एक बाँध बनवाया गया था। वह बाँध वहाँ के राजा मेनेस ने बनवाया था। उस बाँध का पानी एक वृहद् क्षेत्र की सिंचाई करने के लिए पर्याप्त होता था और उससे पास के नगर की बाढ़ से रक्षा हो सकती थी।

प्रश्न 40. ईसा से 4500 वर्ष पूर्व बाँध कहाँ बनवाया गया था ?

उत्तर—प्राचीन बेबीलोनिया में ईसा से 4500 वर्ष पूर्व दजला-फरात नदियों पर बाँध बनवाये गये थे। उन बाँधों से कृत्रिम झीलें बनाकर नहरें निकाली गई थीं, जिनसे उन नदियों के घाटी क्षेत्र में सिंचाई की जाती थी।

प्रश्न 42. रोम में बनाये गये बाँधों के बारे में बताइये।

उत्तर—रोम के इन्जीनियर बाँध बनवाने में दक्ष थे। उन्होंने बाँध बनाने की एक विशेष पद्धति खोजी थी और अन्य देशों ने भी उस पद्धति से बाँध बनवाये थे। रोम के इन्जीनियर पत्थर के चौकोर टुकड़ों को चूने से जोड़कर बाँध बनाते थे। बाँध के पैंदे की चौड़ाई उसकी ऊँचाई की तीन गुनी रखी जाती थी। रोम के ढंग के बाँध यूरोप में अब भी देखने को मिल जाते हैं। सभी रोमन बाँध इसी पद्धति से बनाये गये थे।

प्रश्न 42. मिस्र के आधुनिक युग के बांध का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—आधुनिक युग में वहाँ के इन्जीनियरों ने बाँध बनाने में विशेष सफलता प्राप्त की। आधुनिक युग का वहां का ऐस्वान बाँध उल्लेखनीय है। इसकी गणना संसार के सबसे बड़े बांधों में की जाती है। इस बाँध का निर्माण कार्य सन् 1898 में नील नदी के मुहाने से 1200 कि. मी. ऊपर ऐस्वान झरने पर शुरू किया गया था। बांध की नींव मजबूत पेंदे तक पहुँचाने के उद्देश्य से नदी के पानी को मोड़ने के लिए अर्द्धचंद्राकार बांध बनाना पड़ा था जिससे बांध की नींव रखने के लिए

पानी रहित स्थान प्राप्त हो सके। बाद में बचे हुए पानी को पम्पकर बाहर फेंका गया। इस बांध द्वारा बने जलाशय में एक अरब टन पानी आता है। दो कि.मी लम्बे इस बांध पर साढ़े चार करोड़ रुपये खर्च हुए थे।

प्रश्न 43. बहुधंधी योजनाओं से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में नदियों के जल का उपयोग करने के उद्देश्य से बड़ी-बड़ी नदी घाटी योजनाएँ शुरू की गईं। इन योजनाओं के अनेक उद्देश्य होते हैं, जैसे—सिंचाई करना, बिजली बनाना, व्यापारिक यातायात की सुविधा जुटाना, बाढ़ पर नियन्त्रण करना आदि। इन सुविधाओं के कारण ये योजनाएं देश के लोगों का जीवन-स्तर उठाने में सहायक होंगी। इन योजनाओं को इनमें बहुत उद्देश्यों के कारण बहुधंधी योजनाएं कहा गया है। दामोदर घाटी योजना, भाखरा नांगल योजना आदि ऐसी बहुधंधी योजनाएँ हैं।

प्रश्न 44. भारत की सबसे बड़ी बहुधंधी योजना का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भाखरा नांगल योजना अन्य बहुधंधी योजनाओं में आकार और महत्त्व की दृष्टि से सबसे बड़ी है। इस योजना पर कार्य 1948 में शुरू हुआ था। इसके अन्तर्गत सतलज नदी पर रोपड़ से करीब 100 कि.मी. की दूरी पर नदी के चढ़ाव की ओर भाखरा स्थान पर विशालकाय बांध बनाया गया जो सीमेंट और कंक्रीट से बनाया गया है और इसकी ऊंचाई 216 मीटर है। बांध ऊपर 9 मीटर तथा नीचे 98 मीटर चौड़ा है। इस बांध से 100 कि.मी. लम्बी गोविन्द सागर झील बनाई गई है। इसमें 10 लाख हैक्टेयर मीटर पानी समा सकता है। जलाशय 167 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल का है। इस बांध का उद्घाटन 1963 में नेहरूजी ने किया था। बांध के पानी से बिजली बनाने के दो पावर हाउस बने हैं।

भाखरा बांध से बहाव की ओर 13 कि.मी. की दूरी पर नांगल बांध है जो 28 मीटर ऊंचा है। इसके नांगल नहर निकाली गई है जो संसार की सबसे बड़ी सिंचाई नहर है। नहर पर दो पावर हाउस हैं। योजना से 128 नगरों को विद्युत प्राप्त होती है।

प्रश्न 45. संसार के सबसे ऊँचे बांध के बारे में वर्णन कीजिए।

उत्तर—संसार में सबसे ऊँचा बांध अमेरिका की कोलोरेडो नदी पर 'बोल्दर बांध' है जिसकी ऊँचाई 221.5 मीटर है। यह सन् 1936 में साढ़े बारह करोड़ डालर की लागत से तैयार किया गया था। बांध वहां बनाया गया है जहाँ नदी, पहाड़ की ऊंची चट्टानों के बीच से गुजरती है। इस बांध के निर्माण पर जितनी कंक्रीट लगी उससे 5 मीटर चौड़ी 4,800 किलोमीटर लम्बी सड़क बन सकती है। इस बांध से बनी कृत्रिम झील 185 किलोमीटर लम्बी और 65 किलोमीटर चौड़ी है। इससे 109 नगरों को बिजली प्राप्त होती है। इस बांध के पास बोल्दर नगर 120 हैक्टेयर भूमि पर फैला है।

10. चलते हुए घर

प्रश्न 46. 'चलते हुए घर' पाठ के लिए यह शीर्षक कहाँ तक उपयुक्त है, विचार कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत शीर्षक वाले पाठ में गाड़िया लोहारों का वर्णन किया गया है। गाड़िया लोहारों के पूर्वज चित्तौड़ से आये थे। जब राणा प्रताप से चित्तौड़ छीन लिया गया तब उनके खानदानी लोगों ने कुछ प्रतिज्ञाएँ की थीं और अपना सामान गाड़ी में लादकर निकल पड़े थे और यत्र-तत्र फैलकर अपना जीवन व्यतीत करने लगे थे। तब से अब तक ये लोग गाड़ी में अपना घर का सामान लादकर यहां-वहां घूमते हुए अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। गाड़ी ही उनका घर है। पूरे पाठ में उन्हीं का वर्णन हुआ है, इस आधार पर पाठ के लिए चलते हुए घर शीर्षक उपयुक्त ही है।

प्रश्न 47. गाड़िया लोहारों की वेशभूषा, आभूषणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर--गाड़िया लोहार घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते हैं। ये भी शृंगार करने के शौकीन होते हैं। इनमें भी इनकी महिलाएँ इस दृष्टि से आगे हैं। इनकी महिलाएं शरीर पर गोदना गुदवाती हैं। ये गालों, माथे, हाथों, पिंडलियों पर गोदना गुदवा लेती हैं। वे शरीर पर चाँदी, गिलट के आभूषण धारण करती हैं। कुछ महिलाएँ सोने से कोई दाँत मढ़वा लेती है। पुरुष बाल प्रायः कुछ लम्बे रखते हैं।

प्रश्न 48. गाड़िया लोहारों के मूल निवास स्थान एवं जाति के बारे में बताइये।

उत्तर—गाड़िया लोहार राजस्थान के मूल निवासी हैं। दुश्मनों ने राणा प्रताप की लड़की शीलवती का डोला मांगा था। राणा ने इसके लिए मना कर दिया। तभी से ये लोग मेवाड़ छोड़कर निकल भागे थे। ये अपने आपको राणाप्रताप के खानदानी क्षत्रिय मानते हैं। मेवाड़ से निकलते समय उन्होंने कुछ प्रतिज्ञाएँ की थीं। उन्हीं के अनुसार ये घुमक्कड़ जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

प्रश्न 49. गाड़िया लोहारों की प्रतिज्ञाओं के बारे में बताइये।

उत्तर—मेवाड़ छोड़ते समय गाड़िया लोहारों ने कुछ प्रतिज्ञाएँ की थी। उनकी वे प्रतिज्ञाएँ ये हैं—हम जब तक चित्तौड़ को आजाद नहीं करा लेंगे तब तक घर बनाकर नहीं रहेंगे, घास के बिस्तर पर सोयेंगे, टोपी नहीं पहनेंगे, चिराग नहीं जलायेंगे, कुएँ से पानी नहीं भरेंगे और हुक्के की नेह लम्बी नहीं रखेंगे। नेहरूजी ने देश की आजादी के बाद घर वाली प्रतिज्ञा तुड़वा दी थी। फिर भी इनमें से बहुत से लोग काफी प्रतिज्ञाओं के अनुसार ही जीवन व्यतीत करते हैं।

कुछ लोग चारपाई का प्रयोग करते हैं पर उस पर घास के दो चार तिनके रख लेते हैं। कुछ लोग कुएं से पानी भरने लगे हैं। ये अब भी चिराग नहीं जलाते। टोपी नहीं पहनते, हुक्के की नेह छोटी रखते हैं। कुछ लोग घर बनाकर रहने लगे हैं।

प्रश्न 50. गाड़िया लोहारों के व्यवसाय के बारे में प्रकाश डालिए।

उत्तर—गाड़िया लोहार मुख्यरूप से लोहे का सामान बनाने के काम करते हैं। ये फावड़े, कुल्हाड़ी तथा लोहे के अन्य सामान बनाते हैं। पहले ये लोग बैलों का व्यापार भी करते थे पर अब वह काम छोड़ दिया है। इन दो के अलावा तीसरा काम इन्होंने किया ही नहीं। इनका कहना है कि हमारी भट्टी से कभी कहीं आग नहीं लगती। हमें भगवान का वरदान प्राप्त है कि तुम्हारी भट्टी से उड़कर कभी कहीं आग नहीं लगेगी। आँधी-तूफान में भी भट्टी की आग उड़ती नहीं है। इनकी महिलाएं भी लोहे का सामान बनाने में हाथ बटाती हैं। वे धौंकनी चलाती हैं, लोहे पर घन की चोट करती हैं।

प्रश्न 51. गाड़िया लोहारों के व्यवहार के बारे में वर्णन कीजिये।

उत्तर—गाड़िया लोहार असल क्षत्रीय हैं तभी तो वे इतने समय तक अपनी प्रतिज्ञाएं निभा सके हैं। वे परिश्रमी होते हैं। परिश्रम से प्राप्त धन पर ही सन्तोष करने वाले हैं। वे नौकरी करना, गुलामी करना मानते है। वे न चोरी करते हैं, न डाका डालते हैं और न किसी से झगड़ा करते हैं। इनमें पहले लड़की वाला लड़के वाले से रुपये लेता था पर अब बिवाह में लड़की वाला ही कुछ न देता है। ये अपना, नानी का और दादी का गोत बचाकर शादी करते है।

11. आर्थिक विकास में मानवीय साधन

प्रश्न 52. आर्थिक विकास में मानवीय साधनों का महत्त्व निरूपित कीजिए।

उत्तर—कोई भी देश हो उसकी आर्थिक क्षेत्र की उन्नति का बहुत कुछ श्रेय वहां के श्रमिकों को है। यदि किसी देश में पर्याप्त प्राकृतिक साधन हों और वहां श्रमिकों का अभाव हो या कुशल श्रमिक न हों तो वहां आर्थिक विकास नहीं हो पायेगा। अल्पविकसित देशों में जनसंख्या का आधिक्य है इस कारण वहां बहुत से व्यक्ति बेकार ही रहते हैं। पर्याप्त और कुशल कार्य क्षमता वाले श्रमिकों से ही किसी देश का आर्थिक विकास सम्भव है।

प्रश्न 53. श्रमिकों की कार्यक्षमता को प्रभावित करने वाले तत्त्वों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—श्रमिकों की कार्यक्षमता पूंजी की प्रकृति द्वारा ही निर्धारित नहीं की जा सकती। इसके लिए और तत्त्व भी उत्तरदायी हैं। इनमें से एक है भौतिक तत्त्व। श्रमिकों को खाने के लिए पौष्टिक भोजन, रहने के लिए सुविधाजनक मकान,

स्वच्छ पेयजल जरूरी है। इनके बिना वे बीमार हो सकते हैं और उनकी कार्य क्षमता प्रभावित हो सकती है। उनके लिए विशिष्ट प्रशिक्षण भी जरूरी है। शिक्षित और प्रशिक्षित श्रमिक ही अच्छा उत्पादन कर सकते हैं। शिक्षित श्रमिक अपने हानि-लाभ, आज के परिवर्तनों आदि को जान सकते हैं। दक्ष लोगों की माँग और उपलब्धि में संतुलन रहना चाहिए। श्रमिकों की मानसिक स्थिति में भी परिवर्तन आना चाहिए। कुछ श्रमिक जीवन निर्वाह के लायक धन कमाने के बाद काम नहीं करना चाहते या वे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए महत्त्वपूर्ण बातों पर ध्यान नहीं देते। वे भाग्यवादी होते हैं। श्रमिक कल्याण और श्रमिकों के मार्गदर्शन की व्यवस्था हेतु रोजगार केन्द्र, निर्देशन केन्द्र होने चाहिए ताकि उन्हें उनकी क्षमता के अनुरूप व्यवसाय की जानकारी उपलब्ध कराई जा सके। नियोक्ता और श्रमिकों के बीच मधुर संबंध होने चाहिए। उनमें मतभेद होने पर भी उत्पादन पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। नियोक्ता द्वारा मनमानी किये जाने पर उन पर कुछ राज्य का हस्तक्षेप रह सकता है।

प्रश्न 54. 'आर्थिक विकास में मानवीय साधन' पाठ के आधार पर सम्पूर्ण मानव के बारे में विचार कीजिये।

उत्तर—लेखक ने प्रस्तुत पाठ में बताया कि योजनाकारों, प्रशासकों का अन्तिम उद्देश्य आर्थिक विकास करना ही नहीं है। आर्थिक विकास तो साधन है, साध्य तो सम्पूर्ण मानव का निर्माण करना ही है। इसके लिए मानवीय मूल्यों का सम्मान करना पड़ेगा। यदि राष्ट्र प्रेम, भ्रातृत्व, सौहार्द, करुणा, स्नेह, नैतिकता की परवाह किये बिना केवल उत्पादन बढ़ाने की ओर ही ध्यान दिया गया तो राष्ट्र का अहित होगा। श्रमिकों की भौतिक आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा और मकान ही उपलब्ध कराकर संतोष कर लिया गया तब तो इनसे आर्थिक मनुष्य का ही निर्माण हो सकेगा। इसलिए यदि हम सम्पूर्ण मानव का निर्माण करना चाहते हैं तो मनुष्यों को भौतिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ-साथ उनमें ऊपर वर्णित करुणा, देश प्रेम, भ्रातृत्व आदि की विशेषताओं का विकास करना आवश्यक होगा। इस प्रकार भौतिक सुख सुविधा सम्पन्न, करुणा, प्रेम आदि भावों से युक्त व्यक्ति ही सम्पूर्ण मानव कहा जायेगा और ऐसे मानव का निर्माण ही साध्य होना चाहिए।

पद्यखण्ड

1. वन में राम

प्रश्न 55. 'वन में राम' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर—गुप्तजी ने 'वन में राम' कविता में वनवासी राम के बारे में वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि सभी मनुष्यों को उनके अधिकार प्राप्त होने चाहिए। किसी का भी शोषण नहीं होना चाहिए। सभी व्यक्तियों को मानवता का परिचय देना चाहिए। किसी को अमानवीय आचरण नहीं करना चाहिए। सबको अपने परिश्रम से जीविका चलानी चाहिए। यही आदर्श स्थिति है। जहां ऐसे लोग रहते हैं वहीं सुख है, स्वर्ग है। आर्यों के जीवन का यही आदर्श था। वे धार्मिक थे, नैतिकता का पालन करने वाले थे।

प्रश्न 56. प्रस्तुत कविता के आधार पर आर्यों के आदर्श स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर—कविता के अनुसार आर्य लोग मनुष्य को अधिक महत्त्व देते थे, धन को नहीं। आर्यों में दुर्बलों पर अत्याचार नहीं किये जाते थे। आर्य लोग परिश्रमी थे इसीलिए उनमें गरीबी नहीं थी। हीनभावना नहीं थी। उनमें पर उपकार की भावना थी, स्वार्थ और शोषण की नहीं। वे यज्ञ, हवन करने में विश्वास करते थे, वैदिक धर्म का पालन करने वाले थे। उनका जीवन आदर्श जीवन था इसलिए गुप्तजी के राम ने कहा है कि—'मैं दूंगा अब आर्यत्व उन्हें निज कर से।'

प्रश्न 57. स्पष्ट कीजिए कि कवि को भौतिकतावादी जीवन दृष्टि पसंद नहीं है।

उत्तर—कवि ने राम के माध्यम से प्रति भौतिकतावादी दृष्टिकोण का विरोध किया है। भौतिकता प्रधान दृष्टिकोण मनुष्य की मनुष्यता को हानि पहुंचाता है। राक्षसों का दृष्टिकोण भौतिकता प्रधान दृष्टिकोण था इसीलिए उनमें मानवता का अभाव था। तभी तो राम ने भौतिकता से उन्मत्त लोगों को दण्ड देने की बात कही है—

बहु भौतिक मद से मत्त यथेच्छा चारी
मेंटूंगा उसकी कुगति-कुमति मैं सारी।

उनका व्यवहार उग्रतापूर्ण था। वे ऋषि मुनियों पर भी अत्याचार करते थे, लूट करते थे। उनका व्यवहार आर्य लोगों का आचरण बन गया था। वे राक्षस तुल्य बन गये थे। उन्हें ही आर्यत्व देने की बात कही गई है। वे अपने स्वार्थ, सुख के लिए दूसरों का शोषण करते थे, उन्हें सताते थे। राम सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत के पक्षधर हैं।

प्रश्न 58. स्पष्ट कीजिये कि कवि ईश्वर-भक्ति को महत्त्व देता है।

उत्तर—'वन में राम' कविता में कवि यह भी बताना चाहता है कि मनुष्य होने के नाते हमें भगवान् का ध्यान रखना चाहिए और इसके लिए भक्ति आसान उपाय है। भक्ति करने वाला अनेक बुराइयों से भी बचा रहता है। कवि की मान्यता है कि जो भगवान् के नाम का स्मरण मात्र किया करते हैं वे भवसागर को आसानी से पार कर जाते हैं और जो भगवान् के गुणों को, उनके व्यवहार को अपना लेते हैं वे तो अपना उद्धार तो करते ही हैं, दूसरों का भी उद्धार कर सकते हैं। 'वे औरों को भी तार, पार उतरेंगे।'

प्रश्न 59. 'वन में राम' कविता में भूतल को ही स्वर्ग बनाने वाली कौनसी बातें बताई गई हैं ?

उत्तर—राम के माध्यम से कवि ने भूतल यानी धरती को स्वर्ग बनाने वाली ये बातें बताई हैं—जहां शासन सबको सुविधाएं प्रदान करता हो, जहां के लोग मनुष्य की तुलना में धन तुच्छ समझते हों, जहां कोई दीन, दुखी, भयग्रस्त न रहे, जहां सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धान्त अपनाया जाता हो, जहां लोग अपनी मातृभूमि के प्रति ममता का भाव रखते हों और भगवान में विश्वास रखने वाले हों. जहां आर्यों के ढंग की जीवन पद्धति अपनाई जाती हो, यज्ञ किये जाते हों, जहाँ अपने परिश्रम से सभी सम्पन्न हों, जहां ज्ञानी लोगों का निवास हो वहाँ को धरती स्वर्ग कही जा सकती है।

2. जागो फिर एक बार

प्रश्न 60. 'जागो फिर एक बार' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति का चित्रण किया है, यह वर्णन अलंकारिक है और जन जागृति का संदेश भी देने वाला है। कवि कहना चाहता है कि रात्रि के बाद जैसे उषा का आगमन होता है और तब नई चेतना, नई स्फूर्ति का अनुभव हुआ करता है उसी प्रकार मनुष्यों को आलस्य छोड़कर सचेत हो जाना चाहिए। यदि आलस्य में, अकर्मण्यता को अपनाये रहे तो व्यर्थ ही समय बीत जायेगा। यों ही बहुत-सा समय बीत चुका है पर अब तो समय व्यर्थ न बीते, इसलिए मनुष्यों सजग हो जाओ। कवि ने यही भाव प्रकृति का उदाहरण देकर स्पष्ट की है। जैसे संध्या होते ही भौंरे कमलों में बन्द हो जाते हैं पर सूर्योदय होते ही कमलों के खिलने पर वे बाहर आकर गुंजार करने लगते हैं उसी प्रकार तुम भी आलस्य का त्याग कर दो। सभी निर्भय रहो। भयभीत रहकर अकर्मण्य मत बने पड़े रहो। उसने और उदाहरण दिया है कि रात्रि में कलियां बन्द रहती हैं, सुबह होते ही फूल बन जाती हैं उसी प्रकार तुम भी अपनी दुर्बलता का त्याग कर निर्भय हो जाओ।

प्रश्न 61. 'जागो फिर एक बार' कविता के आधार पर प्रकृति-चित्रों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कवि ने कविता संबंधी कई चित्र प्रस्तुत किये हैं। उसने सोये हुए व्यक्ति की आंखें कैसी लगती है और जागने पर कैसी लगती हैं, इसे स्पष्ट करने के लिए भौंरों और कमलों का चित्र प्रस्तुत किया है। संध्या होते ही कमल बन्द होने लगते हैं। भौंरे भी उनमें बन्द हो जाते हैं। सूर्योदय होने पर कमल खिल उठते हैं और उनमें रात में बन्द रहे भौंरे उड़कर गुञ्जार करने लगते है। बन्द और खिली आंखें उन्हीं बन्द और खिले कमलों पर विद्यमान भौंरी सी लगती हैं।

एक चित्र रात्रि में चन्द्रमा को टकटकी लगाए देखते हुए चकोर पक्षी का है। रात्रि में चकोर आकाश में दिखाई देने वाले चन्द्रमा को देखा करता है। उसे चन्द्रमा को देखना अच्छा लगता है।

एक चित्र रात्रि के बीतते जाने पर तारों के अस्त होने और फिर सूर्य की किरणों के फूटने से संबंधित है। सूर्य की किरणों के फैलते ही ओस की बूंदें लुढ़क उठती हैं और कलियां खिलकर फूल बन जाती हैं।

प्रश्न 62. 'जागो फिर एक बार' कविता के आधार पर निरालाजी की काव्यगत विशेषताएं स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—निराला जी छायावादी प्रमुख कवि हैं। छायावादी कवि के काव्य की अनेक विशेषताएं प्रस्तुत कविता में व्यक्त हुई हैं। इसमें प्रकृति के मनोरम चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। प्रकृति चित्रण छायावादी काव्य की बड़ी विशेषता रही है। यहां संध्या, रात्रि, उषा के चित्र अंकित हैं। कविता में चित्रात्मकता है।

वर्ण्य विषय के कवि ने चित्र से प्रस्तुत कर दिये हैं। उस काल में धरती की ओर फैलती किरणें ऐसी लगती हैं जैसे कोई सोते हुओं को जगा रही हो।

इस कविता में कवि की उर्वर कल्पना का भी परिचय मिलता है। छायावादी कवियों ने वायवी काल्पनिक चित्र अंकित किये हैं। आंखों के लिए कमलों के भौंरों की कल्पना बड़ी उपयुक्त है। भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है जिसमें तत्सम् शब्दों की अधिकता है जैसे तरुण किरण, मधु, कमल कोरकों, अस्ताचल, शशि-छवि, विभावरी, विरह-विदग्धा, सुखोन्माद आदि। भाषा अलंकारिक है। इसमें मानवीकरण, उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास जैसे अलंकार आये हैं। भाषा में लाक्षणिकता, सांकेतिकता है। कविता मुक्त छन्द में है। इस प्रकार इस कविता में कवि की छायावादी काव्य की अनेक विशेषताएं व्यक्त हुई हैं।

प्रश्न 63. 'मनुज का श्रेय' कविता के भावों को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—कवि ने अपने भावों को कविता में सफलतापूर्वक अभिव्यक्त कर दिया है। उसने वैज्ञानिक आविष्कारों के बारे में बताया है कि वे आविष्कार ही अच्छे हैं जो मानव समाज में आर्थिक आदि समानता स्थापित करने में सहायक हैं और मनुष्यों के शोषण को बढ़ावा न देकर सबकी सम्पन्नता में सहायक हो सकते हैं। जो आविष्कार सृष्टि का विनाश कर देने की स्थिति पैदा कर दें वे तो त्याज्य हैं। जब मनुष्य वैज्ञानिक आविष्कारों का सदुपयोग न कर पाये तो उसे आविष्कार करने ही नहीं चाहिए। ऐसी तलवार को हाथ में लेने से क्या लाभ जिससे अपना हाथ ही कट जाय। कवि सबकी सम्पन्नता, शोषण का अन्त, समानता, आपसी प्रेम, मानवों में धर्म की भावना के प्रसार, युद्धों के अन्त, न्याय व्यवस्था की स्थापना को महत्त्व देता है।

प्रश्न 64. 'मनुज का श्रेय' कविता में दिनकर जी किस प्रकार के संसार के निर्माण की कल्पना करते हैं?

उत्तर—प्रस्तुत कविता में दिनकर जी ने ऐसे संसार के निर्माण की कल्पना की है जिसमें बुद्धि के विकास के साथ-साथ मनुष्य हृदय के भावों को भी महत्त्व दिया गया हो। उनकी मान्यता है कि भावनाओं की उपेक्षा कर केवल बौद्धिक विकास के सहारे मानव जाति सुख शांति का अनुभव नहीं कर सकती। वे चाहते हैं कि युद्धों को प्रोत्साहन देने वाले, विनाश ला देने वाले आविष्कार न हों। उनकी कल्पना के संसार के व्यक्ति द्विभाव सम्पन्न होंगे, उनमें स्वार्थभाव नहीं होगा, इनमें त्याग की, धर्म की, प्रेम की भावना होगी। उनके उस संसार में सभी समृद्ध होंगे। कहीं किसी का शोषण नहीं होता होगा, सब को न्याय मिलता होगा श्रम को महत्त्व प्राप्त होगा और उसमें युद्ध समाप्त हो गये होंगे।

प्रश्न 65. 'मनुज का श्रेय' कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर—'मनुज का श्रेय' कविता बड़ी प्रेरणादायक है। आज का व्यक्ति जैसे अन्धा होकर दौड़ रहा है। उसे अच्छे बुरे की भी पहचान नहीं है, तभी तो वह

ऐसे भी वैज्ञानिक आविष्कार कर रहा है जिनसे संसार के नष्ट होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। प्रस्तुत कविता हमें खतरनाक हथियार न बनाने, युद्ध न करने की, आपस में सहयोग और प्रेम का भाव रखने की, शोषण न करने की, निजी स्वार्थ त्याग कर दूसरों के हित के लिए कष्ट सहने की, न्याय मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। यह धर्म को अपनाने, बौद्धिक विकास के साथ-साथ दृश्य के भावों का महत्त्व समझने की प्रेरणा देती है, सबके साथ समानता का भाव रखने, भेदभाव मिटाने की प्रेरणा देती है। हम प्रकृति की वस्तुओं का उपयोग करना तो सीखें पर आपस में बांट कर उपयोग करना सीखें। यह आपसी विश्वास को बढ़ावा देने की प्रेरणा देती है। संक्षेप में प्रस्तुत काविता हमें मनुष्य की तरह रहने की प्रेरणा देती है न कि हैवान बनने की।

4. युद्ध विराम

प्रश्न 66. अज्ञेय की 'युद्ध विराम' कविता का भाव स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—अज्ञेयजी की इस कविता का भाव यह है कि अभी तक युद्धों का भय नहीं मिटा है। अब भी धरती पर युद्धों की तैयारियां होती रहती हैं। कई देश छिपे-छिपे हथियार बढ़ा रहे हैं और वे मौके की तलाश में हैं कि कब किसी पर आक्रमण किया जाय। युद्धों ने मानव की जिन्दा रहने की लालसा को आघात पहुंचाया है। चाहे विश्वशान्ति की कितनी भी चर्चा क्यों न की जाती हो पर अभी मनुष्यों के हृदय स्वच्छ नहीं हुए हैं। युद्ध न होने की स्थिति में भी भय रहता है कि न जाने कब कहाँ युद्ध छिड़ जाय। आज विज्ञान का युग है। मनुष्य ने बड़े-बड़े आविष्कार किये हैं पर उन आविष्कारों का उपयोग गरीबों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए न कर शोषण करने, आतंक, भय का वातावरण बनाने के लिए ही किया गया है। ज्यादातर लोग परिश्रम की कमाई पर विश्वास करते हैं पर कुछ शक्तिशाली दुष्ट प्रकृति वाले लोग ऐसे लोगों की स्वतन्त्रता छीन लेने के प्रयासों से बाज नहीं आते। ऐसी स्थिति में भारत के निवासियों से आशा की जा सकती है कि वे दुनिया को विनाश के रास्ते पर जाने से रोकने का उपाय करेंगे क्योंकि उनमें ही अपेक्षाकृत अधिक मानवीय गुण विद्यमान हैं।

प्रश्न 67 'युद्ध विराम' कविता में कवि किस बदलाव की ओर संकेत करता है ?

उत्तर—कवि ने स्पष्ट किया है कि युद्धों के कारण मनुष्य की जिन्दा रहने की इच्छा को आघात पहुंचा है। अब युद्ध भले न चल रहे हों पर कुछ लोग घात लगाये बैठे हैं। वे समृद्धि की स्थिति में हथियार बढ़ाये जा रहे हैं। कुछ शक्तियां इस प्रतीक्षा में हैं कि कब कहीं युद्ध हों और उनकी फूट का, उनके झगड़े का लाभ उठायें। अब जो युद्ध नहीं हो रहे वह समय विराम सा, सिनेमा के अन्तराल सा लगता है। अन्तराल के बाद जैसे सिनेमा फिर शुरू हो जाता है उसी प्रकार आशंका है कि कहीं इस शान्तिकाल के बाद कहीं फिर युद्ध न हो उठें। पता नहीं शान्ति कितने समय तक बनी रह सकेगी। कुछ लोग धोखा देने वाले हैं। वे शान्ति बनाये रखने का आश्वासन देकर भी युद्ध छेड़ सकते हैं। उनमें गरीब वर्ग का कल्याण करने की भावना नहीं प्रलक्षित होती। बहुत से लोग मेहनत का जीवन निर्वाह करना

पसन्द करते हैं पर शक्तिशाली लोग उन्हें भी स्वतन्त्र नहीं रहने देते। अभी तक लोगों के मन से वैरभाव पूर्णतया नष्ट नहीं हुआ है। बस भारत के लोगों में ही स्नेह और विश्वास का भाव प्रलक्षित होता है। वे ही संसार को बुरी स्थिति से उबार सकते हैं। उनमें ही क्षमा, सहिष्णुता आदि की भावनाएं प्रतीत होती हैं।

5. आह्वान

प्रश्न 67. 'आह्वान' कविता में बच्चन जी किस का आह्वान करते हैं ?

उत्तर—बच्चन जी 'आह्वान' कविता में जवान लोगों का, युवा वर्ग के लोगों का आह्वान कर रहे हैं। इसमें उन्होंने उन युवकों, उन जवानों का आह्वान किया है जिनमें नया जोश है। जिस प्रकार सूर्य की किरणें घने अन्धकार को भी मिटा देती हैं उसी प्रकार जवान लोग ही निराशाजनक स्थिति से समाज को उबार सकने की क्षमता रखते हैं। जवान ही अपने कार्यों से अमर होने की योग्यता रखते हैं। वे विनाश से विचलित होकर अकर्मण्य नहीं होते। वे भविष्य की, आगे आने वाली परिस्थितियों का अनुमान लगा सकते हैं। वे समाज को नई दिशा दिखा सकने की क्षमता रखते हैं। वे ही नये समाज की कल्पना करने में सक्षम हैं। ये जवान अच्छाइयों का महत्त्व समझते हैं। उनमें अदम्य उत्साह है। वे अपने कष्टों को सहकर खुश रहने की सामर्थ्य रखते हैं। ये जवान, युवक ही लोगों को परस्पर मिला सकते हैं, उन्हें मधुर व्यवहार करना सिखा सकते हैं। ये कठिनाइयों को दूर करने का साहस रखते हैं और कायरों में भी उदाहरणों से नया उत्साह भर सकते हैं। ये जवान लोग हमेशा उत्थान के लिए ही प्रयत्न किया करते हैं। कवि ने ऊपर वर्णित विशेषताओं वाले जवान लोगों का आह्वान किया है।

प्रश्न 68. कवि की कलम किसके लिए उठती है और क्यों उठती है ?

उत्तर—कवि की कलम जवानों के लिए उठती है। इसका कारण यह है कि उसे जवानों में वे विशेषताएं दिखाई देती हैं जो समाज को उत्थान, उन्नति की ओर ले जाने वाली हैं। बूढ़े व्यक्तियों में न तो उत्साह रह गया है और न वे अब भविष्य की परिस्थितियों का सही अनुमान लगा सकते हैं। उनमें तो शक्ति भी नहीं है। वे समाज में अच्छा परिवर्तन अब कैसे ला सकते हैं। सारी अच्छाइयां, शक्तियां तो जवानों में ही हैं। उनमें नया उत्साह है, उनके नये सपने हैं, वे गुणों के कद्रदान हैं, वे कष्ट सहन करने में समर्थ हैं, भेदभाव की भावना से दूर रहने के कारण सबको साथ लेकर चलने वाले हैं। वे कठिनाइयों से घबराते नहीं हैं और मृत्यु को खेल समझते हैं। वे अपने उत्साह, अपनी वाणी से मुर्दे जैसे अकर्मण्य, कायरों में भी नया उत्साह फूंक देने वाले हैं। उनके कार्यों, उनके नेतृत्व से ही समाज का उत्थान हो सकता है। इस कारण उन जवान लोगों के बारे में ही कवि कुछ लिखना चाहता है, उन्हीं का आह्वान करना चाहता है। बूढ़ों, अकर्मण्य, कायर, निर्बल, अक्षम लोगों का आह्वान करने से क्या लाभ ?

प्रश्न 69. 'आह्वान' गीत से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?

उत्तर—कवि का 'आह्वान' गीत प्रेरणादायक है। इससे युवा वर्ग को कुछ कर दिखाने की प्रेरणा मिलती है। यह उनको भी प्रेरणा देने वाला है जो क्षमताएं रखते हुए भी उनका उपयोग न कर अकर्मण्य बने हुए हैं। वे इससे समझ सकते हैं कि साहसी युवकों की तरह कुछ करने पर ही सम्मान मिलता है, अमरता प्राप्त होती है। हमें उन लोगों का मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए जो अज्ञान, निराशा के अन्धकार में भटक रहे हैं, जो भविष्य के बारे में बेखबर हैं, जो भविष्य को उज्ज्वल बनाने के बारे में कल्पना, विचार तक नहीं करते। यह गीत हमें अच्छी योजनाएं बनाकर साहसपूर्वक उन्हें क्रियान्वित करने की प्रेरणा देता है। इसे कष्टसहिष्णुता, कर्मण्यता, भाई-चारे से रहने, निर्माण कार्य करने, दूसरों के अच्छे कार्यों की कद्र करने, हिम्मत रखने, मृत्यु से भी भयभीत न होने की और अपने समाज की उन्नति के कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

6. मेरा देश जल रहा, कोई नहीं बुझाने वाला

प्रश्न 70. इस कविता का मूल भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—यह कविता सुमन जी ने आजादी मिलने के बाद देशवासियों की दुर्दशा, उनके दुर्व्यवहार को देखकर दुःख का अनुभव करके लिखी गई है। कवि ने स्पष्ट करना चाहा है कि आजादी के बाद तो देश में भाई-चारा, मेल-जोल होना चाहिए था, सबको देश की उन्नति में जुट जाना चाहिए था परन्तु हुआ है इसके विपरीत कार्य। भाई-भाई ही सम्पत्ति के बँटवारे को लेकर शत्रुओं की तरह लड़ने लगे हैं। पड़ोसी लोग लोगों को आपस में लड़ने के लिए भड़काते हैं और खुश होते हैं। अब भी पुरानी गलत रूढ़ियों से हमें छुटकारा नहीं मिला है। देश में गरीबी का माहौल बना हुआ है। अतः धार्मिक व्यक्ति होने का दावा करने वाले अधार्मिक कार्यों में लिप्त हैं। माताएँ अपनी संतानों के कारनामों से दुःखी हैं। आपस में लड़कर लोग सुख-शान्ति को नष्ट कर रहे हैं। लोग इतने क्रूर हो जाते हैं कि वे अपने बच्चों को भी मार डालते हैं। ऐसी बुरी स्थिति से अब तो केवल सर्वहारा ही उबार सकता है। मतलब यह है कि आजादी के बाद देश की दशा में सुधार होना चाहिए था पर विनाश ही हुआ दिखाई दे रहा है।

प्रश्न 71. इस कविता में कवि ने किस दशा का वर्णन किया है ?

उत्तर—प्रस्तुत कविता में कवि ने देश की आजादी के बाद की कमियों का, दुर्दशा का वर्णन किया है। उसने बताया कि सब ओर लड़ाई-झगड़ों का माहौल दिखाई देता है। लोग आपस में ईर्ष्या, द्वेष, वैर का भाव रखते हैं। वे पुरानी गलत परम्पराओं को अपनाये हुए हैं। भाई-भाई का शत्रु बन गया है। संयुक्त परिवार प्रथा समाप्त हो रही है। माँ के जीवित रहते उसकी सन्तानें पैतृक सम्पत्ति का बँटवारा कर लेती हैं और झगड़ती हैं। वे पड़ोसियों के बहकावे में

आकर खानदानी इज्जत का भी ध्यान नहीं रख पातीं। इस आपसी बंटवारे और झगड़े से वे गरीब हो जाते हैं। कहीं सच्चा धर्म दिखाई नहीं देता। आज की स्थिति को देखकर ऐसा लगता है कि देश को आजाद कराने वालों की कुर्बानियां बेकार रहीं। जो लोग गुलामी के युग में कायर बने रहे, वे आपस में लड़ने में अपनी शान समझते हैं और अबोध बच्चों को भी मारने-पीटने में नहीं झिझकते। कोई अपने माँ-बाप-बहिनों की जिम्मेदारी महसूस नहीं करता। देश की यह दशा भारत के लिए अपमानजनक है।

प्रश्न 72. कवि के अनुसार भारत की दुर्दशा से कौन बचा सकता है?

उत्तर—कवि ऐसा मानता है कि भारत की अब जो दुर्दशा है उससे केवल सर्वहारा वर्ग ही उबार सकता है। कारण यह है कि सर्वहारा वर्ग शताब्दियों से शोषण का शिकार रहा है। शोषण करने वाले लोगों ने अनेक तरीकों से सर्वहारा वर्ग के लोगों का शोषण ही किया है और इस वर्ग के लोगों के उत्थान की कभी चिन्ता ही नहीं की। सर्वहारा वर्ग के लोग शोषण के कष्टों का जितनी अच्छी तरह, जितनी गहराई से अनुभव कर सकते हैं, गरीबों के दुःखों का जैसा अनुमान लगा सकते हैं उस तरह से सुखी, सम्पन्न, अधिकार प्राप्त व्यक्ति नहीं लगा सकते, इसलिए वे अपेक्षित सुधार भी नहीं ला सकते। कहा भी गया है कि "जाके पैर न फटी बिवाई, सो का जानै पीर पराई।" उपर्युक्त कारणों से कवि ने आशा व्यक्त की है कि सर्वहारा वर्ग ही देश को दुर्दशा से उबार सकता है।

कथा सौरभ

1. ममता

प्रश्न 1. रोहितास्व दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की पुत्री होते हुए भी ममता के दुःखी होने का क्या कारण था?

उत्तर—यद्यपि ममता रोहिताश्व दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की अकेली सन्तान थी फिर भी वह दुःखी थी। इसका कारण यह था कि एक ओर तो उसका लालन-पालन राजसी ठाट-बाट से हुआ था, उसे आर्थिक दृष्टि से कभी किसी प्रकार का अभाव, किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ था, दूसरी ओर वह अब विवाह के थोड़े समय बाद ही विधवा हो गई थी। यह वैधव्य उसके दुःख का कारण था। वैधव्य के दुःख का निवारण धन-सम्पत्ति से सम्भव न था। वह यौवन सम्पन्न थी। उसे अपना लम्बा जीवन बिना पति के सहारे काटना था। इस पर भी उसे ज्ञात था कि हिन्दुओं में विधवा नारी को समाज में कोई सम्मान नहीं मिलता है। वह जानती थी कि "हिन्दू विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है।" यह सोचना उसके दुःख का बहुत बड़ा कारण था।

प्रश्न 2. मन्त्री चूड़ामणि को अकेली सन्तान ममता के बारे में क्या चिन्ता थी?

उत्तर—मन्त्री चूड़ामणि को ममता के बारे में चिन्ता यह थी कि उनकी पुत्री, जो कि सुखों में पली है, वैधव्य का कष्ट भोगने को मजबूर है। उन्हें दुःख यह था कि वे समर्थ होकर भी उसके इस दुःख का निराकरण नहीं कर सकते थे। वे धन-सम्पत्ति जुटा सकते थे, पर उसका सुहाग तो नहीं लौटा सकते थे और सुहाग के बिना ममता का जीवन सुखमय नहीं हो सकता था। ममता का जहाँ तक दुःख दूर कर सकते थे, वहाँ तक उन्होंने भरसक प्रयत्न किया भी था। तभी तो उन्होंने ममता के भावी जीवन में आर्थिक संकट न आने देने के उद्देश्य से मुगल बादशाह से उत्कोच के रूप में बहुत-सा स्वर्ण स्वीकार कर लिया था और उसे लाकर ममता के आगे रखवा दिया दिया था।

प्रश्न 3. चूड़ामणि द्वारा लाये गये सोने को देखकर ममता पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—चूड़ामणि अपने सेवकों द्वारा बहुत-सा सोना लाए थे। उसे अपने सामने देककर ममता को बड़ा आश्चर्य हुआ था। उसे यह अनुमान लगा कर दुःख भी हुआ था कि मेरे पिता मलेच्छ का उत्कोच स्वीकार किया है। यह उत्कोच मेरे कारण स्वीकार किया गया है, यह जानकर उसे और ज्यादा दुःख हुआ था। तभी तो उसने पिता से धन को लौटा देने का आग्रह किया था। उसे धन लेना अपने ब्राह्मण धर्म के भी विपरीत जान पड़ा था। तभी तो उसने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था, पिताजी! हमलोग ब्राह्मण हैं। इतना सोना लेकर क्या करेंगे ?" उसने उस अर्थ को अनर्थकारी माना था।

प्रश्न 4. ममता के पिता ने उस धन के बारे में ममता को क्या सफाई दी थी ?

उत्तर—चूड़ामणि ने धन स्वीकार करने के बारे में स्पष्टीकरण देते हुए कहा था कि अब हमारे सामंतवंश का अन्त समीप है। किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है। उस स्थिति में मैं मन्त्री पद पर नहीं रह सकूँगा और तब आमदनी का साधन भी नहीं रह जायेगा। चूड़ामणि तो एक प्रकार से वृद्ध थे। उन्हें चिन्ता तो पुत्री ममता की थी, जिसका लम्बा जीवन बाकी था। उन्हें उसी के भावी जीवन की, भावी आर्थिक कठिनाइयों कीचिंता थी। यही सब चूड़ामणि ने ममता को समझाना चाहा था।

प्रश्न 5. ममता की दृष्टि में उत्कोच का धन लेने की आवश्यकता क्यों नहीं थी ?

उत्तर—ममता उत्कोच के रूप में मलेच्छ से धन प्राप्त करना किसी प्रकार भी उचित नहीं मानती थी। उसकी दृष्टि में एक तो उत्कोच स्वीकार करना ही अनुचित था। दूसरे, ब्राह्मण होने के नाते धन का संग्रह करना अनुचित था। तीसरे,

भविष्य के लिए धन एकत्र करना इसलिए गलत था कि इससे ईश्वर के प्रति विश्वास कम होता था। यदि ईश्वर भविष्य में दुःख ही देना चाहता हो तो उसकी इच्छा के विरुद्ध इस प्रकार धन एकत्र करके दुःख निवारण की व्यवस्था करना उसे उचित न लगता था। फिर उसे आशा थी कि धरती पर रहने वाले लोग उसे मुट्ठी भर अन्न तो दे ही देंगे, इसलिए धन एकत्र करना बेकार था।

प्रश्न 6. मन्त्री चूड़ामणि कैसे मरा ?

उत्तर—मन्त्री चूड़ामणि ने देखा कि रोहिताश्व दुर्ग के तोरण से होकर मुगलों की डोलियाँ अन्दर जा रही हैं। उसने डोलियों का इस प्रकार अन्दर जाना बर्दाश्त न किया। उसने डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा। पठानों को आवरण हटाकर दिखाना बर्दाश्त न था। उन्होंने कहा कि डोलियों का आवरण हटाना महिलाओं का अपमान करना है। इस मामले को लेकर बात बढ़ गई। दोनों ओर से तलवारें खिंच गईं और ब्राह्मण चूड़ामणि पठानों द्वारा मारे गये। दुर्ग पर शेरशाह का अधिकार हो गया।

प्रश्न 7. मन्त्री चूड़ामणि के मारे जाने के बाद ममता का जीवन कैसे बीता, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—ममता पहले ही विधवा तो थी ही, अब अपने पिता रोहिताश्व दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि के मारे जाने के कारण वह और भी असहाय, बे-घर हो गई थी। वह काशी के उत्तर में एक विहार के खण्डहर में चली गई। उसे डर था कि वह कहीं पठानों के हाथ न पड़ जाए। वह वहीं एक झोंपड़ी में रहने लगी और वहां वह भजन किया करती थी। वह वहीं रहती हुई वृद्धावस्था को प्राप्त हुई थी। वह अपने आसपास के लोगों के सुख-दुःख बाँट लेती थी। वहीं रहती हुई वह समाप्त हो गई थी। वृद्धावस्था में उसकी देखभाल उसके आसपास की रहने वाली महिलाएँ ही करती थीं।

प्रश्न 8. जब एक विधर्मी मुगल ममता की झोंपड़ी के दरवाजे पर अन्धकार के समय आश्रय लेने के उद्देश्य से आया तब ममता ने क्या किया ?

उत्तर—ममता ने उसे सामने देखकर सोचा यह तो वैसा ही क्रूर है जैसे कि मेरे पिता की हत्या करने वाले थे। वह उसे सैनिक मानकर अपनी कुटी में स्थान नहीं देना चाहती थी। जब आगन्तुक ने कहा कि मैं अकेला रह गया हूं, थक गया हूं तब कहीं ममता ने उसे जल दिया। ममता सोचने लगी कि मुझे ब्राह्मणी होने के नाते अपने इस धर्म का पालन करना चाहिए कि मैं अतिथि की उपासना करूँ। उसने अतिथि का सत्कार करना अपना कर्त्तव्य समझा। फिर भी उसने पूछा कि तुम भी वही छल तो नहीं करोगे ? बाद में ममता ने अपनी झोंपड़ी में उसे आश्रय दिया और खुद पास की टूटी हुई दीवारों के बीच जाकर रही।

प्रश्न 9. ममता की झोंपड़ी में आश्रय लेने वाला अतिथि कौन था और उसने आश्रय देने वाली ममता के लिए क्या किया था ?

उत्तर—ममता की झोंपड़ी के द्वार पर सन्ध्या के अन्धेरे में आश्रय मांगने आने वाला अतिथि तैमूरवंश का व्यक्ति था। वह हुमायूँ था। वह चौसा में मुगलों और पठानों के बीच हुए युद्ध से उधर आ गया था। अकेला था और थका हुआ था। ममता की झोंपड़ी में आश्रय लेकर सुबह जब उसके अश्वारोही उसे खोजते हुए उसके पास आ गये थे तब वह वहाँ से चला गया था। उसने जाते समय अपने आदमी मिरजा से कहा था कि मैं आश्रय देने वाली स्त्री को कुछ नहीं दे सका। अब तुम्हीं उसका घर बनवा देना। एक दिन जबकि ममता सत्तर साल की वृद्धा थी और मरणासन्न थी, हुमायूँ का आदमी उसे खोजता-खोजता आया था। उसने बुढ़िया ममता की झोंपड़ी की जगह अष्टकोण मन्दिर बनवा दिया था जिस पर एक शिलालेख भी लगवाया था। उस शिलालेख में लिखवाया था कि हुमायूँ ने यहाँ एक दिन विश्राम किया था। उसके पुत्र अकबर ने यह गगनचुम्बी मन्दिर उसी की स्मृति में बनवाया था।

प्रश्न 10. 'ममता' कहानी का कथानक लिखिए।

उत्तर—'ममता' रोहिताश्व दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की पुत्री थी। वह विधवा हो गई थी। मन्त्री चूड़ामणि अकेली सन्तान ममता की हालत देखकर दुःखी थे। तभी मुगल शेरशाह रोहिताश्व दुर्ग पर आक्रमण करने वाला था। मन्त्री को अनुमान था कि जल्दी ही मुगलों का दुर्ग पर अधिकार हो जायेगा इसलिए उन्होंने ममता के भावी जीवन को आर्थिक कठिनाइयों से मुक्त रखने के उद्देश्य से शेरशाह से उत्कोच के रूप में बहुत सा सोना ले लिया था। ममता ने वह सोना लौटा देने के लिए अनुरोध किया था। चूड़ामणि मुगलों से लड़ते लड़ते मारे गये थे। तब ममता एक बिहार के खण्डहर में रहकर भजन-पूजन करती हुई दिन बिताने लगी थी। वहां एक दिन मुगल हुमायूँ आश्रय लेने पहुंचा था। अतिथि सेवा को अपना कर्त्तव्य मानकर ममता ने उसे आश्रय दिया था। सत्तर वर्ष की उम्र में ममता समाप्त हो गई थी। हुमायूँ को जहां आश्रय मिला था उस ममता की झोंपड़ी के स्थान पर हुमायूं के पुत्र अकबर ने बहुत वर्ष बाद स्मृति के लिए एक अष्टकोण मन्दिर बनवा दिया था। यही इस कहानी का कथानक है। कथानक ऐतिहासिक है।

प्रश्न 11. 'ममता' कहानी का उद्देश्य समझाइये।

उत्तर—प्रसादजी ने 'ममता' कहानी द्वारा भारतीय संस्कृति पर प्रकाश डालने का उद्देश्य पूरा किया है। भारतीय संस्कृति महान् है और उसकी उन महान् विशेषताओं को कहानी के माध्यम से व्यक्त किया गया है। उन विशेषताओं

का शाश्वत जीवन-मूल्यों के रूप में महत्त्व आज भी है। इस कहानी में अतिथि सेवा को महत्त्वपूर्ण बताया गया है। हमारे यहां अतिथि को देवता की भांति पूज्य माना गया है। ममता विधर्मी मुगल को भी अपनी झोंपड़ी में आश्रय देकर उस परम्परा का पालन करती है।

ममता द्वारा जातीय गौरव की बात कही गई है। हर जाति वालों में कुछ अच्छे संस्कार होते हैं जो समाज के लिए उपयोगी होते हैं। ममता ब्राह्मणी थी। दूसरों का उपकार करना, अपरिग्रह की भावना बनाये रखना, ईश्वर का चिन्तन करना ब्राह्मणों का गुण रहा है। ये गुण ममता में भी दर्शाये गये हैं। वह हराम के सोने के लौटवा देती है और भीख के मुट्ठी भर अन्न से जीवन निर्वाह करने को तैयार रहती है। वह परेशानी में पड़े विधर्मी मुगल की भी सहायता करती है।

ममता के माध्यम से स्वाभिमान का महत्त्व भी निरूपित किया गया है। ममता को मुफ्त का, रिश्वत का धन प्राप्त कर लेना अपने स्वाभिमान के विपरीत लगा, इसलिए उसने उस धन को ग्रहण नहीं किया था। वह परेशानियों में घबराती नहीं थी। वह अकेली और बिना धन लिए ही जीवन यापन करती रही थी। उसका जीवन कष्टसहिष्णु बनने की प्रेरणा देने वाला रहा।

उसके चरित्र द्वारा लेखक ने त्याग और देश प्रेम जैसी भावनाओं पर भी प्रकाश डाला है। समाज में इनका बड़ा भारी महत्त्व है। यदि लोग स्वार्थ को महत्त्व देने लगे और देश के प्रति प्रेम न रखें तो बड़ी भारी अव्यवस्था फैल जाय। इसी दृष्टि से लेखक ने ममता द्वारा त्याग भावना का परिचय दिलाया है। वह हाथ में आए ढेर सारे सोने को वापस करा देती है। अतिथि का कष्ट दूर करने अपना सुख छोड़कर झोंपड़ी से बाहर रहने लगती है। दुर्गपति से विरुद्ध शत्रु का साथ देना, उसने उत्कोच लेना अनुचित मानकर पिता को शर्मिन्दा करती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि 'ममता' कहानी सोद्देश्य रचना है और वह अपने उद्देश्य की सम्यक अभिव्यक्ति में सफल रही है।

प्रश्न 12. 'ममता' कहानी के आधार पर ममता की चारित्रिक विशेषताएं बताइए या ममता का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—'ममता' चरित्र प्रधान कहानी है। इसके माध्यम से लेखक ने ममता के चरित्र के माध्यम से आदर्श जीवन का स्वरूप प्रस्तुत करना चाहा है। ममता के चरित्र की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं—

1. स्नेह पालिता—माता-पिता को अपनी सन्तान को स्नेह देना चाहिए। सन्तान को माँ-बाप के स्नेह का पात्र बने रहने का प्रयत्न करना चाहिए। ममता ऐसा कोई आचरण नहीं करती जिसके कारण उसका पिता उसे अपने स्नेह से वंचित

कर दे। विधवा हो जाने पर भी चूड़ामणि उसके भावी जीवन के लिए ढेर सारा सोना ला देते हैं।

2. कष्टसहिष्णु—ममता के चरित्र की यह बहुत बड़ी विशेषता थी। उसने वैधव्य का कष्ट सहा, पिता के मरने का कष्ट सहा, धन के अभाव का कष्ट सहा। इतना ही नहीं उसने अतिथि मुगल बादशाह के लिए अपनी झोंपड़ी से भी बाहर रहने का कष्ट स्वीकार किया। ममता ने कभी किसी के सामने अपनी दुःखग्रस्त स्थिति का बखान नहीं किया। वह कष्टों को ईश्वर प्रदत्त मानकर सहती रही और अपने मानवीय कर्त्तव्यों का पालन करती रही।

3. अतिथि सेवा करने वाली—ममता भारतीय हिन्दू नारी जाति के लिए आदर्श थी। वह द्वार पर आये हुए अतिथि को निराश लौटाना अनुचित मानती थी। तभी तो उसने उस विधर्मी मुगल जाति के व्यक्ति को भी झोंपड़ी में आश्रय दिया था जिस मुगल जाति के लोगों ने उसके पिता की हत्या की थी। वह खण्डहरों में रही पर अतिथि को उसने कष्ट न होने दिया। उसने अतिथि से कहा था "पथिक तुम चाहे कोई भी हो, मैं तुम्हें आश्रय दे रही हूं।"

4. ब्राह्मण धर्म का पालन करने वाली—ममता ब्राह्मणी थी। वह ब्राह्मणों के धर्म का पालन करने वाली थी। ब्राह्मण अपरिग्रही होते हैं। उसने भी पिता द्वारा लाए गए ढेर सोने को वापस करने की जिद की थी और मुट्ठी भर अन्न से जीवन निर्वाह कर लेने का साहस रखती थी। वह ईश्वर की उपासना करती थी। जब अतिथि उसके द्वार पर आया तब वह गीता का पाठ कर रही थी 'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां योजनाः पर्युपासते ......' आदि। वह कहती थी कि मैं ब्राह्मण कुमारी हूं, सब अपना धर्म छोड़ दें तो मैं भी क्यों छोड़ दूं।"

5. स्वाभिमानी—ममता स्वाभिमान को महत्त्व देने वाली नारी थी। वह कष्ट सह सकती थी पर अपने स्वाभिमान के, अपने अन्तःकरण की आवाज के विरुद्ध कोई आचरण नहीं कर सकती थी। हराम का धन प्राप्त करना, अपने मालिक को धोखा देना वह अनुचित मानती थी। पिता द्वारा रोहिताश्व दुर्गपति पर आक्रमण करने वाले शेरशाह से रिश्वत का लिया जाना उसे बहुत बुरा लगा था। उसने उत्कोच के रूप में प्राप्त सोना लौटवा दिया था।

इस प्रकार कहानीकार प्रसाद ने ममता को एक आदर्श नारी के रूप में, एक आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया है जो दूसरों को भी प्रेरणा देने वाला है। चरित्र-चित्रण में कहानीकार ने मानवीय दृष्टिकोण का परिचय दिया है।

2 प्रेरणा

प्रश्न 13. 'प्रेरणा' कहानी के नायक की शरारतों के बारे में लिखिए।

उत्तर—इस कहानी का नायक सूर्यप्रकाश है। वह लेखक कक्षाध्यापक की ही कक्षा का छात्र था और स्कूल के छात्रों में सबसे अधिक शरारती, उद्दण्ड था। वह छात्रों की गुटबन्दी करके रखता था। उसे अध्यापकों को चिढ़ाने, छात्रों को छेड़ने, रुलाने में आनन्द आता था। स्कूल के चपरासी उससे थर-थर कांपते थे। एक दिन उसने इन्सपेक्टर द्वारा मुआयना किये जाने वाले दिन स्कूल के सभी छात्रों को स्कूल-टाइम से भी काफी समय बाद स्कूल में प्रविष्ट होने दिया था। एक दिन उसने अध्यापक की मेज के दराज में एक मेढ़क रख दिया था। उस पर अध्यापकों की डांट का, उनके आदेश का कोई अच्छा प्रभाव नहीं होता था।

प्रश्न 14. इन्हीं खोये हुये अवसरों का नाम तो जिन्दगी है।" लेखक के इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—जब लेखक यानी सूर्यप्रकाश के क्लास टीचर का स्कूल से ट्रांसफर हो गया तो कई अध्यापक और छात्र उन्हें स्टेशन पर विदाई देने गये थे - लेखक ट्रेन में बैठकर जाने लगे थे। उन्हें सूर्यप्रकाश भी खड़ा दिखाई दिया था - वह लज्जित था और उसकी आंखें भीगी थीं। अध्यापक ने देखा कि स्टेशन से सब लोग वापिस जा चुके हैं और एक ही व्यक्ति खड़ा रह गया है। उन्हें लगा कि वह सूर्यप्रकाश ही है। उन्होंने सोचा कि विदाई के समय लज्जित सूर्यप्रकाश से मुझे बात करनी चाहिए थी। हो सकता है मेरी निष्कपट बातों का उस पर असर हो जाता। अब तो अवसर हाथ से खो चुका था। तभी लेखक ने उक्त वाक्य कहा है। इसके द्वारा लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि कभी-कभी ऐसे अवसर आते हैं जिनका उपयोग कर लेने पर कोई महत्त्वपूर्ण कार्य हो सकता है जो जिन्दगी के उत्थान में सहायक हो सकता है। जब हम नासमझी या आलस्यवश ऐसे अवसरों को खो देते हैं तो घाटे में ही रहते हैं। उचित अवसरों का सदुपयोग करने से ही जिन्दगी में अच्छे परिवर्तन आते हैं, जिन्दगी उन्नत बनती है।

प्रश्न 15. लेखक के प्रिंसिपल रहने के अनुभवों को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—लेखक जब तीन साल तक इंग्लैण्ड में रहकर वापस आया तो उन्हें कॉलेज में प्रिंसिपल का पद प्राप्त हो गया। इस पद से उन्हें खुशी हुई। उन्होंने कल्पना में भी न सोचा था कि मैं कभी प्रिंसिपल बन जाऊँगा। जब वे प्रिंसिपल बन गये तो उन्हें और उन्नति करने का लोभ होने लगा। उनकी शिक्षामन्त्री से घनिष्ठता हो गई तो वे शिक्षामन्त्री को अपने सुझाव देने लगे। शिक्षामन्त्री उनकी बात मानते थे। उन्हीं के कहने से शिक्षामन्त्री ने अनिवार्य शिक्षा के प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया था। इससे कई लोग प्रिंसिपल के विरोधी हो गये। जब प्रिंसिपल ने कालेज से एक चपरासी को नौकरी से निकाल दिया तब तो उनके साथियों ने

उनकी नाक में दम कर दिया। बड़ा विरोध हुआ। शिक्षामन्त्री ने चपरासी को नौकरी पर वापस ले लिया। इससे प्रिंसिपल को अपना अपमान महसूस हुआ। उसे लगा कि मुझे कॉलेज के आन्तरिक संगठन का भी अधिकार नहीं है। उसने पद से त्या-पत्र दे दिया था।

प्रश्न 16. "खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का।" इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—यह कथन लेखक का है। लेखक ने अपनी पत्नी के सन्दर्भ में यह उक्ति कही है। इस उक्ति द्वारा उसने स्पष्ट करना चाहा कि इसी का नाम जीवन नहीं है कि हम खाते हैं और सोते हैं। खाना, सोना यही जिन्दगी का लक्षण नहीं है। जिन्दगी का मुख्य लक्षण है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का। जब यह लगन न रहे तो समझना चाहिए कि हमारी जिन्दगी, जिन्दगी नहीं रह गई। अपनी पत्नी के समाप्त हो जाने पर लेखक के जीवन में आगे बढ़ने की लगन नहीं रह गई थी। उसे पत्नी के निधन से बड़ा आघात पहुँचा था। उसके मन में संसार की ओर से विरक्ति हो गई थी और वह एकान्त में रहना पसन्द करने लगा था। यह लगन के समाप्त होने का स्पष्ट प्रमाण था। उसकी पत्नी उसे विषम परिस्थितियों में भी निराश नहीं होने देती थी और उसे प्रोत्साहित किया करती थी जिससे लेखक में आगे बढ़ते रहने की लगन बनी रहती थी। पत्नी के मर जाने के बाद जब लेखक में आगे बढ़ने की लगन न रही तब उसे लगा कि लगन बिना केवल खाने, सोने को सच्चे अर्थों में जीवन नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न 17. सूर्यप्रकाश अत्यधिक शरारती होने के बावजूद डिप्टी कमिश्नर कैसे बन गया ?

उत्तर—यद्यपि छात्र जीवन में सूर्यप्रकाश स्कूल में सबसे शरारती छात्र था फिर भी आगे चलकर वह डिप्टी कमिश्नर बना था। उसे देखकर उसके क्लास टीचर तो सोचते थे कि यह या तो जेल जायेगा या पागलखाने में परन्तु उनके अनुमान के विरुद्ध वह जीवन में बहुत उन्नति कर गया। उसकी उन्नति का सारा श्रेय मोहन को था। यदि उसके छात्र-जीवन में मोहन न आया होता तो सूर्यप्रकाश बड़ा आदमी न बन पाता। मोहन दुर्बल, गरीब सीधासरल बालक था। सूर्यप्रकाश को उस पर दया आती थी इसीलिए उसने उसे अपने साथ रख लिया था। वह उसके लिए खाना बनाता था, उसके लिए दवा लाता। उसे दुःख न हो इस कारण वह शाम को जल्दी लौटकर घर आ जाता था। मोहन को सुधारने के लिए सूर्यप्रकाश का सुधरना जरूरी था और सूर्यप्रकाश ने यह सुधार किया था। इसी परिवर्तन का फल था कि वह आगे चलकर डिप्टी कमिश्नर बना था। स्वयं सूर्यप्रकाश ने भी कहा कि "मैं जो कुछ हूं उसी का बनाया हुआ हूँ।"

प्रश्न 18. "सम्पत्ति की अट्टालिका तक पहुँचने में दूसरों की जिन्दगी ही जीनों का काम देती है।" यह कथन प्रिंसिपल पर कहाँ तक लागू होता है।

उत्तर—लेखक अपने अनुभव के आधार पर ऐसा मानता है कि हम यदि उन्नति करना चाहते हैं तो हमें इतना क्रूर, कठोर भी बनना पड़ेगा कि मौका आने पर दूसरों की जिन्दगी को होने वाली हानि को अनदेखा कर दें। कई बार तो दूसरों को हानि पहुँचाकर ही आगे बढ़ना सम्भव हो पाता है। जो व्यक्ति प्रिंसिपल बनता है उसके कारण स्पष्ट ही दूसरे लोगों का प्रिंसिपल बनने का अवसर समाप्त हो जाता है। यदि कॉलेज में अच्छा अनुशासन बनाये रखना हो और इसके बदले सम्मान, लाभ प्राप्त करना हो तो कई बार किसी किसी व्यक्ति को नौकरी से निकालना भी पड़ सकता है। लेखक ने भी प्रिंसिपल बनकर एक चपरासी को नौकरी से निकाल दिया था। अपने साथी अध्यापकों में से कुछ को नौकरी से निकाल देता तो कोई उसका विरोध करने का साहस न कर पाता और तब प्रिंसिपल बने रहने में उसे कोई कठिनाई न होती। यदि व्यक्ति दूसरों की जिन्दगी तबाह होते देखकर झिझकेगा तब तो आगे बढ़ना उसके लिए मुश्किल हो जायेगा। लेखक अपने सहयोगियों के विरोध को दबा देता, और दो-एक को नौकरी से निकाल देता तो उसका विरोध ठण्ढा पड़ जाता।

प्रश्न 19. लेखक के अनिवार्य शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—मुंशी प्रेम चन्द ने 'प्रेरणा' कहानी के छात्रों के साथ-साथ अनिवार्य शिक्षा के बारे में भी निजी विचार व्यक्त किये हैं। वे अनिवार्य शिक्षा के सिद्धान्त के विरोधी हैं। शिक्षाग्रहण करना न ग्रहण करना यह व्यक्ति की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए। कम से कम भारत में अनिवार्य शिक्षा की जरूरत नहीं है, कारण यह है कि यहां तो मजदूर भी अपने बच्चे को अपनी क्षमता के अनुसार शिक्षा दिलाना चाहता ही है। वह मनुष्य के लिए विद्या प्राप्त कर लेना जरूरी मानता है। जब वह उसे पढ़ाने में आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होता है तब ही पढ़ाने से रोकता है यूरोप में भौतिकवादी दृष्टिकोण प्रचलित है। वहां बच्चों के माता-पिता उच्च जीवन-स्तर बनाना चाहते हैं इसलिए चाहते है कि बच्चे भी कुछ कमाकर लाएं और इस कारण वे बच्चों को पढ़ने नहीं भेजना चाहते। वहां बहुत सम्पन्न लोग ही बच्चों को पढ़ाने भेजने की सोचते हैं। इस कारण लेखक भारत के लोगों पर अनिवार्य शिक्षा को कानूनी दृष्टि से थोपने के पक्ष में नहीं है।

प्रश्न 20. लेखक कम उम्र के बच्चों को स्कूल भेजना क्यों पसन्द नहीं करता ?

उत्तर—आजकल ऐसी भेड़ चाल चल पड़ी है कि माँ-बाप बहुत कम उम्र में ही बच्चों को पढ़ने के लिए स्कूल भेज देते हैं। प्रेमचन्द जी इसे पसन्द नहीं

करते। उनका विचार है कि इससे बच्चों का विकास रुकता है। बच्चों को आजादी चाहिये तभी उनका स्वस्थ विकास हो पाता है। दूसरे, कम उम्र के बच्चे बहुत समय में कम शिक्षा ग्रहण कर पाते हैं। उनमें समझ कम होती है। बड़ी उम्र में बच्चे को शिक्षा पाने भेजा जायेगा तो वह जल्दी समझने लगेगा और कम उम्र में ज्यादा कक्षाएं पास कर लेगा। इससे बच्चों को विकास के लिए पर्याप्त समय मिल सकेगा। एक बात यह भी है कि छोटी उम्र में ही बच्चों में अच्छे संस्कार पड़ते हैं और स्कूलों में अच्छे संस्कार देने वाले अध्यापकों का हमारे यहां अभाव है। ऐसी स्थिति में कम उम्र में उन्हें स्कूल भेजने का कोई लाभ नहीं है।

प्रश्न 21. 'प्रेरणा' कहानी का मूल भाव या उद्देश्य स्पष्ट कीजिए -

उत्तर—प्रेमचन्दजी कहानी को जीवन की व्याख्या मानते हैं। प्रस्तुत कहानी की मूल संवेदना विद्यार्थी जीवन से जुड़ी है। इसमें यह दर्शाया गया है कि विद्यार्थी जीवन में कई प्रकार के परिवर्तन आ सकते हैं। जिस छात्र को हम बहुत शरारती समझते हैं और सोचते हैं कि यह आगे चलकर या तो जेल जायेगा या पागलखाने वह भी उसके जीवन में आये परिवर्तन के कारण डिप्टी कमिश्नर तक बन सकता है यह बात सूर्यप्रकाश के माध्यम से व्यक्त की गई है। वह बेहद शरारती था। उसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था कि वह एक दिन अफसर बन जायेगा। यह सब उसके जीवन में आये मोहन नाम के बालक के कारण हुआ। मोहन शरीर से दुर्बल, बीमार रहने वाला, गरीब लड़का था जो सूर्यप्रकाश का ममेरा भाई था। उस पर सूर्यप्रकाश को दया आती थी इस कारण वही उसे खाना बनाकर खिलाता था, उसके लिए दवा लाकर देता था, उसे कष्ट न हो इस कारण वह समय पर घर लौट आता था। इन कारणों से उसके खुद के जीवन में नियमितता आ गई थी और उसका जीवन सुधर गया था। इसी कारण आगे वह उन्नति कर पाया था। इस प्रकार कहानी द्वारा लेखक ने बताना चाहा है कि किसी भी छात्र की ओर से निराश नहीं होना चाहिए और उसके सुधार के लिए धैर्यपूर्वक प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा न हो कि हमारे द्वारा अध्यापक द्वारा हतोत्साह किये जाने पर कोई शरारती बालक अपना जीवन चौपट कर बैठे। छात्रों के साथ-साथ ही शिक्षा को अनिवार्य न करने तथा बहुत कम उम्र में बच्चों को स्कूल में प्रवेश न दिलाने की बात कही गई है। कम उम्र में बच्चों को स्कूल में भेजने से, अध्ययन आदि के बन्धन से उनका भली प्रकार विकास नहीं हो पाता है। ये बाते बताना ही कहानी का उद्देश्य है।

प्रश्न 22. प्रेरणा कहानी का नायक कौन है? उसके चरित्र की विशेषताएं बताइये।

उत्तर—'प्रेरणा' कहानी का नायक सूर्यप्रकाश है। उसके चरित्र की निम्नांकित विशेषताएं हैं—

शरारती—सूर्यप्रकाश कक्षा में ही नहीं स्कूल में सबसे अधिक शरारती छात्र था। उसकी कक्षा के अध्यापक ने अपने अध्यापन काल में ऐसा ऊधमी छात्र कभी नहीं देखा था। एक दिन उसने अध्यापक की मेज की दराज में एक मेढ़क रख दिया था। एक दिन उसने सारे छात्रों को स्कूल में निश्चित समय के बाद ही जाने दिया था। उसे अध्यापकों को परेशान करने, छात्रों को छेड़ने में आनन्द आता था।

गुटबन्दी करने वाला—वह शरारती छात्रों का एक गुट बनाकर रखता था, जिनकी सहायता से मनमानी करता था। सभी छात्र उसकी आज्ञा का पालन करते थे। इसका प्रमाण यह था कि जिस दिन इन्सपेक्टर स्कूल में मुआयना करने आने वाले थे उस दिन उसने स्कूल के छात्रों को ग्यारह बजे स्कूल में घुसने दिया था।

किसी की न मानने वाला—सूर्यप्रकाश पर अध्यापकों के उपदेशों का भी कोई असर न होता था। वह नीचा सिर किये हुए मुस्कराता रहता था। अध्यापक परेशान थे कि हम बीस-बाईस अनुभवी लोग बारह-तेरह साल के छात्र को संमार्ग पर नहीं ला पा रहे।

सेवा भाव न रखने वाला—यद्यपि वह बड़ा शरारती था फिर भी उसमें सेवा करने का आश्चर्यजनक ढंग का भाव विद्यमान था। अपने बीमार से भाई मोहन को अपने साथ रखकर उसने उसकी बड़ी सेवा की थी। तभी तो उसके साथ के छात्र उससे बूढ़ी दाई कहने लगे थे। मोहन के पिता भी उसकी सेवा भावना को देखकर गद्‌गद् हो गये थे।

दयालु—सूर्यप्रकाश को किसी-किसी दयनीय व्यक्ति पर दया भी खूब आती थी। मोहन बीमार, कमजोर बालक था, इस कारण उस पर सूर्यप्रकाश को दया आती थी और वह उसकी सेवा करता था। जब उसके क्लास टीचर का ट्रांस्फर हुआ था तब भी उसकी आँखें गीली हो गई थीं।

पश्चाताप करने वाला—सूर्यप्रकाश जितना ऊधमी था करीब उतना ही किये हुए का प्रायश्चित करने वाला था। उसे अपने क्लासटीचर के साथ किये गये शरारतपूर्ण व्यवहार पर पश्चाताप हुआ था इसलिए वह डिप्टी कमिश्नर बनने के बाद उनसे क्षमा माँगने गया था। बीमार मोहन को छोड़कर कश्मीर जाने का भी उसे पूछतावा हुआ था।

संक्षेप में प्रस्तुत कहानी में सूर्यप्रकाश का बड़े सुन्दर ढंग से चित्रण किया गया है।

प्रश्न 2—'प्रेरणा' कहानी की सार्थकता पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—'प्रेरणा' कहानी का यह शीर्षक कहाँ तक उचित है, कहां तक सार्थक है, यह विचार करते समय हमें यह देखना होगा कि इससे किस को क्या प्रेरणा

मिलती है या कहानी में किसको प्रेरणा मिलने की बात कही गई है। कहानी में मोहन के कारण सूर्यप्रकाश के जीवन में परिवर्तन दिखाया गया है। मोहन को सुख पहुँचाने के लिए शरारती सूर्यप्रकाश को अपने चरित्र में सुधार करना पड़ा था। इससे आगे वह डिप्टी कमिश्नर बना था।

दूसरे लेखक ने सूर्यप्रकाश के माध्यम से अध्यापकों को तथा दूसरे छात्रों को प्रेरणा लेने का संकेत दिया है। सूर्य प्रकाश जैसा बेहद शरारती छात्र ही सुधर गया, सन्मार्ग पर आ गया तब दूसरे उद्दण्ड छात्रों को और ऐसे छात्रों की ओर से अध्यापकों को निराश नहीं होना चाहिए। प्रेरणा के तत्त्व का पूरी कहानी से सम्बन्ध बना हुआ है। इन कारणों से यह कहा जा सकता है कि उक्त कहानी का यह शीर्षक सार्थक है।

3. एक गौ

प्रश्न 24. स्पष्ट कीजिये कि 'एक गौ' कहानी यांत्रिक सभ्यता एवं कृत्रिम संबंधों के खोखलेपन पर व्यंग्य करती है।

उत्तर—इस कहानी में हीरासिंह और दिल्ली के सेठ के माध्यम से यांत्रिक सभ्यता एवं कृत्रिम संबंधों के खोखलेपन पर व्यंग्यात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। सेठ वैसे तो हीरासिंह की ईमानदारी की प्रशंसा करता है परन्तु हीरासिंह के प्रति खोखला संबंध ही रखता है। यदि ऐसा न होता तो उसे चौकीदारी के बजाय गौ की सेवा में नियुक्त कर सकता था क्योंकि हीरासिंह ने इसके लिए उससे निवेदन किया था। वह गाय के कम दूध देने पर हीरासिंह को उसकी गाय ढाई सौ रुपये का तावान भरवाकर लौटा देता है। वह गाय के ड्यौढ़ी में दूध बहा जाने पर भी हीरासिंह पर शक करता है। वह दिल्ली शहर का निवासी है। वह यांत्रिक सभ्यता में पला है जिसमें मनुष्य की भावनाओं की, आपसी संबंधों की कोई कीमत नहीं। अपनत्व दिखाकर भी अपना ही स्वार्थ सिद्ध करते हुए दिखाने में लेखक ने व्यंग्य किया है। वह गाय के पीछे हीरासिंह से संबंध तोड़ लेता है।

प्रश्न 25. इसमें गाय को माध्यम बनाकर मानवीय संवेदना को व्यक्त किया गया है, समझाइये।

उत्तर—लेखक ने गाय पशु के प्रति भी मनुष्य की ममता दर्शायी है। यह ममता इस दर्जे की है। इस हद तक व्यक्त हुई है कि वह पाठक में संवेदना जगाती है, उसके मर्म को छूती है। हीरासिंह आर्थिक कष्ट सहता है फिर भी गाय को बेचना नहीं चाहता। उसे गाय बहुत प्रिय लगती है। वह घर वालों की दयनीय स्थिति तो सह भी सकता था पर गाय को दुखी नहीं देख सकता था। वह सेठ के यहां गाय की देख-रेख का काम करने की इच्छा व्यक्त करता है। वह सेठ के यहां गाय को दुख पाते नही सहन कर पाता और आर्थिक खराब हालत के बाव-

जूद उसे अपने घर वापस ले आता है। इसके लिए उसे भले ही ढाई सौ रुपये का तावान भरना पड़ता है। गाय भी उससे अलग रहकर बहुत दुख का अनुभव करती है। दोनों को एक दूसरे के बिना बड़ा दुख होता है। उनके दुख का वर्णन संवेदना जगाने वाला है।

प्रश्न 26. एक गौ' कहानी में उदात्त प्रेम की व्यंजना हुई स्पष्ट है, कीजिए ?

उत्तर—यद्यपि सुन्दरिया गाय थी परन्तु हीरासिंह उसे अपने घर के सदस्यों से भी ज्यादा प्यार करता था। वह उसके लिए केवल गौ न थी, गौ माता थी, उसके परिवार का सदस्य थी। उसका मोलभाव करना ही उसके लिए कष्टप्रद था। गाय सेठ को देकर उसने गाय से कहा था 'जाओ, बहन जाओ' गाय के भी उससे अलग रहकर पूरा दूध न उतरता था। गाय को दुख पाती हुई जानकर वह उसे सेठ से वापस ले आया था। इससे स्पष्ट है कि इस कहानी में दोनों के माध्यम से उदात्त प्रेम की व्यंजना हुई है।

प्रश्न 27. क्या आप हीरासिंह को सच्चा मानव कह सकते हैं ?

उत्तर—कहानी में हीरासिंह एक सच्चे मानव के रूप में सामने आया है। गाय अपने दुख का वर्णन नहीं कर सकती। हीरासिंह उसके दुख का अनुमान करके ही उसका ध्यान रखता था। वह पहले तो गाय को बेचना ही नहीं चाहता था क्योंकि वह उसे गौ माता मानता था। वह उसके घर की अंग थी। बेचकर भी वह गाय की सेवा में रहना चाहता था। वह उसे दुख पाती हुई समझकर वापस ही ले आया था। जो मनुष्यों का ही नहीं पशुओं के भी दुख-सुख का ध्यान रखे वह तो कोई सच्चा मानव ही होगा। वह नौकर के रूप में अपने मालिक सेठ को भी किसी प्रकार दुख नहीं होने देना चाहता था।

प्रश्न 28. 'एक गौ' कहानी का कथ्य बताइये।

उत्तर—हीरासिंह ने सुन्दरिया गाय को बड़े स्नेह पूर्वक पाला था। वह गरीब होकर गाय को बेचने को मजबूर हो गया था। वह उसका पालन करने में असमर्थ था। उसे अपने घर की बेइज्जती के डर से गाय को गांव के पटवारी को नहीं बेचा था और दिल्ली के सेठ को बेचा था। वह उस सेठ के यहां ईमानदारी पूर्वक चौकीदारी की नौकरी करने लगा था। अपनी गाय को अपने आप से अलग दुखी देखकर वह ढाई सौ का तावान भर कर भी उसे अपने घर ले आया था।

प्रश्न 29. हीरासिंह गरीबी की हालत में भी सुन्दरिया गाय को गांव के पटवारी को बेचने को क्यों तैयार नहीं हुआ था ?

उत्तर—गांव के पटवारी के दरवाजे पर वह अपनी गाय को अपने बाप-दादों

के घर में बैठा टुकर-टुकर देखने में बेइज्जती समझता था। इसीलिए उसने गाय गांव के पटवारी को नहीं बेची थी।

प्रश्न 30. गाय को बेचने से प्राप्त रुपयों को उसने अपने मुट्ठी में क्यों कुचल डाला था ?

उत्तर—उसे अपनी प्यारी गाय को बेचने का बड़ा दुख था। जब गाय के रुपये प्राप्त कर लिए तब उसे बहुत दुख हुआ इसलिए उसने रुपयों को अपनी मुट्ठी में कुचल डाला था।

प्रश्न 31. हीरासिंह को अपनी गरीबी का अपने लिए इतना दुख न था जितना अपनी गाय के लिए ! क्यों ?

उत्तर—सुन्दरिया गाय उसकी घर की बछिया थी। उसे उसने बड़ी मोहब्बत से पाला था। इसी कारण गरीबी की दशा में उसे अपनी गरीबी का इतन दुख न था जितना कि गाय के लिए था। वह उसके लिए गौ माता थी, उसके परिवार का अंग थी।

प्रश्न 32. 'सुन्दरिया तू मेरी रुसवाई क्यों कराती है।' ऐसा हीरासिंह ने क्यों कहा था ?

उत्तर—गाय हीरासिंह से अलग रहकर सेठ के यहां पूरा दूध नहीं उतार पाती थी। सेठ ने हीरासिंह को उलाहना दिया था। उसने कहा था, तुम मेरी आंखों में धूल झोंकना चाहते हो। हीरासिंह को लगा था कि में किसी को धोखा नही देता और गाय के कारण मुझे धोखा देने वाला समझा जा रहा है। इसीलिए उसने दुखी होकर गाय से ऐसा कहा था।

प्रश्न 33. सेठ के यहां गाय पूरा दूध क्यों नहीं देती थी ?

उत्तर—गाय को अपने मालिक हीरासिंह से अलग रहने का इतना दुख था कि उसके दूध उतरता ही न था। हीरासिंह के पास उसका दूध स्वतः ही बिखर जाता था। दूध को उतारना गाय के वंश की बात न थी।

प्रश्न 34. गाय द्वारा पूरा दूध न दिये जाने पर हीरासिंह ने गाय से क्या कहा था ?

उत्तर—उसने सेठ से कहा था कि आप मुझ से जितने महीने चाहें कस कर चाकरी लीजिए पर गौ आज ही यहां से हमारे गांव चली जाएगी। जब आपके रुपये चुक जाएं तो मुझे बता दीजिगा। तब में भी छुट्टी ले जाऊंगा।

प्रश्न 35. हीरासिंह सेठ के यहां से नौकरी क्यों छोड़ आया था ?

उत्तर—जब उसकी बेची हुई सुन्दरिया गाय ने सेठ के यहां पूरा दूध न दिया तो सेठ ने उस पर धोखा देने का आरोप लगाया था। साथ ही गाय भी सेठ के यहां उसकी याद करके दुखी रहती थी। इसी कारण वह सेठ की नौकरी छोड़ आया था और गाय भी वापस ले आया था। भले ही उसके लिए तावान भरना पड़ा।

प्रश्न 36. हीरासिंह के चरित्र की क्या विशेषताएं थी ?

उत्तर—वह गाय का बहुत ध्यान रखने वाला था। वह ईमानदार, लज्जा का अनुभव करने वाला, इज्जत वाला, सत्य बोलने वाला, अपने आश्रितों का ध्यान रखने वाला, ईमानदारी से काम करने वाला, मालिक का हितैषी व्यक्ति था। वह परिश्रमी और शांतिप्रिय व्यक्ति था।

प्रश्न 37. 'एक गौ' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए

उत्तर–इस कहानी का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि पशुओं को अपने मालिक के प्रति स्नेह होता है। उदात्त प्रेम, व्यावहारिक महानता और चिरन्तन मूल्यों की स्थापना करना, आज की यांत्रिक सभ्यता और कृत्रिम सम्बन्धों के खोखलेपन पर प्रकाश डालना इस कहानी का उद्देश्य है।

— — —

4. प्रवासी

प्रश्न—गोपालन उत्तर भारत में अकेलापन क्यों अनुभव करता था ?

उत्तर—गोपालन जहां रहता था वहां यद्यपि लम्बे समय से रह रहा था फिर भी वह अकेलापन अनुभव करता था। इसके दो मुख्य कारण थे। एक तो यह कि वह मूलतः दक्षिणी भारत का निवासी था और उत्तर में रह रहा था और दूसरे वह हिन्दी भाषा न जानता था। यदि वह हिन्दी जानता तो लोगों से भली प्रकार घुल मिल गया होता और एकाकीपन अनुभव न करता। उत्तरी भारत के लोगों का रहन-सहन भी दक्षिणी भारत के लोगों से कुछ भिन्न प्रकार का था।

प्रश्न—गोपालन की जिन्दगी पत्थर की भाँति कठोर कैसे बताई गई है ?

उत्तर—गोपालन अविवाहित था इस कारण वह अपने मन के भाव किसी के सामने खुल कर प्रकट न कर पाता था। उसके जीवन में धीरे-धीरे परिवर्तन आता जा रहा था। वह सामान्य चहल-पहल के माहौल से दूर मंदिर में रहता था जहां प्रायः सूनापन रहता था। यह स्थिति भी उसके जीवन को कठोर बनाने वाली थी। इन्हीं कारणों से उसकी जिन्दगी पत्थर की तरह कठोर बताई गई है। पत्थर किसी से कोई लगाव नहीं रखता, एक जगह पड़ा रहता है। उसमें एक रसता होती है। वैसी ही स्थिती गोपालन की थी। वह एक जगह जिन्दगी बिता रहा था। उसके जीवन में न कोई विविधता थी न उमंग।

प्रश्न—गोपालन के पिता कौन थे ? उनके जीवन के बारे में बताइये।

उत्तर—गोपालन के पिता नयनाचारी थे। उनका वैदिक आचरण था जिसमें कुछ परिवर्तन, कुछ कमी आती जा रही थी। वे प्रातः काल उठकर और स्नान आदि से निवृत्त होकर पूजारत हो जाते थे। वे घण्टों कम्ब रामायण गाया करते थे। वे ब्राह्मण जाति के थे। वे गोपालन के पिता ही नहीं गुरु भी थे।

प्रश्न—वरदाचारी कौन था ?

उत्तर-वह नयनाचारी का बड़ा बेटा और गोपालन का बड़ा भाई था। राजम उसी की पत्नी थी। वह कई वर्षों से घर से अलग रह रहा था। वह मस्त प्रकृति का व्यक्ति था। वह पत्नी को अपने योग्य न समझकर कहीं अज्ञातवास कर रहा था।

प्रश्न—दक्षिणी भारत की सधवा नारी का चित्रण कीजिए।

उत्तर—दक्षिणी भारत की नारी अपने पति को बड़ा महत्व देती है। उदाहरण के लिए राजम के बारे में विचार किया जा सकता है। उसका पति वरदाचारी उसे अपने योग्य न मानकर कई वर्षों से उसे छोड़कर कहीं अज्ञातवास कर रहा था, फिर भी राजम उसके गुणों की प्रशंसा करती थी। वह माथे पर कुमकुम लगाती

थी, गले में त्रिमंगल्यम पहनती थी। दक्षिणी भारत की नारी अपने श्वसुर को भी बड़ा सम्मान देती है। दक्षिण में बेटी के विवाह में उसके माता-पिता काफी कुछ दहेज के रूप में दे देते हैं।

प्रश्न—राजम के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—राजम वरदाचारी की पत्नी थी। उसका पति अनेक वर्षों से अज्ञातवास कर रहा था फिर भी वह अपने पति के कारण अपने आपको सधवा मानती और उसके गुणों की चर्चा करती थी। वह अपने ससुर नयनाचारी का खूब सम्मान करती थी और अपने देवर गोपालन का भी पूरा ध्यान रखती थी। वह स्वभाव से कर्कशा थी। उसे यह लोभ रहता था कि गोपालन ब्याह-शादी मृतक के क्रियाकर्म आदि करा कर काफी दक्षिणा लाया करे। वह कभी-कभी गोपालन को उलाहने भी देती थी तो उस पर स्नेह भी खूब रखती थी। उसीने गोपालन को एकाह में बैठने से रुकवाया था।

प्रश्न—गोपालन कोमल के प्रति क्या भाव रखता था ?

उत्तर—गोपालन शरीर से हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर युवक था। वह अर्चक था पर वह उसके मन में हीनता का भाव न था। इसी कारण वह पोस्टमास्टर की पुत्री से विवाह करने की कामना करता था। वह मन ही मन उसके प्रति प्रेम का भाव रखता था। जब कोमल ने वेंकटरामन से विवाह कर लिया था तो उसे बड़ी ठेस पहुंची थी।

प्रश्न—गोपालन क्या काम करता था ?

उत्तर—गोपालन तिरूपथीमलय के श्रीनिवास के मंदिर में काम करता था। लोग उसे उत्तरदायी 'महाराज' 'स्वामी' 'आयंगर' अर्चक आदि कहा करते थे और उसे सम्मान देते थे। उसमें हीनता की भावना न थी। वह अपने आपको किसी से कम न मानता था।

प्रश्न – कोमल और उसके पिता में क्यों अनबन हो गई थी ?

उत्तर – कोमल के पिता रिटायर्ड पोस्टमास्टर थे। वे परम्परागत ढंग से जीवन व्यतीत करने वाले थे। कोमल का पति वेंकटरामन जमींदार का लड़का था। वह बीमार हुआ तो डॉक्टरों ने उसे दवा के रूप में शराब पीने को कहा था। वेंकटरामन को बाद में शराब पीने की आदत पड़ गई थी। लोग उसे शराबी मानने लगे थे। यही जानकर कोमल के पिता ने कोमल से मिलना जुलना बन्द कर दिया था। वे वेंकटरामन की मृत्यु का समाचार पाकर भी कोमल के घर नहीं आये थे।

प्रश्न — वेंकटरामन को शराबी मानकर जब ब्राह्मणों ने उसके क्रियाकर्म न कराने का फैसला किया तो कोमल पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी ?

उत्तर—कोमल स्वाभिमानिनी नारी थी। ब्राह्मणों ने कोमल के पति के क्रियाकर्म न करने की घोषणा कर दी थी तो कोमल उनके आगे गिड़गिड़ाई नहीं। उसने निश्चय किया कि मैं झुकूंगी नहीं भले ही क्रियाकर्म न हो। उसने सुहाग भी न समाप्त करने का और सधवा की तरह शृंगार करते रहने का निश्चय कर लिया था। उसे इस बात का भी डर न था कि ब्राह्मण उसे परेशान करेंगे।

प्रश्न—गोपालन वेंकटरामन से विवाह कर लेने वाला कोमल से कुछ अप्रसन्न रहता था फिर भी उसी ने उसके मृतक पति के क्रियाकर्म कराने का निर्णय कैसे कर लिया था?

उत्तर—कोमल स्वयं गोपालन के पास आई थी। उसने वेंकटरामन के बारे में बताया था कि डाक्टरों ने ही उन्हें दवा के रूप में शराब पीने के लिए कहा था। उसने जब बताया कि मेरे पति को शराबी मान कर उनके क्रियाकर्म करने का बाहिकार कर रखा है तब गोपालन ने ब्राह्मण धर्म का विचार कर और कोमल को निर्दोष मानकर उसके घर पर क्रियाकर्म कराने का निश्चय कर लिया था। उसने एकांत में बैठने, यम भोज करने की बात भी स्वीकार करली थी।

प्रश्न—राजम ने नयनाचारी से कहकर गोपालन को एकांत में बैठने, यम-भोज करने से क्यों रुकवा दिया?

उत्तर—राजम कर्कशा अवश्य थी पर गोपालन के प्रति बड़ी आत्मीयता, बड़ा स्नेह रखती थी। जब उसे पता चला कि गोपालन वेंकट रामन के एकाह बैठेंगा, यमभोज करेगा तो उसे चिन्ता हुई कि वह यमभोज कर जल्दी ही समाप्त हो जायेगा। वह अभी अविवाहित है फिर वंश कैसे चलेगा। यह सब सोचकर उसने नयनाचारी को यह सब बातें कहदी थीं और गोपालन को नयनाचारी ने यमभोज नहीं करने दिया था।

प्रश्न—नयनाचारी ने कोमल के पति के मरने पर वेंकटरामन के क्रियाकर्म के अवसर पर यमभोज क्यों किया था?

उत्तर—राजम से नयनाचारी को पता चला था कि गोपालन एकाह में बैठने वाला है, यमभोज करने वाला है। वे जानते थे कि यमभोज करने वाला अधिक दिन जीवित नहीं रहता। गोपालन की राजम को भी चिंता थी। इस कारण तथा अपने ब्राह्मण धर्म का पालन करने के उद्देश्य से नयनाचारी ने ही यमभोज किया था। भले ही वे उसके तीसरे दिन ही समाप्त हो गये थे।

प्रश्न—कोमल ने गोपालन को अपना पति बनाने योग्य न मानकर वेंकट-रामन से विवाह कर लिया था। फिर वेंकटरामन की मृत्यु के बाद उसने क्यों तो गोपालन को अपने घर पर रहने बुलाया था और फिर क्यों उसे घर से भगा दिया था?

उत्तर—कोमल का पति जमींदार था। उसके मरने के बाद जमींदारी की देख-रेख करने वाला कोई न था। कोमल को गोपालन पर विश्वास था इसलिए उसे ही कोमल ने जमींदारी का काम संभालने घर पर रख लिया था। दूसरे लोग उनके आपसी संबंधों के बारे में कई तरह की बातें करते थे पर कोमल ने उनकी परवाह न की थी। जब एक दिन गोपालन ने कोमल का हाथ पकड़ लिया तो कोमल को क्रोध आ गया था, बुरा लगा था इसलिए उसने गोपालन को अपने घर से भगा दिया था।

प्रश्न—आप यह कैसे कह सकते हैं कि कहानी में उदात्त प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है ?

उत्तर—गोपालन कोमल से प्रेम करता था। कोमल भी जानती थी कि उसे गोपालन चाहता है। कोमल उसे अर्चक समझ कर इस योग्य नहीं समझती थी कि उससे विवाह किया जाय। वह मिलने पर उससे बातें कर लेती थी। वेंकटरामन से विवाह करना निश्चित कर लेने पर उसने गोपालन को भी विवाह में आने का निमंत्रण दिया था। पति मर जाने पर उसके क्रियाकर्म भी उसने गोपालन से पूरे कराये थे। गोपालन ने सारे विरोध के बावजूद उसका साथ दिया था। कोमल ने अपनी जमींदारी को संभालने के लिए उसे अपने घर पर रखा था। कोमल ने कभी गोपालन से शारीरिक संबंध की बात नहीं सोची थी। दोनों में मानसिक संबंध अवश्य विद्यमान था। गोपालन द्वारा अपना हाथ पकड़ लिए जाने पर कोमल ने उसे अपने घर से अलग कर दिया था फिर भी जाते समय उसे नोटों की गड्डी दी थी। पीछे वह रोई भी थी। गोपालन के पिता के क्रियाकर्म के लिए भी उसने गोपालन को रुपये दिये थे। इस प्रकार स्पष्ट है कि दोनों में परस्पर प्रेम भाव तो विद्यमान था पर उनमें शारीरिक संबंध नहीं था। इस आधार पर यह कहना ठीक ही है कि कहानी में उदात्त प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है।

प्रश्न—'प्रवासी' कहानी के शीर्षक के औचित्य पर विचार कीजिए।

उत्तर—'प्रवासी' कहानी का यह शीर्षक सर्वथा उचित है। इसका पूरी कहानी से तालमेल बैठ जाता है। जिस कोमल को गोपालन दिल से चाहता था, जिससे विवाह करना चाहता वह उसके लिए प्रवासी बन था गई वहउससे दूर चली गई। उसने गोपालन के बजाय वेंकटरामन से विवाह कर लिया। गोपालन के भाभी राजम का पति वरदा चारी भी कई वर्षों से घर से दूर अज्ञात स्थान में प्रवासी जीवन। व्यतीत कर रहा था। नयनाचारी यमभोज करके इस दुनियां से प्रवास कर गये थे कोमल का पति बीमारी के कारण मर कर प्रवास कर गया था। गोपालन को कोमल ने अपनी जमींदारी का काम संभालने बुलाया था पर बाद में उसे उसने अपने घर से

निकाल दिया था। वह कोमल के लिए प्रवासी हो गया था। इस तरह इस कहानी के लिए 'प्रवासी' शीर्षक सर्वथा उचित है।

प्रश्न—'प्रवासी' कहानी की नायिका कोमल की चारित्रिक विशेषताएं स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कोमल गोपालन की प्रेमपात्र थी। वह सुन्दर थी। गोपाल उससे विवाह करने के लिए लालायित था। उसके शब्द हैं "मैंने सोचा था कि मैं कोमल से विवाह करूँगा।" उसमें स्वयं निर्णय लेने की क्षमता थी। गोपालन को अर्चक जानकर उसने जमींदार के पुत्र वेंकटरामन को अपना पति चुना था। उसने पति के मरने के बाद गोपालन को जमींदारी की देखभाल करने के लिए बुलाने का निर्णय लिया था।

वह महत्त्वाकांक्षी थी। इसी कारण उसने अर्चक गोपालन से विवाह नहीं किया और एक जमींदार परिवार के शिक्षित युवक से विवाह किया था। वह प्रतिष्ठा का ध्यान रखन वाली थी। वह न तो दया की पात्र बनना पसन्द करती थी और न समाज के उपहास की पात्र बनना चाहती थी। तभी तो उसने अपने मृतक पति के क्रियाकर्म भी जमींदार की प्रतिष्ठा के अनुरूप ही किये थे और इसके लिए उसने अपने जेवर भी बेच दिये थे। इसी विशेषता के कारण उसने पिता से भी आर्थिक सहायता नहीं मांगी थी। वह सामाजिक परम्पराओं का निर्वाह करने वाली थी। तभी तो उसने मृतक के क्रिया-कर्म कराये थे। पति के मरने के बाद घर से बाहर नहीं निकलती थी। वह साहसी, निडर थी। जब सभी ब्राह्मणों ने उसका बहिष्कार कर दिया था तब भी उसने ब्राह्मणों की खुशामद नहीं की थी। उसने अपने आप ही पति का चुनाव या वरण करके भी साहस का परिचय दिया था। गोपालन को जमींदारी का काम सम्भालने के लिए बुलाकर उसे घर पर रख कर भी उसने साहस का परिचय दिया था। वह पतिव्रता थी। पति के मरने के बाद गोपालन उसे अपनाना चाहता था परन्तु कोमल ने उसे घर से ही भगा दिया था। वह अपने पति में बुराई न देखती थी। उसने गोपालन से कहा भी था "मैं तो इतना ही जानती हूँ कि वह मेरे स्वामी थे।" इस प्रकार कोमल बड़ी सूझबूझ वाली, निडर, धन का सही उपयोग करने वाली, पवित्र आचरण वाली महिला थी। वही कहानी की नायिका है।

प्रश्न – गोपलन के चरित्र की विशेषताएं बताइये।

उत्तर – गोपालन कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र है। उसकी चारित्रिक विशेषताएं हैं—धार्मिक, ब्राह्मण धर्म का पालन करने वाला, कठोर जिन्दगी व्यतीत करने वाला, अपने आपको किसी से कम न मानने वाला, निर्लोभ, निर्भीक, प्रेम भाव रखने वाला, आदि स्वाभिमानी स्वभाव। वह मन्दिर में अर्चना करता था।

अपने धर्म का पालन करना अपना फर्ज समझता था, भले ही उससे, उसके प्राण ही क्यों न चले जाएं। उसे कठोर परिश्रम करना पड़ता था। उसमें हीनता की भावना नहीं थी। वह धनी कोमल के सामने कभी नहीं गिड़गिड़ाया था। उसने कोमल के द्वारा दी गई नोटों की गड्डी स्वीकार नहीं की थी। उसने ब्राह्मणों के विरोध की चिन्ता किये बिना कोमल के पति के क्रियाकर्म सम्पन्न कराये थे। उसमें भी प्रेम का कोमल भाव था। वह कोमल से विवाह करने की लालसा रखता था। वह स्वाभिमानी और अपनी इच्छा, अपने विवेक से कार्य करने वाला था।

प्रश्न – राजम की चारित्रिक विशेषताएं स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – कहानीकार ने राजम के चरित्र की बड़ी रोचक विशेषताएं प्रकट की हैं। राजम वरदाचारी की पत्नी, गोपालन की भाभी थी। उसमें कठोर और कोमल दोनों प्रकार के स्वभाव की विशेषताएं थीं। वह गुस्से में गोपालन को बहुत खरी-खरी सुनाती थी पर जब गोपालन ने कोमल के पति के एकाह में बैठने का निश्चय कर लिया था तो वह परेशान हो उठी थी और उसने श्वसुर नयनाचारी से कह कर उसे एकाह में बैठने से रुकवाया था। वह पति के दूर चले जाने पर भी श्रृंगार किया करती थी। उसे दक्षिणा ज्यादा से ज्यादा प्राप्त करने का लोभ रहता था। वह अपने उस पति की भी प्रशंसा करती थी जो उसे अपने योग्य न मानकर छोड़-कर चला गया था। वह कोमल से ईर्ष्या रखती थी। उसे जब किसी में कोई कमी दिखाई देती थी तो उसकी निन्दा करती थी। वह ब्राह्मणों और ईश्वर के प्रति आस्था रखती थी। वह अपने ससुर का सम्मान करती थी। उसमें सामान्य नारी की अच्छाइयां-बुराइयां विद्यमान थीं।

5. नौकरीपेशा

प्रश्न—'नौकरीपेशा' कहानी एक व्यंग्यपूर्ण कहानी है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— नौकरीपेशा कहानी में मध्यमवर्गीय पारिवारिक जीवन के विरोधाभासों और आर्थिक विषमताओं पर व्यंग्य किया है। उसने शहर में आकर बस गये गांव के लोगों की अभावपूर्ण स्थितियों के बावजूद दिखावा करने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। राधेलाल बाबूगीरी करते थे। उनकी आर्थिक स्थिति खराब थी फिर भी गांव के बजाय शहर में रहने और बाबू कहलवाने में शान समझते थे। यह तथ्य भी व्यंग्य के रूप मे व्यक्त किया गया है। राधेलाल यों तो रामभरोसे को दद्दा कहकर आत्मीयता दर्शाते थे परंतु यह आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध खोखला था। वे दद्दा के प्रति सन्देह रखते थे, उनके हित का भी ध्यान न रखते थे। यह स्थिति भी व्यग्यपूर्वक व्यक्त की गई है। उन्होंने नखड़े करके रामभरोसे से नाती के जन्म के अवसर पर दिये जाने वाले भोज में असली घी से पूड़ियां बनवाकर उनका खर्चा बढ़ा दिया था।

उनके मर जाने पर भी राधेबाबू शवयात्रा से प्रस्थान करके भी रास्ते में मुख्तार साहब से अपनी नौकरी के लिए पूछने चले गये थे। वे दूसरों की दया से नौकरी प्राप्त करते थे पर घर पत्नी के आगे अपने रौब का झूठा बखान किया करते थे। इस प्रकार लेखक ने कहानी में अनेक स्थितियों पर व्यंग्य किया है। यह व्यंग्य प्रधान कहानी है।

प्रश्न—स्पष्ट कीजिये कि 'नौकरीपेशा' कहानी में गांव के कुछ लोगों की सनक या उनके मन के शहरी आकर्षण का चित्रण किया है।

उत्तर—लेखक ने बताना चाहा है कि गांव के कुछ लोगों में यह सनक पाई जाती है कि वे भले ही शहर बसकर तबाह हो जाएँ पर गांव के बजाय शहर में ही रहना पसन्द करते हैं। राधेबाबू के पूर्वज गांव में परचूनी की दुकान चलाते थे और लाला कहे जाते थे पर राधेबाबू में शहर में रहने का लोभ था। वे शहर में अपनी जीविका चलाने में भी कठिनाई का अनुभव करते थे फिर भी गांव में दुकान करना पसन्द न करते थे। उन्हें अस्थायी, एवजी वाली थोड़े बहुत दिन की क्लर्क की नौकरी ही मिल पाती थी पर बाबू कहलवाने में गर्व का अनुभव करते थे। राम भरोसे की भी आर्थिक स्थिति अच्छी न थी पर शहर में रहने, कस्बाती बनने का लोभ रखते थे। उन्होंने नाती के जन्म दिन के उपलक्ष में दिखावे की भावना से देशी घी वाली पूड़ियों की दावत दी थी, लाउडस्पीकर लगवाया था।

प्रश्न राधेबाबू में दिखावे की प्रवृत्ति थी, स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – राधेबाबू की आर्थिक स्थिति खराब थी पर वे बाहर यह दिखाना चाहते थे कि वे गरीब नहीं हैं। तभी तो वे छुट्टी के दिन अपने पम्प शू, साईकिल और कोट को चमकाने का प्रयत्न किया करते थे। उनकी आमदनी नाममात्र की थी पर बाबू कहलवाने में गौरव महसूस करते थे। वे स्वयं गरीब थे पर अपने ही घनिष्ठ लाला रामभरोसे को उन्होंने दावत के लिए देशी घी की पूड़ियाँ बनवाने के लिए मजबूर कर दिया था। इन बातों से लगता है कि उनमें दिखावे की प्रवृत्ति थी। वे दूसरों से डरते थे पर दिखावा ऐसा करना चाहते थे कि बाहर उनका बड़ा प्रभाव, बड़ा रौब है। वे पत्नी के आगे अपने रौब की चर्चा किया करते थे।

प्रश्न—राधेबाबू अपनी नौकरी के क्या प्रयत्न करते थे ?

उत्तर – राधेबाबू केवल दसवीं कक्षा तक पढ़े थे और उन्होंने टाइप सीख रखा था। बेकारी के जमाने में वे कोई अच्छी नौकरी नहीं पा सकते थे इसलिए उन्हें नौकरी पाने के लिए बहुत भाग-दौड़ करनी पड़ती थी। उन्हें यह जानना पड़ता था कि किस ऑफिस में कब जगह खाली हो रही है। उसके लिए वे सम्बन्धित अधिकारियों से सम्पर्क किया करते थे। जिस ऑफिस में उन्हें नौकरी मिल जाती थी उसके चपरासियों तक को वे खुश रखने की कोशिश करते थे। क्या पता उसमें फिर कभी काम करना पड़ जाय, यह सोचकर वे छुट्टी के दिन भी ऑफिस का

काम करने चले जाते थे, ताकि ऑफिस के लोग उनसे खुश रहें और जरूरत पड़ने पर उन्हें फिर काम पर बुला लें।

प्रश्न–दद्दा रामभरोसे ने अपने नाती की खुशी में भोज का आयोजन किया था जिसमें पूरियां तैयार कराने का काम राधेबाबू को सौंपा गया था। राधेबाबू ने यह काम बीच में किस कारण छोड़ दिया था ?

उत्तर—राधेबाबू जब लाला रामभरोसे के कहने से पूरियों का काम देखने के लिए बैठ गये तो उन्हें पता चला कि पूरियां घासलेट में बनाई जा रही हैं। उन्हें लगा लाला रामभरोसे नया चलन शुरू कर रहे हैं। अभी तक तो देशी घी में पूड़ियां बनवाई जाती रही हैं। यदि घासलेट की पूरियां ही दावत खाने वालों को दी जायेगी और उन्हें पता चलेगा कि ये राधेबाबू ने बैठकर बनवाई हैं, तो उनकी बड़ी बेइज्जती होगी, यह सोचकर वे पूरियां बनवाने का काम बीच में छोड़ बैठे थे। वे चाहते थे कि रामभरोसे देशी घी की पूड़ियां बनवायें। अपनी बेइज्जती का बहाना बनाकर लाला रामभरोसे का खर्चा बढ़ाना भी उनका उद्देश्य था। उनके मन में रामभरोसे के हित की भावना न थी। वे कृत्रिम सद्भाव रखते थे।

प्रश्न – राधेबाबू के मन का लाला रामभरोसे के प्रति जो शक, सन्देह का अविश्वास का भाव था वह कब दूर हुआ था ?

उत्तर—राधेबाबू लाला रामभरोसे की ओर से इस बात के लिए आश्वस्त नहीं थे रामभरोसे से उनके लिए नौकरी के मामले में सहायता करेंगे। यही कारण था कि वे लाला रामभरोसे के प्रति कृत्रिम सद्भाव, औपचारिक सम्बन्ध रखते थे। रामभरोसे के स्वर्ग सिधार जाने की बात सुनकर उन्हें दुःख नहीं हुआ था। जब राधेबाबू मुहर्रिरी की नौकरी प्राप्त करने के लिए मुख्तार साहब के पास गये तो मुख्तार साहब ने बताया था कि रामभरोसे ने भी आपको एवजी पर लेने के लिए कहा था। तब राधेबाबू का रामभरोसे के प्रति विद्यमान अविश्वास, शक का भाव दूर हो गया था। उनको रामभरोसे की याद आयी थी। उनमें लाला रामभरोसे के प्रति श्रद्धा उमड़ आई थी।

प्रश्न—'नौकरीपेशा' कहानी के शीर्षक के औचित्य पर, उसकी सार्थकता पर विचार कीजिए।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में नौकरीपेशा लोगों के बारे में ही वर्णन किया गया है, इसीलिए कहानी को यह शीर्षक दिया गया है। गांव से उखड़े लोग, जो शहर में आकर नौकरी पेशा अपनाने लगे थे, उनके व्यवहार, उनकी आर्थिक स्थिति, उनकी दिखावे की प्रवृत्ति आदि के बारे में प्रकाश डाला गया है। राधेबाबू तो अपना परिचय ही नौकरीपेशा आदमी के रूप में दिया करते थे। कहानी के

प्रमुख पात्र राधेबाबू और लाला रामभरोसे दोनों का पेशा नौकरी करना था। राधेबाबू के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि गांव के कम पढ़े लोगों को शहर में छोटी-मोटी नौकरी पाने के लिए किस तरह दौड़-धूप करनी पड़ती है और किस तरह वे गांव के बजाय शहर में रहना अच्छा मानते हैं और परेशान होते रहते हैं। नौकरी के पेशे को अपनाने वालों के बारे में होने के कारण ही इस कहानी का यह शीर्षक उचित है, सार्थक है।

प्रश्न—राधेबाबू की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—राधेबाबू प्रस्तुत कहानी के नायक हैं। उनके चरित्र की विशेषताओं में मुख्य ये हैं—नौकरीपेशा आदमी के रूप में परिचय देने में सन्तोष अनुभव करना, बाबू कहलवाने में गर्व महसूस करना, नौकरी पाने के लिए श्रम करना और जागरुक रहना, अनेक नौकरियों का अनुभव रखना, सबको खुश करने का स्वभाव, किसी की नाराजी सहन करने में अक्षम, झूठे रौब का प्रदर्शन, दिखावा करने की प्रवृत्ति, ऑफिसों की प्रशंसा करने वाले, अपनी प्रशसा करने वाले, कृत्रिम सद्भाव रखने वाले आदि।

राधेबाबू को कोई स्थायी बड़ी नौकरी प्राप्त न थी। वे नौकरी प्राप्त करने हेतु जगह-जगह घूमा करते थे। उन्हें बाबू कहे जाने पर खुशी होती थी, अस्थायी रूप से वे अनेक दफ्तरों में काम कर चुके थे। उन्हें इक्कीस वर्ष का नौकरी का अनुभव प्राप्त था। उन्हें प्रायः किसी की एवजी में नौकरी मिल पाती थी। वह कम समय के लिए होती थी इसलिए ऑफिसरों आदि से नई नौकरी के लिए मिलते-जुलते रहते थे। वे हर दफ्तर में सबको खुश रखने का प्रयत्न करते थे और छुट्टी में भी काम कर देते थे। कोई नाराज हो जाता तो उनका जैसे दिल धड़कने लगता था, रात की नींद हराम हो जाती थी। वे पत्नी के आगे अपने रौब की, प्रभाव की चर्चा करते थे। वे कभी किसी भी दफ्तर की बुराई न करते थे। वे यों तो लाला रामभरोसे को दद्दा कहते थे पर मन से उनका भी हित नहीं चाहते थे। उन्होंने दद्दा से देशी घी की पूरियों की दावत दिलवाकर उनका खर्चा बढ़ा दिया था रामभरोसे के निधन का समाचार पाकर भी उन्हें दुःख नहीं हुआ था। वे दिखावे की भावना रखते थे इसलिए छुट्टी के दिन का उपयोग कोट, पम्प शू और साईकिल को चमकाने में किया करते थे।

प्रश्न—लाला रामभरोसे के चरित्र की विशेषताएं बताइये।

उत्तर—लाला रामभरोसे का परिवार गांव से कस्बे में आकर रहने लगा था। लाला रामभरोसे कस्बाती होने में खुशी अनुभव करते थे। वे धीरे-धीरे कस्बे के लोगों का रहन-सहन, चालाकी, दिखावा अपनाते जा रहे थे। वे अपनी परचूनी की दुकान छोड़कर बाबू बनने की इच्छा से एक मुख्तार साहब के मुन्शी हो गये थे। वे गैर सरकारी नौकरी को अच्छा समझते थे पर कस्बाती लोगों की देखादेखी

जिसे अच्छा समझते थे उसे ही बुरा बताने लगे थे। इसी कारण वे बड़ाई सरकारी नौकरी की करते थे। उन्होंने नाती की खुशी में भोज देने का आयोजन किया था। उन्होने घासलेट की जगह देशी घी की पूरियां बनवाई थीं, लाउडस्पीकर लगवाया था। वे कस्बाती होने का प्रयत्न अवश्य कर रहे थे पर आत्मीय और घनिष्ठ व्यक्तियों के प्रति हमदर्द ही रहते थे। राधेबाबू शक करते थे कि रामभरोसे मेरे लिए नौकरी को सिफारिश नहीं करेंगे परन्तु मरने से पहले रामभरोसे ते मुख्तार साहब से राधेबाबू को नौकरी पर लगाने के लिए निवेदन किया था।

6. रानी माँ का चबूतरा

प्रश्न—'रानी माँ का चबूतरा' कहानी का यह शीर्षक क्यों रखा गया है?

उत्तर—प्रस्तुत कहानी में रानी माँ के चबूतरे की पूजा करने के बारे में वर्णन किया गया है। वह चबूतरा नगर-सेठ की पत्नी रानी माँ की याद में एक बगीचे में बनवाया गया था। जहाँ हर पूर्णिमा को नगर की औरतें दीया जलाने जाती थीं और अपने बच्चों के लिए मनौती मनाती थीं। सेठ को पत्नी के बच्चे को शीतला रोग हो गया था। एक साधू के कहने से बच्चे को रोग मुक्त कराने, शीतला के प्रकोप से बचाने के लिए सात दिन तक अन्न जल का त्याग किया था। बच्चा तो ठीक हो गया था पर वह समाप्त हो गयी थी। उसी की स्मृति में चबूतरा बनवाया गया था। उस दानी माँ की कथा कहने सुनने को महिलाएं पुण्य का काम मानती थीं। उस गांव की गुलाबी ही एक ऐसी औरत थी जो चबूतरे को महत्त्व नहीं देती थी। इस प्रकार पूरी कहानी रानी माँ के चबूतरे से जुड़ी हुई है। इसीलिये कहानी का यह शीर्षक रखा गया है और यह उचित है।

प्रश्न—'रानी मां का चबूतरा' कहानी में उस चबूतरे पर दिया जलाने का बच्चों की मनौतियां मानने से कहां तक संबंध है?

उत्तर—रानी मां के चबूतरे का महत्व मुख्य रूप से महिलाओं के लिए था। महिलाएं अपने बीमार बच्चों के स्वस्थ होने की कामना लेकर उस चबूतरे पर दीया जलाती थीं। व सन्तान रहित महिलाए भी सन्तान प्राप्त करने की कामना से पूर्णिमा के दिन उस पर दीया जलाती थीं। रानी ने धन्नी को इसलिए गॉव बुलाया था ताकि उससे रानी मां के चबूतरे पर पूर्णिमा के दिन दीया जलवा कर उससे संतान प्राप्ति की मनौती मनवाई जा सके। धन्नो को ऐसा करने के बाद संतान प्राप्त हुई भी थी। नगर-सेठ की पत्नी रानी ने अपने पुत्र को स्वस्थ देखने के उद्देश्य से ही सात दिन तक अन्नजल न ग्रहण करके अपने प्राण त्याग दिये थे। इस प्रकार इस काहानी में चबूतरे का महत्व संतानों से संबंधित है।

प्रश्न—गुलाबी को गाँव के लोग क्यों पसन्द नहीं करते थे ?

उत्तर—बस्ती में मेलजोल से रहा जाता है गुलाबी में यह विशेषता नहीं थी। इस कारण उससे कोई बात भी नहीं करना चाहता था। काकी तो उसके बारे में कहती थी कि नाम मत ले उस चुड़ेल का मेरे सामने।' वह न तो बस्ती वालों से बात करती थी और न किसी से कोई संबंध पूछने पर जवाब न देकर झगड़ पड़ती थी। वह अपने बच्चों को दिन में कोठरी में बन्द कर जाती थी और बच्चे दुःखी होते रहते थे। वह अन्य महिलाओं की तरह की नहीं थीं उसका स्वभाव बहुत कर्कश था। उसने अपने पति को घर से निकाल दिया था। वह धर्म संबंधी कार्यों में भाग नहीं लेती थी।

प्रश्न—काकी की दृष्टि में गुलाबी चुड़ैल और कसाइन कैसे थी ?

उत्तर—गुलाबी गांव की अन्य महिलाओं की तरह आचरण करने वाली सामान्य नहीं थी। उसका व्यवहार विचित्र था। वह किसी से कोई सम्बन्ध नहीं रखती थी। उसमें सामाजिकता की विशेषता न थी। वह एकाकी जीवन व्यतीत करती थी। वह स्वभाव से कर्कश थी। वह मजदूरी करने जाती थी तो अपने बच्चों को ताले में बन्द कर जाती थी। उसने अपने आदमी को घर से निकाल दिया था। कोई उसे सुझाव भी दे देता तो उससे झगड़ा कर देती थी। इसी कारण काकी गुलाबी को चुड़ैल, कसाइन आदि कहती थी। काकी धार्मिक स्वभाव की थी। गुलाबी पूजा पाठ में भी बिल्कुल विश्वास न करती थी।

प्रश्न—गुलाबी का जीवन दुःखपूर्ण था, स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—गुलाबी का पति शराबी था जो गुलाबी द्वारा कमाकर लाए गये रुपयों को खर्च करता था इस कारण गुलाबी ने उसे घर से निकाल दिया था। इस प्रकार पति के कारण भी गुलाबी दुःखी थी। दूसरी, उसे अपनी मजदूरी से ही अपना और बच्चों का गुजारा करना पड़ता था। दिन में मजदूरी करना, बच्चों को संभालना, घर का काम करना यह सब उसी की जिम्मेदारी थी। वह बहुत व्यस्त रहती थी। उसे किसी के पास बैठने की फुर्सत भी नहीं थी। यह भी उसके दुःख का एक कारण था। उसका स्वभाव कर्कश था इस कारण वह किसी के साथ अपना मन भी नहीं बहलाती थी और घुटती, दुःखी होती रहती थी। वह कई दिन तक तो कुछ खाने को भी प्राप्त नहीं कर सकी थी। वह भूखी रहकर मर गई थी। अपने स्वाभिमान और जिद्दी स्वभाव की विवशता के कारण वह किसी से न तो अपना दुःख कहती थी न सहायता लेती थी। इन कारणों से वह दुःखी ही रही थी।

प्रश्न—गांव वाले गुलाबी को परेशान करते थे। क्या यह कथन सही है ?

उत्तर—यह कथन सही नहीं है। गांव वाले उसे परेशान नहीं करते थे। वे तो उसकी दशा देखकर उसके प्रति सहानुभूति, दया का भाव रखते थे और उसकी सहायता करना चाहते थे पर वह अपने कर्कश, झगड़ालू स्वभाव के कारण किसी का सुझाव तक सुनना नहीं चाहती थी। काका उससे बात करने की, सुझाव देने की कोशिश करते तो वह उन्हें सचेत कर देती थी कि खबरदार जो मुझ से बात की। मैं आपको भी दो चार सुना दूंगी। उसे सुझाव दिया था कि बच्चों को शिशु सुरक्षा केन्द्र में प्रवेश दिला दे, तो वह सुझाव भी उसने नहीं माना था। रामेसुर ने उसकी लड़की को चूड़िया दे दी थी तो गुलाबी ने बखेड़ा खड़ा कर दिया था। वह किसी से किसी तरह की सहायता लेना ही न चाहती थी। वह स्वयं एकाकी जीवन व्यतीत करती थी।

प्रश्न—गुलाबी का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर—गुलाबी ही 'रानी मां का चबूतरा' कहानी का सबसे प्रमुख पात्र है। वह विचित्र स्वभाव की नारी है। वह कर्कश, निर्दयी, एकाकी जीवन व्यतीत करने वाली, दूसरों की बात भी न सुनने वाली, हेकड़ी रखने वाली, परिश्रमी, क्रोधी, जिद्दी, स्वाभिमानी, असहनशील नारी थी। पूजा पाठ में उसका कोई विश्वास न था। गांव की महिलाएं शाम को रानी मां के चबूतरे पर दीया जलाया करती थीं पर गुलाबी को यह सब पसंद न था। वह रानी माँ की कथा भी नहीं कहती, सुनती थी। वह काका के सुझाव को भी पसंद नहीं करती थी। रानी और गोपाल ने जब उससे कुछ पूछ लिया था तो वह उससे झगड़ पड़ी थी। उसने अपने शराबी पति को घर से बाहर निकाल दिया था। वह मजदूरी करके अपना और बच्चों का पेट पालती थी। वह ऐसी कठोर थी कि अपने बच्चों को कोठरी में बन्द कर जाती थी और उन्हें अक्सर पीट देती थी। कि वह गांव वालों के पास भूलकर भी नहीं बैठती थी। वह ऐसे स्वभाव की थी कि गांव वालों की किसी प्रकार की सहायता स्वीकार नहीं करना चाहती थी वह गरीबी की हालत में ही रही और भूखी रहकर मरी। उसे कभी हंसते प्रसन्न रहते नहीं देखा गया था। जिन्दगी उसके लिए बोझ थी। वह अपने बच्चों से कभी भी स्नेह के दो शब्द न कहती थी। गांव के बुजुर्ग व्यक्ति काका ने उसे कई बार समझाने का प्रयत्न किया था पर वह उनसे भी झगड़ा करने की धमकी देती थी।

प्रश्न – 'रानी मां का चबूतरा' कहानी का कथानक प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—कहानी का कथानक बस्ती की महिलाओं की रानी मां की कथा कहने सुनने के महत्व की चर्चा से शुरू हुआ है। काकी रानी मां की कथा सुनाती है। रानी ने धन्नी को भी उसकी ससुराल से बुलव लिया था ताकि पूर्णिमा को वह भी रानी मां के चबतरे पर दीया जलाकर सतान के लिए मनौती कर सके। इस

साल पहले नगर सेठ के बेटे पर शीतला का प्रकोप हुआ था। एक साधु ने सेठ की पत्नी को सुझाव दिया था कि यदि वह सात दिन तक अन्नजल का त्याग करदे तो लड़का ठीक हो जाएगा। सेठ की पत्नी ने ऐसा ही किया। बच्चा तो ठीक हो गया पर सेठ की पत्नी जीवित न रह सकी। उसे रानी मां कहा जाता था। सेठ ने बगीचे में उसकी याद में चबूतरा बनवा दिया। गांव की महिलाएं पूर्णिमा की शाम को चबूतरे पर दीया जलाती थीं और अपने बच्चों के लिए मनौती मनाती थीं। धन्नो ने भी ऐसा ही किया था। महिलाओं में ऐसा विश्वास था कि रानी मां का आशीर्वाद अकारथ नहीं जाता। धन्नो को भी संतान प्राप्त हुई थी। गोपाल ने काकी से कहा कि तुम गुलाबी से भी दीया जलवा दो। काकी गुलाबी का नाम सुनकर कह उठी कि उस चुड़ैल का नाम मत लो। वह तो कसाइन है। वह तो चबूतरे की ओर मुंह भी नहीं करती। काका ने काकी से कहा कि गुलाबी को क्यों कोसती है। वह तो यों ही दुःखी है। काकी ने कहा कि वह बड़ी हेकड़ी दिखाती है। उसने अपने आदमी को भी घर से निकाल दिया है और अपने बच्चों को कोठरी में बन्द कर जाती है। धन्नो ने गुलाबो से एक बालक गोद लेना चाहा था। गुलाबो यह प्रस्ताव सुनकर उससे झगड़ पड़ी थी। उसने दीया जलाने की बात सुनकर भी कटु शब्द कहे थे। काका ने गुलाबी को सुझाव दिया था कि वह भी सबके साथ मिल बैठकर अपना मन बहला लिया करे। इस पर गुलाबी ने काका को भी बात न करने के लिए चेतावनी दे दी थी। एक दिन रामेसुर ने गुलाबी की लड़की मेवा को चूड़ियाँ दे दी थीं तो गुलाबी ने मेवा को पीटा था और शोर मचाया था। काका ने गुलाबी को सुझाव दिया था कि वह अपने बच्चों को सरकारी शिशु सुरक्षा केन्द्र, में प्रवेश दिला दे तो उसने यह सुझावा भी नहीं माना था। वह मजदूरी करके अपना और बच्चों का पेट भरती थी। बाद में उसने जैसे तैसे शिशु सुरक्षा केन्द्र में पांच रुपये फीस के जमा किये थे। वह पेट भरने लायक भी कमाने में असमर्थ रही तो दो-तीन दिन भूखी रही और मर गई थी।

प्रश्न—'रानी मां का चबूतरा' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'रानी मां का चबूतरा' कहानी ग्रामीण जीवन पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से लिखी गई है। इसमें ग्रामीण महिलाओं के धार्मिक विश्वास को स्पष्ट किया गया है। नगर-सेठ की पत्नी रानी मां के माध्यम से बताया गया है कि वे रोगों के इलाज के लिए साधुओं की बात पर विश्वास कर लेती हैं, भूख प्यास सहकर भी अपने बच्चों को रोग मुक्त कराने में विश्वास करती हैं। किसी अच्छे चरित्र वाली महिला की याद में बनाये गये चबूतरे की पूजा करना पुण्य का काम मानती हैं। वे कुछ अन्धविश्वासी होती हैं।

दूसरे, ग्रामीण महिलाएं आपस में मिल जुलकर बैठकर मन बहलाया करती हैं। वे कभी तो धार्मिक कथा कहतीं-सुनती हैं और कभी दूसरों की कमी की चर्चा करतीं हैं। गांव में गरीबी होती है। गरीबी के कारण कोई-कोई महिला इतनी परेशान हो जाती है कि वह किसी से कोई संबंध नहीं रखती। वह एकाकी जीवन व्यतीत करती है, भले ही मन में घुटती रहे। गुलाबी के माध्यम से यही तथ्य स्पष्ट किया गया है।

ग्रामीण गरीब महिलाओं में भी स्वाभिमान होता है। यह स्पष्ट करना भी कहानी का उद्देश्य है। गुलाबी गरीब थी। वह मजदूरी करके अपना और अपने बच्चों का पेट भरती थी परन्तु वह किसी से कोई भी सहायता लेना अपने स्वाभिमान के खिलाफ समझती थी। वह भूख से मर गई पर उसने अपने लिए या बच्चों के लिए किसी की सहायता लेना स्वीकार नहीं किया। गरीबी महिलाओं को कर्कश, निर्दय, असामाजिक आदि बना सकती है। गरीबी के कारण गुलाबी ऐसी ही हो गई थी। उसे कभी प्रसन्न रहते नहीं देखा गया था। वह अपने बच्चों को भी स्नेह नहीं दे पाती थी। जिन्दगी उसके लिए भार हो गई थी।

इस प्रकार इस कहानी का उद्देश्य ग्राम के नारी जीवन का चित्रण करना है। इसमें ग्रामीण नगरियों के स्वाभिमान, उनकी विवशता, अन्धविश्वासों आदि का चित्रण किया गया है।

7. गौरू गाड़ी के यात्री

प्रश्न—'गौरू गाड़ी के यात्री' कहानी के शीर्षक पर विचार कीजिये।

उत्तर—प्रस्तुत कहानी का शीर्षक छोटा, आकर्षक, मौलिक, नवीनता युक्त कौतुहलोत्पादक एवं कहानी का प्रतिनिधित्व करने वाला है। शीर्षक पढ़कर यह उत्सुकता उत्पन्न होती है कि यात्री कौन था और उसकी कहानी में किस रूप में चर्चा हुई है। रामजी उस गाड़ी का यात्री ही था, गाड़िया लोहार था जो इधर-उधर घूमकर, जीवन व्यतीत करता था। उसी ने बीकानेर पर जोधपुर सेना का आक्रमण होने पर अपनी वीरता और अपने त्याग का परिचय दिया था। उसी से प्रेरित होकर राजपूतों ने शत्रु सेना का सामना करने का उत्साह दिखाया था और विजय भी पाई थी। कहानी में गाड़ी के यात्री का बड़ा भारी महत्व व्यक्त हुआ है। कहानी का वही केन्द्र बिन्दु है। इतना सब कुछ करने के बावजूद भी उसके अनाथ परिवार को फिर घुमक्कड़ जीवन ही व्यतीत करना पड़ा था। उसे त्याग, बलिदान का कोई प्रतिफल न मिला था। पाठकों की उस व्यक्ति के प्रति सर्वाधिक सहानुभूति रहती है। इन कारणों से गाड़ी के यात्री शीर्षक उचित है। कहानीकार ने व्यक्त करना चाहा है कि उस बलिदान के परिवार के सदस्यों को तो फिर भी यात्री बने

रहना पड़ा, उनको तो संकट और बढ़ गया था। उसने उस गाड़ी में निकले अपने पूर्वजों की आन बान की रक्षा कर दिखाई थी।

प्रश्न—रामजी लोहार के गौरू गाड़ी घर के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर—रामजी गाड़िया लोहार था, जो एक गाड़ी में अपने घर परिवार को लेकर घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करता था। उसके पूर्वज भी मेवाड़ पतन के समय गौरू गाड़ी में बैठकर चित्तौड़ छोड़कर उसे पुनः प्राप्त करने तक प्रतिज्ञाओं का पालन करके निकल पड़े थे। गाड़ी ही रामजी का घर थी। यदि वह बीकानेर पर हुए जोधपुर सेना के आक्रमण के समय युद्ध में न जाता तो भी उसे कोई हानि होने वाली न थी। उसे तो शत्रु की हार और बीकानेर की विजय के बाद भी कोई लाभ नहीं मिला था। उसके परिवार वालों को यह बड़ा भारी घाटा अवश्य हुआ था कि वे रामजी बिना अनाथ हो गये थे। वे अपनी गाड़ी में अपना सामान लादकर वहां से अन्यत्र चले गये थे। गाड़ी ही रामजी के परिवार का घर था जिसे वह कहीं भी बसा सकता था। उसने अपना बलिदान कर अपने परिवार को अनाथ बना दिया था। क्योंकि बीकानेर राज्य से उसके परिवार को कोई भी प्रतिफल न मिला था। बीकानेर राज्य ने तो उसके प्रति एक प्रकार से कृतघ्नता ही दर्शायी।

प्रश्न—कहानी में रामजी लोहार के उदास होने का क्या कारण वर्णित है?

उत्तर—रामजी लोहार यह बीकानेर पर जोधपुर सेना का आक्रमण हुआ जानकर उदास था। उसे चिन्ता था कि महाराज दक्षिण की ओर गये हैं और राजपूत लोग राज्य की रक्षार्थ शत्रु का सामना करने का साहस नहीं दिखा रहे हैं। शत्रु अत्याचार भी कर रहे थे। यह रामजी के स्वभाव के विरुद्ध था कि वह अपनी आंखों के सामने अत्याचार होते देख सके। इन्हीं कारणों से वह उदास था। वह बीकानेर राज्य की दुर्दशा नहीं सहन कर सकता था।

प्रश्न—रामजी लोहार जोधपुर सेना के अत्याचार देखकर क्या सोचता था?

उत्तर—रामजी को अपने जातीय गौरव का ध्यान हो आता था। उसके पूर्वजों ने मेवाड़ के लिए अपने त्याग, बलिदान का परिचय दिया था। वैसा ही करना वह भी अपना फर्ज समझता था। उसने बीकानेर नरेश का नमक खाया था। वही नमक उसे नमक के हक को अदा करना अपना कर्त्तव्य मानकर सोच-विचार मग्न था। वह सोचता था कि वह क्या करें। वह अकेला था, राजपूत लड़ने के लिए तैयार न थे। वह ऐसे उपाय भी सोच रहा था जिनसे राजपूतों में लड़ने का जोश उत्पन्न किया जा सके। सोच-विचार कर ही वह अकेला शत्रु से लड़ने चल पड़ा था।

प्रश्न—रामजी लोहार के बलिदान का राजपूतों पर क्या प्रभाव पड़ा था ?

उत्तर—बीकानेर राज्य की रक्षा के लिए अकेला ही लड़ता हुआ जब रामजी लोहार वीर गति को प्राप्त हो गया तब राजपूतों में जोश आया था। उस अकेले को ही लड़ने के लिए जाता हुआ देखकर ठाकुर रामसिंह जी ने उसे हथियार दिये थे। ठाकुर पृथ्वीराज की पत्नी ने अपने पति को धिक्कारा था। पृथ्वीराज और हिन्दसिंह ने आगे बढ़कर राजपूतों का नेतृत्व कर शत्रु पर धावा बोल दिया था और वे विजय भी रहे थे। इस प्रकार बीकानेर की विजय रामजी लोहार के बलिदान से उत्पन्न जोश का ही परिणाम थी।

प्रश्न—रामजी लोहार के वीर गति को प्राप्त होने के बाद का वर्णन कीजिए।

उत्तर—रामजी लोहार शत्रुओं द्वारा मार दिया गया था। तब दुर्ग के द्वार के रक्षकों का खून खोल उठा था। वे मोर्चा लगाकर डट गये थे। दो सैनिकों ने पृथ्वीराज और हिन्दसिंह को रामजी के मरने का समाचार दिया तो सुबह होते ही वे राजपूतों को लेकर युद्ध क्षेत्र में आ डटे थे और विजयी रहे थे। रामजी के बलिदान की प्रशंसा हुई थी। रामजी की अर्थी निकली पर उसकी दाह क्रिया में कोई राव न आया था, न कोई जुलूस निकाला गया था। दसरे दिन दरबार में अवश्य विजयोत्सव मनाया गया था। रामजी की बेचारी पत्नी तो अपने बच्चों को गाड़ी में बिठाकर असहाय सी अन्यत्र चली गई थी।

प्रश्न—'गौरू गाड़ी के यात्री' कहानी का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—रामजी लोहार गौरू गाड़ी के पास बैठा हुआ था। वह गाड़ी ही उसका घर थी। बीकानेर पर शत्रु की सेना चढ़ आई थी। तब उसे अपने पूर्वजों का ध्यान आया था कि उन्होंने अपने त्याग और बलिदान से मेवाड़ के गौरव को फिर से जाग्रत कर दिया था। वह उदास था। वह जोधपुर की सेना को अत्याचार करते हुए देखकर दुःखी था। उसने बीकानेर नरेश का नमक खाया था और आज उसके हक को चुकाने का उपयुक्त अवसर था। उसे दुःख था कि राजपूत लोग शत्रु का सामना करने का साहस नहीं कर रहे। कई सामन्त, सरदार तो शत्रु से जा मिले थे। उसने गढ़ के रक्षक से कहा था कि वे अपने भाई-बन्धुओं को युद्ध के लिए आमंत्रित करें पर उन्होंने अपनी असमर्थता दर्शायी थी। वह ठाकुर रामसिंह के डेरे पर गया था। उन्होंने उसे हथियार और अश्व दिया था। रामसिंह ने जैतसी पड़िहार आदि के पास कुछ सन्देश भी भेजा था। तब रामजी अकेला ही युद्ध के लिए निकल पड़ा था। ठाकुर पृथ्वीराज की पत्नी ने उसे लड़ने के लिए जाता हुआ देखकर अपने पति को धिक्कारा था। पथ्वीराज और हिन्दसिंह ने युद्ध की बागडोर

सम्भालीं वीरों को एकत्र किया। रामजी तब तक वीर गति को प्राप्त हो चुका था। सुबह राजपूतों ने शत्रु का सामना किया और विजय हासिल की। रामजी की अर्थी के साथ कोई राव भी न गया था। दूसरे दिन दरबार में विजय की खुशी मनाई गई। रामजी की विधवा जेठा अपने बच्चों को अपनी गाड़ी में बिठाकर अन्यत्र चली गई थी।

प्रश्न—'गौरू गाड़ी के यात्री' कहानी का उद्देश्य समझाइये।

उत्तर—प्रस्तुत कहानी का अपना उद्देश्य है। यह बड़ी प्रेरणादायक कहानी है। इसके द्वारा एक ओर तो सामन्ती जीवन का चित्रण किया गया है और दूसरी ओर पददलित वर्ग के त्याग का, इसकी उपेक्षा का। इससे देश भक्ति, कर्त्तव्य परायणता, त्याग, बलिदान, कृतज्ञता का भाव अपनाने की प्रेरणा भी देनी चाही है। लेखक ने स्पष्ट करना चाहा है कि सामन्त, सरदार विलासी जीवन व्यतीत करते थे और बहुत बार वे वीर होने के बावजूद अपने कर्त्तव्य की उपेक्षा कर देते थे जो उन के देश भक्ति के अभाव की सूचक है। जिन्हें पददलित किया जाता रहा है उनमें भी देश भक्ति, त्याग और बलिदान की गौरवमय भावना हो सकती है, यह भी स्पष्ट करना चाहा है। लेखक बताना चाहता है कि दलित वर्ग की आवश्यक रूप से उपेक्षा की जाती रही है। उसे सम्मान दिया जाना चाहिए था। सामन्त वर्ग दलित वर्ग को कोई श्रेय, कोई महत्त्व नहीं देता था। वह अपनी वाह-वाही चाहता था। तभी तो रामजी लोहार को उसके त्याग का कोई पुरस्कार नहीं दिया गया था, उसे उचित सम्मान नहीं दिया गया था। इसका प्रमाण यह है कि उसकी अनाथ विधवा जेठा असहाय होकर अपने बच्चों को गाड़ी में बिठाकर अन्यत्र चली गई थी।

प्रश्न—प्रस्तुत कहानी में रामजी लोहार के चरित्र की कौन-सी विशेषताएं व्यक्त हुई हैं?

उत्तर—इस कहानी का नायक रामजी लोहार है। उसका ही चरित्र विस्तार से चित्रित हुआ है। उसके चरित्र की ये विशेषताएं हैं--देशभक्ति, कृतज्ञता, वीरता, इज्जत का ध्यान रखने वाला, अत्याचार न सहन करने वाला, पूर्वजों की ख्याति बनाये रखने वाला, सूझ-बूझ वाला, निर्भीक, प्रेरणादायक व्यक्तित्व आदि। रामजी बीकानेर की सेना में काम कर चुका था। जब जोधपुर की सेना ने बीकानेर पर आक्रमण किया तो दुःख हुआ था। वह उसे परतन्त्र नहीं देख सकता था। उसने बीकानेर नरेश का नमक खाया था। उसमें कृतज्ञता की भावना थी इसलिए वह नमक का हक चुकाना अपना फर्ज समझता था। वह वीर था। तभी तो अकेला ही शत्रु सेना का सामना करने जा डटा था। शत्रुओं के समझाने-डराने पर भी

उसने युद्ध से मुंह नहीं मोड़ा था। वह प्राण रहते हटा नहीं था। उसमें डर की भावना न थी। तभी तो अकेला होते हुए भी लड़ने चला गया था। उसे अपने पूर्वजों की ख्याति का ध्यान था। वह कृतघ्नता और कायरता का परिचय देकर उनकी ख्याति नहीं मिटने देना चाहता था। वह किसी पर हो रहे अत्याचार को सहन नहीं कर पाता था। उसने कहा भी था कि मैं मां-बहिनों पर होते हुए अत्याचार को नहीं देख सकता। वह समस्या के उत्पन्न होने पर उसके समाधान के लायक सूझ-बूझ रखने वाला था। उसने आलसी, कर्त्तव्य विमुख, भयभीत राजपूतों में नया जोश लाने का जो उपाय किया था वह उसी की सूझ-बूझ की देन था। उसका व्यक्तित्व दूसरों को प्रेरणा देने वाला था। उसी के त्याग-बलिदान से बीकानेर राज्य के राजपूतों को लड़ने की प्रेरणा मिली थी और वे जीत पाये थे। इस प्रकार रामजी लोहार का चरित्र उज्ज्वल, महान् और अनुकरणीय था।

प्रश्न—'कथा सौरभ' की कहानियों के पात्रों में से आपको कौनसा पात्र सर्वाधिक प्रभावित करता है, और क्यों?

उत्तर—प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियों के पात्रों में से हमें 'ममता' नामक पात्र सर्वाधिक प्रभावित करता है। ममता प्रसाद जी की 'ममता' कहानी की नायिका है। वह अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण अपने पिता चूड़ामणी से भी अधिक श्रद्धा की पात्र बन गई है। मन्त्री चूड़ामणि तो शेरशाह से उत्कोच रूप में सोना लेकर एक प्रकार से गद्दारी का परिचय देते हैं, अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाते हैं। वे तो अपने कर्त्तव्य का पालन ममता के कहने-सुनने के बाद ही करते हैं। वे धन का लोभ रखते थे। शेरशाह भी रिश्वत देकर अनुचित कार्य करता है। रिश्वत लेना और रिश्वत देना दोनों गलत कार्य हैं, ममता की झौंपड़ी तो एक बादशाह को भी, हुमायूं को भी शरण देने वाली सिद्ध होती है। हुमायूं का ममता का आभारी दिखाकर प्रसाद जी ने ममता के चरित्र को बहुत ऊंचा उठा दिया है। ममता बादशाह हुमायूं से भी अपने कर्त्तव्य का कोई प्रति दान नहीं स्वीकार करती। वह मरते समय तक अपनी झौंपड़ी के स्थान पर महल नहीं स्वीकार करती। बादशाहों को भी कृतज्ञ, ऋणी बनाने वाला उसका चरित्र बहुत ऊंचा उठ गया है।

'ममता' राजा के मन्त्री की पुत्री थी। वह राजसी सुखों में पली थी, उसने दुःख देखें भी नहीं थे परन्तु जब उस पर विपत्तियों का पहाड़ टूटता तब वह कोई दुर्बलता नहीं दिखाती। वह अकेली उन्हें सहन करती है। उसका पति मर गया था, उसके पिता की हत्या कर दी गई थी, उसके निवास स्थान छिन गया था फिर भी वह किसी से कोई सहायता मांगती हुई दिखाई नहीं। देती वह बहुत कष्ट

सहिष्णु थी। इतना ही नही उसने अपनी परेशानी की स्थिति में भी अतिथि को बाट से छुटकारा दिलाया, हुमायूं को शरण दी। उसमें भारतीय संस्कृति के आदर्श जीवन्त रूप में विद्यमान थे। वह अतिथि सेवा को अपना कर्त्तव्य मानती थी। वह अपरिग्रही प्रवृत्ति की थी। उसमें त्याग की भावना थी। घर आये सोने को भी उसने ठुकरा दिया था। वह स्वाभिमानी थी। हराम का धन उसे ग्राह्य न था। वह धार्मिक पवित्राचरण वाली नारी थी। जब हुमायूं शरण प्राप्त करने उसके पास आया तब वह गीता का पाठ कर रही थी। उसमें समाज सेवा का भाव था। उसने वृद्धावस्था से पहले अपने समाज की जरूरत मन्द महिलाओं की सेवा की थी। पड़ौसी उसे श्रद्ध-सम्मान की दृष्टि से देखते थे। वृद्ध ममता की पड़ौस की महिलाओं ने श्रद्धा भाव से सेवा सुश्रुषा की थी। इस प्रकार ममता का चरित्र भारतीय नारी का आदर्श रूप था जो दूसरों को भी प्रेरणा दायक और अनुकरणीय था। वही चरित्र हमें सबसे अधिक प्रभावित करता है।

प्रश्न—'कथा सौरभ' कहानी संग्रह की कहानियों में से आपको कौनसी कहानी सबसे अच्छी लगती है और क्यों? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—'कथा सौरभ' कहानी-संग्रह में कई कहानियां हैं जैसे भी ममता एक गौ, 'प्रवासी'', 'नौकरीपेशा', 'रानीं मां का चबूतरा', 'गौरू गाड़ी के यात्री'. इनमें से हमें प्रेमचन्द जी का 'प्रेरणा' कहानी सबसे अच्छी लगती है। इसके कई कारण हैं।

1. इसका शीर्षक छोटा, आकर्षण, कौतूहलोत्पादक, मौलिक तथा कहानी का प्रतिनिधित्व करने वाला है। पूरी कहानी से उसका सम्बन्ध जुड़ा रहता है। शीर्षक के अनुसार ही छात्रों और अध्यापकों को इससे यह प्रेरणा मिलती है कि शरारतीं से शरारती छात्र में भी सुधार हो सकता है। उसमें सुधार असम्भव नहीं है।

2. इस कहानी का कथानक बड़ा सीधा-सरल है जो आसानी से समझ में आ जाता है। कहानी मनोरंजन की विद्या होती है और उसे पढ़कर मनोरंजन तभी हो सकता है जब कि उसका कथानक आसानी से समझ में आये। दूसरी बात यह है कि कथानक छात्रों और अध्यापक वर्ग से सम्बन्ध रखता है। अध्यापकों पर सुयोग्य नागरिक तैयार करने की बढ़ी जिम्मेदारी होती है। यदि वे छात्रों में सुधार करने की योग्यता न रखते हो या आलस्योवश सुधार का प्रयत्न न करते हैं तब तो समाज को अच्छे नागरिक नहीं दे पायेगा। इसका कथानक इसी विषय को लेकर गढ़ा गया है। यह एक समस्या को सुलझाने वाला है और इसमें वर्णित समस्या एक आम समस्या है। कथानक में सुगठितता है, प्रवाह है, वर्णन में कौतहल का

तत्त्व विद्यमान है। कथानक में आरम्भ, विकास, चरम सीमा, अन्त की भी स्थितियां विद्यमान हैं। जैसे चरम सीमा वहां आती है जहां सूर्य प्रकाश सभी छात्रों को रोकलेता है और उन्हें देर से एक साथ विद्यालय में आने की छूट देता है। वर्णन विश्वसनीयता पूर्ण है।

3. इसमें अधिक पात्र नहीं हैं। सूर्य प्रकाश का चरित्र ही सबसे अधिक विकास प्राप्त कर पाया है क्योंकि वही नायक है। चरित्र चित्रण में मनोवैज्ञानिकता है, सहजता है। जैसा कि प्रेमचन्दजी की विशेषता है, सूर्य प्रकाश के चरित्र-चित्रण में आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया गया है। पात्र कहानी को आगे बढ़ाने वाले, उसे रोचकता प्रदान करने वाले हैं।

4. कहानी में कथोपकथन सुन्दर, रोचक कहानी को आगे बढ़ाने वाले, चरित्र पर प्रकाश डालने वाले और अनुकूल वातावरण का निर्माण करने वाले हैं। वे पात्रानुकूल हैं। कथोपकथनो में नाटकीयता की विशेषता है।

5. कहानी की भाषा सरल, सहज, तथ्य को स्पष्ट करने वाली है। उसमें उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत के शब्दों से विविधता आ गई है। सूक्तियों और मुहावरों से भाषा में जीवन्ता आगई है। इस में वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक और सूक्ति शैलियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

6. कहानी की बड़ी विशेषता यह है कि यह एक महत्व पूर्ण गंभीर सयस्या को लेकर लीखी गई है। उद्दण्ड छात्र को अनुशासन में कैसे रखा गया और उसे कैसे अच्छा नागरिक बनाया जाय, यह एक बड़ी समस्या है। लेखक ने उसका पूरा समाधान तो नहीं प्रस्तुत किया लेकिन यह अवश्य स्पष्ट किया है कि शरारती छात्र को सुधारने की ओर से निराश नहीं होना चाहिए। उसका सुधार असम्भव नहीं होता। अध्यापक को तथा दूसरे लोगों को भी आशावादी होना चाहिए। इसके अलावा अनिवार्य शिक्षा तथा बच्चों को किस उम्र में पढ़ने भेजना चाहिए। इस बारे में लेखक ने महत्वपूर्ण बातें कही हैं। 'साहित्य जीवन के लिए' है इसलिए उसमें जीवन की व्याख्या रहनी ही चाहिए और वह इस कहानी में है। इस कारण यही कहानी हमें अच्छी लगती है।

सरस-एकांकी

1. कोमुदी महोत्सव

प्रश्न—'कोमुदी महोत्सव' एकांकी में एकांकीकार रामकुमार वर्मा ने सम्राट चन्द्रगुप्त के चरित्र को परम परम्परायुक्तता से भिन्न किस प्रकार चित्रित किया है?

उत्तर—उपन्यासों और नाटकों में चद्रगुप्त को चाणक्य के सामने बहुत ही अज्ञाकारी और अन्धभक्त दिखाया गया है। इस कारण उसके चरित्र की ऐतिहासिक गरिमा को ठेस पहुँचती है। ऐसा लगता है कि उसमें अपनी कोई योग्यता नहीं थी, वह जो कुछ था वह चाणक्य के कारण था। 'कौमुदी महोत्सव, में लेखक

ने चन्द्रगुप्त को अपने आप निर्णय लेने वाला मनस्वी और तेजस्वी चित्रित किया गया है। यह वर्णन परम्परागत वर्णन से भिन्न है। यह बात अलग है कि अंत में चाणक्य का चरित्र ही उसके चरित्र से अधिक महत्व का सिध्द होता है। फिर भी पहली बार चन्द्रगुप्त के चरित्र में नया परिवर्तन परम्परा से अलग हट कर उसके चरित्र का चित्रण तो हुआ है।

चन्द्रगुप्त यहाँ चाणक्य से परामर्श लिये बिना कौमुदी महोत्सव की घोषणा करने के लिए कह देता है। उस घोषणा को रोक देने पर चाणक्य को वह राजाज्ञा का उल्लघंन करने के लिए महामंत्री पद से भी हटा देता है। वह चाणक्य से बाकायदा तर्क वितर्क करता है, एक राजा की तरह अधिकारपूर्वक ओजस्वी ढंग से उसे अपराधी बताता है। वह चाणक्य के बिना ही शासन चलाने की बात कहता है। चाणक्य छोटे से अपराध के लिए व्यक्ति को मृत्यु दण्ड दे डालता था, चन्द्रगुप्त जनता के जीवन में नया प्रकाश लाने का प्रयत्न करता है। वह कलाकारों को पुरस्कारों की घोषणा करता है। इस प्रकार चन्द्रगुप्त यहाँ चाणक्य से पूछकर ही कार्य नहीं करता, स्वयं निर्णय अलेता है। यह बात अलग है कि एकांकी के अंत में चाणक्य की चरित्र ही उसके चरित्र पर छा जाता है और चन्द्रगुप्त चाणक्य से कहता है कि आपके बिना यह राज्य नष्ट हो जायेगा। राक्षस के गुप्तचर वसुगुप्त को समाहर्ता बनाकर, अलका का नृत्य की अनुमति देकर उसने गलती की थी

प्रश्न 2. इस एकांकी के आधार पर बताइये कि वसुगुप्त कौन था ?

उत्तर—वसुगुप्त को चन्द्रगुप्त कुसुमपुर का शासन बनने के बाद अपना नया समार्त्ता नियुक्त करता है। वसुगुप्त दूसरों को प्रसन्न करने वालो बातें करने मे कुशल था इसलिए चन्द्रगुप्त ने उसे समाहर्ता का पद दिया था। उसका काम 'कर' एकत्र करना था। चन्द्रगुप्त को ज्ञात न था कि वसुगुप्त नंद के मंत्री राक्षस का गुप्तचर है। वसुगुप्त ने कौमुदो महोत्सव आयोजित करना उस आयोजन के अवसर पर नर्तकी विष कन्या अलका का नृत्य करा कर चन्द्रगुप्त को मरवा डालने का षडयंत्र पूरा करना चाहता था बीच में चाणक्य द्वारा विफल कर दिया गया। चाणक्य ने ही उसके साथ षडयंत्र को स्पष्ट कराया था और चन्द्रगुप्त को मृत्यु से बचा लिया था। वसुगुप्त का विषकन्या अलका का झुठा आसव पिलवाकर चाणक्य ने उसे मृत्यु की गोद में सुला दिया था।

प्रश्न 3. किस कारण से चन्द्रगुप्त ने चाणक्य को महामंत्री के पद से हटा दिया था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त ने कुसुमपुर का शासन बनने पर नगर में कौमुदी महोत्सव कराने का प्रबंध किया था। उसकी घोषणा को महामंत्री चाणक्य ने रोक दिया था इससे चन्द्रगुप्त को लगा कि मेरी राजाज्ञा को लागू होने देने से रोक कर चाणक्य

ने राज मर्यादा का उल्लंघन किया। इसके लिए उसने चाणक्य को महामंत्री पद से हटा दिया था।

प्रश्न 4. यशोवर्मन ने वसुगुप्त से बातें करते समय क्या सन्देह व्यक्त किया था ?

उत्तर—वसुगुप्त यशोवर्मन के सामने यह स्पष्ट करना चाहता था कि चन्द्रगुप्त के कुसुमपुर में नया राजा बनने के बाद कुसुमपुर की जनता में उनके खिलाफ कोई दुर्भाव आदि नहीं रह गया है। यशो वर्मन को सन्देह था कि नन्द का मंत्री राक्षस कोई षड़यन्त्र कर सकता है। वह कुसुमपुर से बाहर चला गया है और छिपा रहकर किसी को माध्यम बनाकर चन्द्रगुप्त के खिलाफ कोई गड़बड़ी करा सकता है। वह उसकी ओर से सशंकित था और जागरूक रहना जरूरी समझता था।

प्रश्न 5. चन्द्रगुप्त कुसुमपुर का नया शासक बनने के बाद वहां की जनता के बारे में क्या सोचता था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त ने कुसुमपुर का वैभव देखा था। उसे लगा था कि कुसुमपुर की जनता में उत्साह का अभाव है। उनमें युद्ध के प्रति उमंग नहीं है। उसकी भीड़ का कोलाहल वैसा ही है जैसा कि अनेक शृंगाल एकत्र होकर कोलाहल करते हों। कुसुमपुर की जनता में बहादुरी का उसे अभाव लगा था। वे भीतर से डरे हुए लगे थे। वह चाहता था कि कुसुमपुर के लोगों में मानवीय गुणों का विकास हो, उनके मन से भय, निराशा के भाव दूर हों और उनमें नई उमंग, नये उत्साह का संचार हो ताकि कोई आक्रमण होने पर वे बहादुरी से उसका मुकाबला कर सकें। इसी उद्दश्ये से तथा अपने प्रति अच्छा भाव उत्पन्न करने के उद्देश्ये से उसने कौमुदी मोहोत्सव कराना चाहा था। वह उनमें नये जीवन का संचार करना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि जनता उसके प्रति असतोस का भाव रखे।

प्रश्न 6. वसुगुप्त चाणक्य में कौन सी विशेषताएँ मानता था ?

उत्तर—वसुगुप्त मानता था कि चाणक्य में मानवीय दृश्य को पहचानने की अन्तर्दृष्टि बहुत अधिक है। वे क्षणभर में मनुष्य के सम्पूर्ण कार्यक्रम को जान सकते हैं। वे जानते हैं कि कोई कार्य कैसे किया जाना उचित है। वसुगुप्त मानता था कि चाणक्य में अपूर्व बुद्धि, शक्ति और साहस का समन्वय है। वह इन विशेषताओं के क्षेत्र में चाणक्य को चन्द्रगुप्त से भी आगे मानता था। इसी कारण वह अपनी चाल चन्द्रगुप्त के आगे ही चलता था और चाहता था कि चाणक्य दूर ही रहें, उन्हें उसके कार्य के बारे में जहां तक संभव हो पता ही न चले।

प्रश्न 7. चन्द्रगुप्त की दृष्टि में राजनर्तकी के नृत्य का क्या महत्त्व था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त नन्द की भांति विलासी न था। वह नृत्य का महत्त्व भविष्य के युद्ध से पूर्व क्षणिक विश्राम प्रदान करने की दृष्टि से ही मानता था। वह नृत्य रूपी आवरण में राजनीति रूपी कृपाण की कठोरता को छिपाकर रखना चाहता था। वह राजनर्तकी के नृत्य से कुसुमपुर की जनता को आनन्द से विभोर

करना चाहता था। वह नन्द की भांति नृत्य से ऐसा अकर्मण्य नहीं बनना चाहता था कि शत्रु के आक्रमण का ध्यान ही न रखे और बर्बाद हो जाये।

प्रश्न 8. जब चाणक्य ने चन्द्रगुप्त की कौमुदी महोत्सव संबंधी राजघोषणा नहीं होने दी थी तो चन्द्रगुप्त ने चाणक्य के बारे में क्या सोचा था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त को यह जानकर क्रोध आया था कि चाणक्य ने उसकी प्रथम राजघोषणा रोक दी है। उसे लगा कि चाणक्य ने राजमर्यादा की अवहेलना की है। उसे लगा कि चाणक्य को घमंड हो गया है। उसने कुसुमपुर की विजय में जो सहयोग दिया उस विजय से उत्पन्न उसका गर्व बढ़ गया है। वह मानता था कि चाणक्य कुटिल राजनीतिक चाल चल रहा है। उसे लगा था कि चाणक्य ऐसा सोचता है कि उसके बिना मैं राज्य चलाने में असमर्थ हूँ। उसे चाणक्य का व्यवहार अपने खिलाफ विद्रोह जान पड़ा था। उसे चाणक्य ईर्ष्यालु लगा था। उसे चाणक्य हरेक कार्य को संदेह की दृष्टि से देखने वाला लगा था।

प्रश्न 9. चाणक्य ने कौमुदी महोत्सव के अवसर पर राजनर्तकी अलका के नृत्य के बारे में चन्द्र गुप्त के सामने क्या कहा था ?

उत्तर—चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से कहा था कि तुम कुसुमपुर के नये शासक होकर समझ बैठे हो कि यहां की जनता के मन में तुम्हारे प्रति अब कोई दुर्भाव नहीं है। तुम भूल रहे हो कि प्रजा के संस्कार जल्दी नहीं बदलते। जो प्रजा नंद के शासन में रही है वह इतनी जल्दी तुम्हारी भक्त नहीं हो सकती। जो लोग नन्द के प्रति सहानुभूति रखते हैं तुम्हारे खिलाफ विद्रोह चाहते हैं। नन्द का मंत्री राक्षस कुसुमपुर के बाहर रहकर यहाँ के नागरिकों के मन को तुम्हारे विरुद्ध विद्यमान अविश्वास का लाभ उठाकर तुम्हारे खिलाफ षड़यंत्र करना चाहता है। कुसुमपुर में महोत्सव नृत्य आदी उसी के षडयंत्र के अंग हैं। तुम्हें उत्सव के आनन्द में भुला कर वह राजनर्तकी विषकन्या अलका द्वारा समाप्त कराना चाहता है।

प्रश्न 10. आचार्य चाणक्य ने वसुगुप्त और अलका के बारे में क्या रहस्य, क्या सत्य प्रकट किया था ?

उत्तर चाणक्य महामंत्री थे। राजनीति में निष्णात थे। उन्होंने नन्द का समूल नाश किया था। उन्हें अनुमान था कि कुसुमपुर की जनता में से कोई जरूर नन्द वंश के प्रति सहानुभूति रखने वाला होगा। उन्होंने अपने ढंग से वसुगुप्त से प्रश्न करके जान लिया था कि वसुगुप्त भले ही अमरावती का निवासी हो पर वह कुसुमपुर आता अवश्य था। वसुगुप्त से यह भी जान लिया था कि वह वहां नन्द के प्रमुख उत्सवों में सम्मिलित होता था। उसने अलका का नृत्य भी देखा था। वह उसके नाम से परिचित था। चाणक्य ने उसे अलका के होठों से लगाया गया आसव पीने दिया तो वह मना

करने लगा था। इसी से सन्देह पुष्ट हो गया था कि अलका विषकन्या है वसुगुप्त अलका का झूठा आसव पीते ही समाप्त हो गया था जिससे स्पष्ट हो गया था कि अलका विषकन्या है। अलका चन्द्रगुप्त के पैरों की ओर गिरी थी जिससे चाणक्य ने जान लिया था कि वह अपने दांत गढ़ा कर चन्द्रगुप्त को मारना चाहती थी। चाणक्य ने स्पष्ट कर दिया था कि वसुगुप्त और अलका राक्षस मंत्री के गुप्तचर थे जो चन्द्रगुप्त को समाप्त करने की चाल चल रहे थे।

प्रश्न 11. अलका कौन थी और कौमुदी महोत्सव के अवसर पर नृत्य करने वाली उसकी क्या योजना थी ?

उत्तर—अलका नन्द की राजनर्तकी थी। वह विषकन्या थी। उसका प्रयोग शत्रु को मारने के लिए किया जाता था। नन्द के परास्त होने पर और चन्द्रगुप्त का कुसुमपुर का शासक बन जाने पर नन्द के राजमंत्री राक्षस ने चन्द्रगुप्त को समाप्त करने का षड्यंत्र रचा था। उसने वसुगुप्त और अलका को गुप्त चर बनाया था। वसुगुप्त ने चन्द्रगुप्त से कौमुदी महोत्सव आयोजित कराया और फिर राजनर्तकी अलका का नृत्य कराने की स्वीकृति ली। षड्यंत्र यह था कि नर्तकी अलका मौका पाकर चन्द्रगुप्त का स्पर्श प्राप्त करे ताकि उसे मार दिया जाय। जब चाणक्य को राजनर्तकी अलका के नृत्य के आयोजन का पता चला तो वह भांप गया था कि अवश्य ही राक्षस चन्द्रगुप्त को खतरा उत्पन्न करना चाहता है। जब नर्तकी अपना कार्य पूरा करने का अवसर न पा सकी तो वह मेरी रक्षा कीजिए कहती हुई चन्द्रगुप्त के पैरों पर गिरी। वह वास्तव में पैरों पर गिरकर पैरों में दांत गढ़ाकर उसे मारना चाहती थी किन्तु चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को हटने के लिए कह दिया था और वह दूर हट कर बच गया था। वसुगुप्त तो मर ही गया था, अलका को भी दण्ड भोगना पड़ा था।

प्रश्न 12. चाणक्य के चरित्र की विशेषताएं बताइये।

उत्तर—इस एकांकी में चाणक्य सबसे बड़ा राजनीतिवेत्ता है। यशोवर्मन, वसुगुप्त, चन्द्रगुप्त, सभी चाणक्य की प्रशंसा करते हैं। इन सबके आधार पर चाणक्य की चरित्र की विशेषताएं हैं—नीति निष्णात, बुद्धि एवं अन्तर्दृष्टि सम्पन्न, राजनीतिज्ञ, आयुर्वेद के ज्ञाता, मानव हृदय की परख रखने वाले, तेजस्वी, क्रोधी, स्वाभिमानी, बदले की भावना रखने वाले, तर्क-वितर्क करने में दक्ष। जब तक चन्द्रगुप्त चाणक्य द्वारा बताई हुई नीति पर चलता है तब तक सफल रहता है। जब वह अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य योजनाएं बनाता है तभी परेशानियों में उलझना शुरू हो जाता है। यदि बीच में चाणक्य ने आकर स्थिति न संभाली होती तो राक्षस मंत्री का षड्यंत्र सफल हो जाता और चन्द्रगुप्त अलका द्वारा समाप्त कर दिया गया होता। वह चन्द्रगुप्त का रोब नहीं सहन करता और

वह महामंत्री का पद छोड़कर तपोवन को चला जाता है। वह स्वाभिमानी था। उसे पद का लोभ नहीं था, सम्मान का भूखा था। वह सचमुच बहुत योग्य था और अपने विपक्षी को हराने की सामर्थ्य रखता था।

प्रश्न 13. वसुगुप्त की चरित्रिक विशेषताएं बताइये और बताइये कि उस की क्या योजना थी ?

उत्तर—'कौमुदी महोत्सव' एकांकी में वसुगुप्त एक महत्त्वपूर्ण पात्र है, उसके चरित्र की कई विशेषताएं व्यक्त हुई हैं—चन्द्रगुप्त की चापलूसी करने वाला, चन्द्रगुप्त को धोखा देने की चाल चलने वाला, महाराज नन्द की निन्दा करने वाला, बातून, चाणक्य से दूर रहने की कोशिश करने वाला, कुसुमपुर का नया समाहर्त्ता, योजनाएं बनाने वाला, झूठ बोलने वाला राक्षस का गुप्तचर।

वसुगुप्त कुसुमपुर के नये शासक चन्द्रगुप्त की बहुत प्रशंसा करता है। वह उसका स्नेह पात्र, विश्वासपात्र बनने की कोशिश करता है और कुछ हद तक अपने इस प्रयास में सफल भी रहता है। चन्द्रगुप्त उसे समाहर्ता बना देता है और अक्सर अपने साथ रखता है। वह चन्द्रगुप्त का विश्वासपात्र बनकर उसे धोखा देना चाहता था। वह विश्वास अर्जित करने नन्द की निन्दा करता था। वह बातें बनाने में तेज था, दक्ष था। वह अपना षडयंत्र पूरा करने के उद्देश्य से चाणक्य से प्रायः दूर ही रहने का प्रयत्न करता था और कोशिश करता था चन्द्रगुप्त चाणक्य से परामर्श न ले पाये। चन्द्रगुप्त उसकी चतुराई पकड़ने में असमर्थ रहा था इसलिए उसने उसे समाहर्त्ता बना दिया था और उसके कहने से राजनर्तकी अलका के नृत्य का आयोजन कराया था। वह झूठ बोलने में दक्ष था। उसने चन्द्रगुप्त को ज्ञात होने नहीं दिया था कि वह राक्षस का गुप्तचर है और मेरे प्राण लेने का जाल बिछा रहा है। ये तो चाणक्य थे जिन्होंने उसके रहस्य का, षड़यंत्र का उद्घाटन किया था और चन्द्रगुप्त को बचा लिया था। चाणक्य की चतुराई के आगे वसुगुप्त परास्त ही नहीं हुआ अपने प्राणों से भी हाथ धो बैठा।

प्रश्न 14. चन्द्रगुप्त की चारित्रिक विशेषताएं स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—चन्द्रगुप्त 'कौमुदी महोत्सव' का नायक है। वह आचार्य चाणक्य के सहयोग से नन्द को परास्त कर कुसुमपुर का शासक बनता है। एकांकी में उसके चरित्र की कई विशेषताएं व्यक्त हुई हैं जैसे—प्रजा से सम्मान प्राप्त, यशस्वी, प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व, विदेशी राजनीति को भी महत्त्व देने वाला, प्रजा का हितैषी, जनता में नये जीवन का संचार करने का इच्छुक, समारोहों में रुचि रखने वाला, कलाकारों को प्रोत्साहन देने वाला, उदार, गुणीजनों का प्रशंसक, अपमान न सहन करने वाला, अनुशासन प्रिय, अपने बाहुबल पर विश्वास करने वाला, न्याय प्रिय, गलती स्वीकार करने वाला।

चन्द्रगुप्त प्रजा का हित चाहने वाला और प्रभावपूर्ण व्यत्वि वाला शासक है इसलिए प्रजा उसे सम्मान करती है। वह विदेशी राजनीति की अच्छाइयों को अपनाने में बुराई न मानकर उन्हें प्रयोग में लाता है। वह कुसुमपुर की सहमी हुई जनता में नवीन उत्साह, नया जीवन लाने को प्रयत्नशील रहता है। वह प्रजा का मनोरंजन करने वाले समारोहों का आयोजन कराने में बड़ी रुचि रखता है। कौमुदी महोत्सव उसने इसी उद्देश्य से मनाना चाहा था। वह केवल अपनी प्रशंसा का भूखा न होकर कलाकारों का उत्साह बढ़ाने वाला है। वह जनता की भलाई के कार्यों में निजी चन्द्रकोष से ही धन खर्च करने में कंजूसी नहीं करता। वह गुणीजनों की प्रशंसा करता है। वह अनुशासन पसंद करता है। उसका उल्लंघन करने वाले को दण्ड देने में भी नहीं हिचकता है। उसे राजा होने के नाते अपना अपमान सह्य नहीं। वह किसी पर निर्भर न रहकर अपने बाहुबल पर भरोसा रखता है। वह न्याय करने वाला है। उसे अपनी गलती स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होता। वह चाणक्य जैसी अन्तर्दृष्टि न रखते हुए भी कुशल शासक है।

प्रश्न 15. 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर – चाणक्य की नीति से चन्द्रगुप्त नन्दवंश का समाप्त कर कुसुमपुर का नया शासक बना था। जनता ने उसका स्वागत किया था। चन्द्रगुप्त ने कौमुदी महोत्सव कराने की घोषणा करने का आदेश दिया था। उत्सव की जोरदार तैयारियां हुई थीं। वसुगुप्त के सुझाव से चन्द्रगुप्त ने राजनर्तकी अलका के नृत्य का भी आयोजन किया था। चाणक्य को ज्यों ही आयोजन का पता चला तो उसे शक हुआ कि इसके पीछे राक्षस मंत्री का षड्यंत्र होगा। वह सैनिक साथ में लेकर आया। उसने कौमुदी महोत्सव की घोषणा पहले ही रद्द करादी थी। वह चन्द्रगुप्त का महामंत्री था। उसने वसुगुप्त समाहर्त्ता और राजनर्तकी अलका को बन्दी बनवा लिया। चन्द्रगुप्त राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाले चाणक्य पर नाराज हुआ। उसने चाणक्य से इसका कारण पूछा। स्वाभिमानी चाणक्य ने सही-सही कारण बता दिया। चन्द्रगुप्त ने राजाज्ञा का उल्लंघन करने के अपराध में चाणक्य को महामंत्री पद से च्युत कर दिया और उनसे वसुगुप्त तथा अलका पर लगाये गये आरोप को प्रमाणित करने के लिए कहा। चाणक्य ने अपनी इच्छा से यह स्पष्ट किया। उसने सिद्ध कर दिया कि वसुगुप्त और राजनर्तकी अलका राक्षस के गुप्त-चर हैं। वसुगुप्त अलका विषकन्या के होठों से लगाये गये आसव को पिलाने से समाप्त हो गया। अलका ने चन्द्रगुप्त के पैरों की तरफ गिरकर उसके पैरों में अपने

दांत गढ़ाकर उसे समाप्त कर देने का उपक्रम किया। चाणक्य ने चन्द्र गुप्त को दूर हटने के लिए कहा और चन्द्रगुप्त दूर हट गया। इस प्रकार वह मृत्यु के मुख में जाने से बच गया। चाणक्य चन्द्र गुप्त के नाराज होने पर पहले ही धमकी दे चुका था कि मैं तुम्हें भी नन्द की तरह समाप्त कर सकता हूं। मैं अपना अपमान नहीं सह सकता। वह षड़यन्त्र का उद्घाटन कर तपोवन को जाने लगा तो चन्द्रगुप्त ने चाणक्य को रुक जाने के लिए मनाया। उसने कहाकि आपके बिना यह राज्य नष्ट हो जायेगा।

प्रश्न 16. 'कौमुदी महोत्सव' एकांकी का उद्देश्य बताइये।

उत्तर—यह एकांकी डॉ. राम कुमार गुप्ता ने मुख्यतया चन्द्रगुप्त के परम्परागत ढंग के चरित्र को भिन्न रूप में चित्रित करने के उद्देश्य से लिखा है। उपन्यासों और नाटकों में चन्द्रगुप्त का चरित्र चाणक्य के चरित्र के आगे दब गया। है जो ऐतिहासिक सम्राट चन्द्रगुप्त के अनुकूल नहीं लगता। लेखक डॉ. वर्मा ने यह स्पष्ट करना चाहा है कि चन्द्रगुप्त में अपनी भी योग्यता कम नहीं थी। इसी कारण उसके चरित्र को महत्व प्रदान करने के उद्देश्य से लेखक ने उसे तेजस्वी, मनस्वी, स्वतन्त्र विचार बुद्धि वाला दर्शाया है। लेखक ने उसे आकर्षक व्यक्तित्व वाला प्रजा के लिए सम्मान्य, प्रजा का हित रखने वाला, प्रजा में नया उत्साह पैदा करने के लिए प्रयत्न करने वाला, गुणी जनों की कद्र करने वाला, उदार, अपने बाहुबल पर भरोसा रखने वाला, कर्मठ दिखाया है। इतना अवश्य है कि एकांकी के अन्त में उसकी तुलना में चाणक्य अधिक प्रभावशाली दिखाई देता है। चन्द्रगुप्त के चरित्र से चाणक्य के चरित्र को कोई क्षति पहुंचाये बिना चन्द्रगुप्त के चरित्र का उत्थान किया गया है। यही एकांकी का उद्देश्य है।

2. नये मेहमान

प्रश्न 17. 'नये मेहमान' एकांकी का सारांश लिखकर उसके शीर्षक पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—'नये मेहमान' एकांकी का आरम्भ विश्वनाथ के किराये के छोटे मकान से होने वाली परेशानी के वर्णन से होता है। विश्वनाथ बन्द से उस मकान में बड़ी गर्मी महसूस करता है। इसी प्रकार उसकी पत्नी रेवती भी गर्मी से परेशान दीख पड़ती है। वह छोटे मकान की परेशानी की चर्चा करती है और विश्वनाथ शहर में अच्छा मकान न मिलने की बात कहता है। रेवती अपने पड़ौसी की हृदयहीनता की चर्चा करती है जो अपनी खाली छत पर उन्हें एक भी चारपाई नहीं डालने देता। रेवती का एक बच्चा पहले बिमार रह चुका है। वह पति से कुछ छुट्टी लेने की बात कहती है। पति-पत्नी एक दूसरे का ख्याल रखकर एक-दूसरे

से छत पर खुली हवा में सोने का आग्रह करते हैं। तभी दो अपरीचित मेहमान आ जाते हैं और वे बड़े निश्चिन्त भाव से वहाँ ठहर जाते हैं। वे स्नान करते हैं। उनके भोजन की व्यवस्था पर विचार किया जाता है। विश्वनाथ उनसे बार-बार परिचय पूछता है पर वे उसे टालकर अपनी बातों में व्यस्त हो जाते हैं। उन्हें खुद भी यह ज्ञात नहीं कि वास्तव में वे किसके मेहमान हैं। पत्नी को गर्मी के कारण उनके लिए खाना बनाने की हिम्मत नहीं होती। वे दोनों रात में गर्मी में उन्हें कहां ठहरायें, इस बात को लेकर भी बहुत चिन्तित होते हैं। तभी पडौसी आगन्तुकों द्वारा अपनी छत पर पानी फैला देने की शिकायत लेकर आता है। विश्वनाथ मुश्किल से उन्हें समझाता है। वह अपनी कुशलता से उनसे जान लेता है कि वास्तव में उन्हें कहां जाना था और तब वह उन्हें अपने लड़के के साथ कविराज रामलाल वैद्य के यहां पहुंचवा देता है। सबको बड़ी राहत मिलती है। तभी रेवती का भाई आ जाता है जिसे देखकर उसे बड़ी प्रसन्नता होती है। वह अपना सिर दर्द भूलकर उसके लिए खाना बनाती है।

जहां तक इस एकांकी के शीर्षक का प्रश्न है, वह एकांकी के लिए उचित है क्योंकि इसमें अपरिचित मेहमान के शहर के मकान में आ जाने की कठिनाइयों के बारे में बताया गया है। शहर में सही व्यक्ति के पास तभी पहुंचा जा सकता है जब कि उनके पास उसका पूरा-पूरा पता हो। परिचित व्यक्ति को तो किसी प्रकार छोटे मकान में रखा भी जा सकता है पर अपरिचित मेहमान से तो घरवालों को शहर में बड़ी भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। यह तथ्य, यह उद्देश्य एकांकी से व्यक्त किया गया है। जिसके लिए 'नये मेहमान' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

प्रश्न 18. 'नये मेहमान' की रेवती नये मेहमानों के आने पर क्या परेशानी अनुभव करती है?

उत्तर—नये मेहमानों के आने पर रेवती, जो कि पहले से ही किराये के छोटे मकान में गर्मी और सिर दर्द से परेशान थी, खाना बनाना एक समस्या मानती है। उसे यह भी चिन्ता होती है कि यदि खाना बाजार से मंगाया गया तो वह महंगा पड़ेगा। उसे यह भी चिन्ता होती है कि घर के सदस्यों के लिए पहले ही खुली जगह का अभाव है, अब नये मेहमानों को कहां ठहराया जायेगा। रेवती मध्य वर्गीय परिवार से सम्बन्धित है। इस कारण उसकी परेशानी वास्तविक है। यदि वह धनवान, उच्च वर्ग की होती तो साधनों के रहते उसे ऐसी परेशानियाँ न होती। उसे यह सोचकर भी परेशानी हो रही होगी कि ये अपरिचित व्यक्ति हैं। शहर में अपरिचित व्यक्तियों को शरण देने, ठहराने से और नई समस्याएं भी उठ

खड़ी हो सकती हैं। वे चोरी करके चले जाएं, यह भी तो सम्भावना रहती है। इसी कारण वह अपने पति विश्वनाथ को गई बार उनका पता पूछने के लिए याद दिलाती है।

प्रश्न 19. 'नये मेहमान' एकाँकी में विश्वनाथ और रेवती के किराये के उस मकान के कारण क्या समस्याएं होती हैं ?

उत्तर—उनका वह किराये का मकान है। शहर में किराये के अच्छे बड़े सुविधाजनक मकान का मिलना बहुत कठिन होता है। एक तो सका किराया ही बहुत अधिक होता, जिसे चुकाना मध्य वर्गीय परिवार के लिए असम्भव रहता है। दूसरे शहर में मकान खाली भी कम ही मिलते हैं। विश्वनाथ का शहर का वह मकान छोटा है इसलिए उसमें गर्मी बहुत महसूस होती है। उसमें हवादार खुली जगह का अभाव है। उसमें बीमारहोने की आशंका बनी रहती है। उसके बच्चे पहले ही बीमार हो चुके हैं। स्वयं रेवती का गर्मी से सिर दुखता है। उस मकान में मेहमानों को ठहराने के लिए गर्मी की ऋतु में तो एक प्रकार से सम्भव ही नहीं है। मेहमान को ठीक से जगह न मिल पाये तो बदनामी का डर भी लगता है।

प्रश्न 20. रेवती रात को अपने भाई के आ जाने पर उसके साथ कैसा व्यवहार करती है ?

उत्तर—जो रेवती कुछ समय पहले अपरिचित दो मेहमानों के आ जाने पर तरह-तरह की परेशानियां अनुभव कर रही थी, वही बाद में अपने भाई के आ जाने पर खुश होती है। वह अपना सिर दर्द भूल जाती है। उसे भाई के लिए खाने की व्यवस्था करने में खर्च की भी कोई चिन्ता नहीं होती। उसे वह आशंका तो होती ही नहीं है जो अपरिचित मेहमानों के चोट आदि होने की कल्पना करके हुई होगी। वह भाई के लिए झट-पट खाना बनाने लगती है। वह उसे खाना बनाकर खिलाना अपना कर्त्तव्य मानती है। वह भाई के प्रति प्रेम-भाव रखती है इसी कारण उसे बनाने के कष्ट का अनुभव ही नहीं होता।

प्रश्न 21. 'नये मेहमान' एकांकी की रेवती की चारित्रिक विशेषताएं बताइये।

उत्तर—रेवती प्रस्तुत एकांकी की नायिका है। वह मध्य वर्गीय परिवार की आर्थिक कठिनाइयों और मजबूरियों का सामना करती है। एकांकी में उसके चरित्र की कई विशेषताएं व्यक्त हुई हैं। वह गर्मी से परेशानी अनुभव करने वाली, किराये के मकान को छोटा मानकर परेशान रहने वाली, पति का विशेष ध्यान रखने वाली, बच्चों की बीमारी से दुखी रहने वाली, अपरिचित मेहमानों को समस्या के रूप में मानने वाली, नवागन्तुकों के बारे में सशंकित रहने वाली, ईश्वर को मानने वाली,

पति को सहयोग देने वाली और आत्मीय जनों के साथ अच्छा व्यवहार करने वाली महिला है। उसे घर का खर्च बढ़ने से भी कष्ट होता है। वह हिफाजत करने का ध्यान रखती है।

3. दो कलाकार

प्रश्न 22. 'दो कलाकार' एकांकी का सारांश लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी में साहित्यकार और चित्रकार दो कलाकारों का बड़े रोचक एवं व्यंग्यात्मक ढंग से वर्णन किया गया है। चूड़ामणि प्रकाशक परमानन्द के पास रुपये लेने जाता है। वह रुपये देने में अपनी असमर्थता दर्शाता है। मार्तण्ड कहता है कि मुझे यह पता होता कि तुम रुपये नहीं लाओगे तब तो मैं लाला राम नाथ को अपनी तस्वीर बेच ही आता। वह तो मेरी पचास रुपये की तस्वीर के सात रुपये देता था। मैंने गुस्से में उससे खूब कहा सुना। मैं उसके घूसा भी मार आया हूँ। मैं आते समय एक तस्वीर उठाता लाया हूँ। भूल से मैं आज ही विलायत से बनकर आई उसके बाप की तस्वीर उठा लाया हूँ। चूड़ामणि कहता है मैं प्रकाशक परमानन्द की सोने की घड़ी उठा लाया हूं और कह आया हूं कि दो घण्टे में रुपये न चुकाये तो इसे बेच दूंगा।

तभी मकान मालिक बुलाकीदास आ जाता है। वह किराया लेना चाहता है। दोनों उसे बातचीत में तर्क-वितर्क करते हुए परेशान कर लेते हैं। उन्होंने छः महीने से किराया नहीं चुकाया था। मगला चरण के लिए कविता लिखी थी या राधाकृष्ण की तस्वीर बना दी थी आदि कहकर किराया चुकता हुआ बता देते हैं। तभी परमानन्द रुपये लेकर आ जाता है। चूड़ामणि कहता है कि मैं परमानन्द पुराण लिख रहा हूं जिसमें वह उसकी बुराइयों की चर्चा करता है। परमानन्द रुपये देता तब पुराण लिखना बन्द किया जाता है। जब वह घड़ी मांगता है तो चूड़ामणि फिर पुराण लिखना शुरू कर देता है। आखिर परमानन्द उसे घड़ी भेंट में दे जाता है।

तभी लाला रामनाथ आते हैं। वे मार्तण्ड से अपनी तस्वीर मांगते हैं। मर्तण्ड तस्वीर निकालकर देता है जिसमें रामनाथ के पिता की नाक गायब कर दी गई थी। वह रामनाथ के पिता की तस्वीर में खराब की गई नाक को रुपये लेकर ही ठीक करता है। तब बुलाकीदास उन कलाकारों से कहता है कि अब तो रुपये आ गये, अब आप लोग मकान किराया चुका दीजिये। तब वे कहते हैं कि अब तक का किराया तो हम चुका चुके आगे वह चढ़ जाये तब लेना। मकान मालिक मकान खाली करने को कहता है तो चूड़ामणि कहता है कि तब बुलाकी पुराणा लिखना पड़ेगा। मार्तण्ड उसका एक चित्र प्रदर्शनी में प्रस्तुत करने के बारे में कहता है जिसमें बुलाकी दास की नाक कटी हुई होगी। बुलाकीदास नाराज होता हुआ चला जाता है।

प्रश्न 23. 'दो कलाकार' एकांकी के पात्रों का परिचय दीजिये।

उत्तर—इस एकांकी में पात्र हैं – चूड़ामणी, मार्तण्ड, प्रकाशक परमानन्द, लाला रामनाथ और मकान मलिक बुलाकीदास। चूड़ामणी लेखक है। वह प्रकाशक परमानन्द से रुपये माँगता है। रुपये देने से इन्कार किये जाने पर वह उसकी सोने की खड़ी ले आता है जिसके बदले में परमानन्द को पचास रुपये तो चुकाने पड़ते ही हैं, घड़ी भी देनी पड़ती हैं। मार्तण्ड अपना चित्र बेचने ले जाता है। लाला अमरनाथ पचास रुपये के चित्र के केवल सात रुपये लगाता है। तब मार्तण्ड लौटते समय लाला के पिता की विलायत मे बनकर आई तस्वीर उठा लाता है वह उनकी नाक काट देता है। उसे ठीक कराने के लिए लाला उसे पचास रुपये देता है। मकान मालिक बुलाकीदास दोनों कलाकारों से पिछले छः महीने का मकान का किराया माँगता है। कलाकार किराये के रुपये तो नहीं देते, वैसे ही चित्र बनाकर देने, कविता लिख कर देने आदि के रूप में किराया चुकता हो गया बताते हैं। बुलाकीदास परेशान होकर लौट जाता है।

4. लक्ष्मी का स्वागत

प्रश्न 24. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का कथानक लिखिये।

उत्तर—यह एकांकी उपेन्द्रनाथ अश्क का महत्वपूर्ण एकांकी है। रोशन अपने बीमार पुत्र अरुण की देखरेख में व्यस्त रहता है। वह अपने मित्र सुरेन्द्र से अपने बच्चे की गंभीर स्थिति की चर्चा करता है। सुरेन्द्र उसे सान्त्वना देने की कोशिश करता है। तभी डॉक्टर आ जाता वह डॉक्टर के आगे भी अपने मन की चिन्ता दुहराता है। उधर रोशन को माँ सियालकोट वालों की प्रतीक्षा करती है जो कि रोशन का शगुन देने आने वाले थे। रोशन की पत्नी सरीला बीमार रहकर अभी कुछ ही दिन पूर्व मरी है। रोशन के माँ बाप जल्दी ही उसका दूसरा विवाह कर लेना चाहते हैं। माँ सुरेन्द्र के आगे ऐसा विचार व्यक्त करती है कि यदि जल्दी विवाह तय न किया गया तब एक तो रिश्ते वाले आयेंगे नहीं,' दूसरे गाँव, समाज के लोग भी सौ बातें बनायेंगे।

उधर रोशन परेशान होकर सुरेन्द्र को अपने पास ही रुकने के लिए कहता है। वह डाक्टर को बताना है कि घरवाले अरुण की जिन्दगी न चाहकर इसे नये रिश्ते के रास्ते का रोड़ा समझते हैं। वह डॉक्टर और रोशन के आगे कहता है कि ये घरवाले पत्थर दिल है। ये भूल जाते हैं कि मरने वाली पत्नी भी किसी की लाडली पुत्री थी। ये तो बस रिश्ता कर लेने पर तुले हैं। इन्हें लक्ष्मी प्राप्त करने की चिन्ता है। इन्हें बीमार अरुण का भी ध्यान नहीं। रोशन की मां सुरेन्द्र के माध्यम से रोशन से विवाह की स्वीकृति लेने की कोशिश करती है। रोशन नाराज हो जाता है और सियालकोट वालों को लौटा देने के लिए कहता है। इधर तो अरुण प्राण त्याग देता है और उधर रोशन के पिता रोशन के लिए सियालकोट

वालों से शगुन ले लेते हैं। अरुण के खत्म होने पर झुँझलाकर व्यंग्य पूर्वक रोशन कह उठता है कि तुम तो लक्ष्मी का स्वागत करो।

प्रश्न 25. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में रोशन को मां की हृदयहीनता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर – रोशन की माँ और रोशन में एक पीढ़ी का अन्तर है। रोशन पढ़ा-लिखा, शिक्षित, आधुनिक विचारों का युवक है। वह दहेज की बुराइयों, पत्नी की कठिनाइयों को अनदेखा करने के दुष्परिणामों को समझता है। रोशन की माँ पुराने विचारों की नारी है। वह बहू को ज्यादा महत्त्व नहीं देती। वह तो सन्तान की शादी कर देना पर्याप्त समझती है। उसे इस बात की ज्यादा चिन्ता रहती है कि परम्परा का पालन न किया गया तो समाज क्या कहेगा ? इन्हीं पुराने विचारों के कारण वह रोशन की पत्नी सरला के गम्भीर रूप से बीमार होने पर वैद्य की पुड़िया, झाड़ फूंक से ही इलाज करती है। उसे इस बात की चिन्ता ही नहीं होती कि सरला कष्ट पा रही है और मर जायेगी। अन्त में सरला मर ही जाती है तब भी उसे उसके मरने का दुःख नहीं होता। जब सरला का पुत्र अरुण गम्भीर रूप से बीमार हो जाता है तब भी वह उसका डॉक्टर से इलाज कराने की बात नहीं सोचती। वह घुट्टी आदि से ही इलाज करना चाहती है। रोशन अरुण के इलाज के लिए डॉक्टर को बुलाता है। रोशन की माँ तो अच्छे पैसे वाले सियालकोट के व्यापारी की लड़की का रोशन के साथ विवाह सम्बन्ध तय कर लेने की जल्दी में रहती है। उसे अरुण के भी मरने का उतना दुःख नहीं होता जितना कि रोशन का शगुन लेने की खुशी होती है। इससे स्पष्ट है कि वह बहुत ही हृदयहीन है। उसे इस बात की मन में खुशी होती है कि और दहेज आयेगा।

प्रश्न 26. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के आधार पर पुरानी और नई मान्यताओं की तुलना कीजिए।

उत्तर – इस एकांकी में रोशन नई पीढ़ी का तथा उसके माँ बाप पुरानी पीढ़ी के व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों पीढ़ी के लोगों की मान्यताओं में बड़ा अन्तर है। पुरानी पीढ़ी के लोग हृदयहीन हैं। वे सरला की बीमारी, उसकी मृत्यु, अरुण की बीमारी और उसकी मृत्यु के कारण दुःखी नहीं होते। वे तो रोशन का जल्दी विवाह कर लेना चाहते हैं ताकि समाज के लोगों के वाक-बाण न सहने पड़ें और फिर से दहेज भी प्राप्त हो जाए। उन्हें आदमी से ज्यादा रुपये प्रिय होते हैं। रोशन की माँ सरला, अरुण की बीमारी की हालत में वैद्यों की पुड़िया आदि से इलाज कराना चाहती है डॉक्टरों से नहीं, भले ही बीमार मर ही क्यों न जाय। नई पीढ़ी के लोग समझते हैं कि मरने वाली बहू भी किसी की लाड़ली पुत्री होती है। उसकी और नाती की बीमारी का उसकी खुद की

सन्तान को भी दुःख होता है, इस ओर पुरानी पीढ़ी ध्यान नहीं देती। रोशन पत्नी की मृत्यु, बच्चे की बीमारी से बहुत दुःखी होता है। वह हृदय हीन नहीं है। नई पीढ़ी घर के किसी सदस्य का दुःख नहीं सह पाती। उसे पुरानी पीढ़ी की तरह समाज के लोगों की व्यर्थ की बातों, उलाहनों और दहेज की चिन्ता नहीं होती। इस प्रकार पुरानी और नई पीढ़ी की मान्यताओं में बड़ा अन्तर रहता है।

प्रश्न 26. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का मूल भाव या उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – प्रस्तुत एकांकी एक परिवार को आधार बनाकर लिखा गया है। इसके द्वारा एकांकीकार ने यही स्पष्ट करना चाहा है कि आदमी को समाज के सामने दिखावा करने या समाज की आलोचना के डर से अथवा दहेज के लोभ से हृदयहीन नहीं हो जाना चाहिए। घर के बुजुर्ग, जिम्मेदार लोगों को तो और भी सहृदय, विवेकपूर्ण होना चाहिए। उन्हें अपने आश्रित जनों के कष्टों को अनदेखा नहीं करना चाहिए। जहां खर्च करना जरूरी हो वहां कन्जूसी करना भी उचित नहीं होता, उल्टा घर की शांति भंग कर देने वाला, घर में संकट पैदा कर देने वाला होता है। जब पुरानी पीढ़ी अपना रास्ता न बदले, व्यवहार में जड़ता हो, वह रूढ़िवादी हो तो नई पीढ़ी को समझदारी और साहस का परिचय देना ही चाहिए।

रोशन की माँ पुत्र रोशन की पत्नी सरला का न तो उचित इलाज कराती है और उसके मरने पर दुःख का अनुभव करती है। वह अरुण नाती के बीमार होने पर भी कहते हैं कि यह तो घुटो आदि देने से ही ठीक हो जाता। उसे डॉक्टरी इलाज कराने का खर्च के कारण दुःख होता है। वह तो समाज वालों की आलोचना के डर से और दहेज के लोभ से सियालकोट वालों की लड़की का रिश्ता तय कर लेना चाहती है। यही स्थिति रोशन के पिता की है। रोशन और सुरेन्द्र शिक्षित, समझदार हैं। वे दोनों अरुण का अच्छे डॉक्टर से इलाज नहीं कराने में कोई विलम्ब नहीं करते। रोशन पत्नी के मरने पर कहता है कि मरने वाली बहू भी किसी की लाड़ली पुत्री होती है। वह अपने माँ-बाप का विरोध करने का भी साहस दिखाता है। इस प्रकार यह एकांकी एक सोद्देश्य रचना है। ये बातें ही एकांकी के मूल भाव के अन्तर्गत आती हैं।

उत्तर 27. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के आधार पर 'रोशन' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—रोशन 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का सबसे प्रमुख पात्र है, नायक है। वह एकांकी की कथावस्तु का केन्द्र बिन्दु है। उसके चरित्र में कई विशेषताएं हैं।

रोशन पत्नी के समाप्त हो जाने पर बहुत दुःखी होता है तथा पुत्र अरुण के गम्भीर रूप से बीमार हो जाने पर और भी अधिक दुःखी होता है। वह सुरेन्द्र से कहता है कि 'कहीं पत्नी की तरह अरुण भी मुझे धोखा न दे जाय।'

अरुण के बीमार होने पर रोशन उसकी जी जान से सेवा और देख-भाल करता है। वह डॉक्टर से कहता है "मैं अपनी ओर से कोई कसर न उठा रखूँगा, डॉक्टर साहब।"

अरुण को बीमार देखकर भी जब उसके घर वाले रोशन के दूसरे विवाह की बात करते हैं तो वह उनकी कटु आलोचना करता है। वह डॉक्टर से कहता है "ये सब लोग पत्थर दिल हैं.... इसकी मौत चाहते हैं।"

रोशन का पत्नी और पुत्र के प्रति विशेष लगाव था। अरुण के बीमार होते पर वह कहता है "क्या अरुण भी मुझे सरला की तरह दगा दे जायेगा?"

रोशन रूढ़ियों का विरोध करता है। रोशन की माँ उसका दूसरा विवाह दुनिया जहान का कायदा मानकर कर लेना चाहती है पर रोशन दुनिया की ऐसी रीति को निर्मम और क्रूर मानकर उसका विरोध करता है और उसे ठुकरा देता है।

लेखक ने रोशन का चरित्र-चित्रण कर यह संकेत किया है कि नई पीढ़ी को पुरानी गलत रूढ़ियों का विरोध कर साहस का परिचय देना चाहिए। नई पीढ़ी को अपने विवेकानुसार काम लेकर बुरी परम्पराओं से बचना चाहिए। प्रस्तुत एकाँकी में रोशन का चरित्र नई पीढ़ी के लिए अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 28. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के आधार पर सुरेन्द्र की चारित्रिक विशेषताएं बताइये।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी के पुरुष पात्रों में रोशन के बाद सुरेन्द्र का चरित्र ही महत्त्वपूर्ण है। वह रोशन का अभिन्न मित्र है। लेखक ने उसमें सच्चे मित्र की विशेषताएं प्रदर्शित की हैं। वह भी पढ़ा-लिखा समझदार व्यक्ति है। यहां उसके चरित्र की कई विशेषताएं व्यक्त हुई हैं—रोशन का अभिन्न मित्र, समझदार, मध्यस्थता करने वाला, परिश्रम करने वाला, धैर्यवान्, ईश्वर पर विश्वास रखने वाला आदि।

सुरेन्द्र अरुण की बीमारी की हालत में अपने दुःखी मित्र रोशन का पूरा साथ देता है। वह अपनी परेशानियों की ओर भी ध्यान नहीं देता। वह समझदार है। वह दुःख में एक ओर तो रोशन को सान्त्वना देता है, उसे ईश्वर पर भरोसा

रखने की राय देता है और दूसरी ओर रोशन की माँ को उसकी गलती का ध्यान दिलाता है। वह कहता है अरुण की बीमारी की हालत में शगुन लेने की बात मैं नहीं कह सकता। वह दिन रात रोशन के साथ परिश्रम में जुटा रहता है। वह रोशन की तरह अधीर नहीं होता, उल्टे रोशन को धैर्य बंधाता रहता है। वह एक सच्चे मित्र का अच्छा रोल अदा करता है। वह रोशन का हाथ भी बंटाता है और उसके मन का बोझ भी हल्का करने का प्रयत्न करता रहता है। यदि वह बीच में ढंग से मध्यस्थता न करता तो रोशन अपने माँ-बाप के प्रति और भी कठोर आचरण कर बैठता।

प्रश्न 29. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी हमें यह प्रेरणा देता है कि नई पीढ़ी के शिक्षित नवयुवकों को घरवालों को रूढ़ियों मे मुक्त रखने के लिए सही रास्ता दिखाने का साहस करना चाहिए तभी समाज उन्नत हो सकेगा। नवयुवकों को आज की बड़ी समस्या दहेज प्रथा का विरोध करना चाहिए। दहेज का लोभ घर की बहू और उसकी संतान को ओर निर्मम, क्रूर बना देता है। घर के किसी भी सदस्य के दुःखों को हमें अनदेखा नहीं करना चाहिए। यदि साधारण इलाज से घर का रोगी सदस्य ठीक न हो तो हमें बुजुर्गों का संकोच त्याग कर पत्नी, बच्चे का योग्य डॉक्टर से इलाज भी कराना चाहिए, जैसा कि रोशन ने किया है। रामप्रताप अनपढ़, गंवार था इसलिए तो उसने अपने माँ बाप के कहने से जल्दी ही, अपनी पत्नी की मृत्यु के तुरंत बाद विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। रोशन हमें ऐसा न करने की प्रेरणा देता है और हममें यह चेतना जगाता है कि हम जिन्दगी में विवाह को ही सब कुछ न मानलें, अपितु मानवता को सर्वोपरि महत्व दें। पुरानी पीढ़ी के लोगों को नई शिक्षित पीढी का समझदारी का व्यवहार कुछ दिन ऐसा भी लग सकता है कि नई पीढ़ी बड़ों की आज्ञा का उल्लंघन कर रही है पर यह स्थिति भविष्य के लिए समाज को सही दिशा प्रदान करने वाली ही सिद्ध होगी।

प्रश्न 30. कल्पना के आधार पर लिखिये कि यदि मृत सरला जीवित हो जाती तो अपने बारे में की गई उपेक्षा और अपने पुत्र के दिवंगत होने के बारे में क्या सोचती ?

उत्तर—यदि रोशन की पत्नी सरला मरने के बाद किसी प्रकार जीवित हो जाती और उसके पीछे जो कुछ हुआ, उसके बारे में जान लेती तो उसके मन में अपने सास-ससुर और समाज के लोगों के प्रति यह धारणा उत्पन्न हो जाती कि ये लोग कसाई हैं, क्रूर, निर्मम, अंधविश्वासी बेअक्ल, धन या दहेज के पीछे मान-

वता को भी ठुकरा देने वाले हैं। उसे यह जानकर दुःख और नाराजी होती कि मेरे सास-ससुर ने मेरे रोग का ढंग से इलाज न कराया। वे कंजूसी करते रहे। इनमें इतनी भी समझ नहीं कि ये रोग लगने पर योग्य डॉक्टर से मेरा इलाज कराते। इन्हें इस बात का भी ध्यान न आया कि मेरे मां-बाप ने इन पर पूरा विश्वास करके मुझे इनको सौंपा था और वे मेरे बारे में निश्चिन्त थे। इन्होंने उनके विश्वास को आघात पहुंचाया है, उनके साथ धोखा किया है। ये समाज की अंध विश्वास पर आधारित गलत रूढ़ियों को मनुष्य से भी ज्यादा महत्व देने वाले हैं। इनमें अपना विवेक नहीं है। इनमें अपनी-पराई लड़की के प्रति, अपनी लड़की और पुत्रवधु के प्रति बहुत भेदभाव है। इन्हें धन का, दहेज का अत्यधिक लोभ है जिसने इनकी आंखों पर, इनके बिवेक पर पर्दा डाल रखा है। इनका रास्ता संयुक्त परिवार को विघटित करने वाला, समाज को पतन के गर्त में ले जाने वाला है। उसे अपने आत्मज अरुण के बीमार होने और मर जाने का अत्यंत दुःख होता। जब वह सुनती कि एक ओर मृतक अरुण को लेकर उसका पति निकल रहा था और दूसरी ओर उसके ससुर विवाह का शगुन लेकर खुशी मना रहे थे तो वह क्रोध से आग बबूला हो जाती, भूखी शेरनी भी बन सकती थी। वह अपने सास-ससुर की हृदय हीनता आदि के लिए कटु शब्द बोलने का भी साहस कर सकती थी। उसे अपने शिक्षित, समझदार, पति के व्यवहार की बात सुनकर संतोष मिलता। उसके प्रति सरला में आत्मीयता बढ़ती और अनसमझ मां बाप का विरोध करने वाला पति समझदार लगता।

प्रश्न 31. 'वापसी एकांकी' के उद्देश्य पर विचार प्रकट कीजिए ?

उत्तर—वापसी एकांकी एक महत्वपूर्ण उद्देश्य लेकर लिखा गया है। असगर भारत-पाक विभाजन से पूर्व भारत का ही निवासी था। वह पाकिस्तान का भेदिया बनकर भारत में तोड़-फोड़ और विनाश कार्य के उद्देश्य से आता है, लेकिन जन्म भूमि की बचपन में देखी हुई वस्तुएं फिर देखने को मिलती है तो उसे पुरानी बातें याद आ जाती हैं। उसके मन में जन्म भूमि के प्रति प्रेम उमड़ आता है और विनाश कार्य की भावना उसके मन से निकल जाती है।

वह मातृभूमि के प्रेम में डूबकर सोचता है कि यदि सियासत वाले अपने स्वार्थ की प्रकृति छोड़ दें तो सभी प्रेम से रह सकते हैं। भारत में भेदिया के रूप में भी उसे दूसरों के आदेश से आना पड़ा है। वह दुःखी होता है कि स्वतन्त्र देश का नागरिक होकर भी वह स्वेच्छानुसार आचरण करने के लिए स्वतन्त्र नहीं है। असगर के माध्यम से लेखक ने यही स्पष्ट किया है कि सियासत बाले कुछ स्वार्थी लोग ही सारे झगड़ों की जड़ हैं। उनके कहने से व्यक्ति यदि दुश्मनी का भाव रखना

छोड़ दें तो दुश्मनी का माहौल ही पैदा न हो। अन्त में असगर मातृ भूमि के प्रेम के वशभूत होकर आत्म-समर्पण कर देता है। वह मातृ भूमि, अपने वतन लौटकर खुशी का अनुभव करता है। इससे यह स्पष्ट किया गया है कि मातृ भूमि का प्रेम बहुत बड़ी चीज है। यह एकता लाने वाला है। मनुष्यों को लड़ना-झगड़ना नहीं चाहिए।

प्रश्न 32. वापसी एकांकी के असगर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी में असगर की चारित्रिक विशेषताएं निम्नलिखित हैं—

असगर पाकिस्तान का भेदिया है, उसे भारत जिस विनाश कार्य हेतु भेजा गया है, वह उसे अपना कर्त्तव्य समझकर खतरे उठाकर भी करने के लिए भी तैयार रहता है।

अगसर परेशानी में भी सही ढंग से सोच-विचार लेता है और स्वयं निर्णय ले लेता है। मकसूद में यह विशेषता नहीं पायी जाती। वह कदम-कदम पर अस-गसर से पूछता है कि अब क्या करना चाहिए।

असगर जो कुछ देखता है और महसूस करता है उसे स्पष्ट कर देता है, चाहे उसकी बात किसी को बुरी हो क्यों न लगे। वह मकसूद से भारतीय किसानों की निडरता के विषय में स्पष्ट कह देता है "कैसे निडर और हिम्मत वाले हैं यहाँ के किसान"

अगसर स्वच्छंदता प्रिय है। वह कहता है कि स्वतन्त्र देश में आदमी को ऐसी आजादा तो होनी ही चाहिए कि वह अपनी बात कह सके। उसकी दृष्टि में विचार स्वातंत्र्य बिना आजादी बेमानी है।

असगर को भारत में भेदिया का कार्य करने भेजा जाता है परन्तु वह निर्दोष लोगों पर अत्याचार करना अमानवीय कार्य मानता है। वह चाहता है कि ऐसा करने का माहौल ही पैदा न हो। उसकी दृष्टि मानवीय है।

असगर के हृदय में मातृ भूमि का प्रेम अटूट है। वह काफी समय पाकि-स्तान में रहकर आता है फिर भी जन्मभूमि पर आकर उसके भीतर उसके प्रति प्रगाढ़ प्रेम उमड़ आता है।

इस प्रकार अगसर के माध्यम से स्पष्ट किया गया है कि मातृ-भूमि के प्रति की भावना आसानी से नहीं मिटती। असगर के विचार मानवता को महत्त्व देने वाले हैं। वह साम्प्रदायिक भेदभाव, लड़ाई- झगडों को अनुचित मानता है। उसका चरित्र दूसरों के लिए अनुकरणीय है और विश्व शांति लाने में सहायक है।

प्रश्न 33. 'वापसी' एकांकी का सारांश अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर—पाकिस्तान के कप्तान बुनियाद के नेतृत्व में असगर आदि सैनिक

भारत में भेदिया बनकर विनाश कार्य करने के लिए भेजे जाते हैं। वे हवाई जहाज से भारत की धरती पर उतर कर छिपने की योजना बनाते हैं। वे अपने उन साथियों को भी खोज लेना चाहते हैं जो उनसे कुछ दूर रह गये हैं। कप्तान अपने सैनिकों को उनके काम के बारे में याद दिला देता है। वह उनमें से कुछ को भारतीय जनता में पहुंचकर हिन्दू-मुसलमानों में लड़ाई कराने का निर्देश देता है। असगर अपने कपड़े हिन्दुस्तानी जाट के से करना चाहता है। जाट नाम याद आते ही वह सोचता है कि मुसलमान जाट और हिन्दू जाट आखिर एक ही तो हैं। वह फिर अपने फर्ज को पूरा करने के बारे में विचार करता है। वह अपने साथी से अपने मन की बात प्रकट करता है कि हमें कुछ समय पूर्व ही बातें बताई गईं और जल्दी ही भारत में भेज दिया। वह साथियों से कुछ दूर घूमने जाता है। उसे लगता है भारतीय किसानों को लड़ाई की चिन्ता नहीं है। वे हमेशा की तरह जोत-बो रहे हैं। यहां के जेट हमारे सुपर सॉनिक जेट हवाई जहाजों को यों ही नष्ट कर देते हैं। उसे पुराना खण्डहर दिखाई देता है जहां वह घर से आकर बचपन में छिप जाया करता था। वह बचपन में देखी गई मस्जिद, रहट, खेत देखता है। उसे उस ट्रेन की आवाज सुनाई पड़ती है जिसमें बैठकर वह कभी-कभी बिना टिकट भाग जाता था। उसे देश विभाजन से पहले की और विभाजन के समय की बातें याद हो आती हैं। वह सोचता है कि हम मुसलमानों ने तो मुस्लिमलीग का साथ नहीं दिया था और पाकिस्तान नहीं चाहा था। हमारे पूर्वज इसी धरती पर रहे। उसे मकई, गन्ने के खेत आकृष्ट कर लेते हैं।

वह सोचता है कि हम पाकिस्तान में रहकर भी सोचने, बोलने, स्वतंत्र रूप से लिखने के लिए स्वतंत्र नहीं है। उसके साथी उसे रोकते हैं कि तुम क्या अलजलूल सोचने लगे हो। तभी भारत का इन्स्पेक्टर, लालाजी, चौधरी, सरदार जी आदि उन्हें घेर लेते हैं। ट्रेक्टर से खेत कटवाया जाता है। असगर चौधरी के बारे में बताता है कि मैं बचपन में इन्हें ताऊ कहता था। इन्होंने मुझे गोद में खिलाया था। देश विभाजन के समय हमने वायदा किया था कि हम सदा दोस्त ही रहेंगे। उसे वह कहता है कि सियासत वाले हर मुल्क में अपना उल्लू सीधा करते हैं, लोगों को आपस में लड़ाते हैं। जब असगर को लगता है कि हम पकड़े जायेंगे तो वह साथियों के साथ हाथ ऊपर उठाकर आत्म-समर्पण कर देता है और चौधरी को अपना परिचय देता है और याद दिलाता है कि मैं लतीफ का बेटा हूं ताऊ। वह साथियों से उनके आगे कहता है कि मैं अपने गांव, अपने वतन लौट आया हूं, अब कोई खतरा नहीं। चौधरी पशोपेश में पड़ जाते हैं। यही एकांकी का सारांश है।

प्रश्न 34. 'वापसी' एकांकी से हमें क्या सन्देश दिया गया है ?

उत्तर—'वापसी' एकांकी द्वारा एकांकीकार ने हमें कुछ सन्देश देना चाहा है। उसने बताना चाहा है, याद दिलाया है कि जन्मभूमि के प्रति प्रेम के भाव को त्याग देना बड़ा कठिन होता है। जन्मभूमि से अलग रह कर हमारे भीतर कोई विपरीत भाव आ सकता है परन्तु जन्मभूमि पर आकर एक बार फिर उसके प्रति ममता उमड़ आती है। उसने बताना चाहा है कि देशवासियों में जन्मभूमि के प्रति प्रगाढ़ प्रेम हो तो देशविरोधी भाव उत्पन्न ही न हों और देश के विभाजन आदि के विचार ही हमारे भीतर न आयें।

दूसरी बात उसने यह बतानी चाही है कि यदि विचार करके देखा जाय तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि आम जनता कभी देश का बंटवारा नहीं चाहती, वह साम्प्रदायिक दगे करने की बात भी नहीं सोचती। ये तो कुछ सियासत वाले लोग हैं जो अपने स्वार्थ के लिए जनता को भड़काया करते हैं, लड़ाया करते हैं। वे हमारे हित, हमारी आजादी की चिन्ता नहीं करते हैं। वे तो हमें भेड़-बकरियों की तरह अपने इशारों पर नचाना चाहते हैं। यह समझ कर हमें सियासत वालों के बहकावे में नहीं आना चाहिए।

तीसरी बात यह स्पष्ट की गई है कि चाहे पाकिस्तान के हों या भारत के, सभी व्यक्ति समान हैं। जाट, मुसलमान का, देशी विदेशी का भेदभाव कृत्रिम है। होना तो यह चाहिए कि फिर से ऐसा माहौल बनाने का प्रयत्न हो जिससे पाकिस्तान और भारत के बीच दुश्मनी का भाव न रहे और हम अच्छे पड़ोसी की तरह मेल जोल से शांतिपूर्वक रह सकें।

प्रश्न 35. असगर पाकिस्तान का नागरिक होकर भी वहां की स्थिति के बारे में क्या सोचता है ?

उत्तर–असगर देश विभाजन के बाद भारत से पाकिस्तान चला जाता है। वहां वह स्वतन्त्र देश में नागरिक का जीवन व्यतीत करता है। थोड़े समय बाद भारत और पाकिस्तान में युद्ध छिड़ जाता है। वह कप्तान के नेतृत्व में अन्य सैनिकों के साथ भारत में भेजा जाता है। उन्हें यह काम सौंपा जाता है कि वे भारत में विनाशकारी कार्य करायें और हिन्दू और मुसलमानों में झगड़े करायें। भारत में, अपनी जन्मभूमि पर आकर असगर की भावना बदल जाती है। उसे अपनी जन्मभूमि प्यारी लगती है। उसे बचपन की बातें याद आने लगती हैं। तब उसे लगता है कि हमें पाकिस्तानी बन जाने से भी कोई लाभ नहीं हुआ। हमें भारत में भी कोई दुःख नहीं था। वह गंभीरता से विचार करता है कि लाभ

तो सियासत वाले कुछ लोग उठाते हैं । वे ही अपने स्वार्थ के लिए ऐसी चाल चलते हैं जिनसे जनता की शांति भंग हो जाती है, उनमें अपने-पराये का भेद उत्पन्न हो जाता है । उसे याद आता है देश विभाजन से पहले हम मुस्लिमलीग के साथ न थे और न हमने पाकिस्तान का निर्माण चाहा था। हमें तो मजबूर होकर जन्मभूमि से दूर पाकिस्तान जाना पड़ा था। आज भी हमें दूसरों के कहने से ही भेड़-बकरियों की भांति यहां आने को मजबूर होना पड़ा। हमारे अधिकारियों ने आधा घण्टे पूर्व हमें यहां आने के बारे में बताया । हमें पहले से कुछ बताया ही नहीं गया, जैसे हम कोई विदेशी हों। वहां भी हमें क्या सुख है। वहां हमें स्वतन्त्र रूप से सोचने, विचारने, लिखने अपनी बात कहने की छूट नहीं है। हम आज भी एक तरह से दूसरों के अधीन हैं । हमारे साथ उन्होंने कौन-सा अच्छा सलूक किया है।

प्रश्न 36. लेखक ने सियासत वालों के बारे में क्या बताया है ?

उत्तर – एकांकीकार विष्णु प्रभाकर ने अपने इस एकांकी में सियासत वालों की काली करतूतों पर प्रकाश डालकर उनसे सामान्य जनता को अवगत कराया है और उनके कारनामों से सचेत रहने के लिए आग्रह किया है। असगर को माध्यम बनाकर ही लेखक ने सियासत वालों के बारे में बताया है। वह उनके बारे में बताता है कि हर देश में कुछ सियासत वाले ही जनता को गुमराह करते हैं। वे अपना उल्लू सीधा किया करते हैं । वे अपने स्वार्थ के लिये हिन्दू-मुसलमान के भेदभाव पैदा करते हैं । वे जनता को आपस में लड़ाते हैं। उसके शब्द हैं "ये सियासत वाले हर मुल्क में अपना उल्लू सीधा करने के लिए आपस में लड़ा करते हैं और और लोगों को परेशान करते हैं ।" असगर के रूप में लेखक स्पष्ट करती है कि भारत में रहने वाले मुसलमान मुस्लिम लीग के साथ नहीं थे। वे सदा जमीयत के साथ रहे । सियासत वालों की साजिश के फलस्वरूप मुसलमानों को वह भूमि छोड़नी पड़ी जिस पर उनके बड़े पैदा हुए और मरे। यदि लोग सियासत वालों की चालें समझ लें और उनके बहकावे में न आयें तो भारत-पाकिस्तान के बीच दुश्मनी का माहौल मिट सकता है और लोग फिर से प्रेम से शांति से रह सकते हैं ।

6. आवाज का नीलाम

प्रश्न 37. 'आवाज की नीलाम, एकांकी के दिवाकर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर – दिवाकर 'आवाज का नीलाम' एकांकी का सबसे प्रमुख पात्र है। वही एकांकी का नायक है। आवाज अखबार का वही सम्पादक है। उसके चरित्र की कई बातें एकांकी में बतायीं गयी हैं ।

दिवाकर पूंजीपतियों से, सेठ बाजोरिया जैसे लोगों से घृणा करता है। बाजोरिया की स्वार्थी प्रवृत्ति तथा सम्पादकों पर नियंत्रण रखने की उसकी बुराई के कारण वह बाजोरिया से घृणा करता है।

दिवाकर एक स्वाभिमानी व्यक्ति है। उसने कहा भी है कि "मैंने किसी के सामने सिर झुकाना नहीं सीखा।" जब बाजोरिया उसके अखबार को अपना समझने लगता है तो उसे यह बात अपमानजनक लगती है। वह स्पष्ट कह देता है कि "भीख मांगकर अखबार निकालूंगा, फर्नीचर बेचकर अखबार निकालूंगा, अपने खून से छापूंगा, लेकिन आपके हाथ नहीं बेचूंगा।"

दिवाकर को अखबार निकालने का शौक है। उसे अखबार निकालने के लिए अनेक कठिनाइयां सहनी पड़ती हैं। फिर भी वह उसे निकालते रहना चाहता है।

दिवाकर अपनी पत्नी, अपनी बच्ची आदि को इसलिए भुला देता है ताकि वह सत्य को उजागर करने के लिए आवाज अखबार निकाल सके।

दिवाकर झूठा दिखावा करने वालों का विरोधी है। सेठ बाजोरिया की स्वार्थपूर्ण सहानुभूति दिखाने पर वह उसे कमीना और बेइमान मानता है।

दिवाकर एहसान मानने वाला है। पत्नी की बीमारी के समय रुपये देने वाले बाजोरिया का वह एहसान मानता है। वह उससे कहता है "आपने शीला की जान बचाई, मैं अहसान-फरोश नहीं हूं।"

दिवाकर आखबार निकालने की लगन का तो धनी है लेकिन आर्थिक दृष्टि से गरीब है। धनाभाव के कारण ही वह अखबार निकालने में कठिनाई उठाता है।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि दिवाकर में एक सच्चे सम्पादक की सभी विशेषताएं विद्यमान हैं। वह प्रस्तुत एकांकी का एक अमर-पात्र है।

प्रश्न 38. 'आवाज का नीलाम' एकांकी में बाजोरिया के चरित्र के विषय में कौन-कौन सीं बातें व्यक्त हुई हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – 'आवाज का नीलाम' एकांकी में बाजोरिया के चरित्र की निम्नांकित मुख्य विशेषताएं व्यक्त हुई हैं।

बाजोरिया सेठ आदमी है। उसके पास काफी धन है, तभी वह पाँच-पांच अखबार निकालता है और 'आवाज' जैसे अखबार को भी खरीद लेता है। दिवाकर की पत्नी के बीमार होने पर पानी की तरह पैसे बहाता है।

सेठ बाजोरिया धनवान है और मौके पर काफी खर्च भी करता है परन्तु यह सब कार्य वह स्वार्थ से प्रेरित होकर ही करता है। अखबार खरीदने के लालच में वह दिवाकर की पत्नी की बीमारी में काफी रुपये लगाता है।

जो व्यक्ति स्वार्थी होते हैं वे प्रायः चापलूसी करने एवं मीठा बोलने में सकोच नहीं करते। उसे दिवाकर से अखबार खरीदना है इसलिए वह उससे दिन में चार-चार बार फोन करता है।

बाजोरिया रुपये के बल पर सम्पादकों पर भी नियंत्रण लगा देता है। दिवाकर उससे कहता है कि, "आज जब आप उसे ढाई सौ दे रहे हैं तब वह डिक्टेशन लिखता है, आपका डिक्टेशन।"

बाजोरिया स्वार्थ को प्रमुखता देता है इसलिए अपने द्वारा होने वाली किसी भी गलती के लिए क्षमा मांगने में उसे कोई भी संकोच नहीं होता है।

बाजोरिया के मन में दिवाकर के प्रति तनिक भी सहानुभूति नहीं थी परन्तु अखबार खरीदने के स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए उसने दिवाकर के प्रति सहानुभूति दर्शाने का सफल अभिनय किया था।

इस प्रकार सेठ बाजोरिया के चरित्र में विरोधी बातें देखने को मिलती हैं। वह दिखावा करने वाला, स्वार्थी व्यक्ति है। कुल मिलाकर वह अच्छा आदमी नहीं था।

प्रश्न 39. 'आवाज का नीलाम' एकांकी का कथानक अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर—'आवाज का नीलाम' एकांकी का प्रारम्भ दिवाकर को किये गये बाजोरिया के फोन के वर्णन से होता है। बाजोरिया फोन पर दिवाकर से अस्पताल मे भर्ती उसकी बीमार पत्नी की दशा के बारे में पूछता है। फोन रखने के बाद दिवाकर बाजोरिया को बेईमान, कमीना आदि कहकर अपनी खीझ व्यक्त करता है। वह जानता है कि बाजोरिया स्वार्थवश कई बार फोन करने लगा है। तब कोई नहीं पूछता था जब दिवाकर अखबार शुरू करने के लिए सरकार से लड़ाई कर रहा था, सेठों से लड़ रहा था, घरवालों के कष्टों के बारे में कुछ करने के लिए भी उसे फुर्सत नहीं थी। बाजोरिया का स्वार्थ यह है कि वह दिवाकर का 'आवाज' अखबार खरीदना चाहता है। दिवाकर को वे दिन याद आते हैं जब उसकी पत्नी शीला सीढ़ी पर से गिर गई थी फिर भी वह उसके पास नहीं जा सका था। उसकी दवा के रुपये उसने टाइप खरीदने मे काम में ले लिए थे। वह अपनी आत्मा की, जनता की आवाज बुलंद करने 'आवाज' अखबार निकालना चाहता था। वह उसी अखबार के बेचे जाने की कल्पना कर दुःखी होता है। तभी अस्पताल से फोन आ जाता है। वह अस्पताल आने की बात कह देता है। तभी बाजोरिया आ जाता है। वह फिर पत्नी के बारे में पूछता है। दिवाकर कुछ नहीं कहता। बाजोरिया गंभीरता का कारण पूछता है। दिवाकर पियानो बजाने

लगता है। फिर कहता है कि आजकल अखबारों में तरह-तरह की बातें छप रहीं हैं। अनेक उतार-चढ़ाव, ध्वंस और विनाश के बीच नये इन्सान का जन्म हो रहा है। मैं उसी नये इन्सान की आवाज को जिन्दा रखना चाहता हूं। वह आजकल की अखबार वालों की प्रवृत्ति की चर्चा करता है और कहता है कि अब रंग-बिरंगे विशेषांक निकालने की प्रवृत्ति पनप रही है, जनता नये इन्सान की आवाज नहीं सुनना चाहती। वह ऐसा कहकर बाजोरिया पर प्रहार करता है। तब बाजोरिया उसे याद दिलाता है कि आप क्यों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। दिवाकर सावधान होकर बाजोरिया का एहसान व्यक्त करता है। बाजोरिया एक बार 'आवाज' अखबार को भी अपना बता देता है जो दिवाकर को अपमानजनक लगता है। वह अखबार बेचने के लिए मना कर देता है। वह बाजोरिया पर आरोप लगता है कि आप अपने चटर्जी जैसे संपादकों को स्वतंत्र रूप से संपादकीय लिखने छूट न देकर डिक्टेशन लिखवाते हैं और स्वार्थवश मिनिस्टरों की प्रशंसा लिखा-वाते हैं जबकि पहले आप अंग्रेजों की प्रशंसा करते थे। तभी दिवाकर को अस्पताल से फोन पर सूचना दी जाती है कि वह कुछ दवाए लेकर आये। दिवाकर रुपयों के लिए चिंचित होता है। बाजोरिया रुपये देता है और उसे कार में अस्पताल चलने के लिए कहता है। तभी सूचना मिलती है कि शीला मर गई। दिवाकर इस सूचना से खुश होकर अखबार बेचने का विचार बदल देता है पर बाजोरिया अखबार के बेचाननामा को वापस नहीं करता।

प्रश्न 40. क्या यह सही है कि 'आवाज का नीलाम' एकाँकी में अखबार निकालने की कठिनाइयों का और सच्चे सम्पादक की विशेषताओं का चित्रण हुआ है ?

उत्तर—यह कथन सही है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि कोई अखबार निकालना कम-से-कम उन लोगों के लिए बेहद कठिन काम है जिनकी आर्थिक स्थिती अच्छी नहीं है। जो सेठ हैं, पूंजीपति हैं वे तो कई-कई अखबार निकाल सकते हैं, दूसरों के भी अखबार खरीद सकते हैं पर आर्थिक दृष्टि से खराब स्थिति वाले ऐसा नहीं कर सकते। दिवाकर ऐसा ही व्यक्ति है। उसे अखबार निकालते समय सरकार, सेठों से लड़ना पड़ा, जमानत देनी पड़ी, घर बेचना पड़ा। उसने बीमार पत्नी की दवा के रुपये भी टाइप खरीदने में खर्च कर दिये। वह बीमार पत्नी से मिलने तक न जा सका' व्यस्तता के कारण। गरीबी की मजबूरी ने उसे पत्नी के बीमार होने पर अपने अखबार को बेचने के लिए बेचाननामा लिख दिया गरीब लोग अखबार बराबर निकालते नहीं रह पाते।

उस एकांकी में सच्चे पत्रकार की विशेषताए व्यक्त हुई हैं। दिवाकर के माध्यम से वे विशेषताए स्पष्ट की गई हैं। सच्चे सम्पादक, पत्रकार में अखबार

निकालने की बड़ी ललक रहती है। उसे पूरा करने वह घर द्वार, फर्नीचर तक बेच सकता है। वह घरवालों की जिम्मेदारियों को भी भुला बैठता है। वह अपनी आत्मा की, जनता की आवाज को बुलंद करना चाहता है। वह बाजोरिया की तरह डिक्टेशन नहीं छापता, सचमुच ही तटस्थभाव से सम्पादकीय छापता है। वह आमदनी बढ़ाने शोखाकवर रंगबिरंगे विशेषांक निकालने और सचाई की उपेक्षा करने की बात नहीं सोच सकता। वह नये इन्सान की आवाज जिन्दा रखने प्रयत्न करता है। वह साधना करता है, विचार मंथन कर समाज का मार्ग-दर्शन करता है न कि जनता को गुमराह। वह अखबार के प्रति समर्पित रहता है। तभी तो दिवाकर पत्नी के मर जाने की बात सुनकर अपना अखबार बेचने का इरादा बदल देता है और पत्नी के मरने से खुश होता है ताकि बीमारी में लगने वालेधन को अखबार में लगा सके। दिवाकर सम्पादक के रूप में आज के युग के सत्य और ईमानदारी के लिए संघर्षरत व्यक्ति की जिजीविका का चित्रण प्रस्तुत एकांकी में सही ढंग से हुआ है।

7. वरुण वृक्ष का देवता

प्रश्न 4. इतिहास प्रसिद्ध चाणक्य का चरित्र कुछ भिन्न रूप में प्रस्तुत करना ही इस एकांकी का उद्देश्य है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'वरुणावृक्ष का देवता' एकांकी में इतिहास प्रसिद्ध चाणक्य का चरित्र निश्चित रूप से कुछ भिन्न रूप में ही चित्रित किया गया है। इतिहास में चाणक्य का राजनीति मामलों में ही विशेष रुचि रखने वाला बताया गया है। यहाँ उन्हें राजनीति से अलग होकर तपोवन का जीवन व्यतीत करने वाला दिखाया गया है। मलय केतु राजनीतिक उद्देश्य से उनके तपोवन में ही आता है। उससे वे स्पष्ट कहते हैं कि "मैं अब राजनीतिक व्यक्ति नहीं हूँ।" चाणाक्य वानप्रस्थ आश्रम के पती के रूप में चित्रित किये गये हैं। वह पूजापाठ करते हैं, शास्त्रों का प्रणायन करते हैं, धार्मिक कार्यों में रुचि लेते हैं राजनीतिक कार्यों में नहीं। वे मित्र और और शत्रु का भेद भुलाकर लोक कल्याण के कार्य ही किया करते हैं। वे न तो राजनीति सिखाते हैं और न राजनीतिक चाल चलने वालों को समूल नष्ट करने के लिए क्रोध करते हैं। जब मलयकेतु उनके आश्रम में आता है तब वे सूर्य पूजा के लिए जाते दिखाई देते हैं। मलयकेतु गाथागोत मे उन्हें धूर्तबुद्धि ठहराता है। विद्वान चाणक्य यह सब जानकर और उसे राक्षस का गुप्तचर समझकर भी उसे क्षमा कर देते हैं, उस पर क्रोध नहीं करते। उलटे वे उसे निर्दोष बताकर आश्वास्त कर देते हैं और कर्त्तव्य पालन करने वाले उस पर प्रसन्न होते हैं। मलयकेतु की उनके बारे में यह आशंका निर्मूल सिद्ध होती है कि उन्होंने ही सर्वार्थ सिद्धि को मारने के लिए शटकार को प्रेरित किया है वे सर्वार्थसिद्धि को शटकार से बचाते

हैं और शटकार तथा नन्द के पक्ष के बीच शत्रुता समाप्त करने के उद्देश्य से राक्षस से शटकार की पुत्री सुवासिनी का विवाह करा देते हैं। राक्षस से अपनी प्रेयसी सुवासिनी का विवाह कर वे त्याग और वैराग्य भावना का भी परिचय देते हैं। उनमें लेखक ने ब्रह्म तेज भी दर्शाया है। वे उसके बल से ही बेहोश सर्वार्थसिद्ध को होश में ला देते हैं। उन्होंने राजनीति में फंसे सर्वार्थसिद्धि से वर्णाश्रम धर्म का पालन कराने के लिए उसे भी वैरागी बनाया था। इस प्रकार स्पष्ट है कि लेखक राजनीतिक व्यक्ति चाणक्य को वानप्रस्थाश्रम के यती के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है और इस कार्य में वह पूर्णतया सफल रहा है।

प्रश्न 42. 'वरूणवृक्ष का देवता' एकांकी के आधार पर मलयकेतु का परिचय दीजिये।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी में मलयकेतु सर्वप्रथम चाणक्य के आश्रम में सपेरे के रूप में दिखाई देता है। वह मन ही मन यह भी विचार करता है कि आचार्य चाणक्य के गुप्तचर इस राज के कण-कण में छिपे हुए हैं। इससे लगता है कि वह स्वयं राजनीति में लिप्त हैं। वह गाथा गीत प्रस्तुत कर परख करने का प्रयत्न करता है कि देखूं चाणक्य आदि मुझे पहचान पाये हैं या नहीं। वह चाणक्य के शिष्य शारंगरव से यह भी जान लेता है कि आश्रम में चाणक्य से कौन-कौन सम्पर्क करते रहते हैं। वह चाणक्य को धूर्त मानता है। आगे विवश किये जाने पर, राक्षस के गुप्तचर के रूप में पहचाने जाने पर वह क्रोध पूर्वक चाणक्य से कहता भी है कि आपने ही सर्वार्थसिद्धि को मारने के लिए शटकार को प्रेरित किया है। मलयकेतु राक्षस के गुप्तचर का सफलतापूर्वक अभिनय करता है पर चाणक्य से अपना रहस्य नहीं छिपा पाता। राजनीति में वह उनकी बराबरी नहीं कर पाता। वह राक्षस का, नंदवंश का हितैषी है। वह गुप्तचर का कार्य करने में दक्ष अवश्य है तभी तो आचार्य चाणक्य उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहते।

प्रश्न 43. 'वरुण वृक्ष का देवता' एकांकी का कथानक अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी चाणक्य के आश्रम में राक्षस के गुप्तचर सपेरे के वेशधारी मलयकेतु के आगमन से शुरू होता है। मलयकेतु पहचाने जाने की चिन्ता लिए हुए आश्रम में आकर ठहरता है। तभी चाणक्य सूर्य पूजा के लिए जाते हैं। उनका शिष्य उसे सपेरा ही मानता है और उसे उनके रास्ते से हटने, आश्रम से भाग जाने के लिए कहता है। वह उससे जगह-जगह बने विश्राम गृहों में रहने के लिए कहता है। वह शारंगरव को एक गाना सुनाता है जिसमें धूर्त बुद्धि शब्द का प्रयोग किया गया था। चाणक्य उस शब्द पर विचार करते हैं। उन्हें उस पर सन्देह हो जाता है। वे उसकी नटरचना देखते हैं। वे पूजा के लिए जाते समय

शारंग से धूर्तबुद्धि शब्द के बारे में विचार करने को कह जाते हैं। मलय शारंगरव से पूछता है कि आश्रम में कौन-कौन आया करते हैं। शारंगरव उससे धूर्त बुद्धि के बारे में पछता है तभी चाणक्य आ जाते हैं और कहते हैं कि यह शब्द तुमने मेरे लिए प्रयुक्त किया है। तुम राक्षस के गुप्तचर हो। वह क्षमायाचना करता है। चाणक्य उसे माफ कर देते हैं। मलय केतु आश्वस्त होने पर उनसे पूछता है कि अपने सर्वार्थ सिद्धि को वैरागी क्यों बनाया। तभी सर्वार्थसिद्धि का पीछा करता हुआ शटकार आता है। सर्वार्थसिद्धि बेहोश हो जाता है। चाणक्य उसे होश में ला देते हैं। शटकार से पूछताछ करने पर ज्ञात होता है कि वह सर्वार्थसिद्धि को मारना चाहता था। मलयकेतु की यह आशंका निर्मूल सिद्धि होती है कि चाणक्य ने शटकार को प्रेरित किया था। चाणक्य मलयकेतु और शटकार से बात कर शटकार की पुत्री सुवासिनी का राक्षस से विवाह सम्बन्ध तय कर देते हैं ताकि दोनों पक्षों की दुश्मनी खत्म हो जाय।

प्रश्न 44. सपेरा बने मलयकेतु ने अपने गाथागीत में चाणक्य को धूर्तबुद्धि क्यों ठहराया था ?

उत्तर—मलयकेतु सपेरा वास्तव में नन्द के राज मन्त्री राक्षस का गुप्तचर था। वह आचार्य चाणक्य के आश्रम की जानकारी लेने आया था। वह चाणक्य को धूर्तबुद्धि इसलिए मानता था कि उसे चाणक्य अब भी राजनीतिक व्यक्ति प्रतीत होते थे। उसके ऐसा मानने का आधार यह भी था कि चाणक्य ने सर्वार्थसिद्धि के पास विष्णु शर्मा को छद्मरूप में भेजकर सर्वार्थसिद्धि की वैरागी बनवाया था। उसने जान लिया था कि चाणक्य के पास शटकार, सुवासिनी, निपुणक आदि आया करते थे। जब सर्वार्थसिद्धि को मारने के लिए उसका पीछा करता हुआ शटकार दिखाई दिया तब उसकी यह मान्यता और भी दृढ़ हो गई थी चाणक्य ने राजनीतिक षड़यंत्र करना छोड़ा नहीं है। यह तो उसे बाद में पता चला कि चाणक्य अब सचमुच राजनीतिक पुरुष नहीं है। इस प्रकार पहली धारणाओं के आधार पर उसने चाणक्य के लिए धूर्त बुद्धि नाम का प्रयोग किया था।

प्रश्न 45. सिद्ध कीजिये कि चाणक्य में त्याग की भावना थी।

उत्तर—यों तो चाणक्य राजनीति में रूचि रखने वाले थे। राजनीति के क्षेत्र में उनसे जीतना मुश्किल था। लेकिन इस एकांकी में उनके यती जोवन का चित्रण किया गया है। तब उन्होंने राजनीति में भाग लेना छोड़ दिया था। उनमें अन्य विशेषताओं के साथ-साथ त्याग की विशेषता भी आ गई थी। वे कष्ट सहकर परिश्रम करके भी दूसरों को आस्तिक बनाने का प्रयत्न करते थे। इसका प्रमाण उनको सुवासिनी का त्याग करने की घटना है। शटकार की पुत्री सुवासिनी चाणक्य से विवाह करना चाहती थी। शटकार की नन्दवंश, नन्द के मन्त्री से

दुश्मनी थी। चाणक्य लोक कल्याण के कार्य करने लगे थे। उन्होंने शटकार और राक्षस की दुश्मनी दूर करने के उद्देश्य से सुवासिनी से अपना विवाह न कर उसका विवाह राक्षस मन्त्री से तय कर दिया था। यह उनकी त्याग की भावना का प्रमाण है।

प्रश्न 46. 'सरस एकांकी' एकांकी संग्रह में आपको कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगता है और क्यों ?

उत्तर—प्रस्तुत एकांकी संग्रह में अनेक पात्रों का चरित्र-चित्रण हुआ है जिनमें से हमें 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का पात्र रोशन सबसे अच्छा लगा है। इसके कुछ कारण हैं। इसका एक कारण तो यह कि रोशन का सम्बन्ध आज की एक महत्त्वपूर्ण समस्या से है। रोशन उस समस्या के सम्बम्ध में समाज को मार्ग-दर्शन देने वाल आचरण प्रस्तुत करता है। रोशन के माँ-बाप रोशन की पत्नी के मरते ही इसलिए दूसरी शादी कर लेना चाहते हैं कि उन्हें दहेज मिल सके। रोशन दहेज के लोभ की प्रवृत्ति पर ही प्रहार करता है और विवाह के लिए मना कर देता है। दहेज का लोभ पुत्र वधू के प्रति निर्मम, क्रूर बना देता है। रोशन इस बात पर जोर देता है कि जिन्दगी में शादी ही सब कुछ नहीं है। वह बहू के बारे में कहता है कि वह भी किसी की लाड़ली लड़की होती है। उसकी उपेक्षा करना उचित नहीं है। उन्हें घर पर स्नेह, आत्मीयता पूर्ण अच्छा व्यवहार अपेक्षित होता है। सास-ससुर जब बहू के प्रति उपेक्षा करें तो उसके पति को उसकी जिम्मेदारी निभाने का साहस दिखाना ही चाहिए। रोशन ऐसा ही करता है। वह मृत सरला के पुत्र के इलाज के लिए जी जान से कोशिश करता है। रोशन अन्ध विश्वासों, रूढ़ियों का विरोध कर नवयुवकों को भी वैसा करने की प्रेरणा देता है। ऐसी परम्परा रही है कि पुत्र की पत्नी मार जाय तो उसका दूसरा विवाह जल्दी कर लिया जाता है नहीं तो समाज के लोग उपहास करते हैं, दस बातें बनाते हैं। रोशन की माँ इसी कारण उसका शगुन इसलिए जल्दी लेने के लिए उतावली रहती है। वह रामप्रसाद का उदाहरण देती है। रोशन राम प्रताप को गंवार, असभ्य मानकर उससे अपनी तुलना की जानी उचित नहीं मानता। वह तटस्थ विश्लेषण करने वाला है। वह अपने घर वालों की कमियों पर प्रकाश डाल देता है। ठीक भी है, यदि गँवार, अशिक्षित लोग गलती करें और घर में पढे लिखे लोग भी उन्हें न सुधारें तब तो उनके पढे-लिखे होने का काई लाभ ही न हो और समाज से बुराइयाँ कभी दूर ही न हो पायें। इस प्रकार रोशन का चरित्र नई पीढी के लिए मार्ग-दर्शन है और समाज में व्याप्त बुराइयों पर प्रहार करने वाला है। उससे सामाजिक समस्याओं का समाधान प्राप्त होता है। इसलिए हमें उसका चरित्र सबसे अधिक प्रभावित करता है। सबसे अच्छा लगता है।

प्रश्न 47. 'सरस एकांकी' में आपको कौन-सा एकांकी सबसे अच्छा लगता है और क्यों ? स्पष्ट कीजिये ।

उत्तर—'सरस एकांकी' में सात एकांकी हैं जिनमें हैं से हमें 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी सबसे लगता है । इसका एक कारण यह है कि इसका शीर्षक नवीनता लिए हुए है । यह कौतुहलोत्पादक है । इस शीर्षक को पढ़ते ही पाठक में यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि लक्ष्मी का किसने स्वागत किया है । किस प्रसंग में किया है आदि । शीषक का एकांकी के वर्णन से भी सम्बन्ध बना हुआ है । इसमें रोशन के माँ-बाप का दहेज के प्रति लगाव दर्शाया गया है जिसके पीछे वे अपनी पुत्र वधू की मृत्यु और पौत्र की गंभीर बीमारी को भी अनदेखा कर देते हैं ।

इसकी कथा वस्तु आज की दहेज समस्या, रूढ़ि रीतियों की बुराईयों से जुड़ी हुई है । उसमें सुगठिता है, कौतूहल की विशेषता है । वह एकांकी के अनुकूल संक्षिप्त है । इसमें रोशन, सुरेन्द्र, डॉक्टर, रोशन माता-पिता, रोशन का लाड़ला अरूण जैसे थोडे-से पात्र हैं जिनमें से रोशन नायक के चरित्र पर ही विस्तार से प्रकाश डाला गया है । अन्य पात्र उसके ही चरित्र को उभारने के उद्देश्य से तथा उद्देश्य को भली प्रकार स्पष्ट करने के लिए लाये गये हैं । पात्रों के चरित्र चित्रण में स्वभाविकता, मनोवैज्ञानिकता, सहजता की विशेषताएँ विद्यमान हैं ।

एकांकी के कथोपकथन छोटे, कथा वस्तु को आगे ले जाने वाले, पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाले, अनुकूल वातावरण की सृष्टि करने वाले, एकांकी में रोचकता लाने वाले, पात्रों के बौद्धिक स्तर के अनुरूप हैं । उनमें नाटकीयता की विशेषता विद्यमान हैं, सांकेतिकता है । वे भी कौतूहल की सृष्टि करने में सहायक हैं, जैसे—

सुरेन्द्र—कहिए ।
माँ —आज वे फिर आये हैं ।
सुरेन्द्र—वे कौन ?

एकांकी भाषा शैली की दृष्टि से भी उच्च स्तर का है । इसकी भाषा खड़ी बोली है जिसमें आवश्यकतानुसार देशज शब्द जैसे नकोदर, चौथे ; उर्दू शब्द जैसे दुनियाँ-जहान फर्क ; अंग्रेज़ी के शब्द जैसे आयोडीन-ग्लिसरी, डॉक्टरन, डिप्थीरिया, इन्जैक्शन, फीवर-मिक्स्चर, संस्कृत शब्द जैसे मरणासन्न, क्रूर, निर्मम आदि प्रयुक्त हुए हैं । एकांकी की भाषा शैली एकांकी के कथ्य के अनुरूप है और पात्रों के अनुरूप है । वह पात्रों के मन के भावों, अनुभूतियों को भली प्रकार व्यक्त कर पाती है । शैली में सरसता, चित्रात्मकता की विशेषताएं हैं, उसका एकांकी सोद्देश्य है । यह दहेज समस्या, रूढ़ियों की समस्या पर प्रकाश डालती है और समाज को

मार्गदर्शन प्रदान करने वाला है। एकांकी में अभिनयेता भरपूर है। इसका रंगमंच पर सफलतापूर्वक अभिनय किया जा सकता है।

उपर्युक्त कारणों से हमें 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी बहुत अच्छा लगता है।

व्याकरण, वर्तनी तथा विराम चिन्हों से सम्बन्धित शुद्धिकरण

वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
निष्चित	निश्चित
दुष्चरित्र	दुश्चरित्र
गन	गण
गनिका	गणिका
छन	क्षण
हरन	हरण
प्रान पखेरू	प्राणपखेरू
कायकल्प	कायाकल्प
कल्यान	कल्याण
शिश्टाचार	शिष्टाचार
उदृदन्डता	उद्दण्डता
निर्द्वंद	निर्द्वन्द
निश्काम	निष्काम
रिषि	ऋषि
मातृत्व	मातृत्व
आश्चर्यं हुवा	आश्चर्य हुआ
असनान	स्नान
इस्त्री	स्त्री
परसपर	परस्पर
रासता	रास्ता

अनुस्वार सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अंगिया	अँगिमा
कंगना	कँगना
बंगला	बँगला
हंसना	हँसना
क्रांति	क्रांति

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
नदियां	नदियाँ
कन्याएं	कन्याएँ
दिशाएं	दिशाएँ
लड़कियां	लड़कियाँ

हलन्त सम्बन्धी अशुद्धियाँ

आयुष्मान	आयुष्मान्
श्रीमान	श्रीमान्
महान	महान्
राजन	राजन्
भगवान	भगवान्
विद्वान	विद्वान्

सन्धि सम्बन्धी अशुद्धियाँ

सदोपदेश	सदुपदेश
दुष्कार	दुष्कर
प्रत्योपकार	प्रत्युपकार
उपरोक्त	उपर्युक्त
तदोपरान्त	तदुपरान्त
अत्योक्ति	अत्युक्ति
निरोत्साह	निरुत्साह
निरस	नीरस
निष्छल	निश्छल
निश्फल	निष्फल
निरोग	नीरोग
अद्यवधि	अद्यावधि
दुरूपयोग	दुरुपयोग
निश्चित	निश्चिन्त
दुरगम	दुर्गम
निस्सेस	निश्शेष
निसंदेह	निस्सन्देह
निश्ठुर	निष्ठुर
राज्यभिषेक	राज्याभिषेक
अन्तहकरण	अन्तः करण
नमष्कार	नमस्कार

समास संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
माता-भक्ति	मातृभक्ति
कालीदास	कालिदास
युधिष्ठीर	युधिष्ठिर
महाराज	महाराजा
हस्तालिखित	हस्तलिखित
पक्षिसमूह	पक्षीसमूह
कृतघ्नी	कृतघ्न
भ्रातगण	भ्रातृगण
योगिवर	योगीवर
रजनिभूशण	रजनीभूषण
षडनन	षडानन
गोशाल	गोशाला
नीलागाय	नीलगाय
पीतम्बर	पीताम्बर
याघम्बर	बाघाम्बर
नवंकुर	नवांकुर
पशगान	यशोगान

प्रत्यय संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
निर्गुणी	निर्गुण
निर्दयी	निर्दय
सनाथिनि	सनाथ
सुकेशिनि	सुकेशी
अभीष्टित	अभीष्ट
आवश्यकीय	आवश्यक
प्रफुल्लित	प्रफुल्ल
एकत्रित	एकत्र
कौटिल्यता	कुटिलता
पाण्डित्यता	पाण्डित्य
महत्वता	महत्व
चातुर्यता	चातुर्य

सौन्दर्यता	सौन्दर्य, सुन्दरता
हस्तलाघवता	हस्तलाघव

लिंग संबंधी अशुद्धियां

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, उन पुल्लिग शब्दों के स्त्रीलिंग रूप प्रस्तुत करने में विद्यार्थी बहुबार त्रुटि कर देते हैं—

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
कवि	कवयित्री
आयुष्मान्	आयुष्मती
पंडित	पंडिता
विद्वान्	विदुषी
पाठक	पाठिका
गृही	गृहिणी
आधिकारी	अधिकारिणी
गायक	गायिका
युवा, युवक	युवती
विधुर	विधवा
सभापति	सभानेत्री
सम्राट	सम्राज्ञी

वर्तनी संबंधी अन्य अशुद्धियां

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
अवगुन	अवगुण
इक्षा	इच्छा
परिक्षा	परीक्षा
व्यस्क	वयस्क
महत्व	महत्त्व
व्यवहारिक	व्यावहारिक
घनिष्ट	घनिष्ठ
उज्वल	उज्ज्वल
कृतग्य	कृतज्ञ
बिकार	विकार
बृज	ब्रज

आधीन	अधीन
व्यवसायिक	व्यावसायिक
घ्रणा	घृणा
निरपराधी	निरपराध
निर्दयी	निर्दय
अध्यन	अध्ययन
रचयीता	रचयिता
बीणा	वीणा
स्रष्टि	सृष्टि
अनुग्रहीत	अनुगृहीत
अनुवादित	अनूदित
अतिथी	अतिथि
लब्ध प्रतिष्ठित	लब्ध प्रतिष्ठ
जाग्रति	जागृति
पैत्रिक	पैतृक
अभिष्ट	अभीष्ट
अभिप्सित	अभीप्सित
दृष्टा	द्रष्टा
मान्यनीय	माननीय
सम्मान्यनीय	सम्माननीय, सम्मान्य
प्रशाद	प्रसाद
स्वामीभक्त	स्वामिभक्त
पश्चाताप	पश्चात्ताप
निरभिमानी	निरभिमान
प्रतिनिधी	प्रतिनिधि
ऊंधोगती	ऊधोगति
साहित्यक	साहित्यिक
स्रजन	सृजन
पूज्यनीय	पूज्य, पूजनीय
बेफिजूल	फिजूल
कर्तव्य	कर्त्तव्य
महात्म्य	माहात्म्य
इतिहासिक	ऐतिहासिक

परिस्कार	परिष्कार
भगवानकृपा	भगवत्कृपा
श्रीमद्भागवतगीता	श्रीमद्भगवद्गीता
निरोत्साह	निरुत्साह

अशुद्ध वाक्यों का शुद्धिकरण

अशुद्ध—मैंने उसे बुलाकर राम को पुस्तक दी।
शुद्ध —मैने राम को बुलाकर उसे पुस्तक दी।
अशुद्ध—राम ने राम की मां के चरण छुए।
शुद्ध—राम ने अपनी मां के चरण छुए।
अशुद्ध – यह कमल सुन्दर है, उसे लाओ।
शुद्ध – यह कमल सुन्दर है, इसे लाओ।
अशुद्ध – वह अपना काम कर रहा है, इसे मत पुकारो।
शुद्ध – वह अपना काल कर रहा है, उसे मत पुरारो।
अशुद्ध—वह सब कुछ जानते हैं।
शुद्ध—वे सब कुछ जानते हैं।
अशुद्ध—वो लड़के पढ़ रहे हैं।
शुद्ध—वे लड़के पढ़ रहे हैं।
अशुद्ध—राम पृथ्वी का उद्धार करने अवतार धारण किया।
शुद्ध—राम ने पृथ्वी का उद्धार करने के लिए अवतार धारण किया।
अशुद्ध—भारतेन्दु की अनुवादित ग्रंथ निम्नांकित हैं।
शुद्ध—भारतेन्दु के अनूदित ग्रंथ निम्नांकित हैं।
अशुद्ध—मां-बच्चा दोनों बीमार पड़ गयीं।
शुद्ध—मां-बच्चे दोनों बीमार पड़ गये।
अशुद्ध—वे सब लडका पढ़ते हैं।
शुद्ध – वे सब लड़के पढ़ते हैं।
अशुद्ध—चोर को फांसी पर चढ़ाया गया।
शुद्ध—चोट को फांसी पर लटका दिया गया।
अशुद्ध—उसने बड़ा कष्ट उठाया है।
शुद्ध – उसने बड़ा कष्ट भोगा है।
अशुद्ध—अब आप देर न करें, भोजन कीजिये।
शुद्ध—अब आप देर न कीजिये, भोजन कीजिये।
अशुद्ध—उससे पाठ याद नहीं होता।
शुद्ध – उसे पाठ याद नहीं होता।

अशुद्ध—मैं तुम्हें केवल पांच रुपये ही दूंगा।

शुद्ध—मैं तुम्हें पांच रुपये ही दूंगा

अथवा

मैं तुम्हें केवल पांच रुपये दूंगा

अशुद्ध – गोपाल यहीं ही रहता है।

शुद्ध—गोपाल यहीं रहता है।

अथवा

गोपाल यहां ही रहता है।

अशुद्ध—वह पत्र लिखा होगा।

अशुद्ध – उसने पत्र लिखा होगा।

अशुद्ध – महात्मा शिष्या, से अलग-अलग प्रश्न पूछे।

शुद्ध—महात्मा ने शिष्यों से अलग-अलग प्रश्न पूछे।

अशुद्ध – राम अरे ! तुम कब आये ?

शुद्ध—अरे राम ! तुम कब आये ?

अशुद्ध—वह प्रत्येक अपनी पुस्तक पढ़ी है।

शुद्ध—उसने अपनी प्रत्येक पुस्तक पढ़ी है।

अशुद्ध—सोहन को अनुत्तीर्ण होने की आशा है।

शुद्ध—सोहन को अनुत्तीर्ण होने की आशंका है।

अशुद्ध—सबसे बड़ा विश्व का रेगिस्तान सहारा है।

शुद्ध – विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान सहारा है।

अशुद्ध—मैं आपकी सौजन्यता से बहुत प्रभावित हूं।

शुद्ध—मैं आपके सौजन्य से बड़ा प्रभावित हूँ।

अशुद्ध—मैं उसका गीत और सौन्दर्य देखा।

शुद्ध—मैंने उसका गीत सुना और सौन्दर्य देखा।

अशुद्ध—घड़ा और लोटे में पानी है।

शुद्ध—घड़े और लोटे में पानी है।

अशुद्ध—मैंने उसका भाई देखा।

शुद्ध—मैंने उसके भाई को देखा।

अशुद्ध – श्रीमती महादेवी वर्मा एक विद्वान महिला हैं।

शुद्ध—श्रीमती महादेवी वर्मा एक विदुषी महिला है।

अशुद्ध—विन्ध्याचल पर्वत पर बहुत से वृक्ष हैं।

शुद्ध—विन्ध्याचल पर बहुत से वृक्ष हैं।

अशुद्ध – उसे मरणोपरान्त के बाद बड़ा पुरस्कार मिला।

शुद्ध—उसे मरणोपरान्त बड़ा पुरस्कार मिला ।
अशुद्ध—आपको मैं कुछ नहीं दे सकता ।
शुद्ध—मैं आपको कुछ नहीं दे सकता ।
अशुद्ध—राम ने उसका भाई को पीटा ।
शुद्ध—राम ने उसके भाई को पीटा ।
अशुद्ध—लड़के और लड़कियाँ हंस रही हैं ।
शुद्ध—लड़के और लड़कियां हंस रही हैं ।
अशुद्ध—ग्लास में दही जम गई है ।
शुद्ध—ग्लास में दही जम गया है ।
अशुद्ध—सीता ने जोर से हंस दी ।
शुद्ध—सीता जोर से हंस पड़ी ।
अशुद्ध—ईश्वर-भक्ति बिना मोक्ष नहीं मिल सकती ।
शुद्ध—ईश्वर-भक्ति बिना मोक्ष नहीं मिल सकता ।
अशुद्ध—उसमें से हरेक ने पुरस्कार प्राप्त किया ।
शुद्ध—उनमें से हर एक ने पुरस्कार प्राप्त किया ।
अशुद्ध—मेरा प्राण संकट में है ।
शुद्ध—मेरे प्राण संकट में हैं ।
अशुद्ध—चोरों और पुलिस में लड़ाई हुई ।
शुद्ध—चोरों और पुलिसगण में लड़ाई हुई ।
अशुद्ध—राम और सोहन कोई तो आयेंगे ही ।
शुद्ध—राम और सोहन कोई तो आयेगा ही ।
अशुद्ध—राम के पास सात रुपये, पांच पैन और दो पुस्तक हैं ।
शुद्ध—राम के पास सात रुपये, पांच पैन और दो पुस्तकें हैं ।
अशुद्ध—निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिये ।
शुद्ध—निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिये ।
अशुद्ध—नवरस में शृंगारस का प्रमुख स्थान है ।
शुद्ध—नवरसों में शृंगाररस का प्रमुख स्थान है ।
अशुद्ध—मैंने आज देवी का दर्शन किया ।
शुद्ध—मैंने आज देवी के दर्शन किये ।
अशुद्ध—उसने अनेकों महान् कार्य किये हैं ।
शुद्ध—उसने अनेक महान् कार्य किये हैं ।

अशुद्ध—मुझे मेरा दाम लौटा दो।
शुद्ध—मुझे मेरे दाम लौटा दो।
अशुद्ध—अपने बच्चे चतुर बनाओ।
शुद्ध—अपने बच्चे को चतुर बनाओ।
अशुद्ध—उनको समझौते की इच्छा नहीं थी।
शुद्ध—उनमें समझौते की इच्छा नहीं थी।
अशुद्ध—मैंने अपने विचार अधिकारियों को प्रकट कर दिये।
शुद्ध—मैंने अपने विचार अधिकारियों पर प्रकट कर दिये।
अशुद्ध—उसको इन्कार कर वह कहीं सफल हो सकता है?
शुद्ध—उसको इन्कार करके वह कहीं सफल हो सकता है?
अशुद्ध—इसे वैज्ञानिक ढंग पर विश्लेषण कीजिए।
शुद्ध—इसका वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण कीजिए।
अशुद्ध—वह अपने काम से लग गया।
शुद्ध—वह अपने काम में लग गया।
अशुद्ध—उसकी योग्यता हर काम में प्रकट होती है।
शुद्ध—उसकी योग्यता हर काम से प्रकट होती है।
अशुद्ध—वह इधर-उधर देखा और बोला।
शुद्ध—उसने इधर-उधर देखकर कहा।
अशुद्ध—आप खाना खाये कि नहीं?
शुद्ध—आपने खाना खाया कि नहीं?
अशु—अब पांच बजने को दस मिनट हैं।
शुद्ध—अब पांच बजने में दस मिनट हैं।
अशुद्ध—आओ, अब मैच को देखने चलें।
शुद्ध—आओ, अब मैच देखने चलें।
अशुद्ध—वह उसे देखा तो घबड़ा गया।
शुद्ध—उसने उसे देखा तो घबड़ा गया।
अशुद्ध—सीता भोजन किया होगा।
शुद्ध—सीता ने भोजन कर लिया होगा।
अशुद्ध—वह तुम पर श्रद्धा करता है।
शुद्ध—वह तुम पर श्रद्धा रखता है।
अशुद्ध—आज बजट के ऊपर बहस हुई।
शुद्ध—आज बजट पर बहस हुई।
अशुद्ध—मेरा सिर चक्कर काटता है।
शुद्ध—मेरा सिर चकराता है।

अशुद्ध—आप चाहो तो काम हो जायेगा।
शुद्ध—आप चाहें तो काम हो जायेगा।
अशुद्ध—आप बड़े सज्जन आदमी हैं।
शुद्ध—आप बड़े सज्जन हैं।
अशुद्ध—भक्ति-युग का काल बड़े महत्त्व का है।
शुद्ध—भक्ति काल बड़े महत्त्व का है।
अशुद्ध—उर्मिला लक्ष्मण की स्त्री थी।
शुद्ध—उर्मिला लक्ष्मण की पत्नी थी।
अशुद्ध—अध्यापक इतिहास छात्रों को पढ़ाता है।
शुद्ध—अध्यापक छात्रों को इतिहास पढ़ाता है।
अशुद्ध—माता-पिता पूज्यनीय होते हैं।
शुद्ध—माता-पिता पूजनीय होते हैं।
अशुद्ध—घर में केवल मात्र एक नौकर है।
शुद्ध—घर में केवल एक नौकर है।
अशुद्ध—उसने अध्यापक को निवेदन किया।
शुद्ध—उसने अध्यापक से निवेदन किया।
अशुद्ध—मेरा पैन तुमसे अच्छा है।
शुद्ध—मेरा पैन तुम्हारे पैन से अच्छा है।
अशुद्ध—यह आप पर निर्भर करता है।
शुद्ध—यह आप पर निर्भर है।
अशुद्ध—इन पेड़ों पर बन्दर रहता है।
शुद्ध—इस पेड़ पर बन्दर रहता है।
अशुद्ध—यहां शुद्ध गाय का घी मिलता है।
शुद्ध—यहां गाय का शुद्ध घी मिलता है।
अशुद्ध—वह साहित्यक पुरुष है।
शुद्ध—वह साहित्यिकार है।
अशुद्ध—कुत्ता एक स्वामीभक्त जानवर है।
शुद्ध—कुत्ता एक स्वामीभक्त पशु है।
अशुद्ध—यह चित्र सुन्दरतापूर्ण है।
शुद्ध—यह चित्र सुन्दर है।
अशुद्ध—वह चलता-चलता थक गया।
शुद्ध—वह चलते-चलते थक गया।
अशुद्ध—यह चित्र बड़ा छोटा है।
शुद्ध—यह चित्र बहुत छोटा है।

अशुद्ध—यहां अपनी हस्ताक्षर कर दीजिये।
शुद्ध – यहां अपने हस्ताक्षर कर दीजिये।
अशुद्ध—रामायण सभी हिन्दू मानते हैं।
शुद्ध – रामायण सभी हिन्दुओं को मान्य है।
अशुद्ध रामचरित मानस के रचेता तुलसीदास हैं।
शुद्ध—रामचरित मानस के रचयिता तुलसीदास हैं।
अशुद्ध – मानसिंह एक विख्यात डाकू था।
शुद्ध – मानसिंह एक कुख्यात डाकू था।
अशुद्ध—कृपया मेरे इस निमंत्रण को स्वीकार करने की कृपा करें।
शुद्ध—कृपया मेरे इस निमन्त्रण को स्वीकार करें।
अशुद्ध—पुस्तक मेरी मैंने उसी दिन पढ़ ली थी।
शुद्ध—मैंने अपनी पुस्तक उसी दिन पढ़ ली थी।
अशुद्ध – उसके बाद वे वापस लौट आए।
शुद्ध—बाद में वे लौट आए।
अशुद्ध—राम प्रातःकाल के समय चाय पीता है।
शुद्ध—राम प्रातःकाल चाय पीता है।
अशुद्ध—तब शायद यह काम जरूर हो जायेगा।
शुद्ध – तब शायद यह काम हो जायेगा।
अशुद्ध—हमें ठण्डी बर्फ मंगानी है।
शुद्ध—हमें बर्फ मंगानी है।
अशुद्ध—गली में कुत्ते चिल्ला रहे हैं।
शुद्ध—गली में कुत्ते भौंक रहे हैं।
अशुद्ध—कौआ पेड़ों पर बोल रहा है।
शुद्ध—कौआ पेड़ पर कांव-कांव कर है।
अशुद्ध—पिताजी आज मुझे एक रुपया दिये।
शुद्ध—पिताजी ने आज मुझे एक रुपया दिया।
अशुद्ध—वह चौदह विद्या जानता था।
शुद्ध—वह चौदह विद्याएं जानता था।
अशुद्ध—आप लोग अपने भाव व्यक्त करें।
शुद्ध—आप लोग अपने-अपने भाव व्यक्त करें।
अशुद्ध—वह विद्वान् था क्योंकि वह शास्त्रार्थ में हार गया।
शुद्ध—वह विद्वान् था लेकिन वह शास्त्रार्थ में हार गया।
अशुद्ध—जज ने हत्यारे को मृत्यु दण्ड की सजा दी।
शुद्ध—जज ने हत्यारे को मृत्यु-दण्ड दिया।

अशुद्ध—आज उनकी सौभाग्यवती पुत्री का विवाह है।

शुद्ध—आज उनकी सौभाग्यकांक्षिणी पुत्री का विवाह है।

अशुद्ध – उनका प्राण निकल गया।

शुद्ध – उनके प्राण निकल गये।

विराम-चिन्ह सम्बन्धी अशुद्धियां

निम्नलिखित वाक्यों में उचित स्थानों पर उचित विराम चिन्ह लगाइये—

प्रश्न—पहले आप यह बताइये सुशील का स्वास्थ्य कैसा है और इलाज किसका चल रहा है?

उत्तर—पहले आप यह बताइये, सुशील का स्वास्थ्य कैसा है और इलाज किसका चल रहा है?

प्रश्न—साहित्य साधना का लक्ष्य सत्यं शिवं सुन्दरं की सिद्धि है।

उत्तर—साहित्य साधना का लक्ष्य 'सत्यं, शिवं, सुन्दर' की सिद्धि है।

प्रश्न—हम जान गए मैंने कहा, तुम बिस्तर से उठ आयी हो दरवाजे के पीछे से छिपकर झांक रही हो।

उत्तर—"हम जान गए" मैंने कहा, तुम बिस्तर से उठ आयी हो, दरवाजे के पीछे छिपकर झांक रही हो।

प्रश्न–कालिदास इसका रस ले सके थे अपने ढंग से मैं भी ले सकता हूँ अपने ढंग से।

उत्तर—कालिदास इसका रस ले सके थे अपने ढंग से, मैं भी ले सकता हूँ अपने ढंग से।

प्रश्न—राम ने विवश किया, सोहन ने विवश किया राजू ने विवश किया तब मुझे कहना पड़ा।

उत्तर—राम ने विवश किया; सोहन में विवश किया; राजू ने विवश किया; तब मुझे कहना पड़ा।

प्रश्न – कॉलेज के प्रिंसिपल इस विचार से सहमत नहीं थे उन्होंने हिम्मत करके कह ही तो दिया आज से चालीस साल बाद आदमी पक्षियों को तरह आकाश में उड़ता दिखाई देगा।

उत्तर – कॉलेज के प्रिंसिफल इस विचार से सहमत नहीं थे। उन्होंने हिम्मत करके कह ही तो दिया, आज से चालीस साल बाद आदमी पक्षियों की तरह आकाश में उड़ता दिखाई देगा।

प्रश्न—अस्तु आपने कष्ट किया धन्यवाद अब विश्राम करें।

उत्तर—अस्तु आपने कष्ट किया, धन्यवाद! अब विश्राम करें।

प्रश्न – राजू ने विश्वास के साथ कहा धीरज रखिए इतना विचालित क्यों होते हैं कल नहीं तो परसों तक तो बेटी ठीक होने लगेगी।

उत्तर—राजू ने विश्वास के साथ कहा, "धीरज रखिए! इतना विचलित क्यों होते हैं? कल नहीं तो परसों तक तो बेटी ठीक होने लगेगी।"

प्रश्न—मां (रोते हुए) नहीं अशोक नहीं तुम नहीं जाओगे तुम इतने कठोर नहीं हो सकते हमने तुम्हारा क्या अनिष्ट किया है जो तुम इतनी कड़ी सजा हमें दे रहे हो।

उत्तर—मां (रोते हुए) नहीं, अशोक नहीं! तुम नहीं जाओगे। तुम इतने कठोर नहीं हो सकते। हमने तुम्हारा क्या अनिष्ट किया है जो तुम इतनी कड़ी सजा हमें दे रहे हो?

प्रश्न—वाह आप आगये छिः छिः अकाल ने ताण्डव कर दिया कृष्णा यहां आओ।

उत्तर—वाह! आप आ आगये। छिः छिः! अकाल ने ताण्डव कर दिया। कृष्णा! यहां आओ।

प्रश्न – अध्यापक की बात सुनकर सब चकित रह गये एक लड़के ने साहस बटोर कर कहा आपका कथन सत्य है।

उत्तर—अध्यापक की बात सुनकर सब चकित रह गये। एक लड़के ने साहस बटोर कर कहा, "आपका कथन सत्य है।"

प्रश्न—मैंने कहा रुको थोड़ी देर बाद चले जाना।

उत्तर—मैंने कहा, रुको, थोड़ी देर बाद चले जाना।

प्रश्न—वचन दो होते हैं एकवचन व बहुवचन।

उत्तर—वचन दो होते हैं – एकवचन व बहुवचन।

प्रश्न— उसके माता पिता आये हैं।

उत्तर—उसके माता–पिता आये हैं।

प्रश्न – नहीं नही मैं बैठा हूँ मैं देखूंगा।

उत्तर—नहीं नहीं! मैं बैठा हूँ। मैं देखूंगा।

प्रश्न—नेताजी की बात सुनकर सब स्तब्ध रह गये एक लड़के ने साहस बटोर कर कहा आपका कथन सत्य है।

उत्तर—नेताजी की बात सुनकर सब स्तब्ध रह गये। एक लड़के ने साहस बटोर कर कहा, "आपका कथन सत्य है।"

——

निबन्ध लेखन

1. युवा पीढी का समाज के प्रति दायित्व
अथवा
राष्ट्र निर्माण में युवकों का योगदान

1. प्रस्तावना-समाज की वर्तमान स्थिति ।
2. युवा पीढ़ी की वर्तमान स्थिति ।
3. युवकों का दायित्व–आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक ।
4. उपसंहार ।

भारत एक उपमहाद्वीप है । आजादी के बाद जब से यहां प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली अपनाई गयी है तब से देश में चहुँमुखी विकास तो हुआ है लेकिन समस्यायें भी बहुत बढ़ गयी हैं । चारों तरफ आपाधापी, महंगाई, बेरोजगारी, जासूसी, अनुशासनहीनता आदि की समस्यायें दृष्टिगोचर होती हैं । इनका समाधान कानून के ठंग से सम्भव नहीं । युवा पीढ़ी यदि देश के प्रति अपना दायित्व निभाने का बीडा उठा ले तो इन समस्याओं का समाधान ही नहीं होगा अपितु देश विकास की ओर अग्रसर होगा ।

इस विशाल देश में सब ओर फैली हुई शिक्षण संस्थाओं में प्रतिवर्ष लाखों युवक शिक्षा प्राप्त करते हैं । शिक्षित युवकों में नव–चेतना आ गई है । शिक्षा से वे देश को हानि पहुँचाने वाली गतिविधियों से परिचित होते जा रहे हैं । स्वतन्त्रता संग्राम में युवा पीढ़ी ने देश के लिए अभूतपूर्व कार्य किया था । यदि युवकों को सद्मार्ग पर ला दिया जाय, तो वे राष्ट्र के उत्थान में बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं ।

देश की परिस्थितियों को देखते हुए युवकों का दायित्व और भी बढ़ गया है । युवक राष्ट्र की शक्ति का स्रोत है । इन्हीं युवकों में से प्रशासनिक अधिकारी, इन्जीनियर, डाक्टर, वकील, वैज्ञानिक, अध्यापक, समाज सुधारक आदि बनेंगे । युवक प्रौढ़ों को शिक्षित कर सकते हैं, चोर बाजारी, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण लगवा सकते हैं । समाज में साम्प्रदायिक सदभाव और शान्ति स्थापित कर सकते हैं युवक संगठित होकर देशहित की भावना से राजनीति में सक्रिय भाग लें तो वे जनता के इस प्रजातांत्रित शासन में योग्य और ईमानदार व्यक्तियों को शासक बनवा सकते हैं । परिश्रम का महत्त्व समझकर प्रयत्न करें तो कृषि कार-

खानों आदि में पैदावार बढ़ सकती है। देश में नैतिकता का पतन होता जा रहा है लोग बिना परिश्रम के धनवान बनने के तरीके अपनाने लगे हैं। यदि युवा पीढ़ी परिश्रम की भावना अपनाकर दूसरों को भी परिश्रम करने की प्रेरणा देने लगे तो देश की अपार जन शक्ति के उपयोग से कम समय में बहुत से कार्य सम्पन्न होने लगे और आलसी, अकर्मण्य व्यक्ति भी परिश्रमी बन जाय, पुरानी पीढ़ी की तुलना में नई पीढ़ी बढ़ती हुई जनसंख्या, महंगाई का महत्त्व अधिक समझती है। यदि युवक इस ओर ध्यान दे तो जनसंख्या नियंत्रण का अभियान बहुत हद तक सफल हो सकता है।

कहने का आशय यह है कि इस विशाल देश के असंख्य युवकों की अपार शक्ति है। समाज का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसमें युवक ईमानदारी से योग देकर उसमें उन्नति न ला सकें। युवक देश के भावी कर्णधार हैं। वे ये मान लें कि इस देश की जिम्मेदारियाँ, समस्यायें हमारे ही ऊपर आने वाली हैं, इनका समाधान हमें ही करना है, देशहित के कार्यों से हमारा और हमारे देश का भला होगा तो वे सच्चे मन से अपने दायित्वों का निर्वाह कर सकते हैं।

2. वर्तमान शिक्षा-प्रणाली

1. प्रस्तावना।
2. शिक्षा प्रणाली का वर्तमान स्वरूप।
3. शिक्षा प्रणाली के गुण एवं दोष।
4. शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए सुझाव।
5. उपसंहार।

प्राचीन काल में मानव शिक्षित नहीं था। वह जंगली जीवन यापन करता था। उसका भौतिक विकास नहीं हुआ था। लेकिन जैसे जैसे—उसकी आवश्यकता में वृद्धि हुई उसने नये-नये आविष्कार किये। वर्तमान युग में मनुष्य ने काफी प्रगति की है। उसने प्रकृति कर विजय प्राप्त कर ली है। शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग किए जा रहे हैं, साहित्य रचना हो रही है, बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा पद्धति में भी परिवर्तन हो रहे हैं। शिक्षा ही मानव जीवन की उन्नति का आधार है जैसे कि किसी कवि ने कहा है—

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है॥

हमारे देश में अंग्रेजों द्वारा शुरू की गई शिक्षा प्रणाली चल रही है। आज की शिक्षा प्रणाली दूषित है। आज पाठ्यक्रम के कुछ विषय निर्धारित कर दिए जाते हैं। विद्यार्थी पाठ्यक्रमानुसार पुस्तकों को रटकर परीक्षा देते हैं। कुछ विद्यार्थी नकल करके भी परीक्षा पास कर लेते हैं। वे व्यावहारिक ज्ञान से वंचित रहते हैं।

हमारी शिक्षा प्रणाली का गुण तो यही है कि आज पहले की अपेक्षा शिक्षित व्यक्तियों की संख्या काफी बढ़ गयी है। देशभर में विद्यालय और महाविद्यालयों की स्थापना हो गयी है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का दोष यह है कि सभी छात्रों को छोटी कक्षा में एक से विषय पढ़ने पड़ते हैं। अधिक विषय पढ़ने से विद्यार्थियों को विषय की ठोस जानकारी नहीं हो पाती। सम्पूर्ण शिक्षा प्राप्त करके भी वह अपने विषय के मास्टर नहीं हो पाते। वर्तमान शिक्षा व्यावहारिक ज्ञान से शून्य है। पढ़ लिखकर छात्र शरारती हो जाते हैं। उनमें अनुशासन, नैतिकता, देशभक्ति, आदि विशेषताएं नहीं आ पाती हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन के अनुकूल नहीं है। अतः इसमें परिवर्तन या सुधार की परम आवश्यकता है। विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार विषय पढ़ाये जायें। ऐसा प्रयत्न किया जाय कि विद्यार्थी अपने विषय के मास्टर हो जायें। उनको व्यावहारिक शिक्षा भी दी जाय, जिससे उनमें सूझ-बूझ और समस्याओं का समाधान निकालने की क्षमता, योग्यता का विकास हो सके। उन्हें रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान की जाय, ताकि विद्यार्थी अपना कारोबार शुरूकर जीवन निर्वाह कर सकें। उन्हें देशभक्ति एवं अनुशासन का महत्व बताने वाली शिक्षा दी जाय।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि शिक्षा की प्रणाली समयानुकूल एवं वैज्ञानिक हो। शिक्षा ऐसी हो जिसको प्राप्त कर युवक अपना कारोबार चला सके जिससे देश आर्थिक दृष्टि सम्पन्न बन सके।

3. युवा पीढ़ी में असन्तोष

1. प्रस्तावना—देश व्यापी असन्तोष
2. युवा पीढ़ी से तात्पर्य
3. असन्तोष के कारण
4. असन्तोष के परिणाम
5. असन्तोष दूर करने के उपाय।
6. उपसंहार।

आज हम देश के किसी भी कोने में चले जाये चारों ओर असन्तोष ही दिखाई देता है। गरीबी के कारण आर्थिक असन्तोष उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। समाज की दो पीढ़ियों में सामंजस्य न होने के कारण सामाजिक असन्तोष फैल रहा है। राजनीतिक असन्तोष के दृश्य भी प्रतिदिन समाने आते रहते हैं। ठीक इसी प्रकार का असन्तोष युवा पीढ़ी में भी व्याप्त है।

युवा पीढ़ी से हमारा आशय उन किशोर–किशोरियों, युवक–युवतियों से है जो विद्यालय और महाविद्यालयों में पढ़ रहे हैं, तथा कुछ शिक्षा पूरी करके भी

बेरोजगार हैं। सामान्यतः इस वर्ग के अन्तर्गत 18 से 30 वर्ष तक के व्यक्तियों को समझा जाता है।

युवा पीढ़ी में व्याप्त असन्तोष के कई कारण हैं—(i) सर्वप्रमुख कारण उनकी बेरोजगारी है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी युवक-युवतियों को काफी समय तक रोजगार नहीं मिलता। परिणामस्वरूप उनमें असन्तोष बढ़ता जाता है। (ii) शिक्षा प्रणाली असन्तोषजनक एवं परीक्षा प्रणाली दूषित है तथा शासन-व्यवस्था की कमजोरियों के कारण उनमें राजनैतिक असन्तोष पनप रहा है। (iii) युवापीढ़ी और बुजुर्गों के मध्य वैचारिक वैमनस्य अधिक है, दोनों में कोई किसी को स्वीकार करने को तैयार नहीं है।

युवा पीढ़ी में व्याप्त असन्तोष के कारण ही हड़ताल, आगजनी एवं तोड़-फोड़ आदि की घटनाएँ होती रहती हैं। विद्यालयों में अनुशासन बिगड़ता है। समाज में शान्ति भंग होती है। अपराधों के पनपने में भी यही असन्तोष उत्तर-दायी है। युवा शक्ति का पूर्ण सहयोग राष्ट्र को नहीं मिलता जिससे राष्ट्रीय विकास में बाधा आती है, नुकसान होता है।

आज की परिस्थितियों को देखते हुए, देश की स्थिति का अवलोकन करते हुए युवा पीढ़ी के असन्तोष को दूर करना नितान्त आवश्यक है। युवकों को योग्यतानुसार रोजगार उपलब्ध कराया जाये। शासन व्यवस्था में सुधार, भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी की रोकथाम भी आवश्यक है।

इन सुधारों के आधार पर युवक भी अपने मार्ग को बदलेंगे। उनकी असन्तोष की भावना समाप्त होगी तथा युवा पीढ़ी में श्रेष्ठ भविष्य की एक नई किरण आलोकित होगी। यदि असन्तोष को दूर नहीं किया गया तो युवा पीढ़ी का विलय हो जायेगा, नाश हो जायेगा।

4. वर्तमान युग को विज्ञान की देन

1. प्रस्तावना
2. वर्तमान युग में विज्ञान की प्रगति
3. विज्ञान की देन
4. उपसंहार।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। आज विज्ञान के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति हो चुकी है। हर देश विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है। वैज्ञानिक उन्नति देश की सम्पन्नता और सबलता का मापदण्ड बन गई है। पुराने तरीके अपनाने वाला देश आज के युग में पिछड़ जाता है।

वर्तमान युग में विज्ञान के क्षेत्र में जितनी प्रगति हुई है, उतनी पहले कभी नहीं हुई थी। आज तो मनुष्य चन्द्रमा पर भी पहुँचने में सफल हो गया है और अन्य ग्रहों पर पहुँचने के प्रयास किए जा रहे हैं। मनुष्य ने प्रकृति के रहस्यों को

जानने के लिए बड़ी भारी सफलता प्राप्त कर ली है, वह परखनली में मनुष्य के बच्चे के पैदा करने में सफल हो गया है। उसने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। वह कम समय में अधिक काम करने में समर्थ हो गया है। ध्रुवों पर भी खेती की जाने लगी है।

आज मानव जीवन का कोई भी पहलू ऐसा नहीं रहा जो विज्ञान से प्रभावित न हो। विज्ञान की देन असंख्य हैं। पहले मनुष्य पेड़ों पर या कन्दराओं में रहता था। वह नग्न रहता था या पत्ते लपेट लेता था। आज वह सौ-सौ मंजिल से ऊँचे गगनचुम्बी मकान बनाकर रह रहा है। इस प्रकार उसने स्थान के प्रभाव को काफी हद तक पूरा कर लिया है। अब तो मनुष्य का कायाकल्प भी हो जाता है। व्यक्ति के शरीर में एक अंग खराब हो जाने पर दूसरा अंग लगा दिया जाता है।

प्राचीन काल में मनुष्य जिस दूरी को महीनों में तय कर पाता था, लेकिन आज उसे वह कुछ ही घण्टों में तय कर लेता है। संसार एक परिवार बन गया है। संचार और आवागमन के साधनों में भी आश्चर्यजनक ढंग से उन्नति कर ली गई है। टेलीफोन और बेतार के तार द्वारा बहुत दूर स्थित व्यक्ति से सम्पर्क किया जा सकता है।

उसने तारों, रेलों, राकेटों का आविष्कार कर दिया है। वह अन्तरिक्ष में भी उड़ान भर सकता है। वह धरती से ही अन्तरिक्ष में विचरण करते हुए उपग्रहों का नियन्त्रण करने लगा है।

अब मनुष्य प्रति एकड़ पैदावार बढ़ाने में सफल हो गया है। इतना ही नहीं, वह गहरे समुद्र में छिपी हुई वस्तुओं और मिट्टी के तेल का लाभ उठा रहा है। वह गर्म मकानों का निर्माण कर ध्रुवीय क्षेत्रों में भी खेती करने लगा है। कम्प्यूटर की सहायता से मनुष्य कठिन से कठिन प्रश्नों को क्षण भर में हल कर लेता है।

आज विज्ञान का युग है। सुबह जगते ही हम जिस यन्त्र से समय देखते हैं, वह घड़ी विज्ञान की देन है। हम जो कुछ खाते-पीते हैं, वे सब वस्तुएँ वैज्ञानिक आविष्कारों की वैज्ञानिक मशीनों से तैयार की जाती हैं। हम जो कुछ पढ़ रहे हैं, वे पुस्तकें भी विज्ञान द्वारा निर्मित छापेखाने की देन हैं।

5. सह शिक्षा : गुण एवं दोष

1. प्रस्तावना—शिक्षा और सह शिक्षा का अर्थ।
2. सहशिक्षा के गुण।
3. सहशिक्षा के दोष।
4. उपसंहार।

शिक्षा का अभिप्राय है सिखाना। सिखाने से आशय है जीवन को एक उत्तम तरीके से व्यतीत करने की कला सिखाना। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षा का कार्य अक्षर ज्ञान से प्रारम्भ किया जाता है और बाद में इसकी परिधि डिग्रियों तक फैलने लगती है। लड़के और लड़कियों को एक साथ एक स्थान पर एक ही विषय की समान रूप से शिक्षा देना ही सहशिक्षा कहलाती है। हमारे देश में अधिकांश कॉलेजों में सहशिक्षा की ही व्यवस्था है।

यद्यपि हमारे देश में सहशिक्षा अधिक लोकप्रिय नहीं हुई है, फिर भी हम इसे अपने सामाजिक संस्कारों का परिणाम मान सकते हैं—सहशिक्षा प्रणाली में अनेक गुण हमें दृष्टिगोचर होते हैं—सहशिक्षा से कॉलेज में अनुशासनहीनता नहीं पनपती तथा आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण प्रायः अच्छे परिणाम निकलते हैं। सहशिक्षा के माध्यम से लड़के लड़कियाँ एक दूसरे को पूर्णतः समझ सकते हैं। सहशिक्षा से कभी-कभी उपयुक्त जीवन साथी भी मिल जाता है।

उपर्युक्त गुणों के साथ-साथ हमें सहशिक्षा में कुछ दोष भी दिखाई देते हैं। जिन शिक्षा संस्थाओं में सहशिक्षा की व्यवस्था है वहाँ परीक्षा परिणाम प्रायः अच्छे नहीं रहते। इसका सीधा अर्थ यह निकलता है कि किशोरावस्था में छात्रगण शिक्षा के लक्ष्य को भूलकर उम्र के सबक पढ़ते रहते हैं। ऐसी शिक्षा संस्थाओं में फैशन की ओर छात्र-छात्राओं का लगाव अधिक होता है परिणामस्वरूप अध्ययन में बाधा पहुँचती है। सहशिक्षा में महिला छात्राएँ अपने आपको अधिक स्वतन्त्र महसूस नहीं कर पातीं तथा अधिकांशत: वातावरण उतना स्वस्थ नहीं रह पाता जितना उन संस्थाओं में रहता है जहाँ सहशिक्षा नहीं है।

सहशिक्षा निश्चय ही एक सार्थक शिक्षा प्रणाली है, लेकिन आज जिस तरह के संस्कार हमारी युवा पीढ़ी में पनप रहे हैं उनके कारण सहशिक्षा असफल हो गयी है। यदि शिक्षा संस्थाओं में साथ पढ़ने वाले छात्र-छात्राएँ अपने लक्ष्य पर दृढ़ रहें, उनका आत्मबल कमजोर न हो, पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव उन पर न पड़े तो निश्चय ही सहशिक्षा काफी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

6. प्रौढ़ शिक्षा

1. प्रस्तावना
2. साक्षरता का प्रथम सोपान
3. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम
4. प्रौढ़ शिक्षा की समस्याएँ
5. प्रौढ़ शिक्षा के लिए आवश्यक सुझाव
6. उपसंहार।

किसी राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति विशेष रूप से वहाँ शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। भारत वर्ष काफी समय तक परतन्त्र

रहा, परिणामस्वरूप यहाँ शिक्षा व्यवस्था का पूर्ण विकास नहीं हो सका। स्वतन्त्रता से पूर्व केवल बड़े शहरों या प्रमुख स्थानों पर ही शिक्षा व्यवस्था थी, जिसमें केवल सम्पन्न वर्ग के लोग शिक्षा ग्रहण कर सकते थे। स्वतन्त्रता के बाद यद्यपि सरकार ने निरक्षरता निवारण के लिए स्थान-स्थान पर विद्यालय खोले, फिर भी साक्षरता का प्रतिशत अधिक नहीं बढ़ पाया। इस निरक्षरता को दूर करने के लिए प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम चलाना परमावश्यक हो गया।

स्वाधीनता के बाद देश में साक्षरता का प्रतिशत बढ़ाने के लिए बुनियादी शिक्षा की योजना प्रारम्भ की गयी। प्रारम्भ में सामाजिक शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा योजना और किसानों के लिए उपयोगी साक्षरता योजना—ये तीन कार्यक्रम संचालित किए गए, लेकिन निरक्षरता का पूर्ण निवारण नहीं हो सका।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ 1978 को गाँधी जयन्ती के दिन से हुआ। इसमें 15 से 35 वर्ष तक की आयु वाले दस करोड़ लोगों को साक्षर बनाने का लक्ष्य रखा गया। कार्यक्रम को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए केन्द्र सरकार ने इसका उत्तरदायित्व राज्य सरकारों को सौंपा। राज्य सरकार ने इसके संचालन के लिए अधिकारियों को नियुक्त किया। इस प्रकार सम्पूर्ण राष्ट्र में प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम छठी योजना के प्रारम्भ से चलाया जा रहा है।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम काफी अरसे से चल रहा है लेकिन अभी तक इसके वांछित परिणाम नहीं मिल रहे हैं। इस कार्यक्रम के संचालन में सबसे बड़ी समस्या धनाभाव की है। इस कार्यक्रम के मानक शिक्षकों को पारिश्रमिक बहुत कम दिया जाता है। अधिकतर शिक्षकों का स्थानान्तरण हो जाता है, इस कारण भी प्रौढ़ शिक्षा की गति में बाधा आती है। प्रशासन द्वारा इसका प्रचार कम किया गया है फलस्वरूप गाँवों में आज भी जन-जागरण का अभाव है।

हमारे देश में निरक्षरता का प्रतिशत अधिकतर गाँवों में ही है। इसलिए इसका आधार भी ग्रामीण व्यवसाय तथा ग्रामोद्योग के अनुरूप होना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार को साधनों की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। योग्य शिक्षकों की स्थाई नियुक्ति होनी चाहिए। शिक्षित बेरोजगारों को उचित वेतन देकर इस कार्य में लगाना चाहिए।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को यदि सुचारु रूप से लगन के साथ, ईमानदारी के साथ चलाया जाय तो इसके द्वारा समाज में व्याप्त निरक्षरता को समूल समाप्त किया जा सकता है। साक्षरता से जनता में व्याप्त कुप्रथाओं एवं अन्धविश्वासों का अन्त होता है और सभ्य नागरिकों का निर्माण होता है। वस्तुतः प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से हमारे समाज में लगा निरक्षरता का दाग मिट सकता है तथा जनता की चेतना मुखर हो सकती है।

7. भारत में दहेज प्रथा

1. प्रस्तावना
2. दहेज प्रथा का अभिशाप
3. दहेज प्रथा में आवश्यक सुधार
4. उपसंहार।

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में अनेक शिष्टाचारों का प्रचलन होता रहा है। उस समय विवाह को एक पवित्र एवं सामान्य शिष्टाचार माना जाता था। विद्या दान, धन दान, आदि की भाँति कन्यादान मंगल भावनाओं का प्रतीक माना जाता था। परन्तु आज के युग में ये शिष्टाचार रूढ़ियों एवं कुप्रथाओं के रूप में परिवर्तित हो गये हैं। इन्हीं कुप्रथाओं में एक दहेज-प्रथा भी है जो वर्तमान सामाजिक जीवन में एक अभिशाप सा बन गयी है।

प्राचीन काल में कन्यादान के समय पिता स्वेच्छा से अपनी सामर्थ्यानुसार, कन्या को कुछ उपहार देता था। उस समय यह कामना की जाती थी कि कन्या अपना नया घर अच्छी तरह बसा सके और उसे कोई असुविधा न हो, इसलिए दहेज के रूप में उसे आवश्यक वस्तुएँ दी जाती थीं। धन सम्पन्न लोग अपार धन राशि तक दान में दे देते थे।

आज हमारे देश में दहेज प्रथा विकृत हो गयी है, वर पक्ष कन्या पक्ष से मनमांगा दहेज माँगते हैं। वे लड़के के जन्म से लेकर इसकी सम्पूर्ण पढ़ाई-लिखाई व विवाह का खर्चा मांगते हैं। कन्या पिता यदि मनचाहा धन एवं साज-सज्जा का सामान नहीं दे पाता तो आज के युग में मण्डप में से दूल्हा उठकर चला जाता है। विवाह के पश्चात् भी यदि दुल्हन को मुँह मांगा दहेज नहीं मिलता तो ससुराल में उसे उसका पति, सास और ननदें परेशान करती हैं अथवा उसे मार डालती हैं। इस प्रकार वर्तमान समय में दहेज प्रथा समाज पर कलंक बनती जा रही है।

दहेज प्रथा की बुराइयों को देखकर समय-समय पर समाज सुधारकों ने इस ओर ध्यान दिया है। सरकार का ध्यान भी इस ओर आकृष्ट किया गया है फलस्वरूप केन्द्रीय सरकार ने दहेज प्रथा में सुधार लाने के लिए अनेक सुधार किये हैं।

कोई भी सरकारी कर्मचारी अपने या अपने आश्रितों के विवाह पर न दहेज लेगा और न देगा। इस नियम का पालन करने के लिए कर्मचारियों के सेवा नियमों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जायेगा। सरकार ने विवाह पर कुल खर्च की सीमा निश्चित कर दी है, निश्चित सीमा से अधिक खर्च करने वाले पर कानूनी कार्यवाही कर दी जायेगी।

इस प्रकार दहेज प्रथा में सुधार लाने के लिए केन्द्रीय सरकार ने जो कदम

उठाये हैं, वे प्रशंसनीय हैं। परन्तु अभी तक इस कार्य में जन-जागरण का अभाव है। आज के युवक और युवतियों में जागृति पैदा करने से इस कानून का सरलता से पालन हो सकता है।

हमारे समाज में प्राचीन काल में दहेज का स्वरूप बहुत ही उदान्त था, लेकिन आज रूढ़ियों एवं लोभ लालच के कारण यह समाज के लिए एक अभिशाप बन गया है। यद्यपि दहेज प्रथा उन्मूलन कानून बनाकर इस कुप्रथा को समाप्त करने के प्रयास जारी हैं, परन्तु फिर भी इस कार्य में सफलता तभी मिल सकती है जब लोग कानून का ईमानदारी से पालन करें। इस कुप्रथा को समाप्त करके ही नव युवतियों को उत्पीड़न से बचाया जा सकता है और समाज को इस दहेज रूपी कलंक से मुक्ति दिलायी जा सकी है।

8. साम्प्रदायिकता की समस्या और समाधान

1. प्रस्तावना—साम्प्रदायिकता से अभिप्रायः
2. भारत का बहुसम्प्रदायी रूप
3. समस्या
4. परिणाम
5. उपाय (समाधान)
6. उपसंहार।

जब कोई भी धार्मिक या सामाजिक मतवाद अपना दायरा निश्चित करके शेष समाज से अपने आपको अलग करने का तरीका अपना लेता है तो वह सम्प्रदाय कहलाता है। इस प्रकार के सम्प्रदाय संसार में अनेक हैं जिनके प्रतिनिधि स्वयं को बाकी समाज से अलग और भिन्न मानते हैं। साम्प्रदायिकता की भावना बहुत ही घातक है इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने दायरे के प्रति स्वार्थी हो जाता है। उसके अन्दर सामाजिक विद्वेष और विसंगति की भावना पैदा हो जाती है। इस साम्प्रदायिकता के कारण ही संसार के नेता और विद्वान साम्प्रदायिकता के उन्मूलन में लगे हुए हैं।

भारत बहु सम्प्रदायी देश है। इस देश में सर्वाधिक सम्प्रदाय धार्मिक क्षेत्र में है। सबसे बड़े सम्प्रदाय हिन्दू तथा मुस्लिम धर्मियों के हैं। मुसलमानों में साम्प्रदायिकता की भावना अधिक रहती है, इसका मुख्य कारण यह है कि उनका धर्म अन्य धर्मों की अपेक्षा नया है और उनमें धार्मिक कट्टरता अधिक रहती है। हिन्दू धर्म विशाल तथा प्राचीन है लेकिन इसकी आन्तरिक संरचना एक रूप नहीं है, फलस्वरूप इसमें सम्प्रदायों की भरमार है।

इन बहुसंख्यक समुदायों के आपसी वैमनस्य से समाज में साम्प्रदायिक झगड़े हुआ करते हैं, जिससे रक्तपात होता है और अशान्ति उत्पन्न होती है। हिन्दू मुसलमानों में आये दिन झगड़े हुआ करते हैं। अभी पंजाब में अकाली

सिक्खों तथा हिन्दुओं के झगड़े चल रहे हैं, इन साम्प्रदायिक झगड़ों में लाखों की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। कुछ साम्प्रदायिक भूखे लोगों की हिंसात्मक प्रवृत्ति से सैकड़ों निरपराध व्यक्ति मारे जाते हैं, सुहागनों का सुहाग उजड़ जाता है तथा घर नष्ट हो जाते हैं।

साम्प्रदायिकता की इस ज्वलन्त समस्या का समाधान शिक्षा के प्रसार से सम्भव हो सकता है। शिक्षा ही लोगों के मस्तिष्क में यह मानवीय आलोक पुनः जगा सकती है जिससे वे साम्प्रदायिकता की क्षुद्रता से प्रभावित होने से बच सकते हैं। शिक्षा ही हिन्दुओं को प्राचीन वेद वाक्य का स्मरण दिला सकती है, शिक्षा ही मुसलमानों को सद्मार्ग पर ला सकती है। शिक्षा के अलावा यदि शासन, समाज के अवांछनीय तत्त्वों पर दृढ़ता से नियन्त्रण हो तो साम्प्रदायिकता को समूल मिटाया जा सकता है।

जब तक इस देश से साम्प्रदायिकता की समस्या का पूर्ण निराकरण नहीं होगा तब तक देश की जनता में शान्ति और मैत्री की भावना का उदय नहीं हो सकता। साम्प्रदायिकता का समाधान मात्र शक्ति प्रदर्शन द्वारा नहीं किया जा सकता। इसका उन्मूलन तो मात्र शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार द्वारा ही सम्भव हो सकता है।

9. भारत में जनसंख्या की समस्या

1. प्रस्तावना
2. धार्मिक कारण
3. वर्णाश्रम व्यवस्था का लोभ
4. दरिद्रता
5. शिक्षा का अभाव।
6. संयम का अभाव।
7. उत्तमोत्तम औषधियों का आविष्कार।
8. शरणार्थियों का निरन्तर आवागमन।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व का दूसरा महान् देश है। विकासशील देश होने के कारण बढ़ती हुई जनसंख्या भारत के लिए एक भारी समस्या बनी हुई है तथा इस समस्या का समाधान करना भी अति आवश्यक है। यदि इस पर कोई रोक न लगाई तो यह भयंकर रूप धारण कर लेगी। जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है; इसके अनेक कारण हैं।

हमारे धर्मशास्त्रों में प्रजा-वृद्धि का उद्देश्य दिया गया है। धर्मशास्त्रों के अनुसार पुत्रोत्पादन आवश्यक है, क्योंकि ऐसा माना गया है कि पुत्रहीन व्यक्ति को स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती। अतः हमें आज के युग को देखते हुए धर्मशास्त्रों के प्रजा-वृद्धि और पुत्रोत्पादन की विचारधारा को बदलना होगा।

प्राचीनकाल में वर्ण-व्यवस्था और आश्रम-व्यवस्था सामाजिक जीवन में

सन्तुलन रखते थे और जनसंख्या वृद्धि भी नहीं होने देते थे। आश्रम व्यवस्था में पच्चीस वर्ष की उम्र से पहले विवाह करना निषिद्ध था और पचास वर्ष के उपरान्त अर्थात् वानप्रस्थ आश्रम में सन्तान उत्पन्न करना मना था। केवल गृहस्थ आश्रम में सन्तान पैदा की जा सकती थी, इसलिए जनसंख्या सीमित थी।

समाज का जीवन स्तर जितना नीचा होता है, दरिद्रता और दीनता जितनी अधिक मात्रा में होती है, जनसंख्या उतनी ही अधिक मात्रा में होती है। धनाभाव के कारण वे अन्य किसी प्रकार का मनोरंजन नहीं कर पाते, वे केवल अपनी पत्नी को ही मनोरंजन का साधन मानते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सन्तान में वृद्धि होती है।

भोग विलास की ओर अधिक प्रवृत्ति और संयम का अभाव भी जनसंख्या वृद्धि में सहायता दे रहे हैं। आज हमारी सभा-सोसाइटी, रेस्ट्रा, सिनेमा होटल आदि हमारे चरित्र का पतन कर रहे हैं। इनका हमारे मन पर दूषित प्रभाव पड़ रहा है और जनसंख्या में वृद्धि हो रही है।

आज का युग वैज्ञानिक युग है। इसमें अनेक प्रकार की औषधियों, चिकित्सा साधनों एवं उपकरणों के आविष्कार के कारण अब मृत्युदर घट रही है। समाज में जन्म चार सौ लेते हैं और दो मरते हैं। जनसंख्या बढ़ती रहेगी और मृत्युदर कम होती रहेगी तो परिणाम यह होगा कि जनसंख्या एक दिन सुरसा का रूप धारण कर लेगी।

भारत विभाजन के उपरान्त शरणार्थी समस्या भी जनसंख्या वृद्धि में मदद करती है। लाखों की संख्या में शरणार्थी पाकिस्तान से भारत आ गये और प्रति वर्ष अब भी आ रहे हैं। भारत शरणागत पालक है, सबको शरण दे देता है। शरणार्थियों के आगमन पर जब तक रोक नहीं लगेगी, तब तक भारत की जनसंख्या बढ़ती ही रहेगी।

10. दूरदर्शन की उपयोगिता

1. प्रस्तावना
2. दूरदर्शन का अर्थ
3. देश में दूरदर्शन से लाभ
4. दूरदर्शन से हानियाँ
5. उपसंहार

आज मानव जंगली अवस्था से अन्तरिक्ष युग तक बढ़ आया है। एक समय था जब मानव पशु के समान जीवन यापन करता था और आज उसने अपने चातुर्य और परिश्रम से असंख्य आश्चर्यजनक चमत्कार कर दिखाये हैं। उसने प्रकृति के अनेक रहस्य जान लिए हैं। सुखविधा की असंख्य वस्तुएँ विज्ञान की सहायता से उपलब्ध की जा चुकी है। उन्हीं में से एक दूरदर्शन भी है।

दूरदर्शन अंग्रेजी में 'टेलीविजन' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है । 'टेलीविजन', 'टेली' और 'विजन' दो शब्दों से बना है । क्रमशः इनका अर्थ 'दूर' और 'देखना' है । इस प्रकार दूरदर्शन वह यन्त्र है जिससे दूर की वस्तुएँ पास में आसानी से देखी जा सकें और उनकी आवाज भी सुनी जा सके । 'टेलीविजन' पर किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्र देख सकते हैं और उसकी आवाज हो तो उसे भी सुन सकते हैं ।

हमारे देश में दूरदर्शन का प्रयोग 1959 से शुरू हुआ है । इनकी सहायता से अनेक प्रकार के कार्यक्रम दिखाये जाते हैं, इन्हीं की सहायता से दूरदर्शन प्रसारण किये जाते हैं । अब इसकी सहायता से 15 अगस्त, 26 जनवरी के कार्यक्रम घर बैठे ही देखे जा सकते हैं । दुनिया के किसी भी कोने के दृश्य दूरदर्शन पर देखने को मिल सकते हैं । अपने देश के नृत्य, गीत, वेशभूषा, रीति-रिवाज, उपजें, बाँध, नदियाँ, नगर आदि दूरदर्शन द्वारा देखे जा सकते हैं । जो बातें पुस्तकों में केवल पढ़ी जा सकती हैं वे दूरदर्शन पर देखी भी जा सकती हैं ।

उपरोक्त लाभों के साथ-साथ दूरदर्शन से कुछ हानियाँ भी हैं । दूरदर्शन देखने से काफी समय नष्ट होता है । इसके देखने से बच्चों का मन चंचल होता है । यदि उन्हें रोका न जाय तो अपनी पढ़ाई छोड़कर काफी समय दूरदर्शन देखने में लगा देते हैं । दूरदर्शन से आंखों पर बुरा असर पड़ता है । यदि रंगीन दूरदर्शन अधिक देखा जाय तो उससे आंखों का केन्सर बनने की सम्भावना रहती है ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दूरदर्शन विज्ञान का बहुत बड़ा, बहुत महत्त्वपूर्ण आविष्कार है । यह बहुत ही उपयोगी है । उपयोगों के बदले इससे होने वाली हानियाँ कम हैं । आवश्यकता इस बात की है कि हम दूरदर्शन से प्राप्त जानकारी का सदुपयोग करें और दूरदर्शन देखने के लिए इतना ज्यादा समय न दें कि हमारे दूसरे काम समय पर पूरे ही न हों और स्वास्थ्य भी खराब हो ।

11. बेरोजगारी की समस्या—कारण और निराकरण के उपाय

1. प्रस्तावना
2. बेरोजगारी—एक भयंकर समस्या
3. बेरोजगारी के कारण
4. समस्या समाधान के उपाय
5. उपसंहार ।

15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हो गया, लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद ही देश के सामने अनेक समस्याएँ उपस्थित हो गयीं । शरणार्थी समस्या, अन्न की समस्या आदि कई समस्याओं का दौर सम्पूर्ण भारत देश में उत्पन्न हो गया । ऐसी ही राष्ट्र व्यापी समस्या है बेरोजगारी । इस जटिल समस्या ने सम्पूर्ण देश में अपना आधिपत्य जमा लिया है । बेकारी की समस्या

इतनी जटिल है कि एम. ए. प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण करने पर भी छात्र मजबूरी में तृतीय श्रेणी का क्लर्क ही बन जाय, या उसके लिए भी भटकता रहता है। आज नगरों में शिक्षितों तथा ग्रामों में अशिक्षितों की बेकारी का भयंकर रूप देखा जा सकता है।

बेरोजगारी की समस्या व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को भयंकर रूप से प्रभावित कर रही है। देश के नवयुवक निराश होते जा रहे हैं। अनिश्चित भविष्य और अन्धकारमय जीवन की छाया उनके मुख पर सहज ही परिलक्षित होती है। बेरोजगारी से देश के वर्ग को भयंकर असन्तोष की छाया घेरे ले रही है। परिणामस्वरूप आन्दोलन की प्रवृत्तियाँ, अशान्ति और अराजकता का भयंकर प्रसार होता जा रहा है।

आज बेरोजगारी की समस्या क्यों बढ़ती जा रही है इसका महत्त्वपूर्ण कारण जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि, देश की गर्म जलवायु, शिक्षा का अभाव; अल्पायु में विवाह, जन्म की तुलना में मृत्युदर का कम होना आदि है।

इस बेरोजगारी की समस्या का समाधान तो खोजना ही पड़ेगा। इस समस्या के समाधान में हमारा प्रथम चरण उन कारण को समाप्त करना होगा जो इस समस्या में निरन्तर वृद्धि करते जा रहे हैं। इस समस्या के समाधान हेतु हमारा सर्वप्रथम कार्य बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकना होगा परिवार नियोजन और विवाह की आयु सीमा में वृद्धि करके हम इस कारण को रोक सकते हैं। लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास करना होगा। कृषि यन्त्रों में विकास तथा मशीनीकरण के विकास को मंथर गति से प्रसारित करना होगा। शिक्षा में परिवर्तन करना होगा।

इस प्रकार इस समस्या के समाधान हेतु सरकारी एवं गैर सरकारी सभी स्तरों पर प्रयत्न किये जाने की आवश्यकताएँ हैं। इस समस्या के समाधान के लिए जनता का सहयोग अपेक्षित है। अन्त में यही कहना होगा कि यदि इस समस्या को सब लोग भयंकर राष्ट्रव्यापी एवं राष्ट्रीय समस्या मानकर इसके समाधान में लग जाएँ तो इसका निराकरण अवश्यसम्भावी है।

12. मेरा प्रिय साहित्यकार (गोस्वामी तुलसीदास)

1. प्रस्तावना
2. साहित्य प्रतिभा
3. गोस्वामी तुलसीदास का लोकनायकत्व
4. उपसंहार।

लोकनायक तुलसीदास का हमारे हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। तुलसीदास का जन्म सम्वत् 1582 में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। कहते हैं इनका जन्म अशुभ नक्षत्र में हुआ था,

अतः माता-पिता ने इन्हें त्याग दिया था। इनका पालन पोषण एक महात्मा की कृपा से उसकी छत्र छाया में हुआ था। युवावस्था में इनका विवाह दीनबन्धु पाठक विदुषी कन्या रत्नावली के साथ हो गया। ये अपनी पत्नी के प्रति अधिक अनुरक्त थे। एक बार वह इनकी अनुपस्थिति में पीहर चली गयी। तुलसी उसके वियोग को न सह सके और रात्री में ही उसके पीहर जा पहुँचे। पत्नी ने इस प्रकार आसक्ति को लक्ष्य कर उन्हें ताना मार दिया। इससे उनका हृदय परिवर्तित हो गया और उसके बाद तुलसीदास से वे लोकनायक तुलसीदास बन गये।

गोस्वामी तुलसीदास मध्य युगीन काव्य के जादुई उपवन के विशाल वृक्ष हैं। भाषा का ओज तुलसी के काव्य में खूब मिलता है। इनकी शैली अपूर्व अनुपम मादकता का सागर है। 'रामचरित मानस' इनकी अनुपम कृति है जो जिसमें केवल राम की ही कथा आदि से अन्त तक अखण्डता नहीं है अपित बीच-बीच में उनके चरित्र सम्बन्धी अनेक उपकथाएँ भी हैं। तुलसीदास की शब्द रचना भी परिस्थिति के सर्वथा अनुकूल है 'चाहे जैसी स्थिति हो इनका हृदय उसके मूल रस में प्रवेश कर जाता है। इनकी प्रकृति हास्य रस को पूर्णतः स्वीकार करती है।

युग दृष्टा महात्मा तुलसीदास का प्रादुर्भाव ऐसी परिस्थितियों में हुआ जब भारत ऐसी विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था कि उल्लेख करना ही सहज नहीं है। मुगलों के अत्याचार हो रहे थे। शैवों और वैष्णवों में भयंकर मतभेद का जहर फैला हुआ था तुलसी ने ऐसी विषम परिस्थितियों में महान कष्टों को झेलते हुए अपने साहित्य सृजन द्वारा हमारे पथ भ्रष्ट समाज को सद्‌मार्ग दिखाया, उसे पतन से निकालने की चेष्टा की।

तुलसीदास जी युग दृष्टा थे, लोकनायक थे। हम उनकी अमर कृतियों की ओर तो खिचते ही हैं परन्तु इससे भी अधिक उनके सादा जीवन से प्रभावित होते हैं। गोस्वामी जी की महान् योग्यता महान् परिस्थितियों का परिणाम है और यही कारण है कि उनकी अनूठी कलात्मक योग्यता का बखान असम्भव-सा लगता है। किसी ने कहा है—"सूर सूर तुलसी शशि उडुगन केशवदास" किन्तु हम इसे सहज एक अलंकार लिप्सा ही मान सकते हैं। बल्कि सही तो यह है कि "सूर शशि तुलसी रवि उडुगन केशवदास"।

13. बढ़ती हुई मँहगाई : समस्या और समाधान

1. प्रस्तावना—महंगाई की वर्तमान स्थिति
2. महँगाई के कारण
3. महँगाई के प्रभाव
4. समाधान
5. उपसंहार।

अन्य विकासशील देशों की भाँति भारत भी अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। इन समस्याओं के कारण अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वर्तमान समय में भारत में जो समस्याएँ हैं, उनमें से महँगाई की समस्या भी अत्यन्त गम्भीर है--जस-जस सुरसा बदन बढ़ावा। ताहि दुगुन कपि रूप धरावा ॥ की तरह सरकार ज्यों-ज्यों महंगाई को नियन्त्रित करने की कोशिश कर रही है, त्यों-त्यों महँगाई अनियन्त्रित होती जा रही है। पहले महँगाई को सुरसा का मुख कहा जाता था। परन्तु अब उससे भी बड़ी हो गयी है।

महँगाई की समस्या का मूल कारण क्या है? कुछ लोगों का मानना है कि महँगाई का कारण भारत की जनसंख्या में वृद्धि है। कुछ का मत है कि उत्पादन कम हो रहा है और कुछ यह बताते हैं कि सरकार और व्यापारी भ्रष्टाचारी हैं। परन्तु सही रूप से अवलोकन किया जाये तो महँगाई कारण मा एक ही नहीं उक्त सभी कारण इसके लिए उत्तरदायी हैं। सरकारी स्तर पर भ्रष्टाचार पनप रहा है, व्यापारी एक रात में ही लखपति बनने की आकांक्षा में रहते हैं। देश की जनता भी सुरसा की तरह मुँह फैलाये बढ़ती जा रही है और उसके मुताबिक उत्पादन का स्तर भी नहीं है। कर्मचारियों में वेतन वृद्धि का भी अप्रत्यक्ष प्रभाव मूल्यों पर पड़ता है।

बढ़ती हुई महँगाई से समाज में असन्तोष फैल रहा है। जनता शासन के विरुद्ध होती जा रही है। युवकों में तोड़फोड़ की प्रवृत्ति पनप रही है। अपराधों को बढ़ावा मिल रहा है। भुखमरी फैलती जा रही है। जीवन स्तर गिर रहा है। सन्तुलित आहार न मिलने के कारण यह पीढ़ी कमजोर रह गयी है। कला व साहित्य भी इसी कारण नहीं पनप रहे हैं।

इस महँगाई पर नियन्त्रण पाना अति आवश्यक है। इसके बिना समाज में सुख-शान्ति नहीं रह सकेगी। देश का भविष्य भी इसी पर निर्भर करता है।

14. हिन्दी की उन्नति के उपाय

1. प्रस्तावना—हिन्दी की वर्तमान दशा
2. हिन्दी उन्नति के उपाय
3. उपसंहार।

हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा है, संविधान में इसे स्वीकार कर लिया गया है, पर व्यवहार में हिन्दी की दशा आज भी दयनीय है। यह भारत के लगभग 20 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है लेकिन हिन्दी आज भी उपेक्षित है। दक्षिण भारत में इसका कड़ा विरोध किया जाता है। उच्च सरकारी पदों पर आज भी उनको नियुक्त किया जाता है जो अंग्रेजी जानते हैं। न्यायालयों में प्रायः अंग्रेजी का प्रचलन है। विज्ञान की पुस्तकें प्रायः हिन्दी में नहीं मिलतीं ऐसी ही कई वास्तविकताएँ हैं जिनसे हिन्दी की दुर्दशा प्रमाणित होती हैं।

हिन्दी की सोचनीय स्थिति को देखते हुए उसमें सुधार की आवश्यकता है। इसके लिए कई बातें आवश्यक हैं—(i) हिन्दी का शब्द भण्डार बढ़ाया जाय, इसमें विज्ञान, कानून आदि के परिभाषित शब्दों की कमी है। हिन्दी बोलने वाली जनता में आत्मविश्वास उत्पन्न किया जाय अन्यथा वह अपने को हीन समझती रहेगी। विज्ञान तकनीकी व कानून की अच्छी पुस्तकें हिन्दी में तैयार कराई जायें, जिससे इन विषयों के लिए हमें अंग्रेजी का मुहताज न रहना पड़े। दक्षिण भारत में हिन्दी अनिवार्य कर दी जाय। उन लोगों को विविध तरीकों से हिन्दी सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। सरकारी कार्यालयों में केवल हिन्दी में कार्य करने की औपचारिकता ही पूरी की जाती है अतः वह वैध ईमानदारी एवं सख्ती के साथ हिन्दी के प्रयोग की व्यवस्था की जानी चाहिए। हिन्दी में बाल साहित्य की कमी है अतः इस कमी को पूरा किया जाना चाहिए। धर्म व दर्शन की अच्छी पुस्तकों का अनुवाद हिन्दी में उपलब्ध होना चाहिए। नौकरियों में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। अखिल भारतीय प्रशासन सेवा की परीक्षा अभी भी हिन्दी में नहीं होती इसकी व्यवस्था होनी चाहिए।

उपर्युक्त उपायों पर यदि गम्भीरता के साथ अमल किया जाय तो हिन्दी की उन्नति की जा सकती है। हिन्दी राष्ट्रभाषा है। राष्ट्र की एकता में राष्ट्रभाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसलिए हिन्दी की उन्नति अनिवार्य है। भारत की कोई भी भाषा किसी भी दृष्टि से हिन्दी के बराबर नहीं है।

15. विद्यार्थी और अनुशासन

1. प्रस्तावना—अनुशासन क्या है ?
2. अनुशासन का महत्त्व
3. विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारण
4. अनुशासनहीनता के निराकरण के उपाय
5. अनुशासनप्रियता छात्र जीवन की सफलता का रहस्य
6. उपसंहार।

अनुशासन का अर्थ है नियन्त्रण और सन्तुलनमय व्यवहार। मानव का व्यवहार जितना सुनियोजित और नियन्त्रित होगा वह व्यक्ति उतना ही अधिक सफल होगा। वैसे तो अनुशासन प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है लेकिन विद्यार्थियों को उसकी आवश्यकता अधिक होती है। अध्ययनकाल में अनुशासित जीवन बिताना अति आवश्यक होता है। अनुशासन सफल जीवन की कुँजी है। विद्यार्थियों को इसकी सर्वाधिक आवश्यकता होती है। वे अनुशासन के सहारे अपने भावी जीवन का निर्माण कर सकते हैं। वस्तुतः अनुशासन का धन पाकर व्यक्ति पर्याप्त सफल और समृद्ध हो सकता है। अतः विद्यार्थी और अनुशासन का सम्बन्ध घनिष्ठ है।

अनुशासनहीनता के इस जटिल प्रश्न पर जब हम विचार करेंगे तो हमारा जिज्ञासु मन स्वभावतः इसका कारण जानने को उत्सुक होगा और अन्त में हम निम्न लिखित बिन्दुओं पर पहुँचेंगे । वर्तमान दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच एक घनिष्ठ सम्बन्धों का अभाव, संरक्षकों अथवा अभिभावकों की उदासीनता; राजनैतिक प्रवेश और समाज के दूषित वातावरण का अभाव । इस सबके अतिरिक्त अनिश्चित भविष्य और बेकारी का भयंकर रूप भी विद्यार्थियों को अनुशासनहीन बनाने में योग देता है । सम्पूर्ण कारणों को दृष्टिगत रखते हुए हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि इस भयंकर बीमारी का उत्तरदायित्व न केवल विद्यार्थी पर है अपितु उसके अध्यापक, अभिभावक और समाज सभी पर इसका उत्तरदायित्व है ।

वर्तमान समय में बढ़ते हुए अनुशासनहीनता के निराकरण हेतु वर्तमान दूषित शिक्षा प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन व सुधार करने की आवश्यकता है । परीक्षा ऐसी हो कि विद्यार्थी में आत्मनिर्भरता एवं सद्‌भावनाओं का विकास हो । छात्र व शिक्षक के मध्य सहृदय एवं घनिष्ठ सम्बन्ध हों । अभिभावकों को भी अपना कर्त्तव्य सम्यक् प्रकार से समझना चाहिए । राजनीतिज्ञों को शिक्षण संस्थाओं में हस्तक्षेप करने से रोकना चाहिए ।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि अनुशासन विद्यार्थी जीवन का अलंकार है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे स्वच्छन्दता का वरण करके अनुशासन के नियमों की अवहेलना न करें । मनमाने ढंग से कार्य करना ही सबसे बड़ी अनुशासनहीनता है । अनुशासन से रहित छात्र कभी भी प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता । अनुशासनप्रिय छात्र ही परिश्रमी एवं कर्त्तव्यपरायण और विनयशील हो सकता है ।

16. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ

1. प्रस्तावना
2. संस्कृति के मूल तत्त्व
3. भारतीय संस्कृति में आई हुई बुराइयाँ
4. उपसंहार

संस्कृति शब्द 'संस्कार' से निर्मित है । किसी समुदाय जाति अथवा देश के समस्त मूलभूत संस्कारों का निष्कर्ष संस्कृति है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में "नाना प्रकार की धार्मिक साधनाओं, कलात्मक प्रयत्नों और भविष्य तथा योगमूलक अनुभूतियों के भीतर से मनुष्य ने उस महान् सत्य के व्यापक और परिपूर्ण रूप को प्राप्त किया है—उसे हम संस्कृति शब्द से परिभाषित करते हैं ।"

साधारण शब्दों में संस्कृति वह है जिसके द्वारा किसी जाति, देश अथवा समुदाय विशेष के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है ।

भारतीय संस्कृति अक्षुण्य एवं निरन्तर है। हमारी संस्कृति का मूल मंत्र चिन्तन एवं सर्वमान्य है--

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्" ॥

सबका कल्याण चाहने वाली भारतीय संस्कृति का मूलाधार 'त्याग' है। यदि यहाँ की संस्कृति की विशेषताओं का वर्णन किया जाए तो अर्थ में त्याग; काम में संयम, धर्म में निष्ठा, गुरुओं का आदर, पारिवारिक जीवन की महत्ता, प्रकृति से प्रेम, धार्मिक एकता एवं सहिष्णुता तथा कर्मफल जैसी मणियाँ प्राप्त होती हैं। अपनी त्यागमयी भावना तथा सहिष्णुता के कारण ही हमारी संस्कृति अभी तक कायम है।

हमारी सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण ही देवता भी भारत-भूमि पर अवतार लेने के लिए लालायित रहते थे परन्तु गत वर्षों में हमारी संस्कृति का ह्रास प्रारम्भ हुआ। जहाँ हमारे यहाँ 'त्याग' को सर्वोपरि माना गया था वहीं वर्तमान समय में 'संग्रह' की भावना को बल मिल रहा है। जहाँ हमारी संस्कृति ब्रह्मचर्य पर बल देती है आज वह समाज से इस प्रकार गायब दीखता है जैसे गधे के सिर से सींग। नारी को पूजने वाली भारतीय मान्यताएँ आज दहेज के लालची लोगों द्वारा खण्डित की जा रही हैं। पश्चिमी सभ्यता के अनुसरण के कारण आज हमारी संस्कृति भोगप्रधान होती जा रही है तथा समाज से नैतिकता समाप्त होती जा रही है। आज हमारे यहाँ से दया, शील, करुणा, ईश्वर के प्रति आस्था, आतिथ्य, विनय भावना लुप्त होती जा रही है।

भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर अनेक विदेशी भारत आये और वे यहाँ की संस्कृति के अनुयायी बने। यदि आज हमें पुनः पुराना गौरव प्राप्त करना है, क्षुद्र स्वार्थ और झूँठे अहंकार से ऊपर उठना है, मनुष्य के द्वारा मनुष्य के शोषण की प्रवृत्ति को नष्ट करना है तथा दहेज के लोभ से जलाई जा रही युवतियों की रक्षा करनी है तो हमें पुनः अपनी संस्कृति की ओर आना होगा, उसे शुद्ध करना होगा, तभी हम अन्याय से मुक्ति पायेंगे, अन्धकार से निकलकर प्रकाश की ओर बढ़ेंगे।

17. परिश्रम का महत्त्व

1. भूमिका
2. श्रम का स्वरूप एवं उसके प्रकार
3. परिश्रम का महत्त्व
4. निष्कर्ष।

मनुष्य के जीवन में हमें विविध प्रकार के क्रिया-कलाप देखने को मिलते हैं। कोई कारखानों में, कोई खानों में काम करता है, कोई अध्यापन करता है, कोई रिक्शा चलाता है, कोई अभिनेता बनने के लिए श्रम करता है, कोई व्यापार में सिर खपाता दिखाई देता है। मतलब यह है कि कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसे

कुछ-न-कुछ काम न करना पड़ता है। इससे स्पष्ट है कि कर्म, श्रम का जीवन में अपरिहार्य महत्त्व है। मनुष्य श्रम क्यों करता है, उत्तर है सुख, आनन्द प्राप्त करने के लिए, सुख से जीवनयापन करने के लिए। इस प्रकार जीवन-निर्वाह के लिए और आनन्द के लिए कार्यरत रहना, परिश्रम करना जरूरी है। स्वस्थ जीवन आनन्द का आधार है। स्वास्थ्य भी कर्म करने, श्रम करने से प्राप्त होता है अन्यथा मानव शरीर रुग्ण हो जाता है। कहने का मतलब "श्रम ही सों सब लहत हैं; बिनु श्रम लहहि न कोइ।" बिना परिश्रम के कुछ नहीं प्राप्त होता।

प्रश्न यह है कि परिश्रम क्या है? यों तो परिश्रम का अर्थ है मेहनत। मेहनत दोनों प्रकार की हो सकती है—शारीरिक और मानसिक। श्रमिक, किसान आदि शारीरिक श्रम करते हैं तो अध्यापक, वकील, राजनेता, दफ्तरों के कर्मचारी बहुत कुछ मानसिक श्रम करते हैं। गहराई से विचार करके देखा जाय तो ज्ञात होगा कि मानसिक श्रम करने वालों को भी थोड़ा-बहुत शारीरिक श्रम तो करना ही पड़ता है। गीता में भी कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि "शरीर यात्राऽपि न प्रसिद्धयेत् हि अकर्मणः।" बिना श्रम के तो शरीर की भी रक्षा, संभाल नहीं हो सकती। स्नान करना, व्यायाम करना, खाना-पीना, चलना-फिरना यह सब तो करना ही पड़ता है। इसी प्रकार हरेक शारीरिक परिश्रमकर्त्ता को कुछ-न-कुछ विचार भी करना पड़ता है, मानसिक श्रम भी करना पड़ता है।

जो भी हो, परिश्रम का जीवन में अपरिहार्य महत्त्व है। तभी तो विचारवान् लोगों की ऐसी मान्यता है कि कर्म ही पूजा है 'Work is worship.' अर्थात् कर्म करना, निष्ठा पूर्वक कर्त्तव्य पालन करना अपने आप में एक पूजा है। कर्म, परिश्रम की महत्ता सदा से रहे हैं। गीता का यह कथन सभी की जुबान पर रहता है कि "कर्मण्येवाऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्" अर्थात् कर्म करने में ही तेरा अधिकार है। मनुष्य जैसा कर्म करना चाहे वैसा करने के लिए वह स्वतन्त्र है। वह चाहे तो अभिनेता बनने, अभिनय करने का श्रम करे; गीत गाने का अभ्यास करे; कुश्ती लड़े, खिलाड़ी बने, राजनेता बने, वकील बनने को वकालात पढ़े या चित्रकार बनने का अभ्यास करे। यह निश्चित है कि कुछ बनने के लिए उसे परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। उपलब्धि के लिए परिश्रम ही एकमात्र उपाय है। जो जितना परिश्रम कर लेगा, जितनी साधना कर लेगा उतना ही उसका जीवन निखरेगा, उन्नत बनेगा, मूल्यवान बनेगा—"साधना ही जीवन का मोल है।" किसी क्षेत्र विशेष में असफल रहने वाले व्यक्ति यदि सफलता पाना चाहते हैं तो उन्हें बार-बार परिश्रम करना पड़ेगा। मन्द बुद्धि परिश्रम करके, बौद्धिक अभ्यास कर विद्वान् बन सकते हैं, दुर्बल शरीर वाले शारीरिक श्रम, व्यायाम करते हुए शरीर को सबल, स्वस्थ बना सकते हैं। प्रकृति ने उन्नति के द्वार सबके लिए खोल रखे हैं पर उन्नति के लिए परिश्रम करना ही पड़ेगा—"सकल पदारथ हैं जग माहीं। करमहीन नर पावत नाहीं।" उन्नति, गौरव, महत्त्व उन्हें मिलता है जो परिश्रम करने से जी नहीं चुराते, परिश्रम करते समय आने वाली कठिनाइयों से घबराते नहीं।

परिश्रम के अनेक लाभ हैं। परिश्रम अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम तो बिना काम किये हुए, हर समय बैठे रहने से मनुष्य प्रसन्नता का अनुभव ही नहीं कर सकता। उसका मन ऊब जाता है। मन में उदासीनता, खिन्नता आ जाती है, तरह-तरह के विचार उठते रहते हैं जो मन की शांति को भंग कर देते हैं और तब जीवन बोझ लगने लगता है, शरीर भी रुग्ण होने लगता है। इस प्रकार मन की प्रसन्नता के लिए व्यस्तता, क्रियाशीलता, परिश्रम करना जरूरी है। परिश्रम करने के बाद आराम करने से ही सुख मिलता है, निठल्ले बैठे रहने से नहीं। निठल्ले व्यक्ति मानसिक रोगों के शिकार हो जाते हैं जिनका स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। इस प्रकार मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से परिश्रम का महत्व है।

किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए परिश्रम आवश्यक साधन है। चाहे तो विद्या प्राप्त करनी हो, चाहे कलाकार बनना हो, चाहे व्यापार में उन्नति करनी हो, चाहे खिलाड़ी बनना हो, व्यक्ति को उस क्षेत्र में निरन्तर अभ्यास, परिश्रम करना पडेगा ही। हम जिस क्षेत्र में कुछ प्राप्त करना चाहते हैं और वह नहीं प्राप्त हो रहा तो इतना तो निश्चित ही है कि हमने उसके लिए उचित परिश्रम नहीं किया होगा। परिश्रम भी सोच-विचार करके, विवेकसंगत ढंग से, वैज्ञानिक ढंग से करना पड़ता है जैसाकि इस कथन में संकेत दिया गया है "योग : कर्मसु कौशलम्।" कर्मों में कुशलता अर्जित कर लेना ही योग है। विनोबा जी ने कहा है कि "हमारा स्वास्थ्य बिगड़ गया है, भेद-भाव बढ़ गया है और हम पर बाहरी लोगों ने आक्रमण किया है, इस सबका कारण यही है कि हमने परिश्रम छोड़ दिया है। श्रम से शरीर और मन दोनों का विकास होता है।"

प्रकृति हमें परिश्रम करने की शिक्षा देती है। हमारे फेफड़े, हृदय निरन्तर क्रियाशील रहते हैं। सूर्य निरन्तर प्रकाश विकीर्ण करता रहता है, पृथ्वी, नदियां निरन्तर क्रियाशील रहती हैं। पक्षी सुबह से शाम तक श्रम करते हैं। यह अवश्य है कि परिश्रम के क्षेत्र में भी अति नहीं करनी चाहिए। उसके साथ-साथ मनोरंजन और विश्राम भी जरूरी है, ये हमें आगे परिश्रम करने योग्य बनाये रखते हैं। परिश्रम से व्यक्ति की, समाज की, राष्ट्र की उन्नति होती है। जिस देश के लोग कर्मठ होते हैं वह देश सम्पन्न रहता है। जापान इसका उदाहरण है। वहां के लोग परिश्रमी हैं, उन्होंने कम प्राकृतिक सम्पदा के बावजूद उन्नति की है।

संक्षेप में मनुष्य को परिश्रम करने के ढंग की जानकारी कर उचित ढंग से परिश्रम करना चाहिए। तभी वह जीवन में उन्नति कर सकता है और सुखी रह सकता है। बिना परिश्रम के प्रकृति की दी हुई सम्पदाओं का भी उपयोग संभव नहीं है। 'वीर भोग्या वसुन्धरा; दिनकर जी ने कहा है कि परिश्रमी लोग अपने

दुर्भाग्य को बदल सकते हैं—"छोते वीर कुम्रक माल के बहा त्र्वों से पानी," जीवन-जगत् में जो कुछ उपलब्धि हुई है, जो भी आविष्कार हुए हैं वे सब परिश्रम की देन हैं। हरेक क्षेत्र में महान् व्यक्तियों की महानता, सफलता का राज उनकी साधना, उनका परिश्रम है।

मेरे सपनों का भारत

1. भूमिका
2. सपनों के भारत का स्वरूप :
   (i) सामाजिक बुराइयों से मुक्त
   (ii) सबको सम्पन्नता एवं समानता
   (iii) न्याय की प्राप्ति
   (iv) बेरोजगारी का अभाव
   (v) उचित शिक्षा व्यवस्था
   (vi) धार्मिक जीवन
   (vii) देशभक्त देशवासी
3. निष्कर्ष

दुनियां में अनेक देश हैं। सभी देश अनेक दृष्टियों से एक-दूसरे से भिन्न हैं। कोई देश गरीब है, कोई सम्पन्न है, कोई स्वतंत्र है तो कोई परतंत्र है। कहीं-कहीं मशीनों का बहुत अधिक प्रयोग होता है, तो कहीं मानव शक्ति का। कहीं बेरोजगारी है तो कहीं मानव-शक्ति का अभाव है। कहीं न्याय एवं शासन व्यवस्था बहुत अच्छी है तो कहीं जंगल के राज की सी स्थिति है। कहीं मनुष्यों को स्वतन्त्रता प्राप्त है तो कहीं मनुष्यों पर अनेक बंधन लगे हुए हैं। ऐसे देश प्रायः नहीं है जहां सब प्रकार की अच्छाइयां हों।

मैं कभी-कभी भारत के स्वरूप के बारे में कल्पना करता हूँ। मैं ऐसे भारत की कल्पना करता हूँ जिसमें कहीं किसी प्रकार की कोई कमी न हो और जिसे दुनियां में खूब यश प्राप्त हो। मैं ऐसे भारत की कल्पना करता हूं जो दुनियां के देशों के लिए आदर्श हो, जिससे दूसरे देश अपने सुधार के लिए प्रेरणा ले सकें और जो उनके लिए एक आदर्श हो। महात्मा गांधी ने भी राम राज्य की कल्पना की थी। मैं भी अपने ढंग से भारत के बारे में विचार करता हूँ, कल्पना करता हूं।

मैं ऐसे भारत की कल्पना करता हूँ, ऐसे भारत का स्वप्न देखता हूँ जो सामाजिक बुराइयों से मुक्त होगा। उस भारत में न तो दहेज प्रथा का प्रचलन होगा और न सती प्रथा का। इन कुप्रथाओं का हमारे सारे समाज को बहुत कुफल

भोगना पड़ा है। आज भी दहेज के कारण कितनी ही महिलाओं को अकाल मृत्यु का शिकार होना पड़ता है। महिलाओं के कष्ट की कल्पना ही भयावह लगती है। इसी प्रकार सती होने के नाम पर जीवित विधवा महिला का जलना भी देश के लिए कलंक का विषय है। मेरे सपनों के भारत में ये दोनों बुराइयां नहीं होंगी। महिलाओं को पर्दा प्रथा, दहेज-प्रथा, सती प्रथा का शिकार नहीं होना पड़ेगा। वे पुरुषों की तरह का जीवन यापन कर सकेंगी। शताब्दियों तक जो कष्ट भोगना पड़ा है वह गुलामी का जीवन महिलाओं को उस भारत में नहीं भोगना पड़ेगा। अनमेल विवाह, जुआ, चोरी, डकैती, तस्करी, गबन, बंधुआ मजदूर रखने जैसी बुराइयां भी उस भारत में देखने को नहीं मिलेगी। वहां छूआछूत जैसी बुराइयां नहीं होंगी।

मेरे सपनों के भारत में सबको अपनी जरूरत की वस्तुएं उपलब्ध होंगे। ऐसा नहीं होगा कि कुछ लोग मालामाल हैं और कुछ को भूखे पेट रहना पड़ता हो। उसमें सभी सम्पन्न होंगे और सब समानता का व्यवहार करेंगे। उस भारत में कोई किसी को परेशान करने, उन्हें सताने की हिम्मत नहीं करेगा।

उस भारत में न्याय होता होगा। किसी को यह शिकायत नहीं होगी कि उनके साथ अन्याय हुआ है। उस भारत में सबको शीघ्र सस्ता, सही न्याय प्राप्त होगा। इस कारण कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को किसी प्रकार की हानि पहुँचाने का दुस्साहस नहीं करता होगा।

उस सपनों के भारत में किसी व्यक्ति को भी बेरोजगारी की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। वहां सबको जीविका-निर्वाह हेतु उचित काम, उचित रोजगार प्राप्त होगा। आज तो पढ़-लिखकर भी बहुत से नवयुवकों को बेरोजगार रहकर कुण्ठाओं का, गरीबी का शिकार हो जाना पड़ता है। उस भारत में यह स्थिति देखने को नहीं मिलेगी। सब अपनी-अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार रोजगार उपलब्ध करने में सफल होंगे।

मेरे सपनों के भारत में कोई व्यक्ति अनपढ़ नहीं होगा। उसमें सभी लोग शिक्षित होंगे, समझदार होंगे ताकि जिन्दगी में आने वाली समस्याओं का खुद ही समाधान खोजकर सुखमय जीवन-यापन करने में समर्थ हो पाते होंगे।

उस सपनों के भारत में सब लोग धर्म के अनुशासन में रहते होंगे। उनके साथ कानूनी ढंग से सख्ती करने की आवश्यकता नहीं होती होगी। वे इस बात में विश्वास करने वाले होंगे कि कर्म के अनुसार हमें फल मिलेगा ही। वे अपने आप ही अच्छे कर्म करने वाले होंगे।

मेरे सपनों के भारत में कोई देशवासी देशभक्ति की भावना से रहित नहीं

होगा। देशभक्ति से युक्त भारतवासियों के कारण देश सुसंगठित होगा, मजबूत होगा, एकता के सूत्र में बँधा होगा। कोई भी देश भारत पर आक्रमण कर उसकी आजादी को भंग करने का साहस नहीं कर पायेगा।

संक्षेप में, मेरे सपनों का भारत सम्पन्न, सुखी, धार्मिक जीवन व्यतीत करने वाले, धार्मिक, शिक्षित जनों वाला देश होगा जिसमें किसी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। ऐसा भारत दुनियां में सबसे सम्पन्न, बुराइयों से मुक्त, दूसरे देशों का मार्ग-दर्शन करने में समर्थ होगा।

खेल और उनका महत्व

1. भूमिका
2. खेलों के प्रकार
3. जीवन में खेलों का महत्व
4. खेलों का राष्ट्र के लिए महत्व
5. निष्कर्ष।

जीवन में जैसे भोजन, पानी, हवा का महत्व है, जैसे रहने के लिए मकान, की आवश्यकता है वैसे ही कुछ और भी आवश्यकताएँ हैं जिनके बिना मनुष्य सांस लेता हुआ, चलता-फिरता दिखाई देने पर भी मृत के तुल्य है अथवा पशु तुल्य है। मनुष्य को ईश्वर आदि किसी न किसी के प्रति आस्था रखनी पड़ती है, विद्या, धर्म आदि भी अपनाने पड़ते हैं, अपने मान-सम्मान को भी बनाये रखना पड़ता है। यदि व्यक्ति को सम्मान मिलने के बजाय अपयश ही मिले तो भी उसको मृत्यु से ज्यादा कष्ट अनुभव होता है 'सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणातऽतिरिच्यते।' उन्हीं अन्य वस्तुओं में जीवन के लिये खेल भी अपनाने की आवश्यकता पड़ती है। छोटा बच्चा चाहे अन्य कोई कला न जानता हो पर प्रकृति ने उसे खेलना शुरू से ही सिखा रखा है। वह अपने हाथ पैर हिलाकर, उछलकूद कर, किलकारी भरकर अपना मनोरंजन कर लेता है। सुबह होते ही पक्षी चहचहाते हैं, अपना मनोरंजन करते हैं। मनुष्य खेलों को जीवन में स्वाभाविक रूप से ही अपना लेता है। आज के युग में खेलों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

खेल कई प्रकार के होते हैं, जीवन में, हमारी परिस्थितियों में परिवर्तन आता रहता है उसी प्रकार खेलों के स्वरूप आदि में भी परिवर्तन स्वाभाविक है। पहले जबकि राजतंत्र शासन प्रणाली थी तब राजा खेल, शेर और हाथी की लड़ाई देखकर मनोरंजन करते थे। मेढ़ों की, तीतरों की लड़ाई भी मनोरंजन का साधन थी। यूरोप के देशों में व्यक्ति सांड़ों से लड़ते हैं और असंख्य व्यक्ति उसे देखकर अपना मनोरंजन करते हैं। हमारे यहां जुआ, शतरंज, पासा, कुश्ती आदि भी मनोरंजन के साधन रहे हैं। आज खेलों को दो प्रमुख वर्गों में विभक्त किया गया

है—आउटडोर गेम्स और इन्डोर गेम्स। इनके अलावा खेलों के स्थानीय, प्रादेशिक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय ट्रस्ट भी हैं। यूनिवर्सिआड, एशियाड, कामनवेल्थ खेल, ओलंपिक खेल आदि की दृष्टि से भी खेलों का वर्गीकरण किया गया है।

भीतर खेले जाने वाले खेलों में शतरंज, ताश, कैरम, टेबिल टेनिस, पासा आदि खेल आते हैं। बाहरी खेलों यानि आउटडोर खेलों में वॉलीबाल, लॉन टेनिस, कबड्डी, फुटबॉल, क्रिकेट, बॉस्केट बॉल, पोलो, हॉकी, तैराकी, बेसबॉल, स्कीइंग, नौकायान, कार-रैली, दौड़, घुड़सवारी आदि गिने जा सकते हैं।

आजकल देश-विदेश में तरह तरह के खेल होते रहते हैं। अलग-अलग ऋतुओं में अलग-अलग प्रकार के खेल आयोजित होते हैं। सरकारें उच्च स्तर के खिलाड़ियों का चयन करने और उनके लिए खेल सम्बन्धो व्यवस्था करने की जिम्मेदारी लेती है, अलग से खेल विभाग, खेल प्राधिकरण गठित किये गये हैं। हमारे देश में भी सरकार ने खेल प्राधिकरण की स्थापना की है। यह एक स्वायत्त-शासी संस्था है जो सरकारी स्रोतों, सार्वजनिक एवं निजी स्रोतों से भी खेलों के लिए धन जुटाकर खेलों की व्यवस्था करता है, यह केन्द्र सरकार के खेल-विभाग के दिशा-निर्देशन एवं नियन्त्रण में कार्य करता है। इनके अलावा कस्बों आदि में अनेक खेल मण्डल हैं, व्यायाम शालाएँ हैं जो खेलों का आयोजन करती हैं। स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर भी खेल होते हैं। भारत में मंत्रिमण्डल ने सोलह सूत्रीय खेल नोति घोषित की है जिसके अन्तर्गत गांवों में भी खेल मैदान, इनडोर हॉल, तरणताल आदि बनाने का प्रावधान रखा गया है। खेलों के प्रति राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के कार्यक्रम बनाने, खेल सम्बन्धी अनुसन्धानों को . . ल सम्बन्धो उच्च स्तरीय सामान तैयार कराने आदि की ओर भी ध्यान दिया जायेगा। कुछ स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में केवल खेल सम्बन्धी शिक्षा देने को व्यवस्था की जायेगी। इस नीति के अन्तर्गत युवा वर्ग में से खेल प्रतिभाओं की खोज को जायेगी, खिलाड़ियों को रोजगार देकर खेलों की ओर युवकों को प्रोत्साहित किया जायेगा, अच्छे खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार जैसे पुरस्कार दिये जाते हैं, 1985 में पी. टी. ऊषा को पद्म श्री प्रदान की गई थी। 1986 में मोहम्मद शाहिद को हॉकी में पद्म श्री सम्मान प्रदान किया गया।

युवकों में खेलों के प्रति रुचि पैदा करने के उद्देश्य से 1982 में दिल्ली में 'एशियाड–82' का सफल आयोजन किया गया था जिसमें करीब पांच हजार खिलाड़ी देश-विदेश के एकत्र हुए थे। उसमें सर्वाधिक स्वर्ण पदक चीन ने प्राप्त किये थे। भारत उसमें पांचवें स्थान पर रहा था। भारत के 644 खिलाडियों ने उसमें भाग लिया था। 1983 में फिनलैण्ड की राजधानी हेलसिंकी में विश्व एथलेटिक्स प्रतियोगिता हुई थी जिसमें 158 देशों के खिलाड़ियों ने भाग लिया

था। 1983 में ही प्रूडेंसियल क्रिकेट कप विश्व चैम्पियन प्रतियोगिता हुई जिनमें भारत की क्रिकेट टीम ने वैस्टइण्डीज को पराजित किया था। 1984 में अमेरिका में लॉस ऐंजिल्स नगर में 23वें ओलम्पिक खेल हुए थे जिनमें 140 देशों के खिलाड़ियों ने भाग लिया था। अब सितम्बर 1988 मे द. कोरिया में सियोल में ओलम्पिक खेल हुए हैं। इस प्रकार विश्व के किसी न किसी देश में विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताएं होती रहती हैं जो इस बात का सबूत है कि दुनियां के देश अब खेलों को बढ़ावा देने के लिये उद्यत हैं। 1986 में रूस में मास्को सद्-भावना खेल हुए। ये खेल अब 1990 में ये सद्भावना खेल अब न्यूजीलैण्ड में होंगे। 1986 में मैक्सिको में 5 किलो वजन का 'फीफाकप' वाला खेल मेला लगा था। जो विश्व का सबसे बड़ा खेल मेला था जिसे दुनियां की तीन-चौथाई आबादी ने टेलीविजन पर देखा था और मेले में 5 लाख दर्शक एकत्र हुए थे।

इतना स्पष्ट है कि अब जीवन में खेलों का बड़ा भारी महत्व स्वीकार किया गया है। खेलों से मनोरंजन होता है। खेल मैदान में अथवा टी. वी. पर असंख्य बूढ़े, बच्चे, नर-नारी खेल देखकर स्वस्थ मनोरंजन प्राप्त करते हैं। जब अपने देश की टीम या खिलाड़ी जीतते हैं तब तो देश के दर्शकों को और भी ज्यादा खुशी होती है। खेलों का दूसरा महत्व यह है कि लोग अपने बच्चों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अनेक व्यक्ति और युवक स्वयं ही खेलों में रुचि लेने लगते हैं जिससे उनका स्वास्थ्य सुधरता है। तीसरा महत्व यह है कि जो व्यक्ति खेल देखकर मनोरंजन करते हैं या जो खेलों में भाग लेते हैं, उनके स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। यों तो स्वास्थ्य के लिए अलग से कई प्रकार के व्यायाम भी हैं पर खेलों के साथ में मनोरंजन भी होता है जिससे स्वास्थ्य पर ज्यादा अच्छा असर हुआ करता है। स्वास्थ्य का अच्छा होना किसी भी क्षेत्र में उन्नति करने के लिए आवश्यक है। कहा भी गया है "Sound mind is a sound body." या 'तन्दुरुस्ती हजार नियामत' है। संस्कृत में स्वास्थ्य को धर्म का पहला साधन बताया गया है—'शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम्।' चौथे, खेलों से आज की अति व्यस्तता की जिन्दगी की एकरसता, नीरसता, ऊब दूर होती है और जीवन में आनन्द की अनुभूति होती है जिससे जीवन भार नहीं बनने पाता। खेलों से होने वाले मनोरंजन से मन पवित्र होता है जो स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। मन के रुग्ण रहने से अनेक बीमारियां हो जाया करती हैं। पांचवें, खेलों से खिलाड़ियों को विश्व में यत्र-तत्र भ्रमण करने, दुनियां देखने का मौका मिलता है जिससे उनमें आपस में प्रेमभाव भी बढ़ता है। वे अनुशासित होते हैं, सहनशील बनते हैं। उनमें व्यावहारिकता आती है। खेलों से कठिनाइयों पर विजय पाने का उत्साह भी बढ़ता हैं, खेलों से देश प्रेम, विश्व प्रेम की भावना को बल मिलता

है। अच्छे खिलाड़ियों को खेल अनेक बुराइयों से मुक्त रखते हैं। उनका ध्यान जीत, स्वास्थ्य और देश का नाम रोशन करने की ओर रहता है। बुराइयों की ओर ध्यान जाये, इसके लिए उन्हें फुर्सत ही नहीं मिल पाती। खाली दिमाग ही शैतान का घर बन जाता है 'Empty mind is the devil's workshop.' युवावस्था ऐसी अवस्था है जब कि युवक गलत संगति आदि के प्रभाव से आसानी से गलत रास्ता अपना सकते हैं। आजकल तो मादक द्रव्यों का प्रचलन बहुत अधिक होने लगा है। खेलों की ओर ध्यान देने से युवक उन बुराइयों से बचे रहकर स्वास्थ्य बनाये रखकर देश के लिए स्वस्थ, योग्य नागरिक बन सकते हैं जिससे देश का भी हित होता है।

इस प्रकार खेलों का आज के युग में प्रचलन बढ़ता जा रहा है और यह एक अच्छा लक्षण है। खेलों को और भी बढ़ावा मिले, यह बहुत आवश्यक है। खेलों से व्यक्तिगत रूप से तो खिलाड़ियों का लाभ होता ही है, देश और विश्व को भी लाभ होता है।

समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता एवं महत्व

1. भूमिका
2. समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता का अर्थ
3. समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता का महत्व
4. समाचार पत्रों का दायित्व
5. समाचार पत्रों की कठिनाइयां
6. निष्कर्ष।

आज के विज्ञान के युग में संचार एवं यातायात के साधनों के कारण दुनियां घर-आंगन बन गई है। आज कोई देश किसी देश के लिए इतना दूर प्रतीत नहीं होता कि उन्हें एक-दूसरे के बारे में जल्दी जानकारी प्राप्त न हो और उनमें आपस में जल्दी सम्पर्क न हो पाये। सम्पर्क एवं संचार के साधनों में से एक बहुत महत्वपूर्ण साधन समाचार पत्र है। सर्वप्रथम 16वीं शदी में इटली के वेनिस नगर में समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ था। आज समाचार पत्रों में ऐसी नई टैकनीक विकसित कर ली गई है एक समाचार-पत्र अनेक स्थानों से प्रकाशित होता है फिर भी उसके समाचार वे ही होते हैं। समाचार पत्र के लिये अंग्रेजी शब्द News Paper है। इसमें से न्यूज शब्द के चारों वर्ण उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशा के द्योतक हैं। इस आधार पर इसका अर्थ है कि समाचार पत्र चारों दिशाओं के समाचार देता है।

समाचार पत्रों को स्वतन्त्रता मिले, यह जरूरी समझा जाता है। इस स्वतन्त्रता से क्या तात्पर्य है, यह विचारणीय है। कई बार सरकार सेंसरशिप लागू

कर देती है। उस स्थिति में स्थान विशेष के समाचार या देश भर के खास समाचार प्रकाशित करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है। समाचार पत्रों को स्वतन्त्रता मिले तो वे देश भर के समाचारों को तटस्थ भाव से प्रकाशित कर सकते हैं। यदि सरकार की नीतियां गलत हों या किसी बड़े अधिकारी ने भी कोई गलत कार्य किया हो तो समाचार पत्र उसे प्रकाशित कर सकते हैं। आपातकाल में हमारे देश में समाचार पत्रों पर काफी पाबन्दी लगा दी गई थी जिसके कारण जनता को देश की वस्तु स्थिति के बारे में पूर्णतया जानकारी नहीं मिल पाती थी।

समाचार पत्रों का पूरा लाभ तब मिलता है जब उन्हें स्वतन्त्रता प्राप्त हो और समाचार पत्र तटस्थ भाव से तथ्यों की सही-सही जानकारी प्रस्तुत करते हों। उस स्थिति में वे सरकार, बड़े से बड़े अधिकारी की अच्छाई-बुराई से अवगत करा सकते हैं। अखबारों के कारण सरकार, अधिकारी तथा अन्य लोग बुराइयों से दूर रहने के लिए सावधानी बरतते हैं। सेंसरशिप के कारण आपातकाल में अखबार सही तथ्य प्रस्तुत न कर सके, फलतः सरकार गलती करती गई, परिवार नियोजन सम्बन्धी ज्यादतियां करती रही, फलतः अगली बार कांग्रेस की पराजय हुई। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उलहक ने समाचार पत्रों को पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं दी। अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में अपनी गलतियों को स्वतन्त्र रूप से छापने के लिए भारत में समाचार पत्रों को छूट नहीं दी थी।

समाचार पत्रों का महत्व यह भी है कि जनता भी उनके माध्यम से अपनी भावना, अपनी समस्याएं सरकार तक पहुँचा सकती है। सरकार समाचार पत्रों से अपनी गलतियां जानकर उनमें सुधार करके जनता में अपनी अच्छी छवि बनाये रखने का ध्यान रखती है। समाचार पत्र जनता को उसके अधिकारों से अवगत कराते रहते हैं जिससे सचेत हुई जनता पर सरकार या अधिकारी मनमानी नहीं कर पाते। समाचार-पत्रों से जनता को अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं की जानकारी मिलती रहती है। देश के किसी भाग में कोई महत्वपूर्ण घटना होती है जैसे-बाढ़ या अकाल की स्थिति तो देश की जनता उसको दूर करने हेतु चन्दा करने जैसे कार्य शुरू कर सकती है। समाचार-पत्रों से पूरे देश में कोई महत्वपूर्ण सूचना जल्दी ही आसानी से प्रसारित की जा सकती है।

वर्तमान समय में रूस के प्रति जनता की जो अच्छी धारणा है उसके पीछे समाचार पत्रों का बड़ा योग है। दुनियां के किसी देश में कई देशों के शासनाध्यक्षों के सम्मेलन के निर्णयों को समाचार पत्रों से साधारण व्यक्ति भी आसानी से जान लेता है। समाचार पत्र महत्वपूर्ण विचारकों की विचारधारा से भी जनता को अवगत कराते रहते हैं। समाचार पत्रों से भी कार्ल मार्क्स के विचारों के प्रसार-

प्रचार में योग मिला जिसके परिणामस्वरूप दुनियां के मजदूर वर्ग में नई चेतना का प्रसार हुआ।

समाचार पत्रों से बेरोजगारों को नए रोजगारों की, दफ्तरों आदि में हुए रिक्त स्थानों की घर बैठे सूचना मिल जाती है। समाचार पत्र समाज को रूढ़ियों से छुटकारा दिलाकर समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। कुछ समय पूर्व सती प्रथा के खिलाफ बहुत कुछ प्रकाशित हुआ था। दहेज एक कुप्रथा है, सामाजिक बुराई है, यह चेतना समाचार पत्रों से ही अधिक जागृत हुई है। नवजात शिशुओं को कब-कब, कौन-कौनसे टीके लगवाने चाहिए आदि की और परिवार नियोजन की जानकारी समाचार पत्रों से मिलती रही है। कब, कौनसे खेल किस देश में होने वाले हैं, इसकी जानकारी भी इनसे मिल जाती है। छात्रों की परीक्षाएं कब होंगी, इसकी तथा उनके परीक्षा परिणामों की जानकारी भी अखबारों से मिल जाती है। विवाह, गोद लेने, किसी वस्तु विशेष की बिक्री करने आदि की सूचना समाचार पत्रों से दी जा सकती है। बाजारों में वस्तुओं के भाव समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। समाचार पत्र देश की जीभ है जो देश भर की जनता को बहुत से समाचार कहते हैं और वह जनता के मन की बात भी प्रकाशित कर देता है। समाचार पत्र सरकार की आंखें हैं। उनसे ही सरकार जनता की धारणा को समझ लेती है।

इस प्रकार हर वर्ग के लिए समाचार-पत्रों का महत्व है। समाचार-पत्र लोकतन्त्र के प्रहरी हैं। वे सरकार की आंखें हैं और जनता की जीभ है। वे विज्ञापन के माध्यम हैं, ज्ञान के विकास के साधन हैं। समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता जरूरी है और उतना जरूरी यह है कि समाचार पत्र अपनी जिम्मेदारी सही ढंग से तटस्थ भाव से निभायें।

एक अविस्मरणीय घटना

1. भूमिका
2. अविस्मरणीय घटना
3. निष्कर्ष

मानव का जीवन भी विचित्र पहेली है। मनुष्य स्वयं अपने ही बारे में सब कुछ नहीं जानता। उसे पता नहीं कि कल उसका भविष्य क्या होगा? कल उसके स्वास्थ्य में क्या परिवर्तन हो जाय, कल उसके साथ क्या घटना घटित हो जाय, उसे खुद ज्ञात नहीं। शायद इसीलिए जीवन के रहस्य जानने के लिए अनेक दार्शनिकों ने बड़ा परिश्रम किया है। जीवन जगत् के बारे में मनुष्य में बड़ी उत्सुकता, बड़ा कौतूहल, बड़ी जिज्ञासा रही है। मानव के शरीर में ही छोटे रूप में ब्राह्मण्ड समाया हुआ है, ऐसा माना गया है—'यत्पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' अर्थात् जो इस शरीर

में है वही ब्रह्माण्ड में है। जब ऐसी स्थिति है तब इस शरीर के रहस्यों को, इस जीवन को कौन सम्पूर्ण रूप से जान भी कैसे सकता है। अनेक मनुष्यों के जीवन में बड़ी अनहोनी, बड़ी-बड़ी विचित्र घटनाएं घटित होती हुई सुनने को मिलती है। जब कोई विचित्र घटना किसी आदमी के स्वयं के जीवन में घटित हुई हो तब उस घटना को भूल जाना बड़ा मुश्किल होता है। यह बात अलग है कि आदमी उस घटना को याद करता हुआ जिन्दगी के अन्य दैनिक कार्य नहीं छोड़े बैठ रह सकता।

मेरे जीवन में यों तो कई घटनाएं घटी हैं परन्तु यहां केवल एक ज्यादा महत्व की घटना का उल्लेख कर रहा हूं। मैं एम. ए. करने के बाद मध्य प्रदेश चला गया था। वहां मैं एक रिश्तेदार के पास किसी कार्यवश करीब एक महीने तक रहा था। यद्यपि मेरे मित्र महोदय बहुत भले आदमी थे। वे मेरी सुविधाओं का ध्यान रखते थे। उन्होंने मेरी नौकरी के लिए काफी भाग-दौड़ की थी। वे कई जगह मुझे अपने साथ घुमाने भी ले गये थे। उनके पास समयाभाव देखकर मैं खुद ही कई जगह स्वयं चला जाता था। मेरे मित्र मध्यप्रदेश के दुर्ग जिले में नवागढ़ में अध्यापन कार्य करते थे। एक दिन मैं बस से बेमेतरा गया था। वहां मुझे शाम हो गई थी। दिन में दोपहर तक मौसम साफ था। यों वर्षा ऋतु थी इस कारण कभी भी बादल घिर सकते थे। उस दिन दोपहर के करीब बादल घिर आये और तेज वर्षा हो गई। मैं अपना कार्य सम्पन्न कर बस स्टैंड पर आया। मैं निश्चिन्त था कि मुझे बेमेतरा बस स्टैण्ड से नवागढ़ के लिए बस मिल जायेगी। बस स्टैण्ड पर आकर पता चला कि इस समय कोई बस नहीं जायेगी। कारण बताया गया कि तेज वर्षा के कारण नदी में पानी आ गया होगा। ऐसी स्थिति में बसों का आना-जाना उधर बन्द हो जाता है। अब मैं बड़ा चिन्तित हुआ। मैं बेमेतरा में किसी को नहीं जानता था इस कारण मेरे सामने रात को वहां ठहरने की भी समस्या थी। किसी ने बताया कि आप साईकिल वाले की दुकान से किराये की साइकिल लेकर सड़क मार्ग से नवागढ़ चले जाइये। मैं तो साइकिल वालों को भी नहीं जानता था। चिंता यह हुई कि मुझे साईकिल कोई क्यों देगा ? खैर, मैं मजबूरी में साहस करके एक साईकिल वाले की दुकान पर गया और उसे मैंने सही-सही बात बता दी। पहले तो साईकिल वाला पशोपेश में डूब गया। मैंने फिर उससे प्रार्थना की और उससे साईकिल देने की दया दिखाने के लिए कहा। यह भी गनीमत थी कि उसने बिना परिचय के मुझे किराये की साईकिल दे दी। यह आज से कई वर्ष पहले की घटना है। तब वहां अपरिचित व्यक्ति को भी कोई न कोई साईकिल वाला किराये पर साईकिल दे देता था। मैं एक बार तो बड़ा खुश हुआ। मैंने सोचा कि जब मुझे यहां के ही व्यक्ति ने साईकिल से जाने का सुझाव

दिया है तो साईकिल से नवागढ़ लौट जाते ही होंगे। रास्ता बस का ही बन्द होगा।

मैं साईकिल से नवागढ़ के लिए चल पड़ा था। मुझे देर तो वर्षा आदि के कारण वहां हो ही गई थी। मैं तेजी से साईकिल चलाता हुआ आ रहा था। रास्ते में अंधकार बढ़ता जा रहा था। कभी-कभी बिजली चमक जाती थी। आकाश में कहीं-कहीं बादल छाये हुए थे। नदी तक आते-आते रात का अन्धकार हो गया था। नदी के पास आने से पहले रास्ते में भी नदी के बारे में चिन्ता तो मन में कभी-कभी उठती रही थी। नदी के किनारे आकर मैं रुका। नदी में काफी पानी था और उसका बहाव तेज था। मैं थोड़ी देर खड़ा होकर प्रतीक्षा करता रहा कि शायद कोई आदमी उधर से निकले पर ऐसा नहीं हुआ। मैं नदी के ढाल की तरफ उसके किनारे-किनारे आगे बढ़ा। थोड़ी ही दूर पर दो एक व्यक्ति मिल गये। मैंने नदी पार करने के सम्बन्ध में उनसे बात की। उन्होंने मुझे वह स्थान बताया जहां से पैदल चलकर नदी पार की जा सकती थी। मैं साईकिल हाथ में लेकर बढ़ने लगा। नदी के मध्य भाग में पानी बहुत तेज बह रहा था। यद्यपि वहां पानी की गहराई तो अधिक नहीं थी पर तेज बहाव के कारण मुझे अपने बह जाने का डर लगने लगा। सचमुच ही एक-दो बार मैं गिरते-गिरते बचा। नदी पार करते ही मुझे बेहद खुशी हुई, मैंने सोचा कि अब नवागढ़ तक पहुँचने में कोई भी बाधा नहीं आयेगी। घर जल्दी पहुँच जाने के बारे में सोचने में व्यस्त मुझे कल्पना भी न थी कि नदी की बाधा से भी कोई और बाधा आ सकती है। ज्योंही मैं नदी के किनारे पर पहुँचकर सड़क की तरफ आगे बढ़ा तो साईकिल के पहियों में मिट्टी चिपकने लगी। मैंने सावधानी के रूप में खेतों की ओर से हटकर नदी के किनारे की कुछ कड़ी मिट्टी की ओर चलना शुरू कर दिया। मैं बस अन्दाज से चल रहा था। कभी-कभी बिजली चमकने से उत्पन्न उजाले में अपना रास्ता खोजने का प्रयत्न कर लेता था।

नदी के किनारे पर भी कहीं ऐसी कड़ी मिट्टी नहीं रह गई थी जो पहियों से चिपकती न थी। मैं फिर भी कड़ी मिट्टी की आशा से बिल्कुल किनारे की तरफ चल रहा था। अंधेरे में यकायक मेरा बायां पैर चिकनी मिट्टी के कारण फिसल गया। साईकिल मेरे ऊपर गिरते-गिरते बची। मैं संभल गया पर यह सोचकर मैं कांप गया कि यदि फिसलकर मैं नदी में गिर जाता तो यहां-जहां नदी का रूप भयानक है, न जाने मेरी क्या दशा होती। मैं भगवान का शुक्रिया अदा करता हुआ फिर आगे बढ़ा। अब ऐसी मिट्टी आ गई थी जो बहुत चिपकनी थी। साई-किल के पहियों की मिट्टी साईकिल के मडगार्डों में ठसाठस भर गई थी। अब साई-किल के पहियों ने [illegible] कर दिया था। मैं पूरा जोर लगाकर [illegible]

साईकिल को धकेले जा रहा था कि सड़क पर पहुँचकर मिट्टी साफ कर साईकिल पर चढ़ लूँगा। दुर्भाग्य से सड़क थोड़ी दूर थी। मैं साईकिल को खींचते-खींचते थक गया था। मेरे जूतों के नीचे भी काफी मिट्टी लग गई थी। मैंने साइकिल को कंधे पर लटकाया। जैसे-तैसे मैं सड़क पर आ गया था। रास्ता अंधकारमय था। यह गनीमत थी कि अंधेरा ही था और वर्षा फिर से शुरू नहीं हुई थी। मैंने लकड़ी खोजनी चाही ताकि मडगार्डों में भरी और जमी हुई मिट्टी को निकाल सकूं पर वहां कुछ दिखाई ही नहीं देता था। अब मैं निराश हो उठा था। मैंने सच्चे मन से भगवान का स्मरण किया। मुझे ध्यान आया कि मेरी जेब में पेन है। मैंने पेन से जैसे-तैसे काफी देर में मिट्टी साफ की। मैं साईकिल पर सवार हुआ तो भी साईकिल धीरे और कड़ी चलती थी। मैं किसी प्रकार काफी रात हुए नवागढ़ पहुँचा। मुझे रास्ते में कोई भी आदमी नहीं मिला।

मित्र का दरवाजा बन्द था। अन्दर सभी सो गये थे। दरवाजा खटखटाने पर मेरा मित्र ही जागकर आया। मैं अन्दर पहुँचकर पहले तो चारपाई पर बैठ गया। इसके बाद मैंने अपनी दुःख गाथा सुनाई मित्र और उसके परिवार के लोग मेरी वही कथा सुनकर दुःखी हुए। अपनी स्थिति का बखान कर मैं खुश हो गया था। संतोष था कि कैसे भी सही मैं सही सलामत लौट आया था। अब जब भी मुझे वह घटना याद आ जाती है तो अन्दर विचित्र सी अनुभूति हो उठती है। यह घटना मेरे जीवन की ऐसी घटना है जिसे मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। उस घटना से मुझे लगने लगा है कि उस दिन तो ईश्वर ने ही मेरी रक्षा की थी।

संक्षिप्तीकरण (संक्षेपण)

परिभाषा और अर्थ :

संक्षिप्तीकरण का सामान्य अर्थ है विवरण, वक्तव्य, निबंध आदि को संक्षिप्त करना, उनके मूल भाव को सुरक्षित रखते हुए उन्हें संक्षेप में प्रस्तुत करना। जे. बी. बर्नार्ड ने संक्षेपण की परिभाषा देते हुए बताया है कि संक्षेपण लिखित सामग्री के आधारभूत तथ्यों का सुनियोजित संक्षिप्त इतिवृत्त है। डॉ. वासुदेव नन्दन प्रसाद के अनुसार "किसी विस्तृत विवरण, सविस्तार व्याख्या, वक्तव्य, पत्र-व्यवहार, लेख इत्यादि के तथ्यों और निर्देशकों के ऐसे संयोजन को संक्षेपण कहते हैं जिसमें अप्रसंगिक, असम्बद्ध पुनरावृत्ति, अनावश्यक बातों का त्याग और सभी अनिवार्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण और संक्षिप्त संकलन हो।"

संक्षिप्तीकरण या संक्षेपण एक स्वतःपूर्ण ऐसी रचना है जिसे पढ़ लेने पर उसके मूल अवतरण को पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि संक्षेपण से उस अवतरण की सभी मूलभूत आवश्यक बातें ज्ञात हो जाती है। संक्षेपण के लिए अंग्रेजी में 'प्रैसी' (Precis) शब्द प्रचलित है।

आवश्यकता और महत्व—आज जीवन में व्यस्तता बहुत बढ़ गई है। मनुष्य के पास विस्तृत ग्रन्थों, विवरणों आदि को पढ़ने के लिए समय का अभाव हो गया है। दूसरी ओर हम ज्ञानवर्धक, उपयोगी, जरूरी विवरणों आदि के बारे में जानने के लिए कई बार विवश भी होते हैं। ऐसी स्थिति में समय और श्रम की बचत करने वाला तरीका सहायक सिद्ध हो सकता है और वह तरीका संक्षेपण का है। वैसे भी आज लम्बी भूमिका बांधकर बात कहने का समय नहीं है। संक्षेप में, सारगर्भित, उद्देश्यपूर्ण कथन को महत्व दिया जाता है। संक्षेपण 'गागर में सागर' भरने की कला है। निष्कर्ष रूप में संक्षिप्तीकरण आज के युग की आवश्यकता है। इसका कई दृष्टियों से महत्व है—

1. यह हमारे समय की बचत करता है।
2. इसे पढ़ने में कम श्रम करना पड़ता है। यह श्रम की बचत करता है।
3. यह लेखन क्षमता को विकसित करने की प्रेरणा देता है।
4. संक्षेपण कम शब्दों से भी अधिक अर्थ व्यक्त करता है।
5. यह संदर्भ के बिखरे तथ्यों में से अपेक्षित, आवश्यक तथ्यों को पृथक् करता है।
6. यह समय एवं श्रम की बचत कर व्यक्ति को कार्य-क्षमता बनाये रखने में सहायक होता है।
7. संक्षिप्तीकरण से हमारी भेदक दृष्टि का, एकाग्रता का विकास होता है।

संक्षेपण का दूसरों से अन्तर :

संक्षिप्तीकरण तथा सारांश (Precis and Summary)—संक्षिप्तीकरण और सारांश में अन्तर है। संक्षिप्तीकरण में मूल अवतरण के आवश्यक, मूल तथ्य को लिया जाता है और उसे क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। वह वर्णन मूल अवतरण से छोटा तो हो ही जाता है। सारांश में मूल अवतरण को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। उसमें क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना जरूरी नहीं होता।

आशय एवं संक्षिप्तीकरण—आशय में सम्पूर्ण कथन का या गूढ़ वाक्यों या पदों का स्पष्टीकरण होता है जबकि संक्षिप्तीकरण में स्पष्टीकरण नहीं दिया जाता।

भावार्थ और संक्षिप्तीकरण—इन दोनों में विचारों और भावों की संक्षिप्तता रहती है। भावार्थ में लेखन की लम्बाई-चौड़ाई की अन्तिम सीमा नहीं रहती, संक्षेपण मूल का एक-तिहाई होता है। भावार्थ में मूल के मुख्य और गौण भावों का स्थान रहता ही है जबकि संक्षिप्तीकरण में मुख्य भाव ही रहता है।

संक्षिप्तीकरण के नियम

यों संक्षिप्तीकरण के नियमों को दो भागों में बांटा जा सकता है, विषयगत नियम और शैलीगत नियम परन्तु सुविधा की दृष्टि से यहां सीधे-सीधे ढंग से एक साथ ही कुछ नियमों की चर्चा की गई है---

1. जिस अवतरण का संक्षिप्तीकरण करना हो, उसे पहले भली-भांति समझ लेना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि अवतरण को कम से कम तीन बार पढ़ लिया जाय।
2. अवतरण में मूल विषय से सम्बन्धित वाक्यों, वाक्य खण्डों, शब्दों को रेखांकित कर लेना चाहिए ताकि कोई मुख्य तथ्य छूट न जाय।
3. मूल अवतरण को समझ लेने और मुख्य स्थलों को रेखांकित करने के उपरान्त एक प्रारूप बना लेना चाहिए, एक गद्यांश लिख लेना चाहिये।
4. इस प्रारूप में ध्यान रखना चाहिए कि शब्द अपने हों और मूल भाव विचार ही प्रस्तुत हों। हमें उसमें अपनी ओर से न तो भाव-विचार जोड़ने चाहिये और न मूल के भाव-विचारों का खंडन करना चाहिए। हमें स्पष्टीकरण भी नहीं देना चाहिये।
5. जो प्रारूप तैयार किया जाय उसमें किये गये वर्णन में एक क्रम रहे। वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध बना रहे, उनमें सुगठितता रहे।
6. तदुपरान्त प्रारूप को मूल अवतरण के एक-तिहाई के लगभग आकार में व्यवस्थित कर लेना चाहिये।
7. संक्षेपण करने पर मूल भावों के अनुसार एक उचित शीर्षक दे देना चाहिये जो छोटा हो और तथ्यों से सम्बद्ध हो।
8. संक्षिप्तीकरण गद्यांश में प्रयुक्त शब्दों की संख्या नीचे अंकित कर देनी उचित रहती है।
9. संक्षिप्तीकरण के लिए शीर्षक खोजते समय ध्यान रखना चाहिए कि शीर्षक संकेत मूल अवतरण के शुरू के या अन्तिम वाक्य में प्रायः मिल जाता है। शीर्षक चुनने के बाद देख लेना चाहिए कि क्या मूल अवतरण का वर्णन उसी के बारे में है।
10. संक्षिप्तीकरण सरल, शुद्ध, अलंकृत भाषा में होना चाहिए। उसमें एक वाक्य या अनेक शब्दों के लिए यदि कोई एक उपयुक्त शब्द दिया जा सकता हो तो ऐसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए इससे शब्दों में मितव्ययिता की जा सकती है। उदाहरण के लिए 'वह स्थान जो एक से अधिक नदियां मिलती है' इसके लिए एक उपयुक्त शब्द है--'संगम'।

11. संक्षिप्तीकरण अन्य पुरुष में, प्रायः भूतकाल में होता है। पत्र और भाषण का संक्षिप्तीकरण भूतकाल में हो। यदि मूल अवतरण संवाद शैली में हो तो उसे भी गद्यांश के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।
12. मूल अवतरण के वे ही शब्द अपनायें जाएं जिनका लेना जरूरी हो,
13. संक्षिप्तीकरण में वाक्य प्रायः छोटे होने चाहिए और कोई भी भरती का, व्यर्थ का, फालतू शब्द न प्रयुक्त हो।
14. संक्षेपण में विशेषणों, समानार्थी शब्दों, उदाहरणों, दृष्टान्तों को नहीं, देना चाहिए।
15. वह परोक्ष कथन में लिखा जाना चाहिए।

संक्षिप्तीकरण के उदाहरण

(1)

युद्ध और राष्ट्रीयता एक ही तस्वीर के दो पहलू हैं। राष्ट्रों के बीच जब तनाव आ जाता है तब उससे युद्ध प्रारम्भ होने के बाद राष्ट्र की शक्ति में और भी वृद्धि हो जाती है। युद्ध और राष्ट्रीयता दोनों के दोनों राजनीति है। जब एक देश किसी दूसरे देश पर अधिकार जमाता है, तब गुलाम देश के लोगों में शासक के विरूद्ध घृणा का ज्वर उमड़ता है। घृणा के इस ज्वर से राष्ट्रीयता उत्पन्न होती है। राष्ट्रीयता लगभग पशु धर्म है। भैंस अपने खूंटे पर किसी दूसरी भैंस को नहीं आने देना चाहती। यही भाव विकसित और परिभाषित होकर मनुष्यों के बीच राष्ट्रीयता कहलाता है। जैसे राष्ट्रीयता राजनीति का एक रूप है, उसी प्रकार युद्ध की भी राजनीति है। राजनीति जब सफेद लिबास में होती है तब उसे शान्ति कहते हैं। जब उसके कपड़े लहू से लाल हो जाते हैं वह युद्ध कहलाता है। युद्धों से दुःखी होकर मनुष्य युद्धों का उन्मूलन चाहता है और इसलिए वह राष्ट्रीयता का विरोध भी करने लगा है। अरस्तू, जब तक राष्ट्रीयता है, दुनियां देशों में बंटी रहेगी और युद्ध होते रहेंगे।

संक्षेपण

शीर्षक—राष्ट्रीयता विश्व-शान्ति में बाधक

युद्ध और राष्ट्रीयता परस्पर पूरक तथा राजनीति से सम्बद्ध है। विजित देश की विजेता के प्रति घृणा ही राष्ट्रीयता को जन्म देती है। शान्ति और युद्ध राजनीति ही दो पहलू हैं। राष्ट्रीयता के कारण हुए युद्धों से परेशान होकर मनुष्य राष्ट्रीयता का विरोध करने लगा है।

(2)

अनेक राजनीतिक आंधियों के थपेड़े खाने पर भी सदियों से भारतवर्ष एक अखण्ड देश रहा है। इस अखण्डता या एकता की नींव इतनी गहरी है कि पर्वो

पर हम प्रायः यह भूल जाते हैं कि हम मद्रास के हैं या उड़ीसा के। माघ मेले के अवसर पर प्रयाग के संगम में नहाते समय या काशी में ग्रहण के अवसर पर गंगाजी नहाते वक्त समूचे भारत की श्रद्धालु जनता की लहरों पर लहरें गंगाजी की जल-धारा की ओर अग्रसर होती हैं और स्नान तथा तीर्थ कर्म से अपने को पवित्र मानती हैं। इनकी भक्ति धारा सारे भारत को आज भी स्नेह रज्जु में बांधे हैं, जो अटूट है, अभेद्य है और अमिट है। यहां तक कि पाकिस्तान के मुसलमानों की अन्य देशों के मुसलमानों की अपेक्षा भारत में हिन्दुओं के साथ कई बातों में अधिक समानता है, यों पृथकता स्थापित करना चाहें तो दूसरी बात है।

संक्षेपण

शीर्षक—भारतवर्ष की एकता

राजनीतिक परिवर्तन भी भारतवर्ष की एकता को भंग नहीं कर पाये। यह एकता पर्वों पर विशेष रूप से दिखाई देती है। तब हम प्रान्त आदि के भेदभाव भुला बैठते हैं। भक्ति भावना देश की एकता के लिए रस्सी का काम करती है।

(3)

हम सोचते हैं कि दुनियां भर से उधार ली गयी वस्तुओं से हम अपने राष्ट्र को खड़ा कर सकेंगे। दुनियां के सूदखोरों से द्रव्य उधार लेकर धनवान बनना चाहते हैं, परन्तु व्यसनी या प्रमादी पुरुष का सा जीवन व्यतीत कर सब धन का अपव्यय कर लेते हैं। मार्क्स के तत्वज्ञान या सिद्धान्तों को अपनाने में व्यग्र रहते हैं और यह भी नहीं सोचते कि उनके मूलभूत दोष क्या-क्या हैं, और उन पर आधारित हमारी विपरीत कल्पनाएं हमें कहां पहुँचायेंगी, अंग्रेजों से हम उनकी भाषा उधार लेते हैं परन्तु अपने में वह शक्ति नहीं जो कि उसे अच्छी तरह समझें या उसके व्यवहार पर अपनी धाक जमायें या उसका नया सृजन करें जिससे वह भाषा ऐसी भाव या पूर्ण सारगर्भित हो कि उसे अपनाने में अंग्रेज स्वयं को धन्य मानें। जिस तरह कि पश्चिमी राष्ट्रों के अपार कोष से लिये गये करोड़ों और अरबों की धनराशि के बाद भी अभी हम पिछड़े हुए हैं, वैसे ही अंग्रेजी के उच्च-कोटि के अध्ययन के बाद भी हम एक भी ऐसी कृति आज तक न दे पाये जिसे हम मामूली कविता भी कह सकें। बल्कि जो उल्टी बात हुई सो यह कि हम अपने ही उच्चकोटि के साहित्य को जो अनादिकाल से चला आया है, अपने अज्ञान से तिरस्कृत और हेय समझकर अपनी हीन भावना को प्रकट करने लगे।

संक्षेपण

शीर्षक—उधार लेने के दुष्परिणाम

हम द्रव्य, विचारधाराएं, भाषा आदि बाहर के देशों से उधार ले लेते हैं। ऐसे द्रव्य का अपव्यय कर बैठते हैं। विचारधाराओं की कमियों की ओर ध्यान

नहीं देते। अंग्रेजी भाषा तो उधार लेते हैं पर उस पर अधिकार प्राप्त नहीं कर पाते। आज तक हम अंग्रेजी भाषा में कोई मौलिक काम नहीं कर पाये, साथ ही अपने साहित्य की और उपेक्षा कर बैठे हैं। हम कर्ज लेकर भी पिछड़े हुए हैं।

(4)

राजनीतिक राष्ट्रीयता के विकास के साथ उसके अनेक प्रतीक भी विकसित हुए हैं। इसमें झण्डा और राष्ट्रगान तो हैं ही, राष्ट्र भाषा भी है। राष्ट्रीय झण्डा केवल एक वस्त्र-खण्ड नहीं है, वह राष्ट्र की एकता का प्रतीक है। इसलिए उस झण्डे की आन पर गर्दन कटाते किसी को देर नहीं लगती। कोई भी कुर्बानी उसकी रक्षा के लिए बड़ी नहीं मानी जाती। इस तरह राष्ट्रीयता का दूसरा प्रतीक राष्ट्र-गान होता है। राष्ट्रगान दूसरे गानों की तरह केवल संगीत नहीं है बल्कि वह संगीत से बहुत कुछ बढ़कर है, वह समस्वर में बंधी हुई राष्ट्र की आत्मा की गूंज है जिसे सुनते ही कोटि-कोटि हृदय एक ताल पर थिरकने लगते हैं। अधिक नहीं तो उनके समकक्ष ही राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में राष्ट्र भाषा भी आती है। राजनीतिक एकता अपने आप में महत्व शून्य और बेमानी है; यदि राष्ट्र के सदस्यों का हृदय एक नहीं हो पाता; और हृदय की एकता तब तक असंभव है जब तक वाणी की एकता न हो। यदि एक व्यक्ति दूसरे की बात समझ नहीं पाता तो एकता का अनुभव कैसे हो सकता है? अतः राष्ट्र भाषा उतनी ही आवश्यक है जितना राष्ट्र ध्वज या राष्ट्र गान।

संक्षेपण

शीर्षक—**राष्ट्रीयता के प्रतीक**

राजनीतिक राष्ट्रीयता के साथ-साथ झण्डा, राष्ट्रगान और राष्ट्रभाषा प्रतीकों का विकास हुआ है। राष्ट्रीय झण्डा राष्ट्र-एकता का प्रतीक है जिसके लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी दी जा सकती है। राष्ट्रगान राष्ट्र की आत्मा की गूँज है। राजनीतिक एकता हेतु राष्ट्र के लोगों के हृदयों की एकता जरूरी है और इस एकता के लिए वाणी की एकता आवश्यक है।

(5)

समस्त भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसके मूल में स्थित समन्वय की भावना है। उसकी यह विशेषता इतनी प्रमुख और मार्मिक है कि केवल इसी के बल पर संसार के अन्य साहित्यों के सामने वह अपनी भौतिकता की पताका फहरा सकता है। जिस तरह धार्मिक क्षेत्र में भारत के ज्ञान भक्ति के समन्वय प्रसिद्ध हैं और जिस तरह वर्ण एवं आश्रम चतुष्टय के निरूपण द्वारा इस देश में सामाजिक समन्वय का सफल प्रयास हुआ है, ठीक उसी प्रकार साहित्य तथा अन्य कलाओं में भी भारतीय संस्कृति समन्वय की ओर रही है। साहित्यिक

समन्वय से हमारा तात्पर्य साहित्य में प्रदर्शित सुख-दुःख, उत्थान-पतन, हर्ष-विषाद आदि विरोधी तथा विपरीत भावों के समीकरण तथा अलौकिक आनन्द में विलीन होने से है। साहित्य के किसी अंग को लेकर देखिए, सर्वत्र यही समन्वय दिखाई देगा। भारतीय नाटकों में ही सुख और दुःख में प्रबल प्रतिघात दिखाये गये हैं, पर सबका अवसान आनन्द में ही है। इसका प्रधान कारण यह है कि भारतीयों का ध्येय सदा से जीवन का आदर्श स्वरूप उपस्थित करके उसका उत्कर्ष बढ़ाने और उसे उन्नत बनाने का रहा है।

संक्षेपण

शीर्षक—भारतीय साहित्य की समन्वय-भावना

भारतीय साहित्य अपनी समन्वय की विशेषता के बल पर संसार के साहित्यों की बराबरी कर सकता है। यहां ज्ञान और भक्ति का, वर्ण और आश्रम का समन्वय हुआ है। यहाँ की संस्कृति भी समन्वय प्रधान रही है। साहित्य में सुख-दुःख जैसे विरोधी भावों का समन्वय हुआ है। भारतीयों का लक्ष्य जीवन का आदर्श रूप प्रस्तुत कर उसे उन्नत करने का रहा है।

(6)

हमारे यहां शिक्षा तो वास्तव में ज्ञान के सम्प्रेषण की विधि है। विधि का अर्थ है—सिखलाना। लेकिन हम सिखलाएँ क्या ? इसके लिए हमारे यहां शब्द है विद्या। विद्या को शिक्षा के माध्यम से प्रेषणीय करते हैं। विद्या वह ज्ञातव्य विषय है जो हम आप तक पहुँचाना चाहते हैं, हमारे यहाँ मनीषियों ने इस विद्या को अर्थकारी और परमार्थकारी दो भागों में बांटा है। अर्थकारी वह विद्या है जो समाज में आपको उपयोगी बनाती है, जो आपको जीवन की आजीविका की सुविधाएँ देती है और परमार्थकारी विद्या वह विद्या है जिससे आप समष्टि से जुड़ते हैं। उसमें मानवीय मूल्य है, जिससे आपका हृदय बनता है; आपकी बुद्धि बनती है, आप उदार बनते हैं, स्नेहशील बनते हैं, सद्भाव एवं सम्पन्नता से पूर्ण मानव बनते हैं, जिससे आपकी बुद्धि और हृदय का परिष्कार होता है।

संक्षेपण

शीर्षक—विद्या के दो रूप

शिक्षा विद्या सिखाने का माध्यम है। विद्या को सीखने वाले के पास पहुँचाई जाती है। विद्या के दो भाग हैं—अर्थकारी और परमार्थकारी विद्या। अर्थकारी विद्या मनुष्य को आजीविका की सुविधाएं देकर उसे समाजोपयोगी बनाती है और परमार्थकारी विद्या बुद्धि और हृदय का परिष्कार करती है।

(7)

मौनरूपी व्याख्यान की महत्ता इतनी बनावटी और प्रभावशाली होती है कि उसके सामने क्या मातृभाषा, क्या साहित्य भाषा और क्या अन्य देशों की भाषा

सबकी सब तुच्छ प्रतीत होती है। अन्य कोई भाषा दिव्य नहीं, केवल आचार की मौन भाषा ईश्वरीय है। विचार करके देखो, मौन व्याख्यान किस तरह आपके हृदय की नाड़ी में सुन्दरता पिरो देता है। वह व्याख्यान ही क्या, जिसने हृदय की धुन को, मन के लक्ष्य को ही न बदल दिया। चन्द्रमा की मंद हँसी का, तारागण के कटाक्षपूर्ण प्राकृतिक मौन व्याख्यान का प्रभाव किसी कवि के दिल में घुसकर देखो। सूर्यास्त के पश्चात् श्री केशवचन्द्र सेन और महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने सारी रात एक क्षण की तरह गुजार दी, यह तो रात की बात है। कमल और नर्गिस में नयन देखने वाले नेत्रों से पूछो कि मौन व्याख्यान की प्रभुता कितनी दिव्य है।

संक्षेपण

शीर्षक—मौन व्याख्यान

किसी भी भाषा के व्याख्यान की तुलना में आभार की मौन भाषा का दिव्य प्रभाव सर्वाधिक प्रभाव डालता हैं। वह मन का लक्ष्य बदल सकता है। प्रकृति वस्तुओं की मौन भाषा का कवियों पर पड़ा प्रभाव इसका प्रमाण है। अपनी मौन भाषा में भी प्रकृति आकर्षक लगा करती है।

(8)

भारत के अधिकांश रहने वालों की एक खास आदत है कि पेट का थोड़ा-सा इन्तजाम हो जाने पर वे फिर आमदनी बढ़ाने की कोशिश नहीं करते। उनका जीवन बहुत ही सरल और सादा होता है। वे अपने कष्टों को बहुत कुछ सह लेते हैं। इन सब बातों की वजह से उनके रहन-सहन का दर्जा भी बहुत नीचा होता है। वे आधा पेट खाकर दिन बिताते हैं। आप पूछ सकते हैं कि क्या भारत में भोजन की कमी है? यह एक ऐसा सवाल है जिसके ऊपर भिन्न-भिन्न लोगों के विचार एक से नहीं हैं, कुछ सज्जन कहते हैं कि पिछले सालों में जिस दर से भारत की जनसंख्या बढ़ी है, उस दर से खाने की वस्तुओं में वृद्धि नहीं हुई है। माल्थस नामक अर्थशास्त्री का कथन है कि जनसंख्या भोजन की चीजों से कहीं अधिक तेजी से बढ़ती है। उनके विचारों पर बहुत कुछ कहा जा चुका है जिस पर भी ये विचार अभी तक आदर की दृष्टि से देखे जाते है। यह स्पष्ट है कि भारत में जनसंख्या वृद्धि हुई है और जनसंख्या के भाग को एक वक्त भी पेट भर भोजन नहीं मिलता।

संक्षेपण

शीर्षक—जनसंख्या और जीवन-स्तर

भारतीय इतने संतोषी होते हैं कि जीवन-निर्वाह की थोड़ी व्यवस्था होने पर आमदनी बढ़ाने के प्रयत्न नहीं करते और रहन-सहन का नीचा-स्तर अपनाये

रहते हैं। भारत में अन्नोत्पादन जनसंख्या के देखे कम है या नहीं, यह विवादास्पद है। एक मान्यता यह है कि जनसंख्या वृद्धि अन्नोत्पादन की तुलना में तेजी से होने से भारतीयों को एक समय भी पेट भर पाना मुश्किल होता है।

(9)

ईश्वर भी सानुकूल उन्हीं का होता है जो अपनी सहायता अपने आप कर सकते हैं। अपने आप अपनी सहायता करने की वासना आदमी में सच्ची तरक्की की बुनियाद है। अपने सुप्रसिद्ध पुरुषों की जीवनी इसका उदाहरण तो है ही, वरन् प्रत्येक जाति के लोगों के बल और ओज तथा गौरव और महत्त्व के आने का आत्म-निर्भरता सच्चा द्वार है, बहुधा देखने में आता हैं कि किसी काम के करने में बाहरी सहायता इतना लाभ नहीं पहुँचा सकती, जितनी आत्म-निर्भरता। समाज के बन्धनों में भी देखिये तो बहुत तरह के संशोधन सरकारी कानूनों के द्वारा वैसे नहीं हो सकते जैसे समाज के एक-एक मनुष्य का अपना संशोधन अपने आप अलग-अलग करने से हो सकते हैं। बड़े-से बड़े आलसी व्यक्ति को समाज परिश्रमी, अपव्ययी या फिजूल खर्च को किफायत सार या परिमित-व्ययशील, शराबी को परहेजगार, क्रोधी को शान्त या सहनशील, सूम को उदार, लोभी को संतोषी, मूर्ख को विद्वान्, दप्रनिध को नम्र, दुराचारी को सदाचारी, कदर्प को उन्नतमना, दरिद्र भिखारी को आढ्य, भीरु (डरपोक) को वीर धुरीण, झूठे गपोड़िये को सच्चा, चोर को साहूकार, व्यभिचारी को एक पत्नीधारी इत्यादि नहीं बना सकता किन्तु ये बातें हम अपने ही प्रयत्न और चेष्टा से अपने में ला सकते हैं।

संक्षेपण

शीर्षक—**आत्म-निर्भरता।**

जो लोग प्रयत्न करते हैं उन्हीं की ईश्वर सहायता करता है और प्रयत्नशील ही उन्नति करता है। आत्म-निर्भरता से अनेक गुण आते हैं, न कि बाहरी सहायता से। कानून समाज में वैसे सुधार नहीं ला सकते जैसे कि एक-एक मनुष्य द्वारा खुद सुधार करने से सुधार होते हैं। अपने प्रयत्न से व्यक्ति अपने दुर्गुण दूर कर अपना सुधार और अपनी उन्नति कर सकता है।

(10)

जैसे एक ही प्रकार का पदार्थ खाते रहने से दुःख का अनुभव होता है, उसी तरह एक ही भोग बहुत दिनों तक भोगते रहने से उसका आनन्द नष्ट हो जाता है। अतः भोगों की विविधता की ओर वह दौड़ने लगता है। परन्तु एक दिन यह विविधता भी उसके दुःख का कारण बन जाती है, तब क्रोध की उत्पत्ति स्वाभाविक है। कामनाओं की अपूर्ति क्रोध का कारण है। फिर यह कामना भोजन की हो, वस्त्र की हो, धन की हो, स्त्री की हो, किंवा कुर्सियों की हो। चुनावों के समय भगके,

मनमुटाव, हाथापाई और हत्याएँ कामनाओं की पूर्ति के अभाव में ही होते हैं। जो उसके भोगों में बाधक होता है, उसी पर पागल होकर वह आक्रमण करने लगता है। एक ही भाग के लिए यदि दो व्यक्ति हुए तो फिर खीसें निकाल कर श्वानवत् जूझने लगते हैं। स्वार्थ-कामना अथवा इच्छाओं का पूरा न होना ही क्रोध को जन्म देता है। इतिहासों में वर्णित युद्ध, रक्तपात, अत्याचार आदि की पृष्ठभूमि क्रोध है और भोगों के प्राप्त करने के बीच विघ्न करने वाला उसका शत्रु बनता है, जिसे वह नष्ट कर देना चाहता है।

संक्षेपण

शीर्षक—**भोग और दुष्परिणाम।**

एक प्रकार के भोग भोगने से आनन्द की प्राप्ति होनी बन्द हो जाती है। मनुष्य और तरह के भोग भोगने की इच्छा करता है जिनसे आगे दुःख मिलता है और क्रोध उत्पन्न होता है। झगड़े भी कामनाओं की पूर्ति न होने से होते हैं। क्रोध युद्धों का भी कारण है। जो भी भोगों के दौरान विघ्न सिद्ध होता है उसे ही नष्ट करने के लिए क्रोध उत्पन्न होता है।

(11)

गौतम बुद्ध ने जिस नये धर्म या मत का प्रवर्तन किया, उसका प्रचार बहुत अधिक हुआ। न केवल भारत में अपितु भारत से बाहर चीन, जापान, मध्य एशिया और दक्षिणी एशिया के द्वीपों में भी बौद्ध धर्म लोगों का सबसे प्रमुख धर्म बन गया। आज भी इन देशों में बौद्ध धर्म का अस्तित्व है, भारत में यह ऐसा लुप्त हो गया है, मानो यहां कभी बौद्ध धर्म द्रचलित ही नहीं रहा। इसका कारण यह है कि भारत में तत्व दर्शियों का अभाव कभी नहीं रहा। जिस समय बुद्ध ने अपने 'अहिंसा परमोधर्मः' तथा चार आर्य सत्यों का प्रचार किया था, उस समय परिस्थितियां उनके अनुकूल थीं। कर्म काण्डो यज्ञों में हिंसा अपनी चरम सीमा को लांघ चुकी थी। लोग उससे ऊब चुके थे। इसलिए बुद्ध की अहिंसा और प्रेम की वाणी लोगों को बहुत प्रिय और शान्तिदायक प्रतीत हुई। फिर अशोक जैसे महान् सम्राट् का आश्रय मिल जाने के कारण भी बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन मिला। परन्तु यह स्थिति भारत में बहुत देर तक नहीं रह सकी। बौद्ध धर्म में अनेक बुराइयां घुस आयीं। इसके प्रतिक्रिया स्वरूप कर्म काण्डी ब्राह्मणों को फिर सिर उठाने का अवसर मिला।

संक्षेपण

शीर्षक—**बौद्ध धर्म का उत्थान-पतन।**

बुद्ध द्वारा प्रवर्तित बौद्ध धर्म भारत के अलावा चीन, जापान, मध्य एशिया और दक्षिणी एशिया के द्वीपों में भी फैला। यह अब भारत में नहीं रहा। भारत में

इसके आविर्भाव के समय अनुकूल परिस्थितियां थीं। कर्म काण्डी हिंसा चरम सीमा पर थी। बाद में अशोक ने इस धर्म को प्रोत्साहन दिया। फिर बौद्ध धर्म में बुराइयां आ गयीं फलतः कर्मकाण्डी ब्राह्मणों ने सिर उठा लिया।

(12)

सेवा में,
सम्पादक,
'साप्ताहिक हिन्दुस्तान'
नई दिल्ली।

'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' 18 मार्च श्रीमन्नारायण का लेख 'भारत का आधुनिकीकरण और भारत का बुद्धिजीवी।' प्रस्तुत लेख में भारत की तथाकथित आधुनिकता के सम्बन्ध में गम्भीरता से विचार किया गया है। वस्तुतः यह सत्य है कि वर्तमान में भारत का बुद्धिजीवी अपनी प्राचीन परम्पराओं के समक्ष एक प्रश्न चिन्ह बन गया है। स्वतंत्र चिन्तन की प्रवृत्ति आज के बुद्धिजीवी में अत्यल्प रह गई है। संभवतः आज का बुद्धिजीवी यूरोप की नकल करने को ही आधुनिकता समझता है। मेरे विचार से अपनी प्राचीन परम्पराओं को सर्वथा त्याग कर हम आधुनिकता की प्रथम पंक्ति में भले ही आ जायें, किन्तु इससे भारत का दम घुट जायेगा अतः आवश्यकता यह है कि हम अपनी परम्पराओं का आधुनिक समय के परिप्रेक्ष्य में अवलोकन करें एवं भारत को जीवित बनाये रखें।

भवदीय

सुधीर गुप्त

संक्षेपण

शीर्षक—**आधुनिकता एवं परम्परा में समन्वय।**

'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के सम्पादक को भेजे गये श्रीमन्नारायण के लेख में भारत की आधुनिकता पर विचार हुआ है। अब भारत का बुद्धिजीवी अपनी प्राचीन परम्पराओं पर चिन्तन कम करता है और वह यूरोप की नकल करने में आधुनिकता मानता है। यह अहितकर है। आवश्यकता परम्पराओं को आज के परिप्रेक्ष्य में देखने की है।

(13)

समूचे एशिया में भारत एक अकेला देश है जहां लोकतन्त्र की जड़े बहुत अन्दर हैं और इस हद तक अन्दर है कि भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी को भी यह स्वीकार करना पड़ा कि वह लोकतन्त्रीय उपायों के जरिये शासन में परिवर्तन करने की कोशिश करेगी। भारतीय लोकतन्त्र की इससे बड़ी सफलता और क्या हो

सकती थी कि उसने स्वयं साम्यवाद में एक अन्तर्विरोध पैदा कर दिया। जो लोग देश में समय-समय पर होने वाली अप्रिय घटनाओं को ही देखकर यह मान लेते हैं कि भारत लोकतन्त्र के उपयुक्त नहीं या हमारा लोकतन्त्र बहुत कमजोर है वे न केवल निराशावादी है बल्कि इस देश की उस अशिक्षित किन्तु महाप्राण जनता से भी पूरी तरह अपरिचित हैं, जो किताबी अर्थ में लोकतंत्र का अर्थ भले ही न समझती हो, लेकिन जिसने अन्दर ही अन्दर यह समझ लिया है कि उसकी नियति का निर्माता और कोई नहीं है, वह स्वयं है।

संक्षेपण

शीर्षक—**भारतीय लोकतन्त्र की सफलता**।

एशिया में भारत में ही लोकतंत्र ज्यादा मजबूत है तभी तो भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने लोकतन्त्रीय उपायों से ही शासन में परिवर्तन लाए जाने की बात स्वीकारी है। भारत में लोकतंत्र को कमजोर मानने वाले निराशावादी हैं तथा देश की जनता की इस विशेषता से अनवगत हैं जो लोकतन्त्र को महत्व देती है।

(14)

हमारे जैसे देश में, जो हाल-हाल तक गुलाम बना रहा, नागरिक स्वतंत्रता का मूल्य समझना जरा कठिन है। अभी हमारे देश की जनता का ध्यान रोटी, कपड़ा मकान और रोजगार की ओर गया है। प्रायः लोग यह कहते हुए सुनाई देते हैं कि हमें इससे मतलब नहीं कि इस देश में किसका शासन है, जनतंत्र है या तानाशाही, हमें तो रोटी चाहिए, कपड़ा चाहिए, मकान चाहिए, रोजगार चाहिए, दवा चाहिए, इन आवश्यकताओं को कोई भी पूरा कर दे। जनता की यह मानसिक स्थिति ठीक नहीं। यदि जनता की सूझ-बूझ ऐसी ही रही तो फिर वह स्वतन्त्रता जो असीम बलिदान देकर प्राप्त की गई है मिट जायेगी। हम अपने हाथों से इसकी हत्या कर देंगे। भय इस बात का है कि यह मनोवृत्ति ऐसी परम्परा या प्रथा कायम कर देगी जिसमें सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक शक्ति गिने-चुने हाथों में सिमटकर रह जायेगी और बाकी लोग गुलाम बन जायेंगे। जनता को समझना चाहिए कि नागरिक स्वतन्त्रता का प्रश्न उतना ही जरूरी है, बल्कि उससे भी अधिक, जितना रोटी, रोजी और कपड़े इत्यादि का प्रश्न। जब तक यह बात लोगों को समझायी नहीं जाती तब तक हमारी मानसिक दासता ज्यों की त्यों बनी रहेगी, क्योंकि स्वतन्त्रता के लिए, चाहे वह वैयक्तिक हो या सामूहिक, किसी भी सरकार से उतना भय नहीं जितना स्वयं जनता से है; क्योंकि जनतन्त्र में अन्तिम उत्तरदायित्व जनता का होता है। कहीं ऐसा न हो कि अपने हाथों और पैरों में गुलामी की कड़ियां और बेड़ियां फिर से पहन लेने के बाद हम यह अनुभव करें कि नागरिक स्वतंत्रता क्या चीज है, यह कितना महत्त्व और मूल्य रखती है।

संक्षेपण

शीर्षक—नागरिक स्वतंत्रता का महत्त्व

हमारे देश में स्वतन्त्रता के बाद लोग रोटी, कपड़ा, मकान के बारे में ही सोचते हैं। उन्हें इससे मतलब नहीं कि यहां जनतंत्र रहे या तानाशाही। यह प्रवृत्ति स्वतंत्रता के लिए घातक है। वस्तुतः नागरिक स्वतन्त्रता रोटी कपड़ा से अधिक महत्त्व की है। स्वतंत्रता के लिए जनता ही भयाप्रद हुआ करती है।

(15)

राष्ट्र भाषा की आवश्यकता राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से भी है। अपने को एक ही राष्ट्र का निवासी मानने वाले दो व्यक्ति किसी विदेशी भाषा में बातें करें, यह हास्यास्पद असंगति है। यह इस बात का द्योतक भी है कि उस देश में कोई समुन्नत भाषा नहीं है। दूसरे के सामने हाथ पसारना समृद्धि का नहीं, दरिद्रता का चिह्न है। दूसरे की भाषा से काम चलना भी बहुत कुछ वैसा ही है। जिसकी अपनी भाषा है वह दूसरे की भाषा क्यों उधार ले ? इससे राष्ट्रीय सम्मान में बट्टा लगता है। विदेशों में जाने पर कभी-कभी इस बात का बड़ा कड़ा अनुभव होता है कि अपने को भारतीय कहने वाले दो व्यक्ति अपने देश की किसी भाषा में बात न कर, अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा में बात करते हैं और इसे देखकर वहां के निवासी आश्चर्य के साथ पूछ बैठते हैं कि क्या आपकी अपनी कोई भाषा नहीं है ? इस प्रश्न का क्या उत्तर दिया जाए ? भाषाएँ तो इस देश में एक-दो नहीं चौदह हैं—एक-से-एक समृद्ध, एक-से-एक सुन्दर, पर चौदह में एक भी भाषा अपनी इस कोटि तक नहीं पहुँच सकी जो सामान्य संचार का माध्यम बन सके। वैसे भाषा के अभाव से पराधीनता की याद ताजी बनी रहती है, दूसरे देशवासियों के समक्ष हीन-भावना रहती है और भारत की साहित्यिक और भाषिक समृद्धि पर सन्देह का अवसर मिलता है।

संक्षेपण

शीर्षक—राष्ट्र भाषा की आवश्यकता

देश में राष्ट्रभाषा की आवश्यकता कई दृष्टियों से है। विदेशी भाषा में बात करना राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से उचित नहीं है। अंग्रेजी में बातें करने वालों से विदेशों में पूछ भी लिया जाता है कि क्या आपकी कोई अपनी भाषा नहीं है ? देश की चौदह भाषाओं में से एक भी सामान्य संचार का माध्यम बनने लायक नहीं हो पाई। अपनी भाषा के अभाव से कई प्रकार के सन्देह उत्पन्न होते हैं।

(16)

नारी और पुरुष दोनों का सम्बन्ध सनातन है। आदिकाल से लेकर आज तक साहित्य में नारी का वर्णन किसी न किसी रूप में होता रहा है। नारी पुरुष

की आवश्यकता है और पुरुष नारी की। प्राचीन काल से आज तक नारी जाति के इतिहास ने अनेक मोड़ लिए है, कोई समय था जबकि नारी को देवी के समान पवित्र माना जाता था और उसी आधार पर "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' जैसी उक्ति समाज में पर्याप्त चर्चित रही है। भारत वह देश है, जहां नारी प्राचीन काल में सम्मान की दृष्टि से देखी जाती थी, किन्तु अब वह समस्या बनी हुई है। भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में नारी-समाज प्रगति के पथ पर है, किन्तु भारत में नारी के लिए प्रगति का दरवाजा खुला रहने पर भी बन्द-सा ही है। इसके दो कारण हैं—एक तो यह कि भारत की नारी अभी पूर्ण शिक्षित नहीं है और दूसरे नारी का आदर्श भारत में अन्य देशों की अपेक्षा भिन्न है। पिछले कुछ वर्षों से नारी जीवन को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए कुछ क्रांतिकारी कदम उठाये गये हैं। परिणामस्वरूप पुरुष और नारी के सम्बन्धों पर नये सिरे से विचार हुआ है। अधिकार और कर्त्तव्य दोनों उसके सामने प्रस्तुत किये जा रहे हैं। समाज की इस गतिविधि से समाज कभी भी अपरिचित नहीं रहा है। प्राचीन-काल से लेकर अब तक नारी की सामाजिक स्थिति तत्कालीन साहित्य-से स्पष्ट होती रही है। समाज में जो भी बनता-बिगड़ता है, उसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सम्बन्ध किसी न किसी रूप में साहित्य में रहता ही है।

संक्षेपण

शीर्षक—नारी-सम्मान में उतार-चढ़ाव

प्राचीनकाल से नारी का वर्णन होता आया है। नारी जाति का इतिहास बदलता रहा है। कभी वह देवी के समान मान्य थी। भारत में प्राचीन काल में उसे सम्मान प्राप्त था, आज वह समस्या बनी हुई है। पूर्ण शिक्षा के अभाव आदि के कारण भारत में नारी की प्रगति अवरूद्ध है। अब नये सिरे से उसके अधिकार और कर्त्तव्य पर विचार किया जा रहा है।

(17)

जीवन तो जीवन है, चाहे राजा का हो चाहे रंक का। उसके सुख और दुःख दो पक्ष होंगे ही। इनमें से कोई पक्ष स्थिर नहीं रह सकता। संसार और स्थिरता ? अतीत के लम्बे-चौड़े मैदान के बीच इन उभय पक्षों की घोर विषमता सामने रखकर कोई भावुक जिस भाव-धारा में डूबता है उसी में औरों को डुबाने के लिए शब्द-स्रोत भी बहाता है। इस पुनीत भावधारा में अवगाहन करने से वर्तमान की अपने पराए की-लगी लिपटी मैल छंटती है और हृदय स्वच्छ होता है। ऐतिहासिक व्यक्तियों या राजकुलों के जीवन की जिन विषमताओं की ओर सबसे अधिक ध्यान जाता है वे प्रायः दो ढंग की होती हैं—सुख-दुःख सम्बन्धी तथा उत्थान-पतन सम्बन्धी। सुख-दुःख की विषमता की ओर जिसकी भावना

प्रवृत्त होगी वह एक ओर तो जीवन का भोग पक्ष, यौवन मद, विलास की प्रभूत सामग्री, कला सौंदर्य की जगमगाहट, राग-रंग और आमोद-प्रमोद की चहल-पहल और दूसरी ओर अवसाद, नैराश्य, कष्ट, वेदना इत्यादि के दृश्य मन में लाएगा। बड़े-बड़े प्रतापी सम्राटों के जीवन को लेकर भी वह ऐसा ही करेगा। उनके तेज, प्रताप, पराक्रम इत्यादि की भावना वह इतिहास विज्ञ पाठक की सहृदयता पर छोड़ देगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि सुख और दुःख के बीच का वैषम्य जैसा मार्मिक होता है वैसा ही उन्नति और अवनति, प्रताप और ह्रास के बीच का भी। इस वैषम्य प्रदर्शन के लिए एक ओर तो किसी के पतनकाल के असामर्थ्य, दीनता, विवशता, उदासीनता इत्यादि के रूप सामने रखे जाते हैं, दूसरी ओर उसके ऐश्वर्य काल के प्रताप, तेज, पराक्रम इत्यादि के वृत्त स्मरण किये जाते हैं।

संक्षेपण

शीर्षक–जीवन के दो पक्ष—

जीवन में सुख और दु;ख ये दो पक्ष होते हैं जो स्थिर रहने वाले नहीं हैं। भावुक व्यक्ति इनका वर्णन करता है जिससे पाठक का हृदय स्वच्छ होता है। ऐतिहासिक व्यक्तियों के सुख-दुःख तथा उत्थान-पतन का वर्णन किया गया है। सुख और दुःख में वैषम्य रहता है तो उन्नति-अवनति में भी वह देखने को मिलता है। इस वैषम्य के प्रदर्शन हेतु दीनता, विवशता का चित्रण होता है और दूसरी ओर तेज, पराक्रम इत्यादि का।

(18)

"मां, मैं भी राखी बाँधूँगी।"

श्रावण की धूमधाम है। नगरवासी स्त्री-पुरुष बड़े आनन्द तथा उत्साह से श्रावणी का उत्सव मना रहे हैं। बहनें भाइयों के और ब्राह्मण अपने यजमानों के राखियां बांध-बांध कर चाँदी कर रहे हैं। ऐसे ही समय एक छोटे से घर में एक दस वर्ष की बालिका ने अपनी माता से कहा—"मां, मैं राखी बाँधूँगी।"

उत्तर में मां ने एक ठंडी सांस भरी और कहा "किसके बांधेगी बेटी? आज तेरा भाई होता तो····" माता आगे कुछ न कह सकी। उसका गला रूँध गया और नेत्र अश्रुपूर्ण हो गये।

अबोध बालिका ने इठलाकर कहा-"तो क्या भइया के ही राखी बांधी जाती है और किसी के नहीं? भइया नहीं है तो अम्मा, मैं तुम्हारे ही राखी बांधूंगी।" इस दुःख के समय भी पुत्री की बात सुनकर माता मुस्कराने लगी और बोली—"अरी तू इतनी बड़ी हो गयी-भला कहीं मां के भी राखी बांधी जाती है।"

बालिका ने कहा—"वाह, जो पैसा दे, उसी के राखी बांधी जाती है।

माता—"अरी कंगली ! पैसे पर नहीं-भाई ही के राखी बांधी जाती है।"
बालिका उदास हो गयी।

माता घर का काम करने लग गई। घर का काम समाप्त करके पुत्री से बोली–"आ तुझे नहला दूँ।"

बालिका मुख गम्भीर करके बोला—"मैं नहीं नहाऊँगी।" माता–क्यों, नहायेगी क्यों नहीं ?"

बालिका—"मुझे क्या किसी के राखी बांधनी है ?"

माता–"अरी राखी नहीं बांधनी है तो क्या नहायेगी भी नहीं ? आज त्यौहार का दिन है, चल उठ नहा।"

बालिका–"राखी नहीं बाँधूँगी तो त्यौहार काहे का ?"

माता–(कुछ क्रुद्ध होकर) "अरी कुछ सिड़न हो गयी है ? राखी-राखी रट लगा रक्खी है। बड़ी राखी बांधने वाली बनी है। ऐसी ही होती तो आज यह दिन देखना पड़ता। पैंदा होते ही बाप को खा बैठी। ढाई बरस की होते-होते भाई से घर छुड़ा दिया। तेरे ही कार्यों से सब नाश हो गया ?"

बालिका बड़ी अप्रतिम हुई और आंखों में आंसू भरे हुए चुपचाप नहाने को उठ खड़ी हुई।

संक्षेपण

शीर्षक–**बालिका और राखी का त्यौहार**—

बहिनों और ब्राह्मणों को राखी बांधते हुए देखकर श्रावण के उत्सव पर दस वर्षीय बालिका ने मां से जिद की कि मैं भी राखी बांधूंगी। उसके कोई भाई न था इसलिए वह मां के ही राखी बांधना चाहती थी। वह रुपये पाने के लिए राखी बांधना चाहती थी। मां ने उसे स्नान कर लेने के लिए कहा तो उसने ऐसा करने से यह कहकर मना कर दिया कि जब राखी ही नहीं बांधनी तो क्यों नहाऊँ ? मां ने कहा तू पहले ही पिता और भाई को खा चुकी है। बालिका चुपचाप नहाने के लिए उठ गई।

(19)

इसीलिए जब विज्ञान ने धर्मशास्त्रों में दी गयी सृष्टि-कल्पना और मानव-जीवन की व्याख्याओं पर आंख मूंद कर विश्वास करने से इन्कार किया और खुद जांचकर सत्य को उपलब्ध करने का आग्रह किया तो धर्म को लगा कि उसके मूल पर कुठाराघात है। धर्म की ओर से जो तीव्र प्रतिवाद उठा उसमें धर्म ने बार-बार बुद्धि की सीमाओं की ओर संकेत किया और भौतिकता को ईश्वर विरोधी करार

दिया। वास्तव में विज्ञान इस प्रयास में लगा हुआ था कि वह यह सिद्ध कर सके कि भौतिक जगत ईश्वर के संकल्प का परिणाम नहीं है और न वह किसी पारलौकिक सत्ता की इच्छा से नियंत्रित है, वरन् उसके अपने यांत्रिक नियम है और उसके अनुसार वह बिना ईश्वर के चल सकता है और यह एक ऐसा आग्रह था जिसने मध्ययुगीन भावभूमि को मूलतः बहिष्कृत कर दिया। सृष्टि अपने नियमों से चलती है, इस सन्तुष्टि पर प्राणियों का विकास अपने नियम से होता है मनुष्य उसी विकास की परम्परा में है नैतिक मूल्यों का कोई निश्चित पारलौकिक स्रोत नहीं, वे मूल्य मनुष्य ने ही अपने विकास के दौरान में अपनी सुविधा के लिए आविष्कृत किये हैं। उनका कोई स्थायी मानदण्ड नहीं।

विज्ञान बुद्धि साधन से विजय को सम्पन्न कर सका था। अतः उसने विश्वास के बजाय परीक्षण, श्रद्धा की जगह तर्क, आस्था की जगह विश्लेषण कर बल दिया और उसकी निश्चित परिणति यह हुई कि मानव-नियति के विषय में हमारी मध्ययुगीन धारणा बिल्कुल बदल गयी। जैसे, ब्रह्माण्ड कल्पना और भौतिक जगत में से पारलौकिकता को बहिष्कृत कर दिया गया था और उससे भौतिक यांत्रिक नियम खोज निकाले गये थे वैसे ही मानव-नियति के साक्षात्कार के लिए जैविक और ऐतिहासिक विकास के यांत्रिक नियमों की खोज होने लगी जो केवल अनुमानात्मक न हों, वैज्ञानिक हों, परीक्षण और प्रयोग से सिद्ध हों।

संक्षेपण

शीर्षक—**धर्मशास्त्रीय मान्यताओं का खण्डन**—

विज्ञान ने मानव जीवन सम्बन्धी धर्मशास्त्रीय मान्यताओं का विरोध किया और सत्य को जानने का प्रयत्न किया तो धर्म ने भौतिकता को ईश्वर विरोधी बताया। विज्ञान ने बताना चाहा था कि भौतिक जगत् के यांत्रिक नियम हैं उसके लिए ईश्वर की जरूरत नहीं और नैतिक नियम मनुष्य ने बनाये हैं। उसने ब्रह्माण्ड और भौतिक जगत् से पारलौकिकता को पृथक् कर दिया। उसने जैविक विकास के ऐसे नियम खोजने शुरु किये जिनको प्रमाणित किया जा सके।

(20)

समस्या में बड़ी शक्ति होती है। वह व्यक्ति की भांति जीवन को भी निखार देती है। क्रियाशीलता का पर्याय बनकर आने वाली समस्या ही जीवन के कितने ही बन्द दरवाजों को खोलने की हिम्मत और शक्ति प्रदान करती है। गतिशीलता, हिम्मत और शक्ति से विरहित होकर साहित्य के प्राणों में स्वस्थ-संचार नहीं होता है। इस बिन्दु से समस्या, दीवार या अवरोधक तत्व ही कवि की संवेदना को जगाकर उसके कर्त्तव्य को निखार दे देते हैं। समस्या पहली स्थिति में रुकावट

बनकर आती है; दूसरी में वह रिएक्शनरी है और तीसरी में कुंठित मनः स्थिति को जन्म देती है। 'रुकावट' बाधा है जिससे मुक्ति पाने के लिए प्रतिक्रिया जरूरी है और उसकी असफलता पर शाम का धुंधलका (उदासी) घिरता आता है और तब कहीं इस घेराव से बच निकलने के लिए सूर्योदय होता है—मन की मुंडेर पर आस्था का सूर्य उतरकर अपनी किरणों से समाधान कर देता है। साहित्य में यह रुकावट आज भी है और पहले भी हमेशा रही है। इसी से अब वह गतिमान है और तब भी गतिमान था। नये साहित्य में यह अवरोध जीवन-व्यापी स्तर पर अंकित है। पारिवेशगत जटिलता और संत्रास से थके हुए कवियों के मन पर आस्था की लकीर खींचकर उसे सृजन-क्षण तक ले जाना भी इसी का काम है।

संक्षेपण

शीर्षक—समस्या की शक्ति—

समस्या हिम्मत और शक्ति प्रदान कर जीवन के उत्थान में सहायक होती हैं। हिम्मत और शक्ति के बिना साहित्य भी प्राणवान नहीं होता। समस्या कवि में संवेदना जगाकर उसका कर्त्तव्य उत्कृष्ट बनाती है। समस्या के तीन पहलू हैं—रुकावट, रिएक्शन, एवं कुंठित मनः स्थिति। साहित्य में रुकावट आने पर ही प्रतिक्रिया और आस्था झलकती है। रुकावट से ही साहित्य गतिमान है। नये साहित्य में रुकावट पूरे जीवन में व्याप्त है। वही कवि में आस्था को जन्म देकर उस सृजन में लगाती है।

पत्र-लेखन

प्रश्न 1. अपने बड़े भाई साहब को एक पत्र लिखिये और उसमें अपने अध्ययन की कतिपय बाधाओं का चित्रण कीजिये।

उत्तर—

1/1304 अभिषेक
जवाहरनगर
आगरा
10 सितम्बर, 1988

आदरणीय भाईसाहब,

सादर प्रणाम्।

मुझे कल आपका पत्र प्राप्त हुआ था। पत्र से घरवालों की कुशलता ज्ञात हुई और मन को सन्तोष का अनुभव हुआ। आपने अपने पत्र में मेरे अध्ययन के बारे में लिखा है। यों तो मैं नियमित रूप से कॉलेज जाता हूँ और घर पर भी नियमित रूप से अध्ययन करता हूँ फिर भी मुझे अपने अध्ययन से अभी सन्तोष

नहीं है। कारण यह है कि हमारे कॉलेज में एक विषय के प्राध्यापक की अभी तक नियुक्ति नहीं हुई है जिससे हमारा एकाउण्टेन्सी का पीरियड खाली रह जाता है। यह प्रैक्टिकल विषय है और इसका प्राध्यापक से पढ़ा जाना जरूरी-सा है। घर पर मैं अपने आप भी इस विषय में परिश्रम तो करता हूं पर विषय की कठिनाई बनी ही रहती है। यदि इस विषय की अच्छी तैयारी नहीं हुई तो वार्षिक परीक्षा में इस विषय में अंक कम आयेंगे जिसका मेरी डिवीजन पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

दूसरे, मेरे पास अभी कुछ किताबों का अभाव है। इस अभाव का कारण यह है कि अब पुस्तकों की कीमत काफी ऊँची है और मेरे पास जितने रुपये थे उनसे सभी पुस्तकें खरीदी नहीं जा सकी हैं। मेरे पास सभी पुस्तकें न होने के कारण मैं उन पुस्तकों का घर पर अध्ययन नहीं कर पाता। बड़ी कक्षाओं में घर पर अध्ययन करना अत्यावश्यक होता है।

तीसरे, मेरी भोजन की उचित व्यवस्था न होने से भी मेरे अध्ययन कार्य में थोड़ी बाधा आती है। यहां कोई भोजन बनाने वाले की तो व्यवस्था है नहीं, वह मुझे ही बनाना पड़ता है। मैं जब शाम को खेलकर आता हूँ तो कई बार या तो आलस्यवश भोजन बनाता ही नहीं हूं या बहुत विलम्ब से बना पाता हूं। देर से खाना खाने पर रात को अध्ययन करते समय जल्दी नींद आने लगती है और बहुत कम समय ही अध्ययन हो पाता है।

ऐसी स्थिति में आप मेरी बाधाएं दूर करने में जो सहायता कर सकते हैं वह यह है कि कुछ रुपये शीघ्र भेज दीजिये ताकि मैं जरूरी पुस्तकें खरीद लूं।

घर पर पूज्य माताजी-पिताजी को चरण-स्पर्श तथा छोटे भाई-बहिनों को स्नेह।

आपका अनुज
रमाकान्त

प्रश्न 2. आप गांव छोड़कर शहर आये हैं। गांव और शहर के वातावरण का अन्तर प्रकट करते हुए एक पत्र गांव में रहने वाले अपने मित्र को लिखिये।

जयपुर
15 अगस्त, 1988

प्रिय मित्र सुधांशु,
नमस्ते।

काफी समय पहले तुम्हारा एक पत्र मुझे मिला था। कुछ दिन के लिए मैं जयपुर से बाहर चला गया था इस कारण जल्दी पत्रोत्तर नहीं दे सका। क्षमा-प्रार्थी हूँ। मैं कुशल हूँ, आशा है तुम सपरिवार कुशल होंगे।

तुमने अपने पत्र में गांव और शहर के वातावरण के अन्तर पर प्रकाश डालने के लिए लिखा था। भाई, यहां आकर मुझे तो ऐसा लगता है कि गांव और शहर के वातावरण में बड़ा भारी अन्तर है। सबसे पहला अन्तर तो यही है कि यहां गांवों की तुलना में बहुत अधिक भीड़ रहती है। शहर गांव से बहुत बड़ा है। यहां हर बाजार, हर मार्ग पर लोगों की भीड़ दिखाई देती है। मोटर गाड़ियों कारों, स्कूटरों, मिनी बसों, पैदल चलने वालों की भीड़ के कारण पैदल रास्ता चलना बड़ा मुश्किल होता है। यहां प्रायः एक्सीडेण्ट होते रहते हैं जिसके बारे में गांवों में कल्पना भी नहीं की जा सकती।

दूसरे, यहा जिन्दगी में बड़ी व्यस्तता है। हर आदमी समय के अभाव का सा अनुभव करता है। यहां गांवों की तरह लोगों के पास दूसरों से मिलने, उनके पास कुछ समय बैठने के लिए समय नहीं है। गांवों में तो हम लोग घण्टों बैठकर गप्प कर सकते थे, ताश खेल सकते थे परन्तु इतना फालतू समय यहां नहीं बचता। यहां समय की पाबन्दी का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

तीसरे, यहां लोगों की जिन्दगी में औपचारिकता, दिखावटीपन अधिक है। गांवों में यह स्थिति प्रायः नहीं पाई जाती। वहां तो सब सबके बारे में जानते हैं और उनमें आपस में औपचारिकता, दिखावा नहीं होता।

यहां के वातावरण में गांवों की सी शान्ति नहीं है। यहां वाहनों, कारखानों, लाउडस्पीकरों आदि के कारण बड़ा शोर शराबा रहता है। कभी-कभी लोग समूह में निकलकर प्रदर्शन करते देखे जाते हैं, वे अपनी मांगों को लेकर नारे लगाते हैं। गांवों में ऐसा नहीं होता। यहां तो रात को भी बहुत देर तक हल-चल रहती है। बहुत से लोग देर तक तरह-तरह के कामों में, आने-जाने में व्यस्त दिखाई देते हैं। गांव में लोग रात में थोड़ी-सी गप-शप के अलावा तो प्रायः विश्राम ही करते हैं। यहां कोई पढ़ता है, कोई किसी फैक्ट्री में खटपट करता रहता है। कुछ कारखानों में तो रात की पारियों में भी काम चलता रहता है। रेलवे स्टेशन पर तो रात भर गाड़ियों का, यात्रियों का आना-जाना लगा रहता है और वहां रात भर कुछ दुकानें खुली रहती हैं।

इस प्रकार शहर और गांव के वातावरण में बड़ा भारी अन्तर देखने को मिलता है।

घर पर माताजी पिताजी को प्रणाम कहना तथा अन्य सभी को यथायोग्य अभिवादन तथा स्नेह।

तुम्हारा
राजेश बाली

प्रश्न 3. अपने अस्वस्थ से रहने वाले मित्र को पत्र लिखकर उसे व्यायाम के बारे में बताइये।

उत्तर—

बी–5, संसारचन्द्र रोड़
दिल्ली
1 जनवरी, 1988

प्रियवर सत्य जीत,

नमस्ते।

तुम्हारा 20 दिसम्बर का लिखा हुआ पत्र प्राप्त हुआ। यों तो काफी समय बाद पत्र मिलने की खुशी हुई थी परन्तु उसमें तुम्हारे अस्वस्थ रहने के बारे में पढ़कर मन को खिन्नता हुई। भाई मैं तो अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखता हूँ और पूर्णतया स्वस्थ हूँ। मेरे स्वास्थ्य का बहुत बड़ा राज है व्यायाम। मैं यहां पत्र द्वारा तुम्हें व्यायाम के बारे में ही कुछ बातें बतलाना चाहता हूँ।

यों तो भोजन, विश्राम, शुद्ध वायु सेवन आदि का स्वास्थ्य की दृष्टि से अपना महत्व है परन्तु व्यायाम का महत्व भी किसी से कम नहीं है। ईश्वर ने हमें हाथ-पैर दिये हैं जो काम करने, परिश्रम करने के लिए हैं। मेरे भाई ध्यान देने की बात यह है कि परिश्रम और व्यायाम में अन्तर है। शारीरिक परिश्रम करने वाले व्यक्ति को भी अलग से व्यायाम की आवश्यकता होती है। बिना व्यायाम के कोई व्यक्ति पूर्णतया स्वस्थ नहीं रहता। जो व्यक्ति शारीरिक परिश्रम नहीं करते उनके लिए तो यह अत्यावश्यक है।

व्यायाम कई प्रकार से किया जा सकता है जैसे–खेल खेलकर, दण्ड बैठक करके, मुगदर घुमाकर, योग के आसन करके, टहल कर, पानी में तैरकर आदि। व्यायाम उम्र की, शारीरिक स्थिति को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। जो भी हो, तुम जब अस्वस्थ से रहते हो तब तुम्हें पहले टहलने का हल्का व्यायाम करना चाहिए। प्रातःकाल सूर्योदय से पहले शुद्ध हवा में कुछ तेज गति से टहलना बहुत ही लाभप्रद होता है। इससे शरीर की हलचल हो जाती है, रक्त का ठीक तरह संचार होता है और फेफड़ों को शुद्ध हवा, ऑक्सीजन मिलती है। व्यायाम से भूख लगती है, पेट ठीक रहता है, मन प्रसन्न रहता है, दिन में काम करने के लिए शक्ति मिलती है। व्यायाम से शरीर में रोगों को रोकने की क्षमता बढ़ती है।

आशा है तुम अब नियमित रूप से व्यायाम करने का नियम बनालोगे और अपने स्वास्थ्य को सुधारोगे। स्वास्थ्य का जीवन के विकास के लिए बड़ा महत्व। है बीमार और निर्बल व्यक्ति अधिक परिश्रम नहीं कर सकता और परिश्रम बिना

उन्नति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। स्वास्थ्य के बारे में कहा गया है, 'तन्दुरुस्ती हजार नियामत।'

आदरणीय माताजी-पिताजी को प्रणाम तथा छोटे भाई-बहिनों को स्नेह।

तुम्हारा
राजेशपुरी

प्रश्न 4. रामा बुक डिपो फूल चौक, अलीगढ़ से आत्माराम एण्ड सन्स चौड़ा रास्ता, जयपुर को कुछ पुस्तकें भेजने के लिए एक आदेश पत्र लिखिये।

उत्तर— रामा बुक डिपो
फूल चौक, अलीगढ़
27 जून 1988

पत्र सं. 698

सर्वश्री आत्माराम एण्ड सन्स,
चौड़ा रास्ता,
जयपुर।

प्रिय महोदय,

कृपया निम्नलिखित पुस्तकें सवारी गाड़ी द्वारा 15 जुलाई तक भेज दीजिये और बीजक के मूल्य में 12% काल्पनिक लाभ जोड़कर बीमा भी करा दीजिये—

1. प्रसाद कृत 'कामायनी'	—	25 प्रतियां
2. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' ले. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	—	15 प्रतियां
3. 'हिन्दी भाषा' : ले. भोलानाथ तिवारी	—	25 प्रतियां
4. निरालाकृत 'तुलसीदास'	—	40 प्रतियां

उपर्युक्त पुस्तकें शीघ्र भेजने की कृपा करें क्योंकि हमें उनकी सुपुर्दगी 25 जुलाई तक देनी है।

भवदीय
शंकरदयाल गुप्ता
वास्ते रामा बुक डिपो

प्रश्न 5. अध्यक्ष, बिरला शिक्षा संस्थान, पिलानी को हिन्दुस्तान टाइम्स में 3-5-88 को प्रकाशित प्राध्यापकों के विज्ञापन के सन्दर्भ में आवेदन-पत्र भेजिये।

उत्तर—

सेवामें,

अध्यक्ष महोदय,
बिरला शिक्षण संस्थान,
पिलानी।

मान्यवर,

'हिन्दुस्तान टाइम्स' में आपके शिक्षण संस्थान की ओर से प्राध्यापकों के लिए 3-5-88 को जो विज्ञापन प्रकाशित हुआ था उसके सन्दर्भ में मैं आपके संस्थान में हिन्दी प्राध्यापक पद के लिए अपना आवेदन-पत्र भेज रहा हूँ।

संलग्न सूची में मैंने अपनी शैक्षणिक तथा अन्य योग्यताएं प्रस्तुत कर दी है। मैं आपका ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि मेरी शैक्षणिक योग्यता प्रथम श्रेणी की है। हिन्दी के अलावा फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी भाषाओं में भी मेरी गति है। मैंने हिन्दी में एम. ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से किया है। सर्व विदित है कि उक्त विश्वविद्यालय का शिक्षा का स्तर बहुत ऊंचा है। मेरा अध्यापन का अनुभव भी काफी है। कविता और कहानी लिखने में मेरी रूचि है।

आवेदन-पत्र के साथ मैं कुछ प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपियां भेज रहा हूं।

मुझे विश्वास है कि आपके इस महान् शिक्षण संस्थान में कार्य करने का अवसर मिलेगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपनी सम्पूर्ण योग्यता से कार्य कर आपके संस्थान की प्रतिष्ठा बढ़ाने में सफल रहूँगा।

दि. 7-5-88

भवदीय

45 अ. सी-स्कीम

रमेश कौशिक

जयपुर-3

संलग्न :

1. योग्यता सूची
2. चार प्रमाण-पत्रों की सत्यापित प्रतिलिपियां।

प्रश्न 6. नागरिकों की ओर से अध्यक्ष, नगर परिषद् जयपुर को एक शिकायती-पत्र लिखिए जिसमें नगर के प्रमुख मार्गों पर फैली गन्दगी के बारे में प्रकाश डालते हुए शीघ्र सफाई करने का अनुरोध किया गया हो।

उत्तर--

सेवामें,
अध्यक्ष महोदय,
नगर परिषद्,
जयपुर।

विषय : नगर के प्रमुख मार्गों पर सफाई कराने हेतु।

मान्यवर,

पिछले कुछ दिनों से नगर के प्रमुख मार्गों पर गन्दगी इतनी बढ़ गई है कि शब्दों द्वारा उसका सही-सही चित्रण नहीं किया जा सकता। आस-पास के दुकानदारों को तथा सड़कों पर होकर निकलने वाले व्यक्तियों को अत्यधिक

परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस सम्बन्ध में यह पत्र लिखने से पूर्व भी सफाई कर्मचारियों से कई बार कहा जा चुका है परन्तु कोई ध्यान नहीं दिया गया। गन्दगी दिन पर दिन बढती जा रही है। अब तो उससे बीमारियां फैलने की भी पूरी-पूरी आशंका होने लगी है। पैदल चलने वाले व्यक्तियों का तो सड़कों के कुछ भागों से होकर निकलना असम्भव हो गया है।

आपसे अनुरोध है कि इस सम्बन्ध में सम्बन्धित अधिकारियों को समुचित आदेश देकर मार्गों की गन्दगी दूर कराने की शीघ्र उचित व्यवस्था कराने की कृपा करें।

धन्यवाद।

भवदीय

दिनांक 10 सितम्बर, 88 नागरिकजन

प्रश्न 7. समाचार पत्र के सम्पादक के लिए उसी समाचार पत्र में प्रकाशित उस विज्ञापन का उल्लेख कर जिसमें कि अजमेर में राजस्थान प्रशासनिक सेवा की परीक्षायें ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया के उर्स वाले दिन आयोजित कराने की बात कही गई है, लोक सेवा आयोग को सूचित कीजिए कि उक्त परीक्षाएं उर्स को ध्यान में रखकर आगे खिसका दी जाएं।

उत्तर--

सम्पादक महोदय,
दैनिक हिन्दुस्तान,
दिल्ली।

विषय : राजस्थान प्रशासनिक सेवा परीक्षा के सम्बन्ध में।

श्रीमान्,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक के माध्यम से राजस्थान लोक सेवा आयोग का ध्यान उस विज्ञापन की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं जो कुछ दिन पूर्व 20 जुलाई को आपके ही दैनिक में प्रकाशित हुआ था। उसके अनुसार राजस्थान प्रशासनिक सेवा की परीक्षाएं अजमेर में 11 सितम्बर से होने वाली है। मैं यह सूचित करना चाहता हूं कि उसी दिनांक से अजमेर में ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया का प्रसिद्ध उर्स का मेला भरने वाला है। उर्स में भारत के विभिन्न भागों के अलावा बाहर के लोग भी आते हैं और भीड़ इतनी अधिक हो जाती है कि परीक्षार्थीयों को ठहरने और आने-जाने की बेहद कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। इतना ही नहीं उर्स के अवसर पर नगर में अनेक सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों के कारण भारी कोलाहल होता रहता है। नगर में ठहरने के लिए जगह प्राप्त करना बेहद कठिन हो जाता है।

उर्स के अवसर पर यात्रियों को टीके लगवाने पड़ते हैं। उन टीकों से कुछ लोगों को हल्का बुखार भी हो जाया करता है। यदि कुछ परीक्षार्थियों को इस स्थिति का सामना करना पड़ा तब तो उनको परीक्षा देने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। ऐसा भी हो सकता है कि कुछ परीक्षार्थी परीक्षा में बैठ ही न सकें।

उक्त कारणों से हम यह उचित समझते हैं कि, उक्त परीक्षाओं की तिथियां उर्स के बाद की निश्चित की जाएं। यदि यह सम्भव न हो तो परीक्षा केन्द्र अजमेर से कहीं बाहर निश्चित किया जाय ताकि परीक्षार्थियों को परेशानियों का सामना न करना पड़े।

जयपुर

दिनांक 25 जुलाई, 1988

आपका

अ. ब. स.

प्रश्न 8. अपने प्राचार्य के माध्यम से कुलसचिव, अजमेर विश्वविद्यालय, अजमेर को प्रार्थना पत्र लिखकर अनुरोध कीजिये कि आपका रोका हुआ प्रवेश-पत्र शीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करे।

उत्तर

सेवामें,
कुलसचिव महोदय,
अजमेर विश्वविद्यालय,
अजमेर।
द्वारा प्राचार्य राजकीय कल्याण महाविद्यालय, सीकर।

विषय : प्रवेश-पत्र भेजने हेतु।

महोदय,

निवेदन है कि इस वर्ष तृतीय वर्ष वाणिज्य की परीक्षा के लिए मैंने नियमित छात्र के रूप में समय पर परीक्षा फार्म भरकर पूर्ण शुल्क के साथ विश्वविद्यालय को भेज दिया था।

मैंने अपने परीक्षा केन्द्र राजकीय कल्याण महाविद्यालय, सीकर से अपने प्रवेश-पत्र के लिए पूछताछ की। मुझे ज्ञात हुआ कि विश्वविद्यालय ने मेरा प्रवेश-पत्र भेजा ही नहीं है। मेरा प्रवेश-पत्र रोक लिया गया है।

मैं श्रीमानजी से निवेदन करता हूं कि जब मेरे परीक्षा फार्म में किसी प्रकार की कोई कमी ही नहीं है तो मेरा प्रवेश-पत्र रोक कर मेरे लिए

क्यों परेशानी पैदा की गई है। अब आप शीघ्र ही मेरे रोके हुए प्रवेश-पत्र को परीक्षा केन्द्र पर भिजवाने की कृपा करें।

धन्यवाद।

दि. 1 मार्च, 1988

प्रार्थी
निशान्त राठी
तृतीय वर्ष वाणिज्य

प्रश्न 9. आप अपने कॉलेज के वार्षिक उत्सव के अवसर पर आयोजित भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का निमन्त्रण-पत्र का प्रारूप तैयार कीजिये।

उत्तर

सेवामें,
राजकीय महाविद्यालय अलवर (राज.)
वार्षिकोत्सव : सांस्कृतिक कार्यक्रम

महोदय/महोदया,

यह महाविद्यालय दि. 31 मार्च, 1988 को अपना वार्षिक उत्सव मनाने जा रहा है जिसकी अध्यक्षता भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री माननीय भंवर लाल शर्मा करेंगे।

इस अवसर पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया जा रहा है। जिसमें लोकगीत, नृत्य, प्रहसन, कव्वाली आदि का भी सुन्दर प्रदर्शन होगा।

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

विनीत

समय–रात 8.30 बजे
स्थान–कॉलेज परिसर

आर. एम. शर्मा
प्रधानाचार्य

एल. के. गुप्त
अध्यक्ष, छात्रसंघ

प्रश्न 10. समय पर मनीआर्डर न प्राप्त होने के बारे में आप एक शिकायती पत्र लिखिये।

त्तर

सेवामें,
श्री पोस्टमास्टर साहब,
जी. पी. ओ. एम आई. रोड़,
जयपुर।

विषय : मनीआर्डर ठीक समय पर न मिलने की शिकायत।

महोदय,

इस पत्र द्वारा मैं आपका ध्यान राजस्थान विश्वविद्यालय के विवेकानन्द होस्टल में डाक वितरण करने वाले राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के पोस्टमैन की लापरवाही और मनमानी की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं।

मैं विवेकानन्द छात्रावास में रहता हूं। मेरे सभी पत्र इसी पते पर आते हैं। पिछले महीने 1 अगस्त, 1988 को मेरे ग्राम मंडावा से मेरे बड़े भाई श्रीकान्त ने मेरे नाम दो सौ रुपये का मनीआर्डर भेजा था। वह 1 अगस्त, को भेजा गया मनीआर्डर मुझे 26 अगस्त. को प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट है कि मुझे उक्त मनीआर्डर बहुत विलम्ब से मिला जिसके कारण मुझे बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा। यह सब सम्बन्धित पोस्टमैन की मनमानी और लापरवाही के कारण हुआ।

मैं इस पत्र द्वारा यह निवेदन करता हूं कि आप पोस्टमैन को हिदायत दें ताकि भविष्य में वह ऐसा आचरण न करें और मेरे जैसे व्यक्तियों को अनावश्यक रूप से, अकारण ही परेशानियों का सामना न करना पड़े।

धन्यवाद।

दिनांक 27 अगस्त, 1988

भवदीय
ओ. एम. रैना,
छात्रावासी,
स्वामी विवेकानन्द छात्रावास
राज. विश्वविद्यालय, जयपुर।

प्रश्न 11. अपने मित्र महेश जोशी को बी. कॉम. में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर एक बधाई-पत्र लिखिये।

उत्तर

शंकर सदन
बजाज नगर, जयपुर
दिनांक 28 जुलाई, 1988

प्रिय मित्र महेश जोशी,

नमस्ते,

कल की राजस्थान-पत्रिका में अजमेर विश्वविद्यालय की बी. कॉम. परीक्षा का परिणाम प्रकाशित हुआ है। मुझे तुम्हारा रोल नम्बर प्रथम श्रेणी

प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची में पाकर हार्दिक खुशी हुई। इसके सफलता के लिए मैं अपने सम्पूर्ण परिवार की ओर से तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूं।

मैं कामना करता हूं कि तुम जीवन में इसी प्रकार उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त करते हुए अपने कुल का नाम रोशन करते रहो।

स्नेहाधीन तुम्हारा
बृजमोहन छांगाणी

प्रश्न 12. ग्लास फैक्ट्री टोंक रोड़, जयपुर के प्रबन्धक की ओर से समाचार पत्र में प्रकाशित कराने हेतु हड़ताली श्रमिकों के काम पर लौट आने के लिए एक सूचना तैयार कीजिये।

उत्तर

सूचना

ग्लास फैक्ट्री टोंक रोड़ जयपुर, के हड़ताली श्रमिकों के लिए

विषय : दिनांक 1 सितम्बर, 1988 से जारी हड़ताल तथा उसके पूर्व का गतिरोध

उपर्युक्त विषय में विभिन्न सूचनाएं जारी करके इस हड़ताल के दुष्परिणामों से अवगत कराते हुए बार-बार निवेदन किया गया है कि हड़ताली श्रमिक हड़ताल समाप्त कर कार्य आरम्भ कर दें। राजस्थान सरकार के श्रम विभाग के अधिकारियों ने भी श्रमिकों को कार्य पर आने के लिए कहा है।

श्रमिक गुमराह होकर व्यर्थ हो हड़ताल जारी रखे हुए हैं। इस स्थिति से श्रमिकों को भी कोई लाभ नहीं होने वाला है। हड़ताल की अवधि दस दिन हो चुकी है तथा श्रमिकों ने तीन सौ रुपये प्रति श्रमिक वेतन हानि के रूप में गंवा दिये हैं जिसकी क्षतिपूर्ति सम्भव नहीं है।

अतः हड़ताली श्रमिकों को सुझाव दिया जाता है कि वे इस अनावश्यक निरर्थक हड़ताल को समाप्त कर कार्य पर लौट आयें तथा होने वाली हानि से बचें।

हुकुमसिंह
फैक्ट्री, प्रबन्धक

प्रश्न 13. अपने प्राचार्य महोदय को प्रार्थना-पत्र लिखिए जिसमें छात्रों के लिए कॉलेज परिसर में एक कैन्टीन की व्यवस्था करने के लिए निवेदन किया गया हो।

उत्तर

सेवामें,
प्राचार्य,
महर्षि दयानन्द कॉलेज,
अलीगढ़ ।

मान्यवर महोदय,

नम्र निवेदन है कि कॉलेज में लगभग दो हजार छात्र अध्ययन करते हैं। यहां सुबह से शाम तक विभिन्न संकायों की कक्षाएं लगती हैं। इतनी संख्या को देखते हुए यह जरूरी है कि कॉलेज परिसर में कोई स्तरीय कैन्टीन की व्यवस्था हो। अभी यह देखने में आता है कि चाय, नाश्ता करने के इच्छुक कर्मचारी या तो कॉलेज से बाहर के होटलों से सामान मंगाते रहते हैं या स्वयं बाहर जाकर होटलों पर चाय पीते हैं। छात्रों की बाहर के होटलों पर भीड़ लगी रहती है और उनके आने-जाने का तांता लगा रहता है। उन होटलों पर सामान भी अच्छा नहीं मिलता है जिससे होटल मालिकों से छात्रों की कहासुनी भी प्रायः हो जाया करती है।

आपसे अनुरोध हैं कि आप किसी प्रकार कॉलेज-कैम्पस में ही उच्च-स्तर का सामान उपलब्ध कराने वाली कैन्टीन खुलवाने की शीघ्र व्यवस्था कराने की कृपा करें ताकि छात्रों आदि को बाहर न जाना पड़े। छात्रों का चाय पीने बाहर जाना और खुले में भीड़ लगाना भी अच्छा नहीं लगता। यदि आपने हमारी कठिनाई को ध्यान में रखकर हमारी भावनाओं की कद्र करते हुए कैन्टीन खुलवाने की प्रार्थना स्वीकार करली तो हम आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

दि. 15 अगस्त, 1988

आपके आज्ञाकारी
कॉलेज के छात्रगण,

और कंप्यूटरीकृत पुस्तकालय प्रशिक्षकों के लिए एक वास्तविक साधन केंद्र हैं जहां वे अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं। यह इस्लामाबाद, पाकिस्तान में स्थित एरिया के लिए अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आई एल ओ) के उपक्षेत्रीय केंद्र से भी संबद्ध हैं। सीमी देश भर के आई टी आई में एक आंकड़ा आधार भी संचालित करेगा। स्थानीय एरिया नेटवर्क के तहत सीमी के विभिन्न अनुभागों में निजि कंप्यूटरों (पी सी) को जोड़ने की योजनाओं पर भी काम हो रहा हैं। भारत में व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए इस संस्थान के महत्व को बताते हुए सीमी में जर्मन टीम के प्रधान श्री एम डीहल ने कहा 'भारतीय उद्योग को यह शिकायत रही कि उसे रख रखाव के लिए उपयुक्त कर्मचारी नहीं हैं। औद्योगिक इकाइयों के अधिक परिष्कृत होने के साथ ही रख रखाव करने वाले अच्छे कर्मचारियों की ज़रुरत और भी तीव्रता से महसूस की गयी। सीमी का प्रशिक्षार्थी उन्मुख अध्यापन पैंकेज प्रशिक्षित कर्मचारियों की इस कमी को पूरा करेगा'। सीमी के संयुक्त निदेशक श्री एम वी रंगास्वामी ने यह विश्वास व्यक्त किया कि यह भारत-जर्मन संयुक्त उद्यम 'उद्योग द्वारा अपेक्षित दक्ष और गुणवत्ता वाले कर्मचारी दल को बड़े पैंमाने पर तैंयार करेगा'। उन्होंने आगे कहाः 'सीमी का टीम-वर्क, उद्योग और संस्थान मिलकर आई टी आई में अध्यापन का स्तर उठाने में संयुक्त प्रभाव डालेंगे'।

■ जे.राज

